अन्तोन मकारेन्को

जीवन की ओर

सन् १९२०। युवा सोवियत जनतंत्र के अस्तित्व का तीसरा वर्ष। गृह-युद्ध की गोलाबारी के धमाकों की गूंज अभी समाप्त न हो पायी थी। देश में अभी जीवन सामान्य होना आरम्भ ही हुआ था। इसी वर्ष स्कूल के अध्यापक अ. स. मकारेन्को (१८८३-१९३९) ने जन-शिक्षा विभाग के आदेश पर बाल-अपराधियों के लिए सुधार-गृह की स्थापना की जिसका बाद में 'गोर्की कोलोनी' नाम पड़ा। उसमें उन बेघर, अनाथ बालकों को एकत्र किया गया जिनके माता-पिता युद्ध, महामारियों तथा अकाल में मारे गये थे। उन बच्चों को जिन्हें युद्ध की आंधी ने रूस के भिन्न-भिन्न मार्गों पर ले जा भटका

अन्तोन मकारेन्को

जीवन की ओर
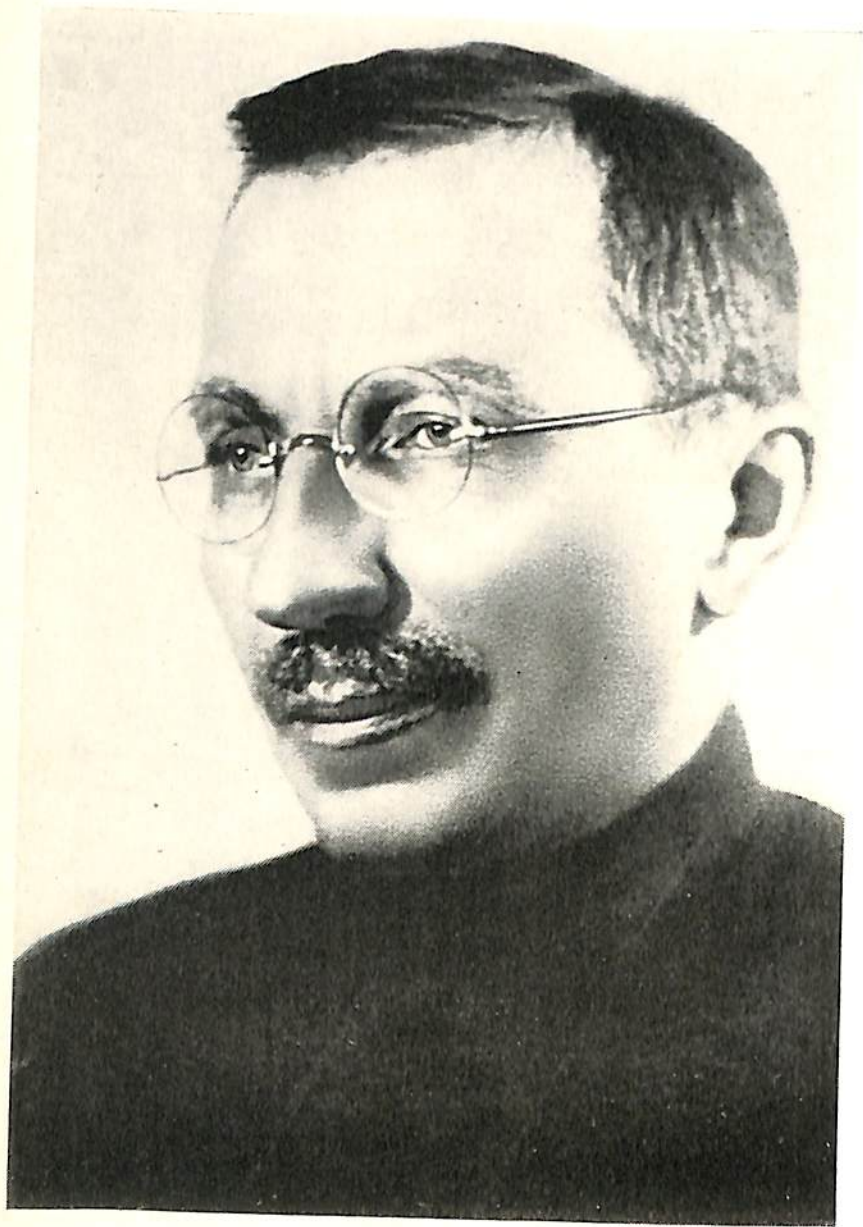
अन्तोन मकारेन्को

जीवन की ओर

दो खण्डों में

प्रथम खण्ड

पहला भाग

'रादुगा' प्रकाशन ताशक़न्द १९८४

विषय-सूचि

प्राक्कथन के स्थान पर*

मक्सिम गोर्की

"सोवियत संघ की ओर" नामक पुस्तक से

सन् १९३१ वर्ष की ग्रीष्म में मैं कुर्याज़्स्की विहार में था। वहाँ उस समय के विख्यात व्यक्ति यूआन क्रोंश्तात्स्की से मेरी मुलाक़ात हुई। इस विहार में रहनेवाले चार सौ व्यक्तियों – अपने ऐसे अनदेखे दोस्तों के बीच – जो अतीत में बेघर, आवारा थे और सामाजिक रूप से ख़तरनाक थे बिताये गये तीन दिनों का मुझे स्मरण हो आया...

इस विहारवाले लड़कों के साथ चार वर्षों तक मेरा निरन्तर पत्र व्यवहार रहा। मेरी नज़र बराबर इस बात की ओर लगी रही कि किस प्रकार धीरे-धीरे उनकी वर्तनी और व्याकरण में सुधार हो रहा है, उनकी सामा-

---

* "जीवन की ओर" नामक इस उपन्यास के साथ प्रकाशनगृह तीन लेख प्रस्तुत कर रहा है। ये लेख उन व्यक्तियों का है जो अ. स. मकारेन्को को अच्छी तरह जानते थे। ये व्यक्ति हैं – म. गोर्की जिन्हें यह पुस्तक समर्पित की गई है; से. कलाबालीन जो रूसी फ़ेडेरैशन के सम्मानित अध्यापक हैं और सम्प्रति एक बोर्डिंग-स्कूल के निदेशक हैं। श्री कलाबालीन अ. मकारेन्को के भूतपूर्व छात्र रह चुके हैं। प्रस्तुत उपन्यास में उनका सेम्योन करावानोव के रूप में ज़िक्र आया है। इनके अतिरिक्त व. फ़िन्क का लेख भी यहाँ दिया जा रहा है। व. फ़िन्क एक प्रसिद्ध सोवियत गद्यलेखक और समाजकल्याण सम्बन्धी विषयों के लेखक के रूप में जाने जाते हैं। वे मकारेन्को के बड़े अच्छे मित्र हैं। ये सभी लेख संक्षेप में दिये जा रहे हैं।

जिक चेतना बढ़ रही है, वास्तविकता के उनके ज्ञान का क्षेत्र किस प्रकार बढ़ रहा है, और किस प्रकार अवयस्क अराजकतावादियों, आवारा लोगों, ठगों और युवा वेश्याओं के बीच से अच्छे कामगार लोगों का जन्म हो रहा है।

कोलोनी के अस्तित्व में आये सात वर्ष बीत चुके हैं। इन में से चार साल के दौरान वह पोलताव्स्काया प्रान्त में स्थित थी। इन सात वर्षों के अन्दर कोलोनी में से निकलकर दसियों लड़के श्रम-संकाय में जा चुके हैं, कृषि तथा सैनिक स्कूलों में भर्ती हो चुके हैं और कुछ लड़के दूसरी कोलोनियों में छोटे बच्चों के शिक्षक के रूप में कार्य भार सम्भाल चुके हैं। उनके चले जाने से हुई कमी की पूर्ति शीघ्र ही उन लड़कों के द्वारा हो जाती है जिन्हें अपराध-अन्वेषण-विभाग यहाँ भेज देता है अथवा उनसे, जिन्हें मिलीशिया सड़कों पर से पकड़कर ले आती है। कुछ अन्य आवारा फिरनेवाली लड़कियाँ यहाँ स्वेच्छा से भी आ जाती हैं, इस तरह यहाँ निवास करनेवाले व्यक्तियों की सामान्य संख्या चार सौ से कभी कम नहीं हो पाती। पिछले साल अक्तूबर में एक कोलोनीवासी ने न. देनीसेन्को ने मुझे कोलोनी के सभी "कमाण्डरों" की ओर से एक पत्र लिखा:

"आपको शायद मालूम नहीं कि आपके यहाँ से जाने के बाद हमारी कोलोनी में बहुत कुछ बदल गया है। हमारे कोलोनीवासियों में से काफ़ी लोग अपने पाँवों पर खड़े हो चुके हैं। वे लोग कारख़ानों, श्रम-संकाय में कार्य कर रहे हैं। पुराने लड़कों में से बहुत कम लोग शेष रहे हैं। लगभग सभी लड़के नये हैं। नये लड़कों के साथ जीवन उन लोगों की अपेक्षा जो श्रमपूर्ण सामाजिक कार्य के आदी हो चुके हैं, कुछ ज्यादा कठिन लग रहा है। पुराने लड़कों के चले जाने से कोलोनी के जीवन में अनुशासन की कमी नज़र आने लगी है। पर हम शेष बचे पुराने लड़कों को इस पर ध्यान रखना चाहिए। हमें अनुशास्न में न कोई कमी आने देनी चाहिए, और न हम आने ही देंगे। अब हमारी कोलोनी में स्कूल का पुनर्निर्माण हो चुका है। सातसाला स्कूल की व्यवस्था नये ढंग से शुरू हो चुकी है तथा मन्दबुद्धि छात्रों के लिए प्रशिक्षण वर्कशॉपों की स्थापना की जा चुकी है। अध्ययन की तरफ़ छात्रों का झुकाव बहुत ज़्यादा नहीं हैं, पर चार सौ लड़कों में से कोई भी स्कूल की पढ़ाई से अछूता हो, यह बात नहीं है।"

इस समय* कोलोनी में बासठ कोमसोमोल मौजूद हैं जिनमें से कुछ ख़ारकोव में अध्ययन कर रहे हैं। एक तो चिकित्सा फ़ैकल्टी के दूसरे कोर्स का विद्यार्थी है। पर ये सभी लोग कोलोनी में ही रहते हैं। यहाँ से शहर तक की दूरी आठ किलोमीटर है। साथियों के मौजूदा कार्यों की पूर्ति में सभी लोग समान रूप से हाथ बँटाते हैं।

चार सौ व्यक्तियों को चौबीस दस्तों में बाँटा गया है। हर दस्ते का अपना-अपना व्यवसाय होता है। कोई बढ़ई है तो कोई लुहार, कोई सब्ज़ी बाड़े में काम करता है, तो किसी का काम जानवरों को चराना है। कोई ट्रैक्टर चलाता है, कोई सफ़ाई करता है तो कोई चौकीदारी का काम। कोई मोची का तो कोई और कुछ दूसरा काम। कोलोनी की सम्पत्ति में यदि मैं ग़लती नहीं करता तो तैंतालीस हैक्टर जोत व सब्ज़ी-फल आदि की भूमि है, सत्ताईस गाय-घोड़े और अच्छी नस्ल के सत्तर सूअर भी, जिनकी किसानों में अच्छी माँग है। इसके अलावा कृषि में उपयोग आनेवाले अन्यान्य यन्त्र, तथा दो ट्रैक्टर हैं। प्रकाश के लिए कोलोनी का अपना बिजलीघर है...

कोलोनी की समस्त सम्पत्ति और उसकी व्यवस्था वस्तुतः मजदूर दस्तों के चौबीस चुने हुए संचालकों के हाथ में थी। उन्हीं के हाथों में सभी भण्डारगृहों की कुंजी थी। वे स्वयं ही कार्य की योजना तय करते थे और उसमें सभी के साथ मिलकर समान भाव से व्यक्तिगत रूप में क्रियात्मक भाग लेते थे। संचालकों की समिति ही सभी समस्याओं को सुलझाने का निर्णय लेती थी। स्वेच्छा से कोलोनी में प्रवेश पाने के इच्छुक व्यक्तियों में से किसे लेना है, किसे इनकार करना है, तथा वे साथी, जिन्हों ने लापरवाही से काम किया है और अनुशासन व परम्परा का उल्लंघन किया है, उन्हें क्या सज़ा देनी है–इस सब का निर्णय लेना उन्हीं के हाथ में था। दोषी पाये जानेवाले व्यक्ति को संचालक समिति ने जिस सज़ा का हक़दार समझा है, उसकी घोषणा कोलोनी के प्रमुख संचालक अ.स. मकारेन्को सभी कोलोनीवासियों के सम्मुख किया करते थे। कार्य में अलसभाव के प्रदर्शन, भारी काम से दृढ़तापूर्वक इनकार करने, किसी साथी का अपमान करने तथा दस्ते के सामान्य हित के वि-

---

*म. गोर्की ने कोलोनी का दौरा सन् १९२८ ई. में किया था।

रुद्ध कार्य करने जसे अधिक गंभीर अपराधों की सजा दोषी व्यक्ति के कोलोनी से निष्कासन के रूप में होती थी। पर इस तरह की घटनाएँ बहुत ही कम हुआ करती थीं। संचालक समिति में से प्रत्येक व्यक्ति कोलोनी से बाहर की अपनी स्वतन्त्र ज़िन्दगी की भयानकता के बारे में जानता था, दोषी व्यक्ति भी अनाथालयों जैसी संस्थाओं के जीवन से—जिसे सभी बेघर निराश्रित लोग एक स्वर सें नापसन्द करते थे—अपरिचित नहीं था।

कोलोनी की परम्पराओं में से एक थी, अपने यहाँ की लड़कियों से किसी प्रकार के रूमानी सम्बन्ध न रखना। इस परम्परा का अत्यन्त सख़्ती से पालन होता था। कोलोनी के पूरे अस्तित्व के दौरान केवल एक बार इस परम्परा का उल्लंघन हुआ। उस घटना का अन्त बच्चे की मौत से हुआ। युवा माँ ने अपने नवजात बच्चे को चारपाई के नीचे छिपा दिया। दम घुटने से वहाँ उस की मृत्य हो गयी। उसे अदालत से चार साल के क़ैद की सज़ा मिली, पर उसे कोलोनी के हाथों में सौंप दिया गया। बाद में सम्भवतः उस बच्चे के पिता से ही उसने विवाह कर लिया। कोलोनी की दूसरी परम्परा यह थी कि जब किसी लड़के या लड़की को अपराध-अन्वेषण-विभाग द्वारा कोलोनी में लाया जाता था तो उससे 'वह कौन है? अब तक उसका जीवन कैसे गुज़रा ? अपराध-अन्वेषण-विभाग के हत्थे कैसे चढ़ा? ..' जैसे प्रश्नों के पूछने की मनाही थीं। यदि नवागत्तुक स्वयं अपनी गाथा बखान करना चाहता है तो उसकी बात नहीं सुनी जाती थी। यदि वह अपनी करतूतों की डींग हाँकने लगता तो उस पर शंका प्रकट की जाती थी, उसका उपहास उड़ाया जाता था। इस सबका उस नवागन्तुक पर निश्चित ही अच्छा प्रभाव पड़ता था। उससे कहा जाता था:

"तुम देख रहे हो, यहाँ कोई क़ैदखाना नहीं है। यहाँ हम सब अपने मालिक हैं। हम सब भी तुम्हारे जैसे ही हैं। यहाँ रहो, पढ़ो, हम लोगों के साथ मिलकर काम करो। मन लगता है रहो, नहीं तो छोड़कर चले जाओ।"

नवागन्तुक को शीघ्र ही विश्वास हो जाता है कि इन सब बातों में सच्चाई है। वह आसानी से कोलोनी के जीवन में घुल-मिल जाता है। कोलोनी के सात साल के जीवन में सम्भवतः दस लड़कों से अधिक कोलोनी छोड़कर नहीं गये होंगे।

'संचालक' लड़कों में से एक द. कोलोनी में तेरह साल की उम्र में आया। अब वह सत्तरह वर्ष का है। पन्द्रह वर्ष की उम्र से वह पचास

लड़कों के दस्ते का नेतृत्व कर रहा है। उनमें से अधिकांश लड़कों की उम्र उससे काफ़ी ज़्यादा है। मुझे बताया गया कि वह एक अच्छा साथी है और अत्यधिक कठोर तथा न्यायी कमाण्डर। अपनी आत्मकथा में वह लिखता है:

"मेरे कोमसोमोल होने के बावजूद मुझे कोलोनी से निष्कासित किया गया क्योंकि मैंने आदेशों का पालन नहीं किया था।" "जीना चाहता हूँ, पर मेरे लिए संगीत और पुस्तक सबसे मुख्य चीज़ें हैं।" "संगीत मेरा जीवन है।

उसकी प्रेरणा से कोलोनीवासियों ने मुझे एक सुन्दर उपहार दिया। दो सौ चोरासी व्यक्तियों ने मुझे अपनी-अपनी आत्मकथा लिखकर मुझे भेंट की। वह द. एक कवि भी है। उक्राइनी भाषा में कविताएँ लिखता है। कई दूसरे लड़के भी कविता रचते हैं। कोलोनी में एक सचित्र पत्रिका "प्रोमिन" का प्रकाशन होता है। उसके सम्पादकमण्डल में तीन व्यक्ति हैं। चित्रकार च. भी 'कमाण्डरों' में से एक है। निश्चय ही वह एक प्रतिभाशाली और गंभीर स्वभाव का व्यक्ति है। अपनी प्रतिभा के प्रति सतर्क रहता है।

असल में वह पोलैण्ड से भागा हुआ है और आठ साल से इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा है। पहले वह यारोस्लाव्ल की बच्चों की कोलोनी में था। वहाँ से भागकर उसने ट्रामों में जेबें साफ़ करने का धन्धा अपना लिया। इसके बाद किसी दाँतों के डाक्टर के पल्ले पड़ा। वहाँ उसमें पढ़ने व चित्रकारी की तरफ़ रुचि पैदा हुई। लेकिन सड़कों ने उसे पुनः अपनी ओर आकर्षित कर लिया। वह दाँतों के डाक्टर के पास से भी भागा। उसके यहाँ से उसने ज़ार की मुद्रा अंकित कई सोने के सिक्के पार किये। उन्हें उसने किताबों, काग़ज़ और रंगों के ख़रीदने में ख़र्च कर दिये। इसके बाद उसने एक जहाज़ में झोंकिये के सहायक का कार्य किया। पर नज़र कमज़ोर होने के कारण उसे उस कार्य को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। इसके बाद ज़िर्यान के लोगों के मध्य रहकर पिचोरा में प्राकृतिक कर संग्रह-विभाग में अनुदेशक के रूप में काम करने लगा। उसने ज़िर्यानी भाषा सीखी, घुमक्कड़ों के बीच में ज़िन्दगी काटी और फिर यूराल पर्वत शृंखला को पार कर ओबदोरस्क में आ गया। आरख़ान्गेल्स्क में पहुँचने पर चोरी-चकारी में पड़ गया। इन दिनों रातें सराय में काटीं। इसके बाद

साइनबोर्ड लिखने व सजावटी चित्र बनाने के काम में लग गया। काम उसने अपनी पूरी शक्ति से मन लगाकर किया। साथ ही साथ सातसाला स्कूल की परीक्षा के लिए भी तैयारी करता रहा। नक़ली प्रमाणपत्र बनाकर व्यात्स्क के औद्योगिक कला के तकनीकी स्कूल में दाख़िला ले लिया। वहाँ बहुत अच्छी श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। चित्रकला में उसकी प्रतिभा को सराहा गया। छात्रों की समिति में चुना जाकर सांस्कृतिक गतिविधि के कार्य का संचालन करने लगा। जाड़ों की छुट्टियों में नक़ली प्रमाणपत्रों के साथ रंगे हाथों पकड़ा जाने पर एक सुधारघर में डाल दिया गया। वसंत तक वहीं रहा। वहाँ भी उसका किताब पर काम करना जारी रहा और साथ ही सांस्कृतिक गतिविधि का संचालन भी। इसके बाद "सेवेर-नाया प्राव्दा" में रिपोर्टर का काम किया।

आत्मकथा के इस वर्णन में न तो कहीं आत्मप्रशंसा का भाव है और न सहानुभूति जगाने की इच्छा ही। वर्णन का ढंग कुछ ऐसा सीधा-साधा है—जैसे कहा जा रहा हो—पहले मैं दलदली रास्ते से गुज़रा, फिर जंगल के रास्ते से। उसके बाद रास्ता भटक गया। फिर गाँव को जानेवाली पग-डंडी पर निकल आया। रास्ता रेतीला था, चलने में अत्यन्त कठिनाई हो रही थी, इत्यादि . . . "

च. वास्तव में अत्यन्त प्रतिभाशाली नवयुवक है। मेरा विचार है कि अब वह बिगड़ने से बच जायेगा। उसकी आत्मकथा में कोई विशेष बात हो, ऐसा नहीं है। मैंने जिन आत्मकथाओं को पढ़ा, उनमें से बहुतों का क़िस्सा उसकी आत्मकथा से ही मिलता-जुलता था।

ये बेघर निराश्रित बच्चे आख़िर आते कहाँ से हैं? ये उन लोगों के बच्चे हैं जिन्हें युद्ध के थपेड़ों ने पूरे रूस में इधर-उधर फेंक मारा। ये उन लो-गों के अनाथ बच्चे हैं जिन्हें गृहयुद्ध की अग्नि में झुलसकर मौत की गोद में सो जाना पड़ा, अथवा महामारी या भूख का शिकार होना पड़ा। उन-लोगों के बच्चे जिन्हें विरासत में बुरी आदतें मिली थीं, अथवा जो सड़कों के प्रलोभन से स्वयं को दृढ़ता से मुक्त नहीं रख सके, निश्चित ही मर-खप गये होंगे। शेष रह गये वही बच्चे जो आत्मरक्षा में पूर्णत: समर्थ व योग्य थे, वे बच्चे, जो जीवन के संघर्ष में सशक्त और मज़बूत थे। ये बच्चे किसी भी क़िस्म का काम पूरा मन लगाकर कर सकते हैं, अनुशासन का सरलता से पालन करने की ओर उन्मुख होते हैं, बशर्ते उनसे ढंग से

काम लिया जाय और उनके आत्मसम्मान की भावना को चोट न पहुँचाई जाय। ये बच्चे पढ़ना चाहते हैं, वे सामूहिक श्रम का अर्थ व उसका उपयोग स्पष्ट रूप से समझते हैं। मैं कह सकता हूँ कि यद्यपि ज़िन्दगी बड़ी कठोर होती है, पर वह मज़बूत बच्चों के लिए श्रेष्ठतम शिक्षिका का कार्य करती है। ज़िन्दगी ने ही उन बच्चों के हृदय में सामुहिकता की भावना को भर दिया। पर इसके साथ उनमें से प्रत्येक का अपना एक निजी व्यक्तित्व है, दूसरों से कुछ अलग-थलग। कुर्याझ्स्की श्रम कोलोनी के निवासियों का अच्छे ढंग से लालन-पालन प्राप्त लड़कों के बारे में अनुभव उत्तम है। उनके अच्छे लालन-पालन का पता ख़ास तौर से अपने से छोटे नवागन्तुक लड़कों के प्रति उनके व्यवहार में झलकता है। छोटे लड़के सड़क के गुण्डों के भयंकर चंगुल से निकलकर सहसा ऐसे वातावरण में आकर जहाँ उनका ध्यान रखा जाता है, विस्मित हो जाते हैं। उन सड़कछाप गुण्डों ने तो उन्हें तंग करके रख दिया था, उनका शोषण था, उन्हें चोरी करना, वोद्का पीना और इसी तरह की दूसरी बुराइयाँ सिखायी थीं। एक नन्हा चरवाहा लड़का कोलोनी के आर्केस्ट्रा में बाँसुरी पर बहुत अच्छा राग निकाल लेता है। केवल पाँच महीनों में ही उसने इसमें कुशलता प्राप्त कर ली थी। उसने मुझसे कहा था:

"जब मैं यहाँ आया तो इतना घबड़ाया हुआ था कि कुछ न पूछिये। सोचता था कितने सारे लोग हैं ये! ऊफ़ ... कितना तो पीटेंगे मुझे। इन्होंने तो उंगली तक से नहीं छुआ मुझे।

उन लोगों के मध्य मैं स्वयं को आश्चर्यजनक रूप से सहज पा रहा था। मैं उन लोगों में से हूँ जो बच्चों से बात करने की कला से अनभिज्ञ हैं। मुझे घबराहट होती है कि कहीं मैं उनसे कुछ उलटा-सुलटा न कह जाऊँ। इसी घबराहट की वजह से मेरी ज़बान में ताला पड़ जाता है। पर कुर्याझ्स्की कोलोनी के बच्चों के मध्य मैंने स्वयं में इस घबराहट का नाम भी नहीं पाया। इसके अतिरिक्त उनसे बात करने की मुझे अपनी ओर से कोई ख़ास आवश्यकता भी नहीं पड़ी। स्वयं ही कुशल वक्ता हैं। उनमें से हर एक के पास कहने के लिए कुछ है ...

जीवन से इस तरह कठोरता से अपमानजनक ढंग से ठुकराये गये इन सैकड़ों बच्चों का कायाकल्प करने में, उनके पुर्नप्रशिक्षण में किसका हाथ है? निश्चय ही कोलोनी के संघटनकर्ता और प्रमुख संचालक श्री अ. स.

मकारेन्को को ही इसका श्रेय जाता है। वे निर्विवाद रूप से एक अच्छे शिक्षा-शास्त्री हैं। कोलोनीवासी उन्हें वस्तुतः प्यार करते हैं और उनके बारे में कुछ ऐसे गर्व के साथ बताते हैं जैसे उन्होंने स्वयं उनका निर्माण किया हो। श्री मकारेन्को बाहर से बड़े कठोर लगते हैं। नपा-तुला बोलते हैं। उनकी उम्र लगभग चालीस वर्ष की है। लम्बी नाकवाले और तीव्र बुद्धिमत्तापूर्ण आँखोंवाले श्री मकारेन्को एक सैनिक तथा ग्रामीण शिक्षक जैसे लगते हैं। उनकी आवाज़ फटी-फटी-सी है और स्वर में एक तरह की भर्राहट। उनकी चाल में अधिक तेज़ी नहीं है, पर कोई ऐसी जगह नहीं है, जहाँ वे न पहुँच पाते हों। अपनी कोलोनी में हर चीज पर उनकी आँख रहती है। वे हर कोलोनीवासी को अच्छी तरह जानते हैं, पाँच शब्दों में उसका ऐसा ख़ाका खींच देते हैं जैसे क्षण भर में ही उसके चरित्र का छायांकन कर लिया हो। इसके साथ ही उनका एक स्वभाव है कि चुपचाप आकर किसी बच्चे को स्नेह से पुचकार देंगे, उन सबसे स्नेहपूर्ण वाणी में बात करेंगे और हँसकर किसी की घुटी चाँद पर हाथ फेरने लगेंगे।

संचालकों की समिति में जब कोलोनी के कार्य के बारे में बहस छिड़ती है, खाद्यान्न से सम्बन्धित प्रश्न उठते हैं, एक दूसरे के काम में हुई विभिन्न प्रकार की असावधानियों और ग़लतियों की तरफ़ इशारा किया जाता है तो एक कोने में बैठे हुए अन्तोन मकारेन्को बीच-बीच में आवश्यकता पड़ने पर केवल दो-तीन शब्द कहने के अलावा और कुछ नहीं बोलते। अक्सर इन शब्दों में डाँट होती है, पर उसका स्वर एक वरिष्ठ साथी का-सा ही रहता है। उनके शब्दों को ध्यानपूर्वक सुना जाता है। उनसे बहस करने में कोई संकोच नहीं किया जाता। उनसे ऐसे ही बात की जाती जैसे एक पच्चीसवें साथी से की जाती है जिसे उसके दस्ते के चौबीस साथी अपने से थोड़ा बुद्धिमान और कुछ ज़्यादा अनुभवी समझते हैं।

कोलोनी में उन्होंने सैनिक विद्यालय की कुछ प्रथाओं को लागू कर रखा है। उक्राइनी जन-शिक्षा-व्यवस्था से उनके मतभेद का यही कारण है। सुबह छः बजे बिगुल बजने लगता है और सभी कोलोनीवासी आँगन के मध्य में एक गोल-घेरे में खड़े हो जाते हैं। बीच में कोलोनी का झण्डा होता है और अग़ल-बग़ल कोलोनी के दो साथी बन्दूक़ लेकर सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं। उन सबके सम्मुख मकारेन्को थोड़े से शब्दों में पूरे दिन के काम-काज के बारे में बताते हैं। यदि संचालक समिति ने कि-

सी लड़के को किसी बात पर दोषी पाकर सज़ा का निर्णय ले लिया होता हैं तो उस निर्णय की घोषणा भी वे इसी समय किया करते हैं। तदुपरान्त दस्तों के कमाण्डर अपने-अपने दस्ते को लेकर कार्य में जुट जाते हैं। बच्चों को यह सब समारोह पसन्द आता है।

पर इससे अधिक सुन्दर समारोह तब हुआ था जब कोलोनीवासियों ने किसी फ़ैक्ट्री की माँग पर रेलगाड़ी के पाँच डिब्बे भर बक्से बनाकर दिये थे। तब आर्केस्ट्रा की ध्वनि गूँजी थी। संस्कृति का निर्माण करने-वाले श्रम के महत्त्व के विषय में भाषण हुए थे। उन भाषणों में कहा गया था कि केवल स्वतन्त्र सामूहिक श्रम ही लोगों को न्यायपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करता है, उत्पादन साधनों में व्यक्तिगत स्वामित्व को समाप्त करके ही लोगों को मित्रता और बन्धुत्व के बन्धन में जकड़ा जा सकता है, केवल इसी से जीवन को सम्पूर्ण कष्टों से मुक्त किया जा सकता है। जब चार सौ आँखों के रंग-बिरंगे जोड़े गर्व भरी मुस्कराहट के साथ अपनी कोलोनी के कारीगरों द्वारा निर्मित बक्सों के भार से लदी रेलगाड़ियों के डिब्बों की ओर निहार रहे थे तो उनके गंभीर और मृदु चेहरों को देखकर हृदय उत्ते-जना से धड़के बिना नहीं रह सकता था। पूरे चार सौ व्यक्तियों का सम-वेत् स्वर हर्षनाद कर उठा था। अ० स० मकारेन्को बच्चों के साथ श्रम के विषय में जिस शान्ति के साथ और शब्दों में अन्तर्हित जिस शक्ति के साथ बात करते हैं वह श्रेष्ठ भाषण के प्रदर्शन से ज़्यादा प्रभावी और समझ में आनेवाला होता है। अपने छात्रों द्वारा लिखित आत्मकथाओं के संग्रह के लिए उन्होंने जो भूमिका लिखी थी उसका एक उद्धरण मेरे विचार से इस बात को काफ़ी अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है:

"जब मैंने सौवीं आत्मकथा को टाइप किया तो मुझे लगा कि मैं एक सबसे अद्भुत पुस्तक पढ़ रहा हूँ। इन कथाओं में बच्चों का दुःख घनीभूत होकर उमड़ा पड़ रहा है जिसे कुछ इतने सरल, सीधे शब्दों में प्रकट किया गया है कि उनसे किसी प्रकार की शिकायत का स्वर नहीं फूटता। इन आत्मकथाओं की प्रत्येक पंक्ति से मुझे अहसास होता है कि ये कथाएँ किसी की करुणा उजागर करने का झूठा दावा नहीं करतीं। ये कथाएँ सीधे-सीधे सरल शब्दों में समाज द्वारा परित्यक्त, एकाकी जीवन बिताने को विवश उस छोटे-से इनसानी हृदय को खोलती हैं जो किसी की दया-माया का आदी न होकर अपने प्रति केवल शत्रुतापूर्ण रुख़ का ही आदी है, और

आती है इस स्थिति में घबराहट से अपने को अलग रखने का। निश्चय ही यह हमारे युग की एक भयंकर त्रासदी है, पर यह त्रासदी केवल हमारे अपने ज्ञान की बात है। गोर्की कोलोनी के निवासी इसे कोई त्रासदी नहीं समझते। उनके लिए यह उनके व शेष विश्व के बीच एक स्वाभाविक सम्बन्ध है।

यह त्रासदी अन्य किसी की अपेक्षा मेरे लिए अधिक त्रासदायक है। पिछले आठ वर्षों में मैंने नालों में फिंके हुए बच्चों का अतुलनीय दुःख ही नहीं देखा है, उनकी आत्मिक टूटन भी जानी है। उनके प्रति मात्र करुणा प्रकट कर रह जाने का ही मुझे कोई अधिकार नहीं है। मैं बहुत पहले ही यह समझ चुका हूँ कि उनकी रक्षा के लिए मुझे उनसे कसकर काम लेना चाहिए, दृढ़ता व कठोरता का परिचय देना चाहिए। मुझे उनके दुःख के प्रति वही दार्शनिक अन्दाज़ अपनाना चाहिए जितना वे स्वयं अपने दुःख के प्रति अपनाते हैं।

यही मेरी त्रासदी है। इस त्रासदी की चुभन का मैंने इन आत्मकथाओं को पढ़ते समय विशेष तौर पर अनुभव किया। यह त्रासदी हम सबकी होनी चाहिए। इस त्रासदी से बचने का हमें कोई अधिकार नहीं है। जो लोग इन बच्चों पर सूखी दया दिखाते या इनके लिए कोरी सुख-सुविधा जुटाने का प्रयास करते हैं, वे ऐसा कर मात्र अपनी हठधर्मिता पर आवरण डालते हैं। बच्चों का दुःख उनके लिए सस्ती भावुकता की प्रबलता मात्र बनकर रह जाती है।"

कुर्याज़्स्की की इस कोलोनी के अतिरिक्त मुझे ख़ारकोव में एक और बच्चों की कोलोनी को देखने का अवसर मिला। यह कोलोनी फ़. ए. द्ज़े-रझीन्स्की के नाम पर थी। इस कोलोनी में केवल एक सौ अथवा एक सौ बीस बच्चे हैं। यह कोलोनी इस आधार पर बनी है कि बाल-अपराधियों अथवा 'सामाजिक रूप से ख़तरनाक' बच्चों के लिए बाल-कोलोनी का आदर्श क्या होना चाहिए, यह स्पष्ट किया जा सके। यह कोलोनी एक दुमंज़िला इमारत में स्थित है, जिसकी उन्नीस खिड़कियाँ सामने बाहर की ओर खुली हुई हैं। इस इमारत का निर्माण इसी कोलोनी के लिए विशेष रूप से किया गया है। इसमें लकड़ी, जूते बनाने तथा लुहारगिरी के काम की तीन वर्कशापें हैं जिनमें नवीनतम मशीनें लगी हुई हैं। ख़ूब बढ़िया प्रकार के औज़ारों से इन वर्कशापों को भर दिया गया है। इमारत ख़ूब हवादार है, खिड़कियाँ बड़ी-बड़ी हैं, प्रकाश की अच्छी व्यवस्था है। उनके

काम करते समय पहनने के कपड़े बड़े सुन्दर होते हैं। सोने का कमरा ख़ूब लम्बा-चौड़ा है। विस्तर अच्छे हैं। स्ननाघर हैं। पठन-पाठन के कक्ष स्वच्छ व हवादार हैं। बैठकों के लिए अलग से एक हॉल कमरा है। सुन्दर पुस्तकालय हैं। पाट्यपुस्तकों की कोई कमी नहीं। वे प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। चारों तरफ़ ख़ूब साफ़-सफ़ाई है। यह सब आदर्श है, सब कुछ प्रदर्शनार्थ। बच्चे भी यहाँ के जैसे प्रदर्शन के लिए चुने गये हैं। वे सब ख़ूब स्वस्थ हैं। इस प्रकार की संस्थाओं के प्रबन्धकर्तागण इस कोलोनी से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

सेम्योन कलाबालीन

अ. स. मकारेंको ने हमें कैसा प्रशिक्षण दिया

अन्तोन सेम्योनोविच मकारेंको से मेरी भेंट दिसम्बर १९२० में बड़ी असामान्य स्थितियों में हुई। यह भेंट एक जेल में हुई थी, जहाँ मैं अपने कठोर बचपन की ग़लतियों की सज़ा काट रहा था। उस समय को बीते एक अरसा हो गया है, पर मुझे उस भेंट की एक-एक बात अच्छी तरह याद है।

हमारी भेंट कुछ इस तरह हुई थी। एक दिन मुझे जेलख़ाने के संचालक के कमरे में बुलाया गया। अन्दर आकर मैंने देखा कि वहाँ संचालक के अतिरिक्त एक अपरिचित व्यक्ति भी है। वह मेज़ के पास एक आरामकुर्सी पर टाँग पर टाँग रखे बैठा हुआ था। उसने एक जर्जर कोट पहन रखा था। कन्धों पर कनटोप पड़ा हुआ था। उसका सिर बड़ा-बड़ा था, माथा ऊँचा और सपाट फैला हुआ। सबसे ज्यादा जिस चीज ने मेरा ध्यान आकर्षित किया वह उसकी ऊँची लम्बी नाक थी, और उसके पीछे पुकारती हुई-सी बुद्धिमत्तापूर्ण करुण आँखें। वह बाँसे पर कसकर लगाया जानेवाला चश्मा पहने था। ये ही थे अन्तोन सेम्योनोविच।

उन्होंने मुझे संबोधित कर पूछा:

"तुम्हारा ही नाम सेम्योन कलाबालीन है न?"

मैंने 'हाँ' में सिर हिलाया।

"तुम मेरे साथ चलना चाहोगे?"

मैंने उनकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा, तत्पश्चात् जेलख़ाने के संचालक की ओर क्योंकि मेरी सहमति उन्हीं पर निर्भर थी। अन्तोन सेम्योनोविच ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा:

"समझा। कामरेड संचालक महोदय से मैं ख़ुद बात कर लूंगा। इस समय, माफ़ करना, तुम्हें सेम्योन, एक मिनट के लिए कमरे से बाहर जाना होगा... जा सकता है न, कामरेड संचालक महोदय?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं। जाओ," संचालक महोदय बोले।

मैं कमरे से बाहर निकलकर बरामदे में चला गया। बरामदे में चौकसीवाले सिपाही के साथ खड़े-खड़े मैं व्यंग्यात्मक भाव से सोचने लगा: "एक मिनट के लिए बाहर जाना होगा, सेम्योन। माफ़ करना..." क्या अजीब बात है, मेरी समझ से तो बाहर है। ये कुछ ऐसे शब्द थे जो मेरे सुनने में इससे पहले कभी नहीं आये थे। कुछ विचित्र-सा है यह आदमी।

थोड़ी देर बाद मुझे पुन: कमरे में बुलाया गया। अन्तोन सेम्योनोविच उठकर खड़े हो गये थे। और फिर तुरन्त संचालक की ओर मुड़कर कहने लगे: "तो फिर हम सीधे यहीं से चल सकते हैं?"

"हाँ, ज़रूर, जरूर," संचालक महोदय बोले। "पर देखना, कलाबालीन, होशियार रहना, वरना..."

"इसकी कोई जरूरत नहीं। सब कुछ ठीक हो जायेगा," बीच में ही मकारेन्को बोल उठे। "अच्छा, अलविदा। चलो, सेम्योन..."

जेलख़ाने के फाटक पूरे खुले और मैं अन्तोन सेम्योनोविच के साथ अपने जीवन की सर्वोत्तम राह पर निकल पड़ा।

दस साल बीत जाने पर जब मैं अन्तोन सेम्योनोविच का सहयोगी शिक्षक बन चुका था, उन्होंने मुझसे कहा:

"मैंने तुम्हें जेलख़ाने के संचालक के कमरे से तब बाहर इसलिए निकाला था जिससे तुम्हारी नज़र उस कागज़ पर न पड़े जो मैंने तुम्हारी ज़िम्मेदारी लेने के लिए हस्ताक्षर कर संचालक को दिया था। सम्भवत: यह कार्यपद्धति तुम्हारे आत्मसम्मान को चोट पहुँचा सकती थी।

मकारेन्को ने मुझमें छिपी उस इनसानियत को पहचान लिया था जिसका

तब मुझे स्वयं भी अहसास नहीं था। अन्तोन सेम्योनोविच ने मुझे इस रूप में अपना प्रथम स्नेहपूर्ण मानवीय स्पर्श प्रदान किया था।

जेलखाने से प्रांतीय जन-शिक्षा विभाग तक मैं अन्तोन सेम्योनोविच के आगे-आगे चलता रहा जिससे वे देख सकें कि मेरा उनके पास से भागने का कोई इरादा नहीं है। वे मेरे साथ-साथ चलते हुए कोलोनी के बारे में ही बातें किये जा रहे थे कि उसका संघटन करना कितना कठिन होता जा रहा है। इसके अलावा भी किसी और चीज़ का ज़िक्र उन्होंने छेड़ा, पर जेलखाने के बारे में, मेरे बारे में, मेरे अतीत के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा।

प्रांतीय जन-शिक्षा विभाग के फाटक पर पहुँचते ही उन्होंने कोलोनी के 'मलीश' नामक घोड़े की लगाम मुझे थमा दी। इससे तो मैं आश्चर्य में ही पड़ गया।

"तुम पढ़े-लिखे तो हो न, सेम्योन?"

"हाँ, हूँ।"

"तब तो अच्छी बात है।"

यह कहकर वहीं अपनी जेब से कुछ नोट निकालकर मुझे देते हुए वे बोले :

"मेहरबानी करके कुछ खाने-पीने का सामान ख़रीद लेना–डबलरोटी, घी, चीनी वग़ैरह। मेरे पास आज समय नहीं है। दफ़्तरों के चक्कर लगाने हैं। और असल बात तो यह है कि गोदाम का और तोलने-तालने के चक्कर का यह काम मुझे ज़्यादा पसंद भी नहीं। अक्सर ये सामान तोलनेवाले मुझसे सामान की तोल में या पैसों के लेन-देन में हेरा-फेरी कर जाते हैं। तुम्हारे साथ यह चक्कर नहीं होगा।"

और फिर मुझे कोई उत्तर देने का अवसर दिये बिना ही वे वहाँ से चल दिये। वाह रे, क्या लीला है यह! न मालूम क्या अन्त होगा इसका? मैंने अपनी गुद्दी खुजलाई। यह मस्तिष्क का वह स्थल है जहाँ जीवन की सबसे कठिन समस्याओं के समाधान जन्म लेते हैं। कैसे हो सकता है यह सब? सीधे जेल से निकले हुए व्यक्ति पर एकदम से इतना विश्वास कि जाओ डबलरोटी, चीनी वग़ैरह ले आओ। या हो सकता है स तरह मेरी परीक्षा ली जा रही हो। या छल? काफ़ी देर तक इन्हीं विचारों में डूबा हुआ खड़ा रहा और अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अन्तोन

सेम्योनोविच कुछ असामान्य से व्यक्ति हैं। वरना उस पर इतना अधिक विश्वास करने का क्या मतलब!

मैं जब गोदाम में पहुँचा तो कुछ अविश्वास के भाव से मुझसे पूछा गया:

"सामान आप ले जायेंगे क्या? पर आप हैं कौन?"

"बाद में पता चल जायेगा," अपने काग़ज़ात दिखाते हुए मैंने जवाब दिया।

सामान लेकर मैंने गाड़ी में लाद दिया। थोड़ी ही देर में अन्तोन सेम्ये-नोविच भी वापस आ गये। यह देखकर कि मैंने उनके निर्देशानुसार कार्य सम्पन्न कर लिया है, उन्हें अत्यन्त ख़ुशी हुई। उन्होंने घोड़ा गाड़ी में जो-ता और चलने के लिए संकेत किया।

आख़िर लगाम खींचने, चाबुक की मार, चीख़-चिल्लाहट और तिक-तिक की आवाज़ों से छत्तीस साला अलस भाव का अनुभवी घोड़ा अपने स्थान से खिसका। प्रांतीय जन-शिक्षा विभाग से अभी हम दो सौ मीटर की दूरी भी तय नहीं कर पाये थे कि अन्तोन सेम्येनोविच रुक गये और मुझसे कहने लगे:

"ओह! मुझसे भूल हो गयी। वहाँ लगता है सामान लेने में कुछ गड़बड़ हो गयी है। डबलरोटी के दो पैकेट ज़्यादा आ गये हैं। इन्हें वापस कर दो, वरना गोदामवाले पूरे रूस को सिर पर उठा लेंगे। मैं तुम्हारा यहीं पर इन्तज़ार करूँगा।"

शर्म से मेरे कान लाल हो गये। आख़िर ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसी शर्म तो पहले मुझे कभी महसूस नहीं हुई थी। गाड़ी से उतरकर मैंने पुआल के नीचे से डबलरोटी के अतिरिक्त दोनों पैकेट बाहर निकाले और गोदाम की ओर चल दिया। मस्तिष्क में विचार आ रहा था, आख़िर कैसा आद-मी है यह? ख़ुद ही कह रहा था कि तोल में गड़बड़ी कर मेरे साथ बेई-मानी करते हैं। मैंने बदला लेने के विचार से डबलरोटी के दो पैकेट उड़ा लिये तो कह रहा है: कृपा करके उन्हें वापस ले जाओ।

"शुक्रिया, युवा साथी," इन शब्दों के साथ मेरा गोदामवालों ने स्वागत किया। "हमने ऐसा ही सोचा था कि कहीं कोई ग़लतफ़हमी हो गयी है, बाद में सब ठीक हो जायेगा। नमस्कार। आपको याद रखेंगे।"

मैंने उन्हें अपनी घृणाभरी नज़रों से घूरकर देखा और वहाँ से तुरन्त खिसक गया।

"तुम बादामवाले बीज खाओगे?" अन्तोन सेम्योनोविच ने मेरे गाड़ी में बैठने के बाद कहा। "मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।"

डबलरोटीवाली घटना जैसे घटी ही न हो, उन्होंने ऐसा ही आभास दिया। मैंने तुझ पर विश्वास किया, अपनी ज़िम्मेदारी पर ख़तरा मोल लिया, तुझे जेलख़ाने से बाहर निकाला, और तूने एक डबलरोटी के लालच में मुझे नीचा दिखा दिया। ओह! कैसा तू..." ऐसा कहकर वे मुझे डाँट भी सकते थे।

पर उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा। मैं कहीं अपमानित महसूस न करूँ सम्भवत: इसी भय से उन्होंने बुद्धिमानी से काम लिया। वे चाहते थे कि मैं स्वयं ही अपने उस व्यवहार का पुर्नमूल्यांकन करूँ जो मुझे न्यायसंगत कार्य प्रतीत हुआ था। यदि उन्होंने मुझसे बुरा-भला कहा होता तो मैं उनके साथ कोलोनी तक पहुँचने से पहले ही फूट लेता।

अन्तोन सेम्योनोविच का ऐसा ही व्यवहार अन्य अवसरों पर भी रहा—असाधारण रूप से सतर्क, बुद्धिमत्तापूर्ण तथा निर्व्याज स्वत: स्फ़ूर्ती कभी-कभी वे अपने व्यवहार में किसी सिंहासनाच्युत शूरवीर के अनुपम हास्य का परिचय देते, तो कभी-कभी अत्यन्त कठोर होकर निर्मम रूप से दण्ड देने में भी नहीं चूकते थे। कभी-कभी तो उन्मत्त क्रोध का प्रदर्शन करने लगते ताकि यदि प्रारम्भिक अवस्था में अवयस्क लड़के में आत्मचेतना न भी जागे तो कम-से-कम भय ही उत्पन्न हो। प्रत्येक स्थिति में वे नये ढंग से पेश आते थे। उनकी कार्यवाही में विभिन्नता होती थी। उनकी किसी भी कार्यवाही में पुनरावर्त्तन का अभाव था। वे हृदय की सच्चाई के साथ काम करते थे, बिना किसी हिचकिचाहट के, कृत संकल्पता के साथ।

आज मुझे याद पड़ता है कि घरेलू दारू बनानेवालों के विरुद्ध जिहाद छेड़नेवालों में वे ही लड़के थे जिन्हें दारू पीना पसन्द था और जो उसमें किसी प्रकार की अपराधभावना महसूस नहीं करते थे। राहज़नी के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले विशिष्ट रात्रि दल में वे ही छात्र शामिल थे जिन्हें लूट-पाट में भाग लेने के कारण ही कोलोनी में लाया गया था। इस प्रकार की आदेशात्मक व्यवस्था हम सबके लिए आश्चर्य का विषय थी। केवल कई वर्ष

बीतने के बाद ही हमारी समझ में यह बात आयी कि एक बुद्धिमान भावनाशील व्यक्ति ने इस प्रकार के आदेशों से अपना विश्वास उन्हें सौंपा था। इस विश्वास के द्वारा अन्तोन सेम्योनोविच हम में सुप्त श्रेष्ठ मानवीय गुणों को जगा देना चाहते थे।

अन्तोन सेम्योनोविच के कमरे में हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती थी। कोलोनीवासी उनके पास केवल कोलोनी के सामूहिक जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को ही नहीं, वरन् अपनी कई अत्यन्त निजी समस्याओं को लेकर भी जाते थे। अपने पास आये हर व्यक्ति के साथ बात करने का समय अन्तोन सेम्योनोविच किसी प्रकार निकाल ही लेते थे। कभी वे आत्मीयता से पूरी गंभीरता के साथ किसी की बात सुनते तो कभी उनका केवल कोई चुटकुला सुनाना ही काम कर जाता था। उदाहरणत: मेरे साथ सन् १९२२ में एक क़िस्सा हो गया। हुआ यह कि मैं ओल्गा नाम की एक लड़की के प्रेम में पड़ गया। मैं अपने इस रहस्य को बताने के लिए धड़कते हृदय से अपने पिता तुल्य अन्तोन सेम्योनोविच के पास गया। मेरी बात सुनकर वे अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और मेरे कन्धे पर हाथ रखकर भावुक होकर कहने लगे:

"शुक्रिया तुम्हें, सेम्योन। तुमने यह ख़बर सुनाकर मुझे बहुत बड़ी ख़ुशी दी है। शुक्रिया!"

"वह कैसे, अन्तोन सेम्योनोविच?"

"पहली बात तो यह है कि तुमने मुझपर अपना विश्वास प्रकट किया। तुम्हारा प्रेम तुम्हारी निजी चीज़ थी। लोग हर तरह के होते हैं। किसी को अपना रहस्य बता दो तो वह सब के बीच ठठाकर हँसता हुआ तुम्हारे रहस्य का उद्घाटन कर देता है। मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं इसे अपने निजी रहस्य की तरह सहेज कर रखूँगा। (यहाँ मेरी आँखें उन्हें धन्यवाद भरी दृष्टि से देखने लगीं और वे अपनी बात जारी रखते रहे)। दूसरी बात यह है कि तुमने मेरे इस बात की पुष्टि कर दी कि तुम लोगों में कोई असाधारणता नहीं है। तुम भी ठीक वैसे ही लोग हो जैसे दूसरे हुआ करते हैं। प्रेम का चक्कर ही ऐसा है कि सभी उम्र के व्यक्ति इसके आगे सिर नवा लेते हैं, चाहे फिर वे मेरे जैसे आदमी ही क्यों न हों। स्पष्ट है कि तुम एक साधारण इनसान हो। अब तुम्हारे प्रेम के बारे में कुछ कहूँ। तुम प्यार में भद्दापन मत लाना, असत्यता या भटकन को कभी

मत आने देना। ईमानदार रहना और उसकी सतर्कता से रक्षा करना...

अन्तोन सेम्योनोविच ने मुझे डराया नहीं, मेरी भावनाओं का मज़ाक़ नहीं उड़ाया। मुझे न कोई झिड़की दी और न उदासीनता दिखाकर या कोई बहानेबाज़ी कर मेरी भावनाओं का अपमान किया।

सन् १६२४ की छुट्टियों में जब मैं कोलोनी में आया तो एक बच्चे अन्तोन सोलोव्येव ने मुझे बताया कि ओल्गा मुझे छोड़कर किसी और से शादी करने जा रही है। मैं दौड़ते हुए तीन किलोमीटर दूर उस गाँव में पहुँचा, जहाँ ओल्गा रहती थी। मैंने जो सुना, वह सच था।

कोलोनी में मैं शाम काफ़ी देर से आया और आते ही अन्तोन सेम्योनोविच के पास पहुँचा। मेरा चेहरा दर्द की मूर्त्ति बना हुआ था।

"क्या हुआ, सेम्योन? तबियत तो ठीक है न तुम्हारी?"

"नहीं मालूम। शायद ख़राब ही है।"

"तुम शयनागार में चले जाओ। मैं अभी येलीज़ावेता फ़्योदोरोवना को तुम्हारे पास भेजता हूँ।"

"कोई ज़रूरत नहीं है। येलीज़ावेता फ़्योदोरोवना मेरी कोई मदद नहीं कर सकती। ओल्गा मुझे छोड़कर किसी और से शादी कर रही है। इतवार को शादी है... हम कोलोनीवालों पर कोई विश्वास नहीं करता।"

"सच है क्या यह बात?"

"सच है। सब कुछ ख़त्म हो गया। मैं तो कहाँ सारे जीवन का सोचे बैठा था और यहाँ..."

मेरी रुलाई फूट गयी।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या हो गया। तीन महीने पहले मैं ओल्गा के पास गया था। वह तुमसे प्यार करती है। लगता है बात कुछ और है।"

"बात और क्या होती जब शादी तय हो गयी है तो। और मैं तो, अन्तोन सेम्योनोविच... आप मुझसे नाराज़ न हों और मेरा कुछ ख़याल न करें... मैं फाँसी लगा लूंगा!"

"तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या, सेम्योन?"

"दिमाग़ ठीक है, पर अब जिन्दा रहने की और इच्छा नहीं करती।"

"ठीक है, तो फिर लगा लो फाँसी! कूड़ा कहीं का! मेरी तो बस

एक प्रार्थना है तुमसे कि कोलोनी से कहीं दूर फाँसी लगाना ताकि तुम्हारी प्रेमपगी लाश की दुर्गन्ध हम तक न पहुँचे।"

अन्तोन सेम्योनोविच ने क्रोध के मारे मेज़ से कोई चीज़ ज़ोर से एक तरफ़ पटक मारी। उन्होंने कुछ ऐसे शब्दों में वह बात कही कि फाँसी लगाने की मेरी इच्छा तुरन्त ही हवा हो गयी। वे मेरे साथ सोफ़े पर बैठ गये और मेरे हृदय को अपनी मैत्री की गरमी से भर दिया। तत्पश्चात् मुझसे आँगन में जाकर खुले तारों भरे आकाश तले बैठकर अपने सुन्दर भविष्य के बारे में तथा उन लोगों के बारे में जो विश्वस्त हैं, सोचने की सलाह दी।

अन्तोन सेम्योनोविच एक अच्छे इनसान के गुणों से युक्त थे। उनका हृदय बड़ा विशाल था। उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता था। उनकी पुस्तक "जीवन की ओर" में काल्पनिक पात्र नहीं हैं। इस पुस्तक के सभी पात्र सचमुच में इस कोलोनी में रहा करते थे। लेखक ने कुछ नामों को भर बदला है। पुस्तक के अन्त में अन्तोन सेम्योनोविच अपने छात्रों के भविष्य की बात करते हैं। अतीत के वे सभी अनाश्रित, बेघर बाल अपराधी सही दिशा की ओर स्वयं को मोड़ लेते हैं। उन्होंने मजदूरों, इन्जीनियरों, कृषि-विशेषज्ञों, डाक्टरों, पाइलटों और शिक्षकों आदि का व्यवसाय अपना लिया। [उनमें से कई ने वयस्क होकर साम्यवादियों के रूप में मातृभूमि की रक्षा के महान युद्ध में बहादुरी के साथ दुश्मनों से मोर्चा लिया और अब अपने-अपने स्थानों पर स्थित होकर मातृभूमि के कल्याण हेतु श्रम कर रहे हैं। इवान ग्रिगोरिविच कोलोस जिन्हें इस पुस्तक में गोलोस का नाम दिया गया है, एक इन्जीनियर के रूप में मीनचोगोरस्क में काम कर रहे हैं। निकोलाइ फ़ोलोविच शेर्शनेव (वेर्शनेव)—वर्तमान में कोमसोमोल्स्क-ना आमूरे में डाक्टर हैं। पावेल पित्रोविच आरख़ान्गेल्स्की (ज़ादोरनोव)—इंजीनियर, लैफ़्टीनेन्ट कर्नल हैं। वसीली इल्लारिओनोविच कल्युश्निक (कल्युश्नेव) सोवियत सेना के एक सैनिक अधिकारी हैं। युद्ध के दौरान बहुतों की मृत्यु भी हो गयी। भयंकर रूप से घायल हो जाने के परिणामस्वरूप सन् १९५४ में लैफ़्टीनेन्ट कर्नल ग्रिगोरी इवानोविच सुप्रून (बुरून) की मृत्यु हो गयी।

अन्तोन सेम्योनोविच कहा करते थे: "एक इनसान में एक ही विशेषता होनी चाहिए—वह यह कि उसे एक बड़ा इनसान होना चाहिए,] एक

सच्चा इनसान।" स्वयं मकारेन्को इस विशेषता से पूर्ण रूप में युक्त थे और उनका पूरा प्रयास रहा कि उनके छात्रों में भी वह विशेषता आ जाये ...

सन् १९६० ई०

वीक्तर फ़ीन्क

संघर्ष का सुख

'जीवन की ओर' नामक पुस्तक के प्रकाशन के तुरन्त बाद ही प्रसिद्धि उनके चरण चूमने लगी। पर यह सामान्य साहित्यिक प्रसिद्धि नहीं थी। अन्तोन सेम्योनोविच से भेंट करने और उनके दैनिक जीवन को प्रत्यक्ष देखने के बाद मैंने जाना कि उनकी यह प्रसिद्धि उनके लिए कितनी कठिन और श्रमपूर्ण थी।

अनगिनत लोग अपनी विभिन्न समस्याओं को लेकर उनके पास आते थे। कुछ लोग उन्हें पत्र लिखते अथवा दूर-दराज के क्षेत्रों से स्वयं आकर उनके सम्मुख अपना दुःख-दर्द कहते और उनसे सलाह माँगते। पाठक को केवल पठित पृष्ठों की चमक ही सम्मोहित नहीं करती थी, लेखक का अपना निजी व्यक्तित्व, उसके जीवन के शौर्यपूर्ण कृत्य तथा हृदय की विलक्षणता भी उनके लिए आकर्षण का विषय थी।

अन्तोन सेम्योनोविच से मेरी भेंट सर्वप्रथम फ़रवरी १९३७ में मास्को में लावरुशीन्स्की मुहल्ले में हुए लेखक संघ की बैठक के दौरान हुई थी। उन्होंने तब शरीर पर एक सिपाही का कोट और सिर पर चमड़े की छज्जेदार टोपी पहन रखी थी। देखने में वे लगभग पचास साल के लगते थे। उनके चेहरे में ओज था, नाक लम्बी थी और सिर के बाल मशीन से बारीक कटे हुए थे। उनकी नाक पर चढ़े चश्मे के पीछे से दो कठोर आँखें झाँक रही थीं।

हम नज़दीकी पड़ोसी निकले। पहले ही परिचय में उन्होंने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। वे आश्चर्यजनक रूप से अपने निर्णय में स्पष्ट रहते

थे। किसी भी नवीन भाव के लिए वे चरमसीमा तक संवेदनशील थे जैसे किसी संगीतकार के कान संगीत के स्वरों के लिए रहते हैं।

सन् १९३७ के शरद् के उन्होंने "सुख" नाम से लेख छपवाया। उस लेख में साहित्य का वर्णन था। लेखक ने विश्व साहित्य को "मानवीय दुःखों के वहीखाते" की संज्ञा दी थी। उन्होंने पहले पहल इस तथ्य की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया कि दुनिया के किसी भी बड़े लेखक ने इस विषय पर चर्चा नहीं की। इसका कारण यह नहीं है कि इस पाप-पूर्ण धरती में सुख दुर्लभ चीज़ है। वस्तुतः इसका कारण विषयवस्तु के तकनीकी गुणों में अन्तर्हित है। मकारेन्को के कथनानुसार मानवीय सुख का साहित्य के लिए कभी कोई उपयोग नहीं रहा क्योंकि वह हमेशा क्षुद्र ही बना रहा। सामान्यतः यह सुख व्यक्तिगत स्तर पर ही सीमित रह गया। इसके अतरिक्त जुए में जीत की तरह यह आकस्मिक ही रहा। यह सुख साहित्य की विषयवस्तु इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि यह किसी को छू नहीं पाता था। केवल दुःख के कारण ही नायक को साहित्य में प्रवेश का अधिकार मिला। निष्कर्षस्वरूप श्री मकारेन्को ने अपने विचार का प्रतिपादन किया कि वैयक्तिक सुख साहित्य की विषवस्तु तभी बन सकता है, जब वह आकस्मिकता से मुक्त हो और स्वतन्त्र वर्गविहीन समाज के सामाजिक न्याय को अपने साथ लेकर चले।

श्री मकारेन्को के इस लेख को मैंने पेरिस में पढ़ा था। जब मैंने इस लेख का मौखिक अनुवाद पेरिस विश्वविद्यालय के अपने एक साथी को सुनाया तो उसने कहा:

"बड़े बेचैन जीव हैं आप लोग भी! आपको यही दिक़्क़त है कि दुनिया अपने स्थान पर टिकी हुई क्यों है? आख़िर आपको साहित्य की नींव खोदने की क्या पड़ी है?"

मैंने श्री मकारेन्को के दृष्टिकोण का पक्ष लेना शुरू किया पर उसने मुझे बीच में ही टोककर कहा:

"पक्ष लेने की कोई ज़रुरत नहीं है! लेखक पूरी तरह सही है, यह मैं स्वयं समझता हूँ। पर फिर भी ...तुम सोचो! हम इस बात के आदी हो चुके हैं कि हमारा ईश्वर संगमरमर का बना हुआ है और अनन्त है। पर लेखक की बात से वह सूखी मिट्टी की तरह झरकर रह जाता है।'

"अरे नहीं तो," मैंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा। "ईश्वर निश्चय ही संगमरमर से बना है। पर यह समय की बात है, मेरे प्यारे, कि संगमरमर तड़कने लगा है..."

पर वह मुझसे सहमत नहीं हो पाया।

"हमारा वह ईश्वर अभी हज़ारों साल तक बना रहता, अगर आप लोगों ने अड़ंगा नहीं लगाया होता तो! "वह चीख़ते हुए बोला...

मास्को लौटकर लेख के सम्बन्ध में मैंने श्री मकारेन्को से अपनी प्रशंसा व्यक्त की, पर सदा की भाँति मेरी प्रशंसा की भावना के बहाव को उन्होंने एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया और चतुरता भरी एक चमक आँखों में लाते हुए लेख के विषय में की गयी आलोचना की ओर उन्मुख हो गये।

"सुनिये तो सही, मैं ग़लत कहाँ पर हूँ?" अपनी बात शुरू करते हुए उन्होंने कहा। "आप विश्व साहित्य की एक रचना, मात्र किसी एक रचना का नाम तो लीजिये जिसमें वैयक्तिक सुख का वर्णन किया गया हो। क्यों, चुप हो गये न? नहीं हैं ऐसी रचनाएँ। सोचते हैं कि पुश्किन ने सौभाग्यपूर्ण सफल सुखी प्रेम का इस लिए वर्णन नहीं किया क्योंकि ल्येन्स्की की द्वन्द्वयुद्ध में मृत्यु हो गयी थी और अन्येगिन ने स्वयं अपनी मूर्खता से तत्याना को खो दिया था ... या आपका ख़याल है कि पुश्किन ने अपने जीवन में एक भी सुखी विवाह के दर्शन नहीं किये! .. सच बात यह है कि इस प्रकार के सीमित सुख के वर्णन से कोई भी साहित्यकार किसी साहित्यिक कृति का निर्माण नहीं कर सकता ... उदाहरण के लिए तालस्ताय को ही लीजिये। जब तक प्यौत्र बेज़ूख़ोव सुन्दरी एलेन के साथ विवाह करके दुःखी रहा, तालस्ताय उनके सूत्र को थामे रहा पर जैसे ही प्यौत्र नताशा रोस्तोवा के साथ विवाह कर सुख का अनुभव करने लगता है तो तालस्ताय वहीं पर उसे छोड़ देते हैं। उन्हें ऐसे सुख को लेकर करना भी क्या है? आख़िर वह दासस्वामियों का शर्मनाक सुख ही तो है..

एक बार अन्तोन सेम्योनोविच ने मास्को विश्वविद्यालय में "आख़िर इनसान में कमियाँ क्यों हों?" नामक विषय पर एक भाषण दिया।

उस भाषण का निष्कर्ष यह था कि लोगों में छोटे-छोटे अनन्त दोष होते हैं जिनके लिए कोई सज़ा नहीं दी जाती। हो सकता है फ़लाँ-फ़लाँ सम्मानित साथी बकवास करता है, शेखी बघारता है, अपहर्ता है, क्षुद्र

प्रकृति का है, रूखा है, या अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ घमण्ड से पेश आता है, पर आप उसके बारे में हमेशा सुनेंगे: "वह बड़ा शानदार काम करनेवाला है! जहाँ तक इन कमियों का प्रश्न है तो भाई, कमियाँ किस में नहीं होतीं? हर एक की अपनी-अपनी कमी होती है।"

इस स्थल पर मकारेन्को अप्रत्याशित रूप से पूछ लेते हैं:

"आख़िर लोगों को कमियाँ अपने साथ चिपटा लेने की क्या ज़रूरत होती है? बिना अपनी डींग हाँके या ओछापन दिखाये क्या कोई अच्छा काम नहीं कर सकता? .."

"उस कोल्का का मुझे बहुत दुःख हो, रहा है," अपने एक भूतपूर्व छात्र का पत्र पाकर वे मुझसे बोले थे। उनका वह छात्र अनाश्रित था, बाद में डाक्टर बनकर काम कर रहा था। उसकी शिकायत थी कि चारों ओर मूर्ख ही मूर्ख भरे पड़े हैं।

"इस तरह की बात भी तुमने कहीं सुनी कि मूर्ख ही मूर्ख हैं चारों तरफ़।" मकारेन्को ने जारी रखा। "अब आप ही बताइये कि अगर क्रांति का आगमन न होता तो मेरे इस कोल्का के साथ क्या बीतती?"

"नहीं मालूम। भला मैं कहाँ से जान सकता हूँ।"

"बहुत आसानी से जान सकते हैं। कहीं किसी छोटी-मोटी जगह में पड़ा-पड़ा अंगूठा चूस रहा होता, ख़ुद भूखों रहता और इसका उसे अहसास तक नहीं होता। इतनी बुद्धि ही उसके पास नहीं होती कि इस बात को महसूस कर उद्वेलित होता। और शायद सुखी ही होता... पर मज़े की बात यह है कि क्या अब वह उस तरह के सुख से सहमत हो पाता?"

"इसका मतलब यह है कि आपके मत में सुख के कई प्रकार होते हैं?" मैंने ज़रा सतर्कता से प्रश्न किया।

मकारेन्को के होंठों में मुस्कराहट फैल गयी।

"अच्छा सोचा आपने भी! निश्चित ही कई प्रकार होते हैं। काम का सुख होता है, प्रकृति के विरुद्ध संघर्ष का सुख होता है या फिर बुरी समाज व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष का, अथवा नीच व्यक्तियों से लड़ने का। यह सुख बड़ा कष्टकर कठिन और बेचैन करनेवाला होता है। इस सुख में निरन्तर खरोंच और गाँठ लगी रहती है। पर ज़रा ध्यान दीजिये कि इसी प्रकार के सुख पर दुनिया टिकी हुई है... हाँ, एक सुख और है

व्यक्ति का शान्त भाव का सुख। यह उस व्यक्ति का सुख है जो पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है और जिसे किसी चीज़ की कोई इच्छा नहीं रहती।

"तो फिर क्या है," मैंने कहा। "हर व्यक्ति अपने-अपने अनुसार सुखी हो सकता है।"

उन्होंने मेरी ओर बड़ी विचित्र दृष्टि से देखा। उनको लगा कि सम्भवत: मैं व्यक्ति के शान्त भाव के उस सुख का समर्थन कर रहा हूँ जिसमें कहीं कोई इच्छा ही नहीं होती। इसके विचार मात्र से ही उन्हें बोरियत महसूस होने लगी और मेरी ओर देखे बिना ही अलस भाव से बोले:

"हम्......ज़रूर!"

और फिर अपनी भाषा में उक्राइनी पुट, जो कभी-कभार उत्तेजना की अवस्था में उनकी भाषा में आ ही जाता है, लाते हुए बोले:

"पर यह सुख निम्न कोटि का सुख है!.."

वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें श्रम से अत्यन्त लगाव था। प्रारम्भ में मुझे लगा था कि यह मात्र उनके चरित्र का एक लक्षण है। पर बाद में श्रम के प्रति उनके इस लगाव की एक नयी ही व्याख्या मुझे मिली: आदमी को बहुत कुछ करना चाहिए, पर वह अपने जीवन की नश्वरता को जानता है, अतएव मौत से भेंट करने से पूर्व उसे तेज़ी से अपने कार्य पटा निपटा लेने चाहिए...*

सन् १९६० ई०

---

* इन लेखों का अनुवाद दिवेन्द्र किशोर जोशी ने किया है।

पहला भाग

१. प्रांतीय जन-शिक्षा विभाग के अध्यक्ष से वार्त्तालाप

सितम्बर सन् १६२० में प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्क्ष ने मुझे बुलाया।

"देखो, मेरे मित्र," उन्होंने कहा, "पता चला है कि तुम यह क्या नाम कहें... एक तूफ़ान खड़ा कर रहे हो ... उस जगह को लेकर जो... जो प्रान्तीय राष्ट्रीय अर्थनीति परिषद भवन में तुम्हारे स्कूल के लिए निश्चित की गई है!"

"तूफ़ान नहीं खड़ा होगा तो और क्या होगा," मैंने जवाब दिया। "ऊंह, तूफ़ान खड़ा करने की तो बात क्या है? जी तो यह चाहता है कि बैठकर पूरा हो-हल्ला मचाया जाए। श्रम-स्कूल क्या ऐसा ही होता है? सड़ांध और गंदगी से भरा वह दरबा? स्कूल के बारे में क्या आपकी यही कल्पना है?"

"हां, हां, मैं जानता हूं कि तुम क्या चाहते हो। यह कि हम एक नयी इमारत खड़ी करें, नये-नये डेस्कों से उसे सजाएं, और तुम बस हाथ हिलाते हुए आओ और अपना जौहर दिखाना शुरू कर दो। लेकिन, मेरे मित्र, महत्त्व की चीज़ इमारत नहीं है, महत्त्व की चीज़ है नये मानव का निर्माण करना। और शिक्षा-क्षेत्र के तुम लोग हो कि बस हाय-तोबा मचाना जानते हो—'इमारत किसी काम की नहीं, मेज़ ठीक नहीं!' तुम में, जानते हो, वह... क्या नाम कहें... कर्तव्य भावना, क्रांतिकारी भावना... नहीं है। तुम बस निरे सफ़ेदपोश मज़दूर हो!"

"जो हो पर मैं सफ़ेदपोश छैल-छबीला नहीं हूँ।"

"अच्छी बात, छैल-छबीले तुम नहीं हो! लेकिन तुम सभी बुद्धिजी-

वी, दीमकों का एक अच्छा-ख़ासा तांता हो। मैं हूं कि आदमी की खोज में आकाश-पाताल एक किए दे रहा हूं। कितना महान काम हमें करना है! बिना घर-बार के ये लड़के इतने बढ़ और फैल गए हैं कि उनके मारे बाज़ार में चलना दूभर हो रहा है, यहां तक कि वे घरों में भी सेंध लगाने से भी नहीं चूकते। कुछ कहो तो टका-सा जवाब मिलता है: "यह आप-का काम है, यह जन-शिक्षा विभाग की ज़िम्मेदारी है . . . "

"ठीक है, तो इससे क्या?"

"'इससे क्या' का क्या मतलब ?"

"तुम ख़ूब जानते हो कि इस 'क्या' का क्या मतलब है। इसकी ज़ि-म्मेदारी कोई लेना नहीं चाहता। जिससे पूछता हूँ, पलट कर यही जवाब देता है: 'नहीं, हमें बख़्शो,—हम अपना सिर ओखली में नहीं देना चा-हते!" तुम सब लोगों को तो बस आरामदेह अध्ययन-कक्ष और जान से प्यारी अपनी किताबें चाहिएं . . . तुम और तुम्हारी नाक पर चढ़े ये चश्मे! . . "

मैं हंसा।

"तो अब मेरे चश्मे की बारी है!"

"हां, ठीक यही, तुम लोग सिर्फ़ अपनी किताबों से लिपटे रहना चा-हते हो, और कभी जब जीते-जागते सचमुच के मानव से मुठभेड़ हो जा-ती है तो तुम बस चीख़ने लगते हो: 'अरे तुम्हारा वह जीता-जागता मा-नव मेरी गरदन साफ़ कर देगा!' ओह, तुम बुद्धिजीवी!"

प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष ने ग़ुस्से से दमकती अपनी छोटी-छोटी काली आँखों से मुझे बींधना और समुद्री घोड़े की-सी अपनी मूँछों के भीतर से शिक्षकों की समूची बिरादरी पर अभिशापों की बौछार करना जारी रखा। लेकिन वे, प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष, ग़लती पर थे।

"लेकिन ज़रा सुनिए तो!" मैं ने कहना चाहा।

"सुनकर क्या होगा? तुम्हारे पास बताने के लिए कुछ हो तब न? मैं जानता हूं कि तुम क्या कहने जा रहे हो: 'अगर हम वैसा ही कुछ कर पाते जैसा वहाँ . . . क्या नाम कहें अमरीका में . . . किया जाता है! . . ' अभी हाल ही में उस सम्बन्ध में मैंने एक पुस्तक पढ़ी है, जाने कौन पटक गया था उसे मेरे पास। सुधार . . . भला, क्या कहते हो

उन्हें? ओह, याद आया, सुधार-गृह! हां तो हमारे यहां अभी तक वैसा कुछ नहीं है।"

"लेकिन मुझे भी तो कुछ कहने दीजिये!"

"अच्छी बात है, कहो, मैं सुन रहा हूं।"

"क्रांति से पहले छुट्टा आवारा लड़कों से सुलझने के कुछ तरीक़े थे, क्यों, थे न? बाल-अपराधियों को सुधारने के लिए उनकी कोलोनी ..."

"उनसे हमारा काम नहीं चल सकता। क्रान्ति से पहले उनके पास जो था, वह हमारे मतलब का नहीं हो सकता!"

"ठीक, बिलकुल ठीक। इसका मतलब यह कि नये मानव का निर्माण करने के लिए नये तरीक़े हमें खोजने होंगे।"

"नये तरीक़े! हां, तुम्हारी यह बात ठीक है।"

"पर यह कोई नहीं जानता कि शुरुआत कहाँ से की जाये।"

"और यह ख़ुद तुम भी नहीं जानते?"

"हां, मैं भी नहीं जानता।"

"लेकिन यहां, इस प्रान्तीय जन-शिक्षा विभाग में ही, कुछ लोग हैं जो यह जानते हैं।"

"लेकिन इस बारे में वे लोग एक तिनका तक नहीं हिलाना चाहते!"

"ठीक कहते हो तुम। वे कुछ नहीं करना चाहते, नासपीटे!"

"और अगर मैं इस काम को उठाऊं तो वे मेरी जान को आ जाएंगे। मैं कुछ भी करूं, वे कहेंगे: 'यह भी कोई तरीक़ा है?,"

"सो तो वे करेंगे ही-सूअर की औलाद! ठीक कहते हो तुम।"

"और आप भी उनका ही विश्वास करेंगे, मेरा नहीं!"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं उनसे कहूंगा: 'कि ख़ुद तुम्हीं कुछ करके दिखाते!"

"और अगर, मान लो मुझसे सचमुच गड़बड़ हो जाय तो?"

प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष के घूंसे से मेज़ झनझना उठी।

"तुम और तुम्हारा यह 'गड़बड़ पुराण'। आख़िर तुम्हारा उद्देश्य क्या है? क्या तुम्हारा ख़याल है कि मैं कुछ नहीं समझता? गड़बड़ हो या न हो, काम करना ही होगा। नतीजों से हम उसकी परख करेंगे। मुख्य

चीज़ बाल-अपराधियों की एक बस्ती खड़ी कर देना भर नहीं है, बल्कि—तुम जानते ही हो कि—भई ... उन्हें फिर से सामाजिक शिक्षा देनी है। हमें नये मानव का—तुम जानते हो, अपने ढंग के मानव का—निर्माण करना है। यही तुम्हारा काम है। जो हो, हमें अभी बहुत कुछ सीखना और जानना है। तुम्हारे साथ भी यही बात है। मुझे यह अच्छा लगा कि तुमने साफ़-साफ़ कह दिया: 'मैं नहीं जानता।' हां तो फिर?"

"क्या आप कोई जगह दे सकते हैं? आख़िर, आप जानते ही हैं, इमारत के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।"

"जगह है। बहुत शानदार जगह, मेरे बुज़ुर्ग दोस्त! पहले भी वहां, ठीक उसी जगह, बाल-अपराधियों को सुधारने की एक कोलोनी हुआ करती थी। काफ़ी नज़दीक है—यहां से क़रीब तीन मील। बहुत ही बढ़िया—जंगल है, खेत हैं ... गाय तो तुम रखोगे ही!"

"और आदमी?"

"तुम्हारी समझ में शायद वे भी मेरी जेब में मौजूद हैं! जो हो, तुम्हें एक कार भी चाहिए, क्यों?"

"और पूंजी?"

"पूंजी हमारे पास है, यह देखो!"

और उन्होंने अपनी मेज़ की दराज़ से नोटों की एक गड्डी बाहर निकाली।

"पूरे पन्द्रह सौ लाख। यह सब तरह के संगठन सम्बन्धी ख़र्चों, ज़रूरत की मेज़-कुर्सियों तथा मरम्मत के लिए काफ़ी होगा।"

"गायों के लिए भी हो जाएगा क्या इससे?"

"गायों को बाद में देखा जाएग। अभी तो वहां खिड़कियों में शीशे तक नहीं हैं। अगले वर्ष के लिए तुम एक तख़मीना तैयार कर डालो।"

"लेकिन यह जाने क्यों, कुछ अटपटा-सा मालूम होता है। क्या यह अच्छा न होगा कि पहले जाकर एक नज़र उस जगह को देख लिया जाए?"

"उसे मैं देख चुका हूं। क्या तुम समझते हो कि तुम वहां मुझ से कुछ ज़्यादा देख सकोगे? बोरिया-बिस्तर बांधकर वहां पहुंच जाओ और बस।"

"अच्छी बात है," सन्तोष की सांस लेते हुए मैंने कहा। कारण, मेरे मन में यह बात उस क्षण बठ गई थी कि चाहे जो हो, प्रान्तीय अर्थनीति-परिषद् के कमरों से बदतर जगह अन्य कोई नहीं हो सकती।

"तक़दीर के तुम सिकन्दर हो," प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष ने कहा, "बस, अब आगे बढ़ो! काम बड़े पुण्य का है।"

२. गोर्की कोलोनी की मलिन शुरुआत

पोल्तावा से तीन मील दूर, रेतीली पहाड़ियों को फोड़कर क़रीब दो सौ हैक्टर की भूमि में सनोवर का एक जंगल उगा है, जिसकी सीमा पर ख़ारकोव जानेवाले राज-पथ के चौकोर चिकने पत्थर हमेशा चमचमाते नज़र आते हैं।

इसी जंगल के बीच चालीस हैक्टर खुली जगह के एक कोने में, एक-दूसरे से होड़ लेतीं सुडौल पक्की इमारतों का एक समूह पूर्ण चौरस का निर्माण करता है। यहीं पर बाल अपराधियों की नयी कोलोनी आबाद होने को है।

रेतीला ढलवां अहाता, झील तक जानेवाले वनमार्ग के साथ घुल-मिल गया है। झील नरकट-सरकंडों से घिरी है। उसके दूसरे किनारे किसी धनी किसान-कुलक के गांव के मकान और बाड़े के टट्टर नज़र आते हैं। इनसे भी परे, आकाश की पृष्ठ-भूमि में, पुराने बर्च वृक्षों की एक पांत और दो-चार फूस की झोंपड़ियां दिखाई पड़ती हैं।

क्रांति से पहले यहां बाल-अपराधियों की एक बस्ती थीं, लेकिन १९१७ में इसके सारे निवासी चम्पत हो गए और शिक्षा-प्रणाली के अत्यन्त धुंधले अवशेषों के सिवा अन्य कुछ उन्होंने बाक़ी नहीं छोड़ा। फटे-पुराने रेजिस्टरों को देखने से मालूम होता है कि मुख्यतया अवकाश-प्राप्त ग़ैर-कमीशन अफ़सरों में से ही शिक्षकों को भर्ती किया जाता था और उनका मुख्य काम यह था कि चाहे खेल का समय हो अथवा काम का, छात्रों को एक क्षण के लिए भी अपनी आंखों से ओझल न होने दें, और रात को उनकी

बग़ल में पासवाले कमरे में सोएं। स्थानीय किसानों की बातों से मालूम हुआ कि शिक्षा के उनके तरीक़े भी कोई ऐसे गूढ़ नहीं थे। असल में, वे शिक्षा के सबसे सरल यंत्र—बेंत तक सीमित थे।

पुरानी बस्ती की सामग्रियों के अवशेषों के दर्शन तो और भी दुर्लभ थे। फ़र्नीचर, स्टोर, वर्कशाप के औज़ारों के नाम की हर चीज़, जो भी उनके हाथ लगी, उसे आसपास के लोग उठवाकर और गाड़ियों में लदवाकर अपने-अपने झोंपड़ों और खेत खलिहानों में ले गए। अन्य क़ीमती सामान के साथ-साथ बग़ीचे तक को उन्होंने साफ़ कर दिया। लेकिन इस सब में अंधी लूट-मार का ज़रा भी चिन्ह नज़र नहीं आता था। फ़सल के पेड़ों को काट-काटकर उन्होंने बराबर नहीं किया, बल्कि उन्हें सीधे जड़ समेत उखाड़कर अन्य कहीं रोप दिया था। खिड़कियों के पल्लों को उन्होंने तोड़ा नहीं था, दरवाज़ों को कुल्हाड़ी की बेरहम चोटों से उन्होंने घायल नहीं किया था बल्कि सावधानी के साथ उन्हें चौखटों से अलग कर चूल में से उतार लिया था। इसी प्रकार भट्टियों को क़ायदे से एक-एक ईंट करके वे यहां से उठा ले गए थे। फ़र्नीचर नाम की केवल एक ही चीज़ उन्होंने बाक़ी छोड़ी थी। वह थी एक अलमारी, जो भूतपूर्व डाइरेक्टर के कमरे में रखी थी।

"यह अलमारी कसे बच रही?" मैंने पड़ोसी लूका सेम्योनोविच बेर-ख़ोला से, जो नय मालिकों पर एक नज़र डालने के लिए घर से चला आया था, पूछा।

"हां तो, आप ही बताएं, इस अलमारी का हम लोग भला क्या करते? इतनी ऊंची और इतनी चौड़ी, कि झोंपड़े के दरवाज़ों में घुसती ही नहीं। और यह ऐसी चीज़ भी नहीं जिसका एक-एक हिस्सा काटकर ले जाते।"

सायबान दुनिया-भर की अल्लम-गल्लम चीज़ों से भरे पड़े थे, लेकिन उनमें काम की चीज एक भी नहीं थी। मैंने सरगर्मी से सुराग़ लगाया और अभी हाल में चुराई गई कुछ चीज़ें खोज निकालीं। इस प्रकार मैंने ये चीज़ें प्राप्त कीं: एक पुराना बीज-ड्रिल, आठ चरमराते-से बढ़ई के बेंच, एक पीतल का घंटा, तीस साल का बूढ़ा एक 'क़िरग़िज़' घोड़ा जो कभी ख़ूब तेज़-तर्रार था।

जब मैं लौटा तो उस समय सप्लाई-मैनेजर कालीना इवानोविच भी मौक़े पर मौजूद थे। मुझे देखते ही उन्होंने पूछा:

"क्या आप ही यहां के शिक्षा-संचालक हैं?"

मुझे यह भांपते देर नहीं लगी कि कालीना इवानोविच उक्राइनी लहजे से बोलते हैं, हालांकि वे सिद्धान्ततः उक्राइनी भाषा को मानने से इन्कार करते थे। उनके शब्द-भण्डार में उक्राइनी शब्दों की कमी नहीं थी, और दक्खिनी ढंग से वह 'ग' का 'ह' के रूप में उच्चारण करते थे।

"तो क्या आप ही यहां के शिक्षा-संचालक हैं?"

"मैं? हां, मैं बस्ती का संचालक हूं..."

"नहीं, आप कोलोनी के संचालक नहीं हैं," अपने पाइप को मुंह से अलग करते हुए उन्होंने कहा, "आप शिक्षा-संचालक हैं, और मैं सप्लाई-मैनेजर।"

व्रूबेल कृत 'पान'—का चित्र अपनी कल्पना में ज़रा मूर्त्त कीजिए, लेकिन इस अन्तर के साथ कि उसका सिर एकदम सफ़ाचट है, केवल दोनों कानों के ऊपर बालों का एक-एक गुच्छा नज़र आता है। साथ ही पान की बकरे-नुमा दाढ़ी को भी साफ़ कर दीजिए, उसकी मूंछों को छांटकर पादरियों जैसी बना दीजिए और उसके दांतों के बीच पाइप की डंडी खोंस दीजिए,—बस अब पान कालीना इवानोविच सेरद्युक का रूप धारण कर लेगा। बहुप्रतिभावाले इस अद्भुत व्यक्ति की तुलना में बच्चों की बस्ती के सप्लाई-मैनेजर का पद बहुत ही मामूली मालूम होता था। अपनी आयु के क़रीब पचास साल वह पार कर चुका था और इन सालों में अत्यन्त विविध हलचलों में से वह गुज़रा था। अपने जीवन के केवल दो पहलुओं का वह बड़े गर्व के साथ उल्लेख करता था—एक तो अपनी युवावस्था का, जबकि वह गार्डों की केक्सहोल्म पैदल रेजीमेण्ट में प्राइवेट सैनिक था, दूसरे उस दौर का जब, १९१८ में, जर्मन आक्रमण के दौरान उसकी निगरानी में मीर्गोरोद को ख़ाली किया गया था।

कालीना इवानोविच मेरे शैक्षिक उत्साह का प्रथम पात्र—पहली कसौटी—बन गया। उसके विचारों की प्रचुरता और विविधता मेरी सब से बड़ी मुसीबत थी। बिना किसी भेद-भाव के, पूरे जोम में आकर, वह बुर्जुओं और बोल्शेविकों को, रूसियों और यहूदियों को, रूसियों के ढीलेपन और

जर्मनों के समय की पाबन्दी को, जहन्नुम रसीद करता था। लेकिन उस-की नीली आंखें जीवन की ज्योति से कुछ ऐसी चमकती थीं, और वह कुछ इतना तत्पर तथा जीवन से इतना ओतप्रोत मालूम होता था कि उसे लेकर अपनी शैक्षिक सामर्थ्य का थोड़ा अपव्यय करना मुझे नहीं अख-रा। पहले दिन से ही—बल्कि उस घड़ी से जब पहली बार मेरी उससे मुठभेड़ हुई—मैंने उसे अपनी शिक्षा का क—ख—ग—घ सिखाना शुरू कर दिया।

"कामरेड सेरद्युक, निश्चय ही आप ऐसा नहीं समझते कि बिना संचा-लक के बस्ती का काम चल सकता है! आख़िर, कोई एक ऐसा भी हो-ना चाहिए जो हर चीज़ के लिए जिम्मेदारी ले सके।"

कालीना इवानोविच ने फिर अपने मुंह से पाइप हटाया और अदब के अन्दाज़ में अपने सिर को मेरी ओर थोड़ा झुकाते हुए बोला:

"सो आप कोलोनी का संचालक बनना चाहते हैं? और चाहते हैं कि मैं, जैसा कि कहते हैं, मातहत की तरह आपके दरबार में हाज़िर हुआ करूं?"

"कोई ज़रूरत नहीं! अगर आपको ज़्यादा पसन्द हो तो मैं ही आपका मातहत बन सकता हूं।"

"हुं:, लेकिन शिक्षण-विज्ञान से मेरा कभी वास्ता नहीं रहा। अधि-कार से जो मेरा नहीं है, मैं उसका दावा नहीं करता। फिर भी, आप निरे युवक हैं और चाहते हैं कि मुझ जैसा बूढ़ा आदमी आपके इशारों पर नाचे। सो, यह कुछ जंचता नहीं। लेकिन मैं किताबी ज्ञान का इतना धनी नहीं हूं कि कोलोनी का संचालक बन सकूं,—इसके अलावा, मैं संचा-लक बनना भी नहीं चाहता।"

कालीना इवानोविच मुंह फुलाए वहां से खिसक गया। सारे दिन उस-पर एक उदासी-सी छाई रही। और सांझ को—एकदम खण्डित हृदय, उसने मेरे कमरे में पांव रखा।

"एक पलंग और एक मेज़ मैंने यहां रखवा दी है। इनसे और अच्छी मुझे मिल नहीं सकीं," उसने कहा।

"धन्यवाद।"

"मैं बराबर सोचता और सिर खपाता रहा कि इस बस्ती के बारे में

हमें कैसे और क्या करना चाहिए। और मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि अच्छा यही होगा कि आप संचालक हों और मैं, जैसा कि कहते हैं, आप का मातहत!"

"कोई हर्ज नहीं, कालीना इवानोविच। हम अच्छी तरह निभा ले जायेंगे।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं। आख़िर, जूते पर तल्ला चढ़ाने के लिए ख़ास प्रतिभा की ज़रूरत तो होती नहीं। हम निभा ले जाएंगे। और आप, पढ़े-लिख आदमी होने के कारण,—जैसा कि कहते हैं—संचालक रहेंगे।"

हमने अपने काम की बागडोर संभालनी शुरू की। तीस-साला घोड़े को बड़ी सावधानी से टेक देकर... पांवों पर खड़ा किया गया। पड़ोसियों में से एक ने, दया करके, फिटन जैसी एक ढचरा गाड़ी दे दी थी। कालीना इवानोविच उसमें सवार हो गया और समूचा तामझाम, जो देखते ही बनता था, डेढ़ मील की घंटा की रफ़्तार से नगर के लिए रवाना हो गया। हमारे संगठन-काल का श्रीगणेश हो गया।

संगठन-काल के लिए हमने अपने सामने बहुत ही उपयुक्त काम रखा था। यही, कि नये मानव के निर्माण के लिए आवश्यक साधन-सामग्री जुटायें। शुरू के दो महीनों तक कालीना इवानोविच और मैं दिन-दिन भर नगर की धूल छानते; वह गाड़ी पर, मैं पैदल। पैदल चलना वह अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता था, और उस 'क़िरग़िज़' घोड़े की चींटी-चाल मेरे लिए बरदाश्त के बाहर की बात थी।

इन दो महीनों के भीतर, गांव के कारीगरों की मदद से, पुरानी बस्ती की एक बैरक को ठीक-ठाक कर लिया गया। खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए गए, भट्टियों की मरम्मत हुई, चूलों में नये दरवाज़े फिर कर दिए गए। 'बाहरी मोर्चे' पर हमने सिर्फ़ एक विजय प्राप्त की, लेकिन यह उल्लेखनीय विजय थी: प्रथम रिज़र्व सेना के खाद्य-कमिसरियट से हम डेढ़ सौ पूड राई का आटा झटक लाए। साधन-सामग्रियों के संचय के नाम पर, कुल मिलाकर बस इतना ही हम जुटा पाए।

लेकिन भौतिक संस्कृति के क्षेत्र में अपने आदर्शों से इसकी तुलना करने पर मैंने साफ़ अनुभव किया कि अगर मैंने इससे सौ गुना अधिक उपलब्ध किया होता, तब भी मैं अपने लक्ष्य से उतना ही ओछा रहता। सो,

होनहार के आगे सिर झुकाते हुए, मैंने संगठन-काल के अन्त का एलान कर दिया। कालीना इवानाविच भी इसमें मुझसे एकदम सहमत था।

"इससे ज़्यादा पाने की हम यहां उम्मीद भी कैसे कर सकते हैं," उसने कहा, "जबकि ख़ून चूसनेवाले ये लोग सिवा सिगरेट लाइटरों के और कुछ पैदा नहीं कर सकते? पहले तो वे ज़मीन को बंजर बना डालते हैं, और फिर हमसे कहते हैं कि 'संगठन' करो! हमें भी वही करना होगा जो इल्या मुरोमेत्स ने किया था!"

"इल्या मुरोमेत्स?"

"हां, इल्या मुरोमेत्स! शायद तुमने उसका क़िस्सा सुना हो। उन्होंने उसे बोगातिर–हीरो बना डाला है। हरामी कहीं के! लेकिन मैं कहता हूं वह निरा आवारा था, एकदम लफ़ंगा, ग्रीष्म में स्लेज-गाड़ी में विहार करनेवाला!"

"ठीक, ऐसा ही सही। हम मुरोमेत्स का चोला धारण करेंगे। कौन जाने, हमें जहन्नुम की भी सैर करनी पड़े। लेकिन सोलोवेई राज-पथ का डाकू कौन बनेगा?"

"चिन्ता न करो। उनकी भी कोई कमी नहीं रहेगी।"

बस्ती में दो शिक्षिकाएं–येकातेरिना ग्रिगोरियेवना और लीदिया पेत्रोवना आ गईं। तब तक शिक्षकों की ओर से मैं क़रीब-क़रीब निराश हो चुका था। हमारे इस जंगल में आकर नये मानव का निर्माण करने के काम में जुटने के लिए कोई व्यग्र नज़र नहीं आता था। हमारे 'आवारों' से सभी डरते थे और कोई यह विश्वास नहीं करता था कि हमारी योजनाएं किसी काम की होंगी। और तभी एक दिन, देहाती स्कूल-शिक्षकों की एक कान्फ़्रेन्स में, अपनी वाक्-शक्ति से लोगों को जिस समय मैं समझाने का प्रयास कर रहा था, तभी दो जीते-जागते वास्तविक जीव आगे बढ़ आए। ख़ुशी की बात यह थी कि दोनों स्त्रियां थीं। मुझे ऐसा लगा कि अपने संस्थान को सुचारु रूप से चलाने के लिए ठीक इसी की–स्त्रियों के उत्थानमूलक प्रभाव की–आवश्यकता थी।

लीदिया पेत्रोवना बहुत कम-उम्र थी–स्कूली उम्र भी उसने मुश्किल से ही पार की थी। अभी उसने केवल हाई-स्कूल की परीक्षा पास की थी और मां के घोंसले को छोड़कर एकदम ताज़ा-ताज़ा चली आई थी। प्रा-

न्तीय जन-शिक्षा विभाग के प्रमुख अध्यक्ष ने, उसके प्रार्थना-पत्र पर दस्त-ख़त करते-करते मुझसे पूछा :

"इस जैसी लड़की का भला तुम क्या करोगे? वह तो एकदम कोरी है।"

"यह ठीक वैसी ही जिसकी टोह में मैं था। आप शायद नहीं जानते, मैं कभी-कभी सोचता हूं कि किताबी ज्ञान फिलहाल मुख्य चीज़ नहीं है। लिदोच्का एक अछूती नन्ही लड़की है। ख़मीर उठाने में वह लाग का काम देगी।"

"ऐसा तो नहीं कि कहीं तुम दून की सोच रहे हो? अच्छी बात है, मैं दस्तख़त किए देता हूं।"

उसके विपरीत येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, अनुभव में पगी शिक्षिका थी। उम्र में वह भी यों लिदोच्का से कुछ ज़्यादा बड़ी न थी, लेकिन लिदोच्का उसके दामन से ऐसे चिपकी रहती जैसे बच्चा अपनी मां से चिप-का रहता है। येकातेरिना के चेहरे-मोहरे के सौन्दर्य पर गम्भीरता की छाप थी और उसकी सीधी, क़रीब-क़रीब पुरुषोचित, काली भौंहें उसकी गम्भी-रता को और भी रोबीला बना देती थीं। वह साफ़-सुथरी रहती, ऐसे कपड़े पहनती जिन्हें देखकर आश्चर्य होता कि वह किस प्रकार उन्हें इतना संजोकर रखती है। उससे परिचय होने पर कालीना इवानोविच ने ठीक ही कहा था :

"यह ऐसी-वैसी लड़की नहीं है। ज़रा संभलकर पांव रखना . . ."

अब हर चीज़ तैयार थी।

चार दिसम्बर को हमारे पहले छः छात्र कोलोनी में आए और उन्होंने भानमती का एक पिटारा—एक पैकट जिस पर पांच भीमाकार मोहरें लगी थीं—मेरे सामने रख दिया। इस पैकेट में उनके बारे में दस्तावेज़ें थीं। उनमें से चार लड़के हथियारों से लैस होकर घरों के ताले तोड़ते पकड़े गए थे। आयु उनकी लगभग अठारह-अठारह वर्ष थी। बाक़ी दो, जो कुछ कम-उम्र थे, चोरी के अभियोग में पकड़े गए थे। हमारे ये नये छात्र ठाठदार कपड़े पहने थे—घुड़सवारी की ख़ूब चुस्त-दुरुस्त ब्रीचेज़ और घुड़स-वार सेना के जूते। उनके बाल भी फ़ैशन के उच्चतम शिखर को छूते थे। ये लोग सिर्फ़ सड़कों पर छुट्टा घूमनेवाले बच्चे नहीं थे। इनके

नाम थे – ज़दोरोव, बुरून, वोलोखोव, बेन्युक, गुद और तारानेत्स।

बड़ी हार्दिकता के साथ हमने उनकी आव-भगत की। सुबह के सारे समय हम शानदार कलेवे की तैयारियों में जुटे रहे। बावर्चिन ने अपने जूड़े को फीते से कसा, जो इतना सफ़ेद था कि आंखें चौंधिया जाती थीं। शयनागार में बिस्तरों से ख़ाली जगह में, सज-धज के साथ मेज़ें लगा दी गईं। मेज़पोश हमारे पास नहीं थे, लेकिन एकदम नयी चादरों ने इस कमी को कारगर ढंग से पूरा किया। बस्ती के सभी निवासी–ऐसे अवसर पर जब बस्ती अपना जीवन शुरू करनेवाली थी–वहां जमा हो गए। कालीना इवानोविच भी, मौक़े के मुताबिक़, शान से प्रकट हुए। रोज़ के भूरे अपने दाग़दार कोट के बजाय आज वह हरे मखमल की जाकेट डाटे थे।

मेहनत-मशक़्क़त का नया जीवन बिताने, अतीत को भूलने और निरन्तर आगे बढ़ते रहने की आवश्यकता पर मैंने एक भाषण दिया। नवागन्तुकों के कानों से टकराकर मेरे शब्द मानो छितरा रहे थे। वे आपस में फुसफुसाकर बातें कर रहे थे और तिरस्कार से भरी उनकी आंखें, फटी रज़ाइयोंवाले कैम्प के बिस्तरों, बेरंगी खिड़की के चौखटों और दरवाज़ों पर मंडरा रही थीं। मैं अभी अपना भाषण समाप्त कर भी नहीं पाया था कि ज़दोरोव ने सहसा एक लड़के से चिल्लाकर कहा:

"तेरी ही बदौलत हम इन सब में आ फंसे हैं।"

बाक़ी सारे दिन हम अपने भावी जीवन के बारे में योजनाएं बनाने में जुटे रहे। नवागन्तुकों ने, जो हो, शिष्ट उदासीनता के साथ मेरी बातें सुनीं–मानो जैसे वे जल्दी से जल्दी इस पचड़े से छुट्टी पाने के लिए बेचैन हो रहे हों।

और अगली सुबह, काफ़ी विचलित, लीदिया पेत्रोवना शिकायत लेकर मेरे पास आई:

"उन्हें संभालना मेरे बस की बात नहीं। मैंने उनसे झील से पानी लाने को कहा तो उनमें से एक–वही जो अपने बालों को बहुत चिकनाये-संवारे रखता है–अपने जूते को खुरचने लगा, और फिर एक ही झोंके में ठीक मेरे मुंह के सामने अपने पाँव करते हुए तड़ाक से बोला: "देखो न, मोची ने कितना तंग बना दिया है!"

शुरू के दिनों में तो उन्होंने उद्धतपन का व्यवहार नहीं किया। बस, निपट उपेक्षा का दामन पकड़े रहे। सांझ होते न होते वे खिसक जाते, सवेरा होने पर ही लौटते और मेरी झिड़कियों को अर्थपूर्ण मुसकराहटों के साथ स्वीकार करते। एक सप्ताह बाद ही, डकैती और हत्या के अपराध में, प्रान्तीय सी॰ आई॰ डी॰ विभाग के अधिकारी ने बेन्युक को गिरफ़्तार कर लिया। लिदोच्का को इस घटना ने इतना भयभीत कर दिया कि उसके होश जाते रहे। खुलकर रोने के लिए वह अपने कमरे में जा छिपी। केवल जब-तब ही वह बाहर निकलती और जो भी मिलता उसी से पूछती: "मतलब क्या है इसका? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता। वह बस बाहर गया और किसी की हत्या कर बैठा—क्यों?"

गम्भीरता से मुसकराते और भौंहों में बल डाले येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के मुंह से निकला:

"मैं कुछ नहीं जानती, अन्तोन सेम्योनोविच। सच, मैं कुछ नहीं जानती। शायद बेहतर यही होगा कि हम भी अपना बिस्तरा गोल करके यहां से चल दें। लगता है जैसे सही तरीक़ा पकड़ने में ही मैं असमर्थ हूं।"

वह एकाकी जंगल जो बस्ती को घेरे था, हमारी सूनी खोखली इमारतें, हमारे कैम्प के दरजन-भर बिस्तरे, कुल्हाड़ियां और फावड़े, जो ले-देकर हमारे एकमात्र औज़ार थे, आधे दरजन लड़के जो न सिर्फ़ हमारी शिक्षण-प्रणाली के बल्कि मानवीय संस्कृति के मूल सिद्धान्तों के खुले विरोधी थे—सभी कुछ शिक्षा सम्बन्धी उस प्रत्येक अनुभव से भिन्न था जिससे लैस होने की हम में से किसी की सम्भावना हो सकती थी।

जाड़ों की लम्बी रातें बस्ती में ख़ास तौर से डरावनी मालूम होती थीं। रोशनी के नाम पर तेल के सिर्फ़ दो लैम्प, एक शयनागार में और दूसरा मेरे कमरे में—टिमटिमाते रहते थे। शिक्षक और कालीना इवानोविच हमारे दादा-परदादाओं के युग-सम्पत तरीक़ों से काम चलाते थे। तेल भरे कटोरे में उनके प्रकाश की जोत-बत्ती तैरती रहती थी। मेरे लैम्प की चिमनी ऊपर से टूटी थी और उसका निचला हिस्सा, कालीना इवानोविच की आदत की बदौलत, कालिख से हमेशा चिकटा रहता था। अपना पाइप सुलगाने के लिए वह क़रीब आधा अख़बार उसमें ठूंस दिया करता था।

वर्फ़ के तूफ़ान उस साल जल्दी शुरू हो गए। बर्फ़ के उड़ते बगूलों से ग्रहाता शीघ्र ही पट गया। इन्हें हटाकर रास्तों को साफ़ करने की चिन्ता किसी को नहीं थी। मैंने लड़कों से कहा कि वे रास्ता साफ़ कर डालें, लेकिन ज़दोरोव बोला:

"यह कौन मुश्किल काम है? लेकिन क्या ग्रच्छा नहीं होगा कि जाड़े के बीत जाने तक इन्तज़ार कर लिया जाए? हमारे साफ़ करने से क्या फ़ायदा, जब बर्फ़ को गिरते ही रहना है? देखा ग्रापने?"

फरिश्तों जैसी मीठी मुसकान मुझ पर न्यौछावर करते हुए वह ग्रपने एक मित्र के साथ हो लिया, ऐसे जैसे उसके लिए मेरा कोई ग्रस्तित्व ही न हो। पहली झलक से ही यह मालूम हो जाता था कि ज़दोरोव पढ़े-लिखे माता-पिता की सन्तान है। भाषा वह शुद्ध बोलता था, ग्रौर उसके चेहरे पर युवा-सुलभ नफ़ासत का वह भाव था जो केवल उन्हीं में पाया जाता है जिन्हें ग्रच्छा सुनियोजित बचपन बिताने का ग्रवसर मिलता है। बोलोख़ोव इससे एकदम भिन्न कोटि का जीव था। उसका चौड़ा मुंह, फैली हुई नाक, एक-दूसरे से काफ़ी दूर जड़ी ग्रांखें, ग्रौर साथ ही ग्रंगों का स्थूल संचालन, टकसाली ग्रर्थ में उसके 'ग्रक्खड़' होने का परिचय देता था। यही बोलोख़ोव, सदा की भांति घुड़सवारीवाली ग्रपनी ब्रीचेज की जेबों की गहराई में हाथ डाले, झूमता-झामता मेरे पास ग्राया ग्रौर ग्रपनी ग्रावाज़ को खींचता हुग्रा बोला:

"तो, ग्रापको जवाब मिल गया न!"

शयनागार से मैं बाहर ग्रा गया। गुस्से से मेरा सीना चाक हुग्रा जा रहा था। लेकिन रास्ते साफ़ करने थे। ग्रौर मेरा दबा हुग्रा ग़ुस्सा कुछ हरकत चाहता था।

"चलो, चलकर बर्फ़ साफ़ कर दें," कालीना इवानोविच को खोज-कर मैंने कहा।

"क्या? क्या मैं उजरती मज़दूर बनने के लिए यहां ग्राया हूं? ग्रौर वे लड़के क्या हुए?" शयनागार की दिशा में इशारा करते हुए उसने कहा, "वे लुटेरे!"

"वे नहीं करेंगे।"

"हरामख़ोर कहीं के! ख़ैर चलो।"

कालीना इवानोविच ग्रौर मैं रास्ते को क़रीब-क़रीब साफ़ कर चुके थे।

तभी वोलोख़ोव और तारानेत्स अपने रात्रि-विहार के लिए नगर की ओर जाते हुए उधर आ निकले।

"वाह-वाह शाबाश!" तारानेत्स ने ख़ुशी गमकते हुए कहा।

"बहुत मौक़े से काम किया है।" वोलोख़ोव ने स्वर में स्वर मिलाया।

कालीना इवानोविच उनकी राह रोककर खड़ा हो गया।

"क्या मतलब है तुम्हारा इस 'शाबाश' से?" वह बौखला उठा। "आवारा कहीं के, तुम काम करना नहीं चाहते, तो क्या समझते हो? यह बेगार मैं तुम्हारे वास्ते करने जा रहा हूं। तुम इस रास्ते से नहीं जा सकते। तुम्हें बर्फ़ में से जाना होगा, नहीं तो यह फावड़ा है और तुम्हारा सिर है। हरामख़ोर कहीं के!"

कालीना इवानोविच ने भयानक ढंग से फावड़े को घुमाया लेकिन अगले ही क्षण वह दूर बर्फ़ के एक ढेर पर जा गिरी और उसका पाइप कलाबाज़ी-सी खाता दूसरी दिशा में उड़ चला। कालीना इवानोविच, स्तम्भित और आंखों को मिचमिचाता, जहां का तहां खड़ा दूर जाते युवकों को देखता रह गया।

"जाइये और ख़ुद अपना फावड़ा उठा लाइये!" क़हक़हों की बाढ़ बहाते और अपनी राह पर आगे बढ़ते हुए उन्होंने चिल्लाकर कहा।

"मैं यहां से चल दूंगा, न जाऊं तो जो हत्यारे की सज़ा वह मेरी। मैं यहां अब और अधिक काम नहीं कर सकता!" कालीना इवानोविच ने कहा, और फावड़े को वहीं बर्फ़ के ढेर पर पड़ा छोड़ अपने कमरे में लौट गया।

कोलोनी का जीवन उदास और भीषण हो चला। ख़ारकोव राजमार्ग पर, एक के बाद एक, हर रात 'त्राहि, त्राहि' की चीख़ें सुनाई देतीं और लूट के शिकार देहाती अत्यन्त दुःखद स्वरों में विपत्ति से उबारने की बराबर गुहार करते। राजपथ के ख़ुद अपने ही इन ख़ास सूरमाओं से बचाव का ख़याल कर प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष से एक रिवाल्वर मैंने प्राप्त कर लिया, लेकिन कोलोनी की स्थिति उनपर प्रकट नहीं होने दी। अपने छात्रों से समझौता कर सकने की अपनी उम्मीद को मैंने अभी तिलांजलि नहीं दी थी।

कोलोनी के जीवन के वे पहले महीने ख़ुद मेरे और सहयोगियों के लिए

खिन्नता और व्यर्थ प्रयासों के ही महीने नहीं थे, बल्कि गहरी खोज-बीन के भी महीने थे। पहले के अपने समूचे जीवन में मैंने शिक्षा-सम्बन्धी इतनी पुस्तकें नहीं पढ़ी थीं जितनी कि १९२० के उन जाड़ों में पढ़ीं।

यह व्रंगेल और पोलिश युद्ध का ज़माना था। व्रंगेल बिलकुल नज़दीक, ठीक नोवोमीर्गोरोद तक, चढ़ आया था; और पोलिश सेना भी बिलकुल हमारे निकट, चेरकास्सी में आ लगी थी। इसी के साथ-साथ समूचे उक्राइना में 'अतामानों' का दौर दौरा था और हमारे इर्द-गिर्द के कितने ही लोग, पेतल्युरा की नीली और पीली पताकाओं के जादू में डूबे, गश्त करते नज़र आते थे। लेकिन हम, अपने इस वीराने में, ठोड़ियों को अपनी हथेलियों पर टिकाए, महान घटनाओं की गरजन को अपने से दूर रखने का प्रयत्न करते, और शिक्षा-विज्ञान के अध्ययन में अपने-आप को जुटाए रखते।

इस सारी पढ़ाई का मुख्य नतीजा मेरे इस दृढ़ और अच्छी तरह पुष्ट विश्वास के रूप में प्रकट हुआ कि विज्ञान या सिद्धान्त के रूप में पुस्तकों से बहुत ही कम फ़ायदा मुझे हुआ, मुझे लगा कि आए दिन के जीवन में उपस्थित होनेवाले वास्तविक घटना-प्रवाह की कुल जमापूंजी में से मुझे ख़ुद अपने सिद्धान्तों को निकालना होगा।

पहले पहल मैंने अनुभव किया कि मुझे किन्हीं हवाई नुसख़ों की नहीं— ऐसे नुसख़ों की जिन्हें अमल में उतारने में जाने क्यों मैं असमर्थ रहा,— बल्कि वस्तुस्थिति का तुरन्त विश्लेषण करने की दरकार थी जिसका नतीजा तुरन्त अमल में दिखाई पड़े।

मैं यह अच्छी तरह जानता था कि मुझे जल्दी करनी होगी, यह कि एक दिन भी खोना मेरे लिए घातक सिद्ध होगा। कोलोनी उत्तरोत्तर चोरों और गलाकटुओं का गढ़ बनती जा रही थी। अपने शिक्षकों के प्रति लड़कों का रवैया उद्धतपन की आदत और खुली गुण्डागर्दी का रूप धारण करता जा रहा था। महिला-शिक्षकों के सामने अब वे फूहड़ कहानियां बघारते थे, अक्खड़पन के साथ भोजन तलब करते थे, खाने के कमरे में रकाबियां फेंकते थे, अपने फ़िन्निश चाकुओं को खुले आम लहराते थे, मज़ाक़ ही मज़ाक़ में किसके पास कितनी चीज़ें हैं इसकी खोज-ख़बर लगाते थे, ठिठोली की मुद्रा में ऐसा ही कुछ कहते हुए: "कौन जाने, कब किस चीज़ की ज़रूरत पड़ जाए!"

ईंधन के लिए पेड़ों को काटने से उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया और कालीना इवानोविच की ठीक नाक के नीचे, मजे से हंसते और ठिठोली करते हुए, एक सायवान की लकड़ी की छत तोड़कर रख दी।

"हम लोगों के रहते यह निबटाए नहीं निबटेगा," उन्होंने अहसास करते हुए कहा।

कालीना इवानोविच ने पाइप से चिंगारियों की फुलझड़ी उड़ाते हुए निराशा से अपने हाथ हवा में फेंके।

"इन हरामखोरों से कुछ कहना-सुनना बेकार है," वह चिल्लाया। "दूसरों की बनाई चीज़ों को तोड़ना ये किससे सीखकर आए हैं? इन हरामखोरों के माता-पिताओं को इसके लिए कोल्हू में पेरना चाहिए!"

और इसके बाद एक दिन बांध टूट गया। शिक्षक के रूप में अभ्यास के जिस सूत्र को मैं अब तक संभाले था, वह छिटककर दूर जा गिरा। जाड़ों की सुबह थी। रसोई की भट्टी जलाने के लिए मैंने ज़दोरोव से थोड़ी लकड़ी काट लाने के लिए कहा। उसने उसी प्रसन्न उद्धतपन के साथ जवाब दिया:

"खुद क्यों नहीं काट लाते? तुम में क्या सुरखाब के पर लगे हैं?"

यह पहला मौक़ा था जब लड़कों में से किसी एक ने मुझे 'तू–तुम' कहकर याराना ढंग से सम्बोधित किया था। ग़ुस्से और क्षोभ से बेसुध तथा पिछले महीनों के अनुभवों से विक्षिप्त होकर मैंने अपना हाथ उठाया और ज़दोरोव के चेहरे पर भरपूर थप्पड़ जड़ दिया। प्रहार इतना ज़बर्दस्त था कि वह अपना सन्तुलन क़ायम नहीं रख सका और भट्टी से जा टकराया। उसके कालर दबोचते और उसे सचमुच धरती से ऊपर उठाते हुए मैंने फिर प्रहार किया। और इसके बाद एक और प्रहार।

यह देखकर मुझे बड़ा अचरज हुआ कि वह एकदम हक्का-बक्का रह गया था। मुर्दे की भांति वह पीला पड़ गया था और कांपते हाथों से बराबर अपनी टोपी को सिर पर रख उठा रहा था। शायद मैं उसे अभी और मारता अगर वह रिरियाना न शुरू कर देता:

"मुझे माफ़ करो, अन्तोन सेम्योनोविच!"

इतना बनैला और बेलगाम ग़ुस्सा मुझपर सवार था कि प्रतिरोध का एक भी शब्द मुझे उनके समूचे गिरोह पर टूट पड़ने के लिए बाध्य कर देता, मैं उनकी हत्या तक कर डालता, ठगों के इस दल का नामोनिशान

तक मिटाने में आनाकानी न करता। लोहे की एक छड़ जाने कैसे मेरे हाथ में आ गई थी। अन्य पांचों हतबुद्धि हो अपने बिस्तरों के इर्द-गिर्द सिमट गए थे। बुरून उद्विग्न भाव से अपने कपड़ों को ठीक-ठाक कर रहा था।

उनकी ओर मुड़ते हुए बिस्तरों में से एक के पाये पर मैंने लोहे की छड़ दे मारी।

"या तो तुम लोग इसी क्षण जंगल में जाकर काम करो, या बस्ती से दफ़ा हो जाओ, बस, पाप कटे!"

यह कहकर मैं कमरे से चल दिया।

सायबान में जहां हमारे औज़ार रखे रहते थे, वहां पहुंचकर मैंने कुल्हाड़ी उठाई और आतंकप्रद आंखों से लड़कों को देखता रहा। वे मेरे पीछे-पीछे ही बाहर निकल आए थे और अब कुल्हाड़ियों तथा आरियों को चुन रहे थे। मेरे दिमाग़ में यह भी कौंधे बिना नहीं रहा कि आज ऐसे दिन लड़कों के हाथ में कुल्हाड़ियां पहुंचने देना ठीक न होगा, लेकिन अब क्या हो सकता था,—मतलब की हर चीज़ वे अपने हाथों में ले चुके थे। फिर मैं भी 'मरता क्या न करता' की स्थिति में पहुंच चुका था। हर चीज़ के लिए मैं तैयार था। मैंने निश्चय कर लिया था कि चाहे जो हो, अपनी जान के साथ इन्हें खिलवाड़ नहीं करने दूंगा। इसके अलावा, मेरी जेब में रिवाल्वर भी मौजूद थी।

हम जंगल की ओर रवाना हुए। कालीना इवानोविच लपककर मेरे पास आया और फुसफुसाकर बोला: "अरे, यह क्या? ख़ुदा के लिए बताओ तो, एकाएक इतने आज्ञाकारी ये कैसे हो गये?"

खोए-से अन्दाज़ में उसकी नीली आंखों में देखते हुए मैंने जवाब दिया:

"बुरा हुआ, मेरे भाई! जीवन में पहली बार मुझे अपने एक साथी किसी इनसान पर हाथ उठाना पड़ा।"

"हे भगवान!" कालीना इवानोविच के मुंह से निकला, "और अगर इन्होंने शिकायत कर दी तो?"

"अगर इतना ही हो तब भी ग़नीमत है!"

लेकिन, आश्चर्य, कोई गड़बड़ी नहीं हुई। लड़के और मैं दोपहर तक काम में जुटे रहे,—ठूंठ हो चले सनोबर के पेड़ों को काटते रहे। उनके मुंह कुछ फूले थे, लेकिन बर्फ़ीली हवा के झोंकों, हिम-किरीट पहने सनोबर

के शानदार वृक्षों और श्रम के साहचर्य ने कुल्हाड़ी तथा आरियों के सगीत की संगत में समान बांध दिया।

अवकाश होने पर मैंने अपने पास से मोटा तम्बाकू निकालकर उनके सामने पेश कर दिया। सबने कुछ सकुचाते हुए से उसका उपयोग किया ज़दोरोव सनोबर की चोटियों की ओर धुएँ का बादल छोड़ते हुए, सहसा खिलखिला उठा:

"भई वाह, ख़ूब किया!"

गुलाब-सा उसका हंसता हुआ चेहरा बस देखते ही बनता था, एकदम आह्लादपूर्ण। जवाब में मैं भी मुसकराए बिना नहीं रह सका।

"क्या किया? काम?" मैंने पूछा।

"काम-वाम तो सब ठीक। मेरा मतलब उस मरम्मत से है जो आपने मेरी की।"

वह मज़बूत, हट्टा-कट्टा गवरू जवान था। वह निश्चय ही हंसने का दम भर सकता था। मुझे ख़ुद अपने पर आश्चर्य हुआ कि इस भीम-सरीखे युवक पर हाथ उठाने का मैं किस प्रकार साहस कर सका।

एक बार फिर खिलखिलाकर हंसते हुए उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और एक पेड़ के निकट जा पहुंचा:

"कितना बड़ा मजाक़ था वह, ओह, कितना बड़ा!"

हम सबने एक साथ खाना खाया, जी भरकर, हंसी-मज़ाक़ करते हुए; और सुबह की घटना का किसी ने नाम तक नहीं लिया।

क्षोभ ने अभी भी मेरा पीछा पूरी तरह नहीं छोड़ा था। लेकिन मेरा निश्चय था कि अपनी अधिकार-भावना में ढील न आने दूंगा। सो भोजन के बाद दढ़ता के साथ मैंने आदेश जारी किए।

वोलोख़ोव ने अपनी बत्तीसी चमकाई, लेकिन ज़दोरोव मेरे निकट आ-या और गम्भीर भाव से देखते हुए बोला:

"हम कुछ इतने बुरे नहीं हैं, अन्तोन सेम्योनोविच! सब ठीक हो जाए-गा। हमें इतना नासमझ..."

३. हमारी प्राथमिक आवश्यकताओं का विवरण

अगले दिन मैंने लड़कों से कहा:

"शयनागार को साफ़ रखना होगा। इसके लिए वे किसी को शयनागार-मोनीटर बना लें। मेरी अनुमति लेकर ही तुम लोग नगर जा सकोगे। अगर कोई बिना अनुमति लिए जाता है तो वह फिर लौटने का कष्ट नहीं उठाये। कारण कि मैं उसे भीतर पांव नहीं रखने दूंगा।"

"लेकिन मेरा कहना है," वोलोख़ोव के मुंह से निकला, "क्या आप हम लोगों के साथ कुछ नर्मी नहीं बरत सकते?"

"हां तो, लड़को," मैंने कहा, "अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम क्या पसन्द करते हो। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कर सकता। बस्ती में अनुशासन रखना ही होगा। अगर तुम्हें यह पसंद नहीं, तो जहां चाहे तुम जा सकते हो। लेकिन जो यहां रहेंगे, उन्हें अनुशासन मानना होगा। तुम कुछ भी समझो, लेकिन इसे हम चोरों का अड्डा बनाने नहीं जा रहे।"

"तो आइये," हाथ से हाथ बढ़ाते हुए ज़दोरोव ने कहा, "आप ठीक कहते हैं। और तुम, वोलोख़ोत, तुम चुप ही रहो। इस तरह के मामले में तुम निरे उल्लू हो। जो हो, अभी तो हमें यहीं रहना है। फिर जेल में चक्की पीसने से यह कहीं अच्छा है, क्यों, है न?"

"और क्या स्कूल में हाज़िर रहना लाज़िमी है?" वोलोख़ोव ने पूछा।

"बेशक!"

"और अगर मैं अध्ययन करना न चाहूं तो?.. पढ़ाई-लिखाई मेरे किस काम आएेगी?.."

"स्कूल ज़रूरी है। तुम पसन्द करो चाहे न करो, स्कूल में हाज़िर रहना होगा। ज़दोरोव ने अभी-अभी तुम्हें निरा उल्लू कहा था। यह ज़रूरी है कि तुम पढ़ना-लिखना सीखो और बुद्धिमान बनो।"

हास्यास्पद ढंग से अपना सिर हिलाते हुए वोलोख़ोव ने कहा:

"अब तो फंस ही गए।"

अनुशासन के मामले में ज़दोरोव-काण्ड एक नया मोड़ सिद्ध हुआ। मुझे यह मानना चाहिए कि इसे लेकर मेरी आत्मा ने मुझे कचोटा नहीं। ठीक,

मैंने अपने एक शिष्य को पीटा। शिक्षक के नाते अपने इस अनौचित्य का, अपने कृत्य के ग़ैरक़ानूनी होने का, गहराई के साथ मैंने अनुभव किया। लेकिन इसी के साथ-साथ मैं यह भी समझता था कि हमारी शैक्षणिक चेतना की विशुद्धता को उस काम के अधीन रहना होगा जिसे मैंने हाथ में ले रखा था। मेरा दृढ़ निश्चय था कि अगर अन्य उपाय कारगर सिद्ध न हुए तो मैं डिक्टेटरी से काम लूंगा। अभी ज़्यादा दिन नहीं बीते होंगे कि वोलोख़ोव से टक्कर की नौबत आ पहुंची। वह ड्यूटी पर था, शयनागार की सफ़ाई में उसने चूक की थी, और चेतावनी के बाद भी उसने सफ़ाई करने से इनकार कर दिया था।

"मुझे ज़्यादती पर उतरने के लिए मजबूर न करो," कड़ी नज़र से उसकी ओर देखते हुए मैंने कहा। "जाकर कमरा साफ़ करो।"

"और अगर न करूं तो आप मेरी मरम्मत करेंगे, यही न? लेकिन मारने-पीटने का आपको कोई अधिकार नहीं!"

मैंने उसका कालर दबोचकर अपनी ओर खींचा और पूरी सच्चाई से उसके चेहरे में फुसफुसा उठा:

"सुनो, मैं तुम्हें भली चेतावनी देता हूं। मैं तुम्हारी मरम्मत नहीं करूंगा, बल्कि जीवन-भर के लिए तुम्हें लुंज-पुंज बना दूंगा। तब जी चाहे जितनी शिकायत करना। भले ही मुझे जेल जाना पड़े, लेकिन इसके लिए तुम्हें फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं।"

वोलोख़ोव रेंग-रांग कर मेरी पकड़ से छूट गया और रिरियाते हुए बोला:

"इतनी-सी बात के लिए जेल जाने में कोई तुक नहीं, मैं कमरे को साफ़ कर दूंगा—शैतान इन्हें ग़ारत करे!"

"ख़बरदार जो मेरे साथ इस तरह ज़बान चलाने का साहस किया!" मैं गरज उठा।

"तो फिर आप किस तरह बात करना पसंद करते हैं? जाइए, भाड़ में..."

"हां-हां, मैं भी तो देखूं कैसे गाली देते हो!"

चकराए से अन्दाज़ में हाथ हिलाते हुए वह ज़ोर से हंस पड़ा।

"कैसे आदमी हैं!.." वह बोला, "अच्छी बात है। मैं कमरा साफ़ कर दूंगा। बस, मुझपर चिल्लाएं नहीं!"

ग्राप यह न सोचें कि मैं, एक क्षण के लिए भी, यह विश्वास करता था कि शारीरिक बल प्रयोग के रूप में ग्रनुशासन का एक खरा तरीक़ा मेरे हाथ लग गया है। ज़दोरोव-काण्ड ज़दोरोव से भी ज़्यादा मेरे लिए महंगा पड़ा। यह डर एक क्षण के लिए भी मुझे चैन न लेने देता कि कहीं मैं कम से कम प्रतिरोधवाले मार्ग का ग्रादी न हो जाऊं; लीदिया पेत्रोवना ने खुलकर मेरी तीव्र ग्रालोचना की:

"सो ग्राख़िर ग्रापने एक तरीक़ा ईजाद कर ही लिया? ठीक पुराने गुरुकुलों जैसा – क्यों?"

"ज़्यादा तंग न करो, लिदोच्का!"

"ग्रोह नहीं, लेकिन सच, – क्या सचमुच हमें उनकी ठुकाई करनी होगी? ग्रौर मैं, – क्या में भी उनकी मरम्मत कर सकती हूं या यह केवल ग्रापका ही एकाधिकार है?"

"यह सब मैं तुम्हें बाद में बताऊंगा, लिदोच्का! ग्रभी तो मैं ख़ुद भी नहीं जानता। थोड़ा समय दो।"

"ग्रच्छी बात है। बाद में ही सही।"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना कई दिनों तक भौंहें चढ़ाए घूमती रही, मुझे सम्बोधित भी करती तो ग्रस्वाभाविक विनम्रता के साथ। इस तरह पांच दिन गुज़र गए। तब कहीं जाकर, ग्रपनी गम्भीर मुसकराहट के साथ, उसने मुझसे पूछा:

"कहिये, कैसा जी है?"

"धन्यवाद। मैं बिलकुल ठीक हूं।"

"क्या ग्राप जानते हैं कि इस काण्ड का सबसे ज़्यादा दुखी करनेवाला पहलू कौनसा है?"

"दुखी करनेवाला?"

"हां, दुखी करनेवाला। यह कि लड़के ग्रापके इस करतब का उत्साह के साथ उल्लेख करते हैं। वे ग्राप पर एकदम लट्टू हैं, – ख़ास तौर से ज़दोरोव। ऐसा क्यों है यह मेरी समक्ष में नहीं ग्राता। यह क्या ग़ुलामी की ग्रादत की देन है?"

जवाब देने से पहले कुछ क्षण रुककर मैंने सोचा फिर कहा:

"नहीं, बात ऐसी नहीं है। ग़ुलामी से इसका कोई वास्ता नहीं। यह है कुछ ग्रौर ही। ज़रा गहराई में पैठकर देखना होगा। ग्राख़िर यह तो

है ही कि ज़दोरोव मुझसे कहीं ज़्यादा तगड़ा है। वह चाहता तो मुझे एक ही आघात में लुंज-पुंज बना देता। और डर जैसी चीज़ से भी उसका कोई ख़ास लगाव नहीं है। यही बात बुरून तथा दूसरे सबों के बारे में भी कही जा सकती है। इस समूचे काण्ड में पिटाई वह चीज़ नहीं है जिसे वे याद करते हैं, बल्कि वह चीज़ है उद्वेग, एक मानव-जीवधारी का ग़ुस्सा, जिसे वे याद करते हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि मेरे लिए उन्हें पीटना ज़रूरी नहीं था। ला-इलाज कहकर मैं आसानी से ज़दोरोव को कमीशन के पास भेज सकता था। इसके अलावा दूसरे बहुत से तरीक़ों से मैं उनकी नाक में दम कर सकता था। लेकिन मैंने यह सब कुछ नहीं किया। इसके बदले मैंने एक ऐसा रास्ता चुना जो ख़ुद मेरे लिए ख़तरनाक था। एक ऐसा तरीक़ा जो मानवीय था, नौकरशाहीवाला तरीक़ा नहीं था। और आख़िर, वस्तुतः हमारी बस्ती उनके लिए ज़रूरी है। चीज़ों को इतना सरल न समझो। फिर यह भी वे देखते हैं कि किस तरह हम उनके लिए काम करते हैं। आख़िर वे भी तो इनसान ही हैं। और यही सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।"

"हो सकता है कि आपका कहना ठीक हो," येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने सोचपूर्ण मुद्रा में कहा।

लेकिन यह समय दार्शनिक ऊहा-पोह का नहीं था। एक सप्ताह बाद, फ़रवरी १९२१ में, सामान लानेवाली गाड़ी में मैं नगर गया और वहां से वस्तुतः बिना ठौर-ठिकानेवाले पन्द्रह आवारा लड़कों को, जो सचमुच चिथड़े पहने थे, अपने साथ लेकर लौटा। उन्हें नहलाना-धुलाना, जैसे-तैसे कपड़ों में उन्हें सजाना, उनकी खुजली का इलाज करना,—हमने उनके लिए सभी कुछ किया! मार्च तक बस्ती में तीस लड़के हो गए। उनमें से ज़्यादातर की स्थिति बुरी तरह उपेक्षित, एकदम जंगली जैसी थी जिन्हें किसी अर्थ में सामाजिक शिक्षा के किसी आदर्श की पूर्ति की आशाप्रद सामग्री नहीं कही जा सकती। वे उस रचनात्मकता से अब तक एकदम शून्य थे जिसे बच्चों की मानसिक प्रक्रियाओं को बहुत कुछ वैज्ञानिकों की कोटि के इतना निकट पहुंचाने का श्रेय प्राप्त है।

शिक्षकों की दृष्टि से भी हमारी बस्ती अब अधिक समृद्ध थी। मार्च तक शिक्षकों की बाक़ायदा एक परिषद हमारे यहां बन गई थी। इवान इवानोविच ओसिपोव और उनकी पत्नी नतालिया मारकोवना काउचों,

कुर्सियों, अलमारियों, दुनिया-भर के कपड़े-लत्तों, खाने की चीज़ों और रकाबियों का एक अच्छा-ख़ासा अम्बार अपने साथ लेकर आए तो सारी बस्ती की आंखें फटी की फटी रह गईं। फटेहाल हमारी बस्ती के निवासी गहरी दिलचस्पी के साथ सारे सामान को ओसिपोव के दरवाज़े पर जमा होते देखते रहे। और, उनकी यह दिलचस्पी निरी हवाई ही नहीं थी। मुझे भारी डर था कि यह शानदार प्रदर्शन यहां से खिसककर कहीं बाज़ार की दुकानों पर न पहुंच जाए।

एक सप्ताह बाद ओसिपोव-दम्पति के साज़-सामान के प्रति वह उल्लेखनीय दिलचस्पी एक भण्डारिन के आगमन की ओर मुड़ गई। वह बहुत ही भले स्वभाव की कारकुन थी, बातूनी और सरल आत्मा की एक वृद्धा स्त्री। उसका साज़-सामान हालांकि उतना क़ीमती तो नहीं था जितना कि ओसिपोव का, लेकिन उसकी कितनी ही चीज़ें हृदय को बेहद ललचानेवाली थीं। जैसे खाने की अन्य चीज़ें, ख़ूब साफ़-सुथरे कई छोटे-छोटे बक्से, और कुछ थैलियां जिनकी बाहरी सिलवटों को देखकर हमारे लड़कों की सधी हुई आंखों ने भांप लिया कि उनमें तरह-तरह की बढ़िया चीज़ें भरी हैं।

भण्डारिन ने बहुत ही सुहावने ढंग से, वृद्धा स्त्रियों की परिपाटी के अनुसार, क़ायदे से अपने कमरे को सजा दिया। अपने छुट-पुट थैले-थैलियों और बक्सों को उसने कोनों में और तख़्तों पर रख दिया, मानो वे आदिकाल से ही उनके रखे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हों, और देखते-न-देखते उसमें तथा हमारे कुछ लड़कों में घनिष्ठतम मैत्री क़ायम हो गई। पारस्परिक लाभ इस मैत्री का आधार था: लड़के उसके लिए ईंधन लाते उसके समोवार को गरमाते, बदले में कभी वह उन्हें चाय पिलाती, कभी दीन दुनिया की बातों से उनका मन बहलाती। हमारी कोलोनी में, सच पूछो तो, भण्डारिन के लिए कोई काम नहीं था, और उसकी नियुक्ति की बात सोचकर मैं चक्कर में पड़ जाता था।

निश्चय ही हमारी कोलोनी को किसी भण्डारिन की दरकार नहीं थी। हम इतने कंगाल थे कि कोई सोच तक नहीं सकता।

उन गिने-चुने कमरों को छोड़कर जिनमें कर्मचारी रहते थे, समूचे अहाते में हम केवल लोहे के दो बेलननुमा भट्टियों से युक्त एक बड़े शयनागार की मरम्मत करने में समर्थ हो सके थे। इस कमरे में तीस कैम्प बि-

स्तरे तथा तीन मेज़ें थीं जिन पर लड़के खाना खाते थे, और पढ़ाई का काम करते थे। एक अन्य बड़े शयनागार, एक खाना खाने के कमरे, दो पढ़ने के कमरे और एक दफ़्तर की मरम्मत के काम में हाथ लगाना अभी बाक़ी था।

सोने के कपड़ों के नाम पर हमारे पास कुल जमा डेढ़ अदद थे। चादर का तो एकदम अभाव था। पहनने के लबादों के नाम उन अन्तहीन अर्ज़ि-यों—गुहारों—के सिवा हमारे पास और कुछ नहीं था जिन्हें हम जन-शि-क्षा विभाग तथा अन्य दफ़्तरों के नाम भेजते रहते थे।

प्रान्तीय जन-शिक्षा विभाग के उन अध्यक्ष का जिन्होंने इतने विश्वास के साथ कोलोनी को जन्म दिया था, स्थानान्तरण हो गया था और उनके उत्तराधिकारी, जिन्हें अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों से फ़ुरसत नहीं मिलती थी, हम में कुछ दिलचस्पी नहीं दिखाते थे।

प्रान्तीय जन-शिक्षा विभाग का वायुमण्डल ख़ुशहाली के हमारे सपनों के ज़रा भी अनुकूल नहीं था। उन दिनों हमारा प्रान्तीय जन-शिक्षा विभाग छोटे-बड़े कमरों और सभी काट-छांट के व्यक्तियों का एक पिण्ड था, लेकिन सच्ची रचनात्मक शिक्षा की इकाइयां धुरियां—कमरों और लोगों की कम व अधिक संख्या पर निर्भर नहीं करती। चरमर करते, सतह के—छि-लके उतरे, किसी ज़माने में लाल या काले तथाकथित डेस्क, सिंगार की मेज़ें, ताश खेलने की मेज़ें और उनके चारों ओर रखी हुई उतनी ही बेमेल कुर्सियां विभिन्न विभागों का रूप धारण किए थीं, जैसा कि हर मेज़ के ऊपर दीवार पर लगी तख़्तियां इसका सबूत दे रही थीं। ज़्यादातर मेज़ें सूनी पड़ी रहती थीं, कारण कि किसी एक मेज़ के साथ नत्थी हुआ मानव-जीवधारी, नियमतः अपने विभाग का अध्यक्ष न होकर किसी अन्य कमि-सरियट का कोई मुन्शी या ऐसा ही कुछ और होता था। अगर संयोगवश कोई आकर सहसा किसी मेज़ के पीछे प्रकट होता तो वे सब जो उसकी प्रतीक्षा में बैठे थे, एकबारगी उसपर टूट पड़ते। उनकी बातचीत पूछ-ताछ तक सीमित होती,—कुछ इस प्रकार कि क्या वह सही विभाग में आया है, या उसे किसी अन्य विभाग के लिए आवेदन करना चाहिए,—और अगर ऐसा है तो क्यों, और किस विभाग में? और अगर यह ठीक वही विभाग नहीं तो उधर, उस मेज़ पर, जो कामरेड बैठता है उसने पिछले शनिवार को ऐसा क्यों कहा? इन सब बातों के सफलतापूर्वक प्रकाश में

आ जाने के बाद विभाग का अध्यक्ष झटपट अपना लंगर उठाता और टूटे हुए तारे की भांति तेज़ गति से ग़ायब हो जाता।

मेज़ों के इर्द-गिर्द मंडराते-मंडराते हमने अपनी टांगें तोड़ डालीं, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। सो, १९२१ के जाड़ों में भी, हमारी कोलोनी बस नाम की ही शिक्षा-केन्द्र थी। रूई की जाकेटें चिथड़ा हो गई थीं और हमारे लड़कों के नंगे बदन मुश्किल से ही उनसे ढंक पाते थे। उनके नीचे क़मीज़ ऐसी कोई चीज़ बिरले ही नज़र आती थी। लड़कों का पहला दल जो कपड़ों से ख़ूब सजा-धजा आया था, अधिक दिनों तक अपनी उस सज-धज को क़ायम नहीं रख सका। वह भी वैसा ही हो गया जैसे कि अन्य सब। लकड़ियों की कटाई, रसोई की ड्यूटी, और कपड़े धोने तथा शिक्षा आदि के इन सब कामों ने उनके कपड़ों की बुरी तरह धज्जियाँ बिखरे दी थीं। मार्च तक हमारे लड़कों की यह हालत कि दारगोमिज्हीस्की कृत 'जलपरी' में चक्कीवाले की भूमिका अदा करनेवाला अभिनेता भी उनपर रश्क कर सकता था। बहुत ही कम ऐसे थे जिनके पांव में जूते थे, और अधिकांश अपने पांवों के इर्द-गिर्द सूती या लिनेन की पट्टियां लपेटे रहते थे। और पांव-रक्षण के इस आदिम रूप की सुविधा भी हरेक को प्राप्त नहीं थी।

जुआर का पतला दलिया हमारा भोजन था। यह कन्द्योर कहलाता था। पोषण की अन्य क़िस्मों का कोई ठिकाना नहीं था। उन दिनों राशन की अनेक कोटियां प्रचलित थीं—नार्मल राशन, बढ़ा हुआ राशन, दुर्बल व्यक्तियों का राशन, सबल व्यक्तियों का राशन, 'क्षीण' बच्चों का राशन, सैनेटोरियमी राशन, अस्पताली राशन। अत्यन्त सूक्ष्म कूटनीति के सहारे, गिड़गिड़ाकर, दांव-पेंच चलकर, अपने चेहरे-मोहरों को दयनीय बनाकर, यहां तक कि लड़कों में विद्रोह फूटने के ख़तरे का इशारा देकर, सैनेटोरियमी राशन या कोई अन्य विशेष अलाउन्स कभी-कभी हमारे हाथ लग जाता। ऐसे राशनों में, प्रत्यक्षतः, दूध और घी की बहुतायत होती, और सफ़ेद आटे की रोटी शामिल रहती। कहने की आवश्यकता नहीं कि हमें ऐसी कोई चीज़ नहीं मिलती थी, लेकिन राई की रोटी और कन्द्योर का समय-समय पर सहारा ज़रूर मिल जाता था। अगले या बादवाले हर महीने हमें अपनी कूटनीति में मात खानी पड़ती और हमें फिर साधारण मानवों की कोटि में पटक दिया जाता। तब एकदम नये सिरे से हमें फिर

अपनी प्रकट तथा गुप्त कूटनीति का पेचीदा जाल बुनना पड़ता। कभी-कभी तो, सच, हम मांस, उबाली हुई मछलियां और मिठाई तक का राशन हथिया लेते, लेकिन बाद में इसकी सारी कसर निकल जाती जब यह मालूम होता कि केवल मानसिक विकारवाले ही—न कि नैतिक विकारवाले—इन ग्रासाइशों के हक़दार हो सकते हैं।

कभी-कभी, शिक्षा विभाग की शुद्ध परिधि को लांघकर, हम बाह्य-स्थित क्षेत्रों में भी धावा करते। जैसे सप्लाई की इलाक़ाई कमिसरियट, या प्रथम रिज़र्व सेना की खाद्य कमिसरयट या कमोबेश ऐसे ही अन्य किसी दफ़्तर में। जन-शिक्षा विभाग इस तरह की अनियमित कार्रवाइयों का सख़्त विरोधी था, और हमें अपने इन धावों को लुक-छिपकर करना होता था।

इसके लिए हम कुल मिलाकर काग़ज़ी तोप दाग़ते। एक अर्ज़ी तैयार करते जिसमें सीधे-सादे लेकिन प्रभावपूर्ण ढंग से यह गाथा अंकित होती थी: "बाल-अपराधियों की कोलोनी विनती करती है कि उसके निवासियों के लिए सौ पूड राई का आटा मंज़ूर किया जाए।"

ख़ुद कोलोनी में 'बाल-अपराधी' शब्द का हम कभी प्रयोग नहीं करते थे और हमारी कोलोनी ने कभी यह नाम धारण नहीं किया था। उन दिनों हमें 'नैतिकताहीनों' की संज्ञा दी जाती थी, जो शिक्षा क्षेत्र के अधिकारियों का बुरी तरह आभास देती थी। अन्य विभागों तक पहुंचने में यह संज्ञा हमारे कोई काम न आती।

अपने काग़ज़ी गोले से लैस किसी एक उपयुक्त विभाग के बरामदे में ठीक मुख्य कार्यालय के दरवाज़े के सामने मैं अपना मोर्चा लगाता। आगन्तुकों की कभी न ख़त्म होनेवाली धारा बराबर दरवाज़े में से गुज़रती रहती। कभी-कभी कार्यालय में इतनी भीड़ हो जाती कि जो भी चाहता, भीतर धंस जाता। एक बार जब भीतर पहुंच गए तो फिर कोहनियां धकियाकर मेज़ पर बैठे अधिकारी तक पहुंचना-भर बाक़ी रह जाता। इसके बाद चुपचाप अपने काग़ज़ को उसके हाथों में खिसका दिया जाता।

सप्लाई विभाग के अध्यक्ष नियमत: शिक्षा क्षेत्र की पेचीदगियों से बहुत कुछ अनभिज्ञ होते थे। 'बाल-अपराधियों' और शिक्षा के महकमे में कोई सम्बन्ध हो सकता है, वे बहुधा समझ न पाते। इसके अलावा, 'बाल-अपराधी'—ये शब्दमात्र हृदय की भावनाओं को झनझनाने में काफ़ी

कारगर सिद्ध होते थे। इसलिए ऐसा बहुत ही कम होता कि अपनी तेज़ नज़रों से बींधता हुआ अधिकारी यह कह उठे: "यहां क्यों आए? अपने जन-शिक्षा विभाग के पास जाकर गुहार करो!"

इसके प्रतिकूल अधिकतर ऐसा होता कि अधिकारी बहुत सोचने के बाद सिलसिलेवार पूछता:

"आपको राशन देने का काम भला किसके ज़िम्मे हो सकता है? जेल-अधिकारियों के?"

"नहीं जनाब, जेल-अधिकारी हमारा राशन मंज़ूर नहीं करते। देखिये न, हमारे लड़के नाबालिग़ हैं"

"तब कौन करता है?"

"ओह, देखिये न यह अभी कुछ तय नहीं हो सका है।"

"तय नहीं हो सका है – क्या मतलब है इसका? अजीब बात करते हैं आप भी!"

कार्यवाही के यहां तक बढ़ने पर अधिकारी अपने पैड पर कुछ शब्द आंकते और हम से कहते कि अगले सप्ताह फिर आना।

"अगर ऐसा है तो," मैं सुझाता, "काम चलाने के लिए अभी बीस पूड तो आप दे ही सकते हैं।"

"नहीं, मैं बीस पूड नहीं दे सकता, फिलहाल पांच पूड ले सकते हो। इस बीच, यथासम्भव ही, मैं मामले की खोज-बीन कर लूंगा।"

पांच पूड काफ़ी नहीं था, और बातचीत ने कुछ ऐसा रुख़ अपना लिया था जो किसी तरह भी हमारी योजना के अनुकूल नहीं था। हमारी योजना में स्वभावत: किसी तरह की खोज-बीन की गुंजाइश नहीं थी।

इस तरह मुठभेड़ों–साक्षात्कारों–की एक ही परिणति गोर्की कोलोनी को मान्य हो सकती थी। वह यह कि अधिकारी असुविधाजनक प्रश्नों की बौछार किए बिना, चुपचाप हमारे काग़ज़ को ग्रहण करे और उसके किसी कोने पर बस एक शब्द लिख दे–"मंज़ूर।"

जब कभी ऐसा होता तो मैं मुड़कर न देखता और भागता हुआ सीधा अपनी कोलोनी में पहुंचता।

"कालीना इवानोविच! यह लो आर्डर! पूरे सौ पूड। अरे, जल्दी करो, कुछ आदमियों को पकड़ लो और इससे पहले कि पूछ-ताछ शुरू हो, जाकर इसे ले आओ!"

कालीना इवानोविच ख़ुशी से उछलता हुआ काग़ज़ पर दोहरा हो पड़ता था।

"पूरे सौ पुड! ओह, ज़रा सोचो तो! यह कहां से छींका टूटा?"

"अरे, क्या देखते नहीं? प्रान्तीय न्याय-विभाग का सप्लाई कमिसरियट!"

"यह क्या बला है? लेकिन छोड़ो,—हमें इससे क्या बहस कि कहां से आया है!"

भोजन आदमी की प्राथमिक आवश्यकता है। इसलिए कपड़े की स्थिति से हम इतने त्रस्त नहीं थे जितने कि खाद्य की समस्या से हमारी कोलोनी के लड़के चिर क्षुधातुर रहते थे, और इस ने उनके नैतिक पुन: शिक्षण को बेहद जटिल बना दिया था। और अपने निजी उद्योग से बहुत ही कम मात्रा में वे अपनी भूख को संभाल पाते थे।

खाद्य-सम्बन्धी उनके निजी उद्योग में मछलियां पकड़ने का मुख्य स्थान था। जाड़ों में यह धंधा बहुत ही कष्टकर था। सो वे सब से आसान तरीक़ा अपनाते वह यह कि पास की नदी और हमारी झील में स्थानीय गाँव के निवासी जो यातेरी (पिरामिड की शक्ल के जाल) बिछाते थे, उनपर हाथ साफ़ किया जाए। मानव-प्रवृत्ति में निहित आत्मरक्षा की भावना और ख़ुद अपने व्यावहारिक हितों की सहज चेतना लड़कों को रोकती, नहीं तो वे वस्तुत: जालों को ही उठा लेते। लेकिन एक दिन आया जब इस सुनहरे नियम को उनमें से एक ने भंग कर दिया।

इस लड़के का नाम था तारानेत्स। सोलह वर्ष की आयु, दुबला-पतला, मुंह में चेचक के दाग़, प्रसन्न और मज़ाक़िया। ख़ानदानी चोरों के एक पुराने परिवार से वह आया था। तारानेत्स बहुत ही कुशल संगठनकर्त्ता और अत्यन्त उद्यमशील व्यक्ति था, लेकिन सामूहिक हितों के प्रति उसके हृदय में कोई मान नहीं था। नदी से कई जाल चुराकर वह उन्हें कोलोनी में ले आया। उसी के पीछे-पीछे जालों के मालिक भी आ धमके। नतीजा यह कि भारी बखेड़ा हुआ। इसके बाद गाँववासियों ने अपने जालों की निगरानी शुरू कर दी, और हमारे मछुआरे अब बिरले ही उन्हें हथिया पाते। लेकिन अधिक दिन न बीते होंगे कि तारानेत्स और कुछ अन्य लड़के गर्व के साथ अपने निजी जालों के मालिक बन गए। ये जाल 'नगर में उनके किसी मित्र ने भेंट किए थे'। इनकी बदौलत हमारा मछलीघर

ख़ब समृद्ध बन गया। शुरू-शुरू में कुछ ख़ास लोग ही मछलियों का भोग लगाते थे, लेकिन जाड़ों का अन्त होते-न-होते, जैसे-तैसे तारानेत्स ने मुझे भी उन विशिष्टों की पंगत में शामिल करने का निश्चय किया।

तश्तरी में तली हुई मछली लिए वह मेरे कमरे में प्रकट हुआ।

"मैं आपके लिए थोड़ी मछली लाया हूं।"

"ओह, समझा। लेकिन मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।"

"क्यों?"

"इसलिए कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा। कोलोनी में हरेक को कुछ हिस्सा मिलना चाहिए।"

तारानेत्स विक्षोभ से लाल हो उठा।

"क्यों, उन्हें क्यों मिलना चाहिए? जाल मैं ढोता हूं, मछलियां मैं पकड़ता हूं, नदी में मैं सराबोर होता हूं, और अब मैं सबको भोग लगाने दूं!"

"अच्छी बात, अपनी यह मछली ले जाओ। न मैंने जालों को ढोया न मैं नदी में सराबोर हुआ।"

"लेकिन यह तो भेंट है।"

"और मैं इसे स्वीकार करने नहीं जा रहा हूं। मुझे तो यह सारा व्यापार ही पसंद नहीं है। इसमें कुछ गड़बड़ मालूम होती है।"

"गड़बड़ क्या?"

"बताता हूं कि क्या गड़बड़ है। तुम जाल ख़रीदकर नहीं लाए, क्यों? तुम कहते हो कि वे भेंट में मिले हैं।'

"सो तो ठीक है।'

"लेकिन भेंट में वे किसके लिए दिए गए? केवल तुम्हारे लिए? या समूची कोलोनी के लिए?"

"समूची कोलोनी कैसी,—क्या मतलब है आपका? वे मुझे, मुझे दिए गए थे।"

"लेकिन मैं समझता हूं कि वे मेरे लिए और अन्य सभी के लिए दिए गए थे। और इन्हें तलने के लिए किसका बरतन तुम इस्तेमाल करते हो? ख़ुद अपने? नहीं, सभी के। और सूरजमुखी का तेल जो तुम बावर्चिन से हथियाते हो,—तुम्हारी राय में वह किसका है? बेशक, हम सभी का। और लकड़ी, भट्टी, डोल-डोलचियां? बोलो, क्या कहते हो इन

सब के बारे में? केवल तुम्हारा जाल ज़ब्त करने की देर है, मामला वहीं ख़त्म हो जायेगा। लेकिन सबसे बुरी बात तो यह है कि तुम में भाई-चारे की भावना नहीं है। जाल अगर तुम्हारे अपने भी हों तो भी तुम्हें अपते साथियों का भी ख़याल करना है। रही मछलियां—उन्हें तो कोई भी पकड़ सकता है।"

"अच्छी बात है," तारानेत्स ने कहा। "जैसा आप कहते हैं वही सही। लेकिन इसे तो ले लीजिये।"

मैंने मछली स्वीकार कर ली, और उस दिन के बाद बारी-बारी से सभी मछलयां पकड़ने जाते और पकड़ी हुई मछलियां रसोईघर में पहुंचा दी जातीं।

खाद्य-प्राप्ति का एक अन्य ग़ैर सरकारी तरीक़ा बाज़ार जाना था। हर रोज़ कालीना इवानोविच हमारे क़िरग़िज़ी घोड़े को जोतता और राशन का सामान लाने या तत्सम्बन्धी दफ़्तरों पर धावा बोलने के लिए रवाना हो जाता। दो या तीन लड़के जिन्हें जाने किन निजी कारणों से—शायद डाक्टरी चिकित्सा या किसी कमीशन के सामने हाज़िरी देने के लिए नगर जाना होगा, उसके साथ जाने के लिए ज़ोर देते, वक़्त पड़ने पर घोड़े का सिर थामकर उसे जोतने में हाथ बंटाते। ये भाग्यवान ख़ूब डटकर नगर से लौटते और आम तौर से अपने साथियों के लिए भी कोई बढ़िया चीज़ अपने साथ लेते आते। बाज़ार में जाकर हाथ साफ़ करने का एक भी मामला सामने नहीं आता। जो भी माल वे लाते, उसे जायज़ बनाकर पेश करते: "मेरी चाची ने मुझे यह दिया है," "यह मेरे एक मित्र की सौगात है" आदि-आदि। हीन सन्देहों का सूत्र पकड़ अपनी कोलोनी के किसी सदस्य को अपमानित करने से मैं बचता, और मजबूरन उनकी स्वीकार कर लेता। फिर, अविश्वास से लाभ भी क्या होता? भूख के सताए, कूड़े का ढेर कुरेदनेवाले, खाने की चीज़ों के लिए बुरी तरह बेचैन लड़कों के सामने किसी भी तरह की नैतिकता के उपदेश झाड़ना मुझे कुछ उपयुक्त नहीं मालूम होता था, सो भी एकाध रोटी और बिस्कुट के टुकड़े झटकने या बाज़ार में किसी दूकान से जूतों के एक जोड़ी तल्ले चुराने जैसे मामूली उकसावों में आकर!

हमारी अनकथ ग़रीबी का अच्छा पहलू भी था: सभी कोई —शिक्षा-संचालक, शिक्षक और छात्र—समान रूप से भूखे और समान रूप से अभाव-

वग्रस्त थे। हमारे वेतनों का उन दिनों कुछ मूल्य नहीं था और हम सभी को उस मनहूस कन्धोर पर गुज़र करनी पड़ती थी और हम सब क़रीब-क़रीब एक-सी फटेहाल स्थिति में घूमते थे। मेरे जूतों के तल्ले क़रीब-क़रीब उड़ चुके थे और सारे जाड़े मैंने उन्हीं में काटे। और मेरी पायताबे की धज्जियां हमेशा झांकती रहती थीं। केवल येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ही एक ऐसा अपवाद थी जो ख़ूब साफ़-सुथरे और संजोये कपड़ों में सजी नज़र आती थी।

४. घरेलू मोर्चे की गतिविधि

फ़रवरी में नोटों की एक गड्डी—क़रीब छः महीने के मेरे वेतन के बराबर रक़म—मेरी मेज़ की दराज़ से ग़ायब हो गई।

उन दिनों मेरा कमरा दफ़्तर, शिक्षकों का रूम, ख़ज़ांची का आफ़िस और वेतन वितरण करने की जगह बना हुआ था, कारण तत्संबंधित कामों को मैं ख़ुद अपने आप सम्पन्न करता था। करारे बैंक नोटों की गड्डी तालाबंद दराज़ से ग़ायब हुई थी और उस पर तोड़ने का कोई सुराग़ नज़र नहीं आता था।

लड़कों को उसी सांझ मैंने इसकी इत्तला दी, उनसे कहा कि पैसा वापिस कर दें, यह बताते हुए कि मुझे ऐसा कोई चिन्ह नहीं मिला है जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि चोरी की गई है, और यह कि मुझपर आसानी के साथ ग़बन का अभियोग लगाया जा सकता है। लड़कों ने गम्भीर सन्नाटे में मेरी बात सुनी और तितर-बितर हो गए। इस मीटिंग के बाद उस समय जबकि मैं बाज़ूवाले अपने कमरे में जा रहा था, अंधेरा छाए अहाते में दो लड़कों ने मुझे राह में रोका,—तारानेत्स और गुद नामक एक अन्य छरहरे चपल लड़के ने।

"हम जानते हैं कि पैसा किसने उड़ाया है," तारानेत्स ने फुसफुसाकर कहा, "केवल हम सब के सामने यह प्रकट नहीं कर सकते, न ही हम यह जानते हैं कि उसे कहां छिपाया गया है। अगर हम उसकी टोह लेते तो वह धन के साथ यहां से भाग जाता।"

"कौन है वह?"

"एक लड़का है," तारानेत्स ने कहना शुरू किया, तभी गुद ने दबी

नज़र से विक्षेप किया। साफ़ था कि उसे उसकी यह कार्यनीति पसन्द नहीं आ रही थी।

"क्यों बेकार तूमार बांधते हो? उसका तो बस थोबड़ा तोड़ देना चाहिए था।"

"और कौन करता यह?" तारानेत्स ने पलटकर जवाब दिया, "शा-यद तुम? तुम्हें जो वह एक चुटकी में मसलकर रख देता।"

"मुझे बताओ न कि कौन था वह? मैं ख़ुद उससे सुलट लूंगा।" मैंने कहा।

"नहीं, ऐसे नहीं चलेगा।"

तारानेत्स पूर्णतया षड्यंत्री गोपनीयता के पक्ष में था।

"अच्छा तो जैसा तुम चाहो," अपने कंधों को उचकाते हुए मैंने कहा और सोने के लिए अपने कमरे में चला गया।

अगली सुबह गुद ने अस्तबल में रुपयों का पता लगाया। किसी ने उन्हें संकरे झरोखे में खोंस दिया था और नोट जहां-तहां बिखरे पड़े थे। ख़ुशी से बेहाल गुद भागा हुआ मेरे पास आया। चुरे-मुरे नोटों से, बड़ी अस्त-व्यस्तता से उसकी मुट्ठियां भरी थीं।

आनन्दातिरेक से गुद के पांव धरती पर नहीं पड़ रहे थे,—वह समूची कोलोनी में फुदकता घूम रहा था। अन्य लड़कों के चेहरे भी ख़ुशी से चमक रहे थे। एक नज़र मुझे देखने के लिए मेरे कमरे में उनका तांता बंधाँ जा रहा था। केवल तारानेत्स, अपने सिर को गर्व से ऊंचा उठाए चहल-क़दमी कर रहा था। गुद या उससे पिछली रातवाली अपनी बातचीत के बाद उसके क्रिया-कलाप के बारे में कुछ पूछ-ताछ करने से मैं अपने आप-को रोके रहा।

दो दिन बाद तहख़ाने के दरवाज़े का क़ुलुफ़ किसी ने तोड़-मरोड़ डाला और कुछ पौण्ड सूअर की चर्बी का हमारा सार स्टाक क़ुलुफ़ सहित साफ़ कर दिया। इसके एक या दो दिन बाद भण्डार की खिड़की किसी ने नि-काल ली और कुछ मिठाई, जिसे हम फ़रवरी क्रान्ति की वर्षगांठ के लिए बचाकर रखे थे, और गाड़ी की ग्रीज़ के कुछ मर्तबान ग़ायब हो गए। गाड़ी की ग्रीज़ हमारे लिए सोने की भांति क़ीमती थी।

कालीना इवानोविच ने वस्तुतः घुलना शुरू कर दिया। अपना क्षीण

चेहरा एक के बाद दूसरे लड़के की ओर वह मोड़ता और उनके चेहरों में धुआँ छोड़ते हुए उन्हें ठिकाने पर लाने का प्रयत्न करता :

"इधर देखो, यह सब तुम्हारे ही लिए है। हरजाई पिल्लो! यह तो तुम खुद अपने को ही लूट रहे हो, हरामख़ोर!"

तारानेत्स, प्रत्यक्षत : इस सिलसिले में अन्य सबसे ज़्यादा जानता था, लेकिन वह मुंह फोड़कर कुछ प्रकट नहीं करता था। साफ़ था कि पाँसे को अपने हाथ से जाने देना उसकी नीति के अनुकूल नहीं था। अन्य लड़के खुलकर इस सिलसिले में बतियाते, लेकिन वे केवल एक तमाशा या कौतुक की चीज़ समझकर इसमें दिलचस्पी लेते थे। यह वह हृदयंगम नहीं कर पाते थे कि किसी और का नहीं, बल्कि यह खुद उन्हीं का माल चुराया जा रहा है।

शयनागार में ग़ुस्से से बुरी तरह भन्नाकर मैं उनपर चिल्लाया :

"आख़िर तुम अपने को समझते क्या हो? तुम आदमी हो या?..."

"लुटेरे," कमरे के दूसरे छोर पर एक बिस्तरे से आवाज़ आई।

"लुटेरे – बिलकुल ठीक, हम लुटेरे हैं।"

"मरदूद! तुम अपने को लुटेरा कहते हो! नहीं तुम दुम दबाकर भागनेवाले निरे उठाईगीरे हो, आपस में ही एक-दूसरे की गांठ काटते हो। अब तुम्हारे पास न घी है न तेल, नासपिटे कहीं के! वर्षगांठ भी बिना मिठाई के मनेगी। कोई हमें अब और नहीं देगा। सो अब बैठे रहना टुटरूँटूँ, – मेरी बला से!"

"लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच? हमें क्या पता यह किसकी करतूत है। आप खुद भी तो नहीं जानते, और न हमें ही आप से कुछ ज़्यादा मालूम है।"

मैं शुरू से ही जानता था कि मेरे कहने-सुनने से कुछ नहीं बनेगा। प्रत्यक्षत : चोर बड़े लड़कों में ही कोई था जिससे अन्य सब डरते थे।

अगले दिन घी-तेल का कुछ और राशन झटकने के लिए दो लड़कों के साथ मैं नगर गया। कई दिन इसमें बरबाद हो गए, लेकिन अन्त में हम कुछ सूअर की चर्बी हथियाने में सफल हो गये। अधिकारी-गण ने मिठाई के लिए भी नयी मंज़ूरी दे दी, हालांकि इसके लिए हमें काफ़ी देर तक झिड़कियां सुननी पड़ीं कि जो राशन हमें पहले दिया गया था, उसी से हम अपना काम नहीं चला सके। वापस लौटने पर रात को पूरे विस्तार

के साथ हमने अपनी सफलताओं का वर्णन सुनाया। आख़िर चर्बी कोलोनी में आई और उसे तहख़ाने में जमा कर दिया गया। लेकिन उसी रात वह फिर ग़ायब हो गई।

इस घटना से मेरा हृदय क़रीब-क़रीब ख़ुशी से उमंग उठा। अब, मैंने सोचा, हमारे हितों की सामान्य और सामूहिक प्रकृति स्वयं उभरेगी और चोरियों का सफ़ाया करने में ज़्यादा सरगर्मी का संचार करेगी। लेकिन, सच पूछो तो, हालांकि सभी लड़कों के चेहरे थे, उन्होंने किसी ख़ास सरगर्मी का परिचय नहीं दिया, और पहला भाव गुज़र जाने के बाद वे फिर उसी कौतुक के चक्कर में पड़ गए: यह कि वह कौन है जिसने इतनी चतुराई से काम लिया?

कुछ दिन बाद घोड़े का साज़ ग़ायब हो गया, और हमारा नगर जाना भी अब खटाई में पड़ गया। कई दिन तक हमने घर-घर जाकर हाथ फैलाया कि किसी से उधार लेकर ही अपना काम चलाएं।

चोरियां अब आए दिन की घटनाएं हो गई थीं। हर सुबह कोई न कोई चीज़ ग़ायब नज़र आती: कुल्हाड़ी, आरी, कोई बरतन या कढ़ाई, चादर, ज़ीन का पट्टा, लगाम की जोड़ी, खाने-पीने का सामान। मैं रात को जागने की कोशिश करता, रिवाल्वर पर हाथ रखे अहाते में गश्त लगाता, लेकिन कहने की आवश्यकता नहीं कि दो या तीन रात से ज़्यादा यह सिलसिला नहीं चल सका। मैंने ओसिपोव से अनुरोध किया कि एक रात के लिए वह निगरानी का काम संभाल ले, लेकिन वह इसकी संभावना मात्र से इतना भयभीत हो उठा कि उससे फिर कभी मैंने इसका ज़िक्र तक नहीं किया।

कई लड़कों पर मेरा सन्देह था, उनमें गुद और तारानेत्स भी थे। लेकिन प्रमाण-ऐसी चीज मेरे पास कोई नहीं थी। सो, मजबूरन अपने सन्देहों को मैं अपने तक ही सीमित रखे था।

ज़दोरोव ने ठहाका मारकर हंसते हुए मजाक़ के अन्दाज़ में पूछा:

"क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच, कि यहां—इस श्रम-कोलोनी में—केवल काम ही काम होगा, मौज-मज़ा कुछ नहीं? लेकिन अभी जरा ठहरिए, और आगे-आगे देखिये होता है क्या! और यह तो बताइये कि चोर को पकड़ने पर आप उसका क्या करेंगे?"

"उसे जेल का रास्ता नापना होगा।"

"बस, इतना ही! मैं तो समझा था कि आप उसका कचूमर निकाल देंगे।"

एक रात, पूरी तरह से सजा-धजा वह बाहर अहाते में निकल आया।

"मैं भी आपके साथ थोड़ी देर इधर से उधर गश्त लगाऊंगा।"

"सो तो ठीक, लेकिन इतना ही है कि चोर कहीं तुम्हें अपनी लपेट में न ले लें।"

"ओह नहीं, वे जानते हैं कि आज आप गश्त पर हैं, वे चोरी करने आज नहीं निकलेंगे। सो वह सब ठीक है।"

"क्यों ज़दोरोव, तुम उनसे डरते हो न? बोलो, मुझसे अब छिपाओ नहीं?"

"चोरों से? बेशक, डरता हूं। लेकिन मैं डरता हूं या नहीं डरता, सवाल यह नहीं है। आप ख़ुद भी जानते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच, कि अपने ही एक साथी का सुराग़ देना कोई अच्छी चीज़ नहीं है।"

"लेकिन यह तो ख़ुद तुम पर सेंध लगाई जा रही है?"

"मुझ पर? मेरा यह क्या है!"

"लेकिन तुम यहां रहते तो हो न!"

"इसे आप रहना चहते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच? क्या यही जीवन है? बेकार की चीज़ है आपकी यह कोलोनी। नाहक़ आप इसके पीछे पड़े हैं। देख लेना, उन सब चीज़ों को चुराते ही जो यहां चुराने लायक़ हैं, वे नौ दो ग्यारह हो जाएंगे। चाहिए यह कि आप सीधे-सीधे दो-एक राइफ़लधारी पहरेदार नियुक्त करें।"

"नहीं, मैं कोई राइफ़लधारी पहरेदार रखने नहीं जा रहा हूं।"

"भला क्यों?" ज़दोरोव ने अचरज से पूछा।

"पहरेदारों को पैसा देना होगा और हम यों ही काफ़ी तंगहाल हैं, और इससे भी महत्त्वपूर्ण है तुम्हारे लिए यह अहसास करना सीखना कि तुम ख़ुद ही मालिक हो।"

रात के लिए पहरेदारों को लगाने का सुझाव कितने ही लड़कों ने दिया। इसे लेकर शयनागार में बाक़ायदा बहस बुलाई गई।

अन्तोन ब्रातचेन्को ने जो दूसरी टुकड़ी के साथ आनेवाले हमारे लड़कों में सबसे अच्छा था, अपनी बहस में कहा:

"पहरेदार के निगरानी पर रहते चोरी के लिए कोई सिर नहीं उठा-

एगा, और अगर कोई उठाएगा तो भरी गोली उससे बाक़ायदा निबट लेगी। और जहां इस तरह एक महीने तक गश्त लगी, फिर वह चोर अपनी करतूत दिखाने की कोशिश नहीं करेगा।"

कोस्त्या वेत्कोवस्की ने जिसकी शक्ल ख़ूब फ़ब्ती थी और खुली दुनिया में जिसका विशेष धंधा जाली वारण्टों के बल पर लोगों के कमरों की छानबीन करना था, इसका विरोध किया। लेकिन इन तमाशियों में उसकी भूमिका गौण रहती थी, मुख्य भूमिकाओं का निर्वाह वयस्क करते थे। ख़ुद कोस्त्या ने, जैसा कि उसके रिकार्ड में नत्थी था, कभी कोई चीज़ नहीं चुराई, इन क्रिया-कलापों में उसकी दिलचस्पी ख़ालिस सैद्धान्तिक थी। चोरों से वह बराबर घृणा करता रहा। इस लड़के की विलक्षण तथा पेचदार प्रकृति बहुत पहले से मेरे ध्यान में थी। मैं यह देखकर चकित रह जाता कि बेढब लड़कों से भी वह ख़ूब निभा लेता है और राजनीतिक मामलों में सब उसका सिक्का मानते हैं।

"अन्तोन सेम्योनोविच की बात ठीक है," उसने ज़ोर देते हुए कहा, "कि किसी पहरेदार की ज़रूरत नहीं। हम सब अभी नहीं समझते, लेकिन जल्दी ही हम जान जाएंगे कि कोलोनी में कोई चोरी नहीं होनी चाहिए। अभी भी हम में काफ़ी ऐसे हैं जो यह समझते हैं। शीघ्र ही हम ख़ुद निगरानी करना शुरू कर देंगे। क्यों ठीक है न, बुरून?" सहसा बुरून की ओर मुड़ते हुए उसने कहा।

"क्यों नहीं? निगरानी करने में कोई नुक़सान थोड़े ही है," बुरून ने कहा।

फ़रवरी में हमारी भण्डारिन ने कोलोनी में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। मैंने उसके लिए एक अस्पताल में दूसरी नौकरी की व्यवस्था कर दी थी। रविवार के दिन 'लंडूरे' को हांककर उसके दरवाज़े पर खड़ा कर दिया गया। और उसके सारे हमजोलियों तथा उसकी दार्शनिक चायपार्टियों में हिस्सा लेनेवालों ने व्यस्तता के साथ उसके अनगिनत थैले-थैलियों और बक्सों को गाड़ी पर लादना शुरू कर दिया। नेक हृदय वृद्धा स्त्री, अपने समूचे सामान के ऊपर शान्त भाव से झकोले खाती, 'लंडूरे' की डेढ़ मील फ़ी घंटा की रफ़्तार से अपने नये जीवन को शुरू करने चल दी।

लेकिन 'लंडूरा' वृद्धा स्त्री को लिए हुए उसी रात—काफ़ी देर हो गई थी—लौट आया। सुबकियां भरती और रोती वृद्धा मेरे कमरे में फूट पड़ी। उसकी क़रीब-क़रीब सारी भौतिक सम्पत्ति लूट ली गई थी। उसके हमजोलियों और मददगारों ने उसके सभी बक्सों और थैले-थैलियों को गाड़ी पर नहीं रखा था, बल्कि उन्हें उड़ा दिया था। यह दुष्टतापूर्ण लूट का मामला था। मैंने कालीना इवानोविच, ज़दोरोव और तारानेत्स को तुरन्त जगाया, और सबने मिलकर कोलोनी को पूरी तरह छान डाला। चोरी इतने बड़े परिमाण में की गई थी कि हर चीज़ को ढंग से छिपाया नहीं जा सका था। भण्डारिन का ज़खीरा झाड़ियों में, सराय की अटारियों में, पोर्च की पैड़ियों के नीचे, यहां तक कि सीधे बिस्तरों तथा अलमारियों के पीछे खिसका दिया गया था। वृद्धा सचमुच में मालदार थी: क़रीब एक दरजन नये मेज़पोश, कितनी ही चादरें और तौलिये, कुछ चांदी की चम्मचें, अनेक प्रकार के कांच के छोटे बरतन, एक कंगन, कुछ बुन्दे और दुनिया-भर की अन्य छोटी-मोटी चीजें हमने खोज निकालीं।

वृद्धा आंसू बहाती मेरे कमरे में बैठी थी। जिन पर सन्देह था उनसे—उसके भूतपूर्व हमजोलियों और मित्रों से—कमरा धीरे-धीरे भरता जा रहा था।

शुरू में तो लड़कों ने हर चीज से इनकार किया, लेकिन मेरे थोड़ा चीख़ने-चिल्लाने पर मामला कुछ साफ़ हो चला। वृद्धा के मित्र मुख्य चोर नहीं निकले। उन्होंने केवल कुछ स्मृति-चिन्हों—जैसे रूमाल या चीनी रखने का पात्र—तक अपने आपको सीमित रखा था। इस सारे नाटक का मुख्य अभिनेता था बुरून। इस आविष्कार से सभी चकित रह गये—ख़ास तौर से मैं। बुरून, शुरू से ही, अन्य सबके मुक़ाबले अधिक विश्वसनीय दिखता था—सदा गम्भीर, गूढ़, लेकिन मित्रतापूर्ण, और हमारे सबसे अच्छे तथा मेहनती छात्रों में से था। उसकी कारगुज़ारी के परिमाण और ठोसपन से मैं स्तब्ध रह गया। वृद्धा के माल की गठरियां उसने उड़ाई थीं। इसमें अब कोई शक नहीं था कि कोलोनी में सारी पहली चोरियां भी उसी की कारगुजारी का नतीजा थीं।

आख़िर रोग की जड़ मेरे हाथों में आ गई। बुरून को मैंने जन-अदालत के सामने पेश किया। हमारी कोलोनी के इतिहास में यह पहला मौक़ा था जब जन-अदालत का आयोजन किया गया।

शयनागार में बिस्तरों और मेज़ पर चिथड़े पहने और गम्भीर चेहरे लिए, जूरी बैठे थे। तेल-लैम्प की किरणें लड़कों के तनाव भरे चेहरों और बुरून के पीले पड़े मुंह को आलोकित कर रही थी। अपने भारी और बेडोल ढांचे तथा मोटी गरदन के साथ वह विशिष्ट लुटेरा मालूम होता था

दृढ़ और विक्षोभ भरे शब्दों में मैंने लड़कों के सामने अपराध का वर्णन रखा: "एक ऐसी वृद्धा को लूटना जिसका एकमात्र सुख उस नगण्य मालमता में निहित था, एक ऐसे प्राणी को लूटना जो कोलोनी में अन्य सबसे अधिक लड़कों के प्रति स्नेह दिखाती थी, सो भी ठीक उस समय जब कि मदद के लिए वह उनकी ओर उन्मुख हुई थी,—जो भी ऐसा कर सकता है, उसमें निश्चय ही मानवता-ऐसी कोई चीज़ नहीं रह गई है, वह निरा पशु ही नहीं, बल्कि घिनौना कीट बन गया है। मानव वही है जो अपना मान रखना जानता हो, जिसमें शक्ति और गौरव की भावना हो, न कि वह जो एक वृद्धा दुर्बल स्त्री की एकमात्र जमापूंजी को भी नहीं बख़्शता।"

कारण चाहे जो भी हो, चाहे मेरे भाषण ने भारी प्रभाव डाला हो या किसी अन्य वजह ने लड़कों को काफ़ी उभार दिया हो—बुरून पर संयुक्त और प्रबल आक्रमण की बौछार होने लगी। टुइँयाँ-ऐसे झबरीले बालवाले ब्रातचेन्को ने बुरून की ओर अपनी बांहें फेंकते हुए कहा:

"बोलो, किस मुंह से अब तुम अपनी सफ़ाई दोगे? तुम्हें तो सींकचों में बंदकर देना चाहिए, तुम से जेल की चक्की पिसवानी चाहिए! यह सब तुम्हारी ही करतूत थी जो हमें भूखों मरना पड़ा, और तुमने ही अन्तोन सेम्योनोविच के नोटों पर भी हाथ साफ़ किया!"

बुरून ने सहसा विरोध किया।

"अन्तोन सेम्योनोविच के नोट? साबित करो तो जानूं?"

"चिन्ता न करो, वह भी हो जाएगा।"

"तो करो न साबित!"

"तो तुमने नोट नहीं लिए, वह तुम नहीं थे?"

"तो वह मैं था, क्यों?"

"बेशक, तुम ही थे।"

"मैंने और अन्तोन सेम्योनोविच के नोट लिए? किसके पास सबूत है इसका?"

कमरे के पीछे से तारानेत्स की आवाज़ आयी :

"मेरे पास!"

बुरून को जैसे बिजली छू गई। वह तारानेत्स की ओर मुड़ा। लगता था जैसे प्रतिवाद करने जा रहा हो। लेकिन फिर उसने विचार बदल दिया। केवल इतना ही कहा:

"अच्छी बात, अगर मैंने लिया भी तो इससे क्या? क्या मैंने उसे फिर जहां-का-तहां नहीं रख दिया?"

लड़कों में हंसी की लहर दौड़ गई। यह कलाबाजी उन्हें बेहद आनन्द-प्रद मालूम हुई। तारानेत्स हीरो की भांति खड़ा था। आगे बढ़ते हुए उसने घोषणा की:

"लेकिन फिर भी उसे यहां से निकालना नहीं चाहिए। हम सभी ने वह किया जो हमें नहीं करना चाहिए था। लेकिन हां, इसकी पूरी मरम्मत की जाए, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं।"

सब चुप हो गए। बुरून की नज़र अलस भाव से घूमती तारानेत्स के चेचक के दाग़ भरे चेहरे पर जा टिकी।

"ज़रा मेरा मुंह छूने की हिम्मत करना तो सही। लेकिन, यह तो बताओ, तुम किसलिए यह जौहर दिखा रहे हो? चाहे तुम लाख कोशिश करो, कोलोनी का संचालक बनना तुम्हें नहीं बदा है। अगर ज़रूरत हुई तो मेरी मरम्मत खुद अन्तोन कर लेंगे, बीच में टांग अड़ानेवाले तुम कौन होते हो?"

वेत्कोवस्की उछलकर खड़ा हो गया।

"कौन क्यों नहीं होते, क्या मतलब है तुम्हारा? साथियो, बोलो, इस मामले से हम कोई सरोकार रखते हैं या नहीं रखते?"

"है, हमारा सरोकार है," लड़कों ने चिल्लाकर कहा—"हम खुद इसकी मरम्मत करेंगे, और अन्तोन के मुक़ाबले कहीं अच्छी तरह करेंगे।"

बुरून पर टूट पड़ने के लिए कोई एक बढ़ भी चला। ब्रातचेन्को ठीक उसके मुंह पर ही घूंसा हिलाता हुआ चीख़ रहा था: "तुम पर कोड़ों की मार पड़नी चाहिए, कोड़ों की!

ज़दोरोव ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा:

"इसे यहां से लिवा ले जाओ, नहीं तो वे उसका भुर्ता बना देंगे!"

मैंने ब्रातचेन्को को बुरून के पास से खींचकर अलग कर दिया। दो

या तीन लड़कों को ज़दोरोव ने धकियाकर राह से हटाया। जैसे-तैसे हमने उस हंगामे को शान्त किया।

"बुरून को बोलने दो। देखें, वह क्या कहता है!" ब्रातचेन्को ने चिल्लाकर कहा।

बुरून ने अपना सिर लटका लिया।

"मुझे कुछ नहीं कहना। तुम, आप सब लोग ठीक हैं। मुझे अन्तोन सेम्योनोविच के साथ जाने दीजिये। वह जो मुनासिब समझेंगे, मुझे सजा देंगे।"

सब चुप। मैं दरवाज़े की ओर बढ़ा, इस डर से कि मेरे भीतर जो गुस्सा उमड़-घुमड़ रहा था कहीं वह फूट न पड़े। मेरे और बुरून के लिए राह छोड़ते हुए लड़के दाहिनी ओर बाईं ओर हट गए।

चुपचाप, बर्फ़ के ढूहों में से अपना रास्ता बनाते, अंधेरा छाए अहाते को हमने पार किया। मैं आगे-आगे था, और वह पीछे-पीछे।

मेरे दिमाग़ की हालत खेदजनक थी। मुझे लगा जैसे बुरून मानवता की निरी तलछट मात्र हो। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या करूं। वह चोरों के एक दल में से कोलोनी में भेजा गया था जिसके अधिकांश सदस्य वयस्क थे और गोली से उड़ा दिए गये थे। वह सत्रह वर्ष का था।

बुरून कमरे में, ठीक दरवाज़े से लगा, चुपचाप खड़ा था। मैं मेज़ पर बैठा था। मेरा मन कोई भारी-सी चीज़ उठाकर उसपर दे मारने और इस प्रकार साक्षात्कार से छुट्टी पाने के लिए उमड़-घुमड़ रहा था। मैं बड़ी मुश्किल से, जैसे-तैसे, अपने आपको रोके था।

आख़िर बुरून ने अपना सिर उठाया। स्थिर नज़र से मेरी आंखों में देखा और हर शब्द पर ज़ोर देते तथा अपनी सुबकियों को दबाने का सफल-असफल प्रयत्न करते हुए धीरे-धीरे बोला:

"मैं... फिर कभी... चोरी... नहीं... करूंगा।"

"तुम झूठे हो। कमीशन के सामने भी तुमने यही वायदा किया था।"

"वह कमीशन था! और यह आप हैं। मुझे चाहे जो सज़ा दें, केवल कोलोनी से निष्कासित न करें।"

"क्यों, कोलोनी से इतना मोह क्यों?"

"मुझे यहां अच्छा लगता है। यहां पढ़ाई होती है। और मैं पढ़ना

चाहता हूं। और अगर मैंने चोरी की तो इस कारण कि मेरे पेट में बराबर चूहे कूदते रहते थे।"

"अच्छी बात है। तीन दिन तक तुम ताले-कुंजी में बंद रहोगे, और पानी तथा रोटी के सिवा तुम्हें और कुछ नहीं दिया जाएगा। और ख़बरदार, अगर तुमने तारानेत्स का ज़रा भी बाल बांका किया तो!"

"अच्छी बात है।"

शयनागार से सटा एक छोटा-सा कमरा था। बुरून उसमें तीन दिन तक बंद रहा। यह वही कमरा था जिसमें भूतपूर्व बस्ती के शिक्षक सोया करते थे। मैंने उसे ताले में बंद नहीं किया, उसके इस वचन पर भरोसा करते हुए कि मेरी अनुमति के बिना वह बाहर पांव नहीं रखेगा। पहले दिन रोटी और पानी के सिवा मैंने उसे और कुछ नहीं दिया, लेकिन अगले दिन तरस खाकर मैंने उसके पास कलेवा पहुंचवा दिया। बुरून ने गर्व के साथ उससे इनकार करना चाहा, लेकिन मैं उसपर चिल्लाया:

"बस, ज़्यादा बनो नहीं... मैं तुम्हारे ये अन्दाज़ नहीं बरदाश्त कर सकता।"

थोड़ा खिसियाकर उसने अपने कंधों को उचकाया और चम्मच हाथ में उठाई।

बुरून ने अपना वचन क़ायम रखा। उसने फिर कोई चीज़ नहीं चुराई, —न तो कोलोनी में ही, और न ही अन्य कहीं।

५. राजकीय महत्त्व के मामले

एक ओर हमारे लड़के जहां कोलोनी की सम्पत्ति के प्रति उदासीनता-ऐसा एक भाव धारण करने लगे थे, वहां बाहरी तत्त्वों की आंखें उसपर बुरी तरह गड़ी थीं।

इन तत्त्वों की मुख्य ताक़तें ख़ारकोव राजमार्ग पर अपना दख़ल जमाये थीं। शायद ही ऐसी कोई रात बीतती हो जबकि इस सड़क पर किसी-न-किसी को न लूटा जाता हो। टुंटी राइफ़ल से बस एक गोली दाग़ना ही काफ़ी होता, स्थानीय निवासियों की गाड़ियों की पांत रोक ली जाती, और लुटेरे—बातों में समय न ख़र्च कर—राइफ़ल के बोझ से मुक्त अपने दूसरे हाथ को स्त्रियों के कपड़ों के अग्रभाग में डालकर टोह लेते, जबकि

उनके पति विचलित भाव से चाबुकों की मूठ से अपने ऊंचे जूतों को ठक-ठकाते, आश्चर्य से भरे कह उठते: "ज़रा सोचो तो! सबसे सुरक्षित जगह जानकर हमने अपना धन छिपाया, अपनी स्त्रियों के कपड़ों में। और उनके हाथ, बाप रे, सीधे उनकी चोलियों में जा पहुंचे!"

इस तरह की सामूहिक लूट में ख़ून-ख़राबी की नौबत शायद ही आती थी। पतिगण, लुटेरों के आदेशानुसार नियत अवधि तक एकदम स्थिर खड़े रहने के बाद, अपनी सुध-बुध बटोरते और कोलोनी में आकर घटना का सविस्तार वर्णन करते। लकड़ी-लाठियों से लैस एक दल को मैं जमा करता, अपना रिवाल्वर संभालता, राजमार्ग की ओर हम सब तेज़ी से लपकते और आस-पास के जंगल को पूरी तरह छान डालते। इस छान-बीन में हमें केवल एक बार सफलता मिली। सड़क से दो-तीन फ़रलांग दूर, जंगल में जमा बर्फ़ के एक अम्बार में, एक छोटा-सा दल छिपा था। हमारे लड़कों का शोरग़ुल सुन उन्होंने एक गोली दाग़ी और सभी दिशाओं में नौ दो ग्यारह हो गए। लेकिन उनमें से एक हमारे हाथ आ गया और उसे लेकर हम अपनी कोलोनी में लौटे। न तो राइफ़ल और न लूट का माल, कुछ भी उसके पास बरामद नहीं हुआ। सभी अभियोगों से उसने इनकार किया। लेकिन, प्रान्तीय ख़ुफ़िया विभाग... को सौंपने के बाद वह एक नामी डाकू निकला और इसके शीघ्र बाद ही समूचा दल भी पकड़ लिया गया। इस बात के लिए प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति ने गोर्की को-लोनी की सराहना की।

लेकिन राजमार्ग पर लूट-पाट पूर्ववत् चलती रही। जाड़ों का अन्त होने तक हमारे लड़कों को रात्रि में घटित 'भुतहा व्यापार' के चिन्ह मिलने लगे। एक दिन देवदार के वृक्षों के बीच बर्फ़ में से बाहर निकली एक बांह पर हमारी नज़र पड़ी। इर्द-गिर्द से खोदने पर एक स्त्री का शव हमें मिला। मुंह पर गोली मारकर उसकी हत्या की गई थी। दूसरी बार, ठीक सड़क के पासवाली झाड़ियों में, गाड़ीवानों का कोट पहने एक आद-मी की लाश हमें दिखायी दी। उसकी खोपड़ी चकनाचूर कर दी गई थी। एक दिन जब हम सुबह उठे तो जंगल के छोर पर पेड़ों से दो आदमियों को झूलते हुए देखा। निरीक्षक के आने तक पूरे दो दिनों तक वे वैसे ही झूलते और बाहर निकल आई आंखों से कोलोनी की ओर घूरते रहे।

भय का प्रदर्शन करना तो दूर, कोलोनी के निवासी इन सब घटना-

ओं में, बिना किसी छिपाव के, दिलचस्पी दिखाते। वसन्त के दिनों में जब बर्फ़ पिघलकर बह चली, लोमड़ियों द्वारा चाट कर साफ़ की गई खोपड़ियों की टोह में वह जंगल को छान डालते और उन्हें लकड़ियों पर टिकाए लीदिया पेत्रोवना को डराने के लिए कोलोनी में प्रवेश करते। शिक्षकों पर वैसे ही चौबीसों घंटे आतंक सवार रहता था। अपने बिस्तरों में पड़े वे कांपते रहते कि डाकुओं का गिरोह किसी भी क्षण कोलोनी में घुसकर कहीं क़त्ले आम न शुरू कर दे। ओसिपोव दम्पति, जिनके बारे में सभी की राय थी कि उनके पास चुराने लायक़ माल है, अन्य सबसे ज़्यादा भयभीत थे।

फ़रवरी के अन्तिम दिनों में एक रात सभी प्रकार की रसद के सामान से लदी हमारी अपनी गाड़ी उसी चाल से नगर से कोलोनी की ओर रेंगती हुई आ रही थी। तभी, ठीक कोलोनीवाले मोड़ पर ही, उसे रोक लिया गया। गाड़ी में अनाज और चीनी भरी थी। जाने क्यों, डाकुओं ने उन्हें पसन्द नहीं किया। कालीना इवानोविच के पास सिवा उसके पाइप के और कोई नक़दी नहीं थी। इस स्थिति से उनका भन्ना उठना वाजिब था। सो उन्होंने कालीना इवानोविच के सिर पर प्रहार किया, चोट खाकर वह बर्फ़ पर आ गिरा और वहीं बेहोश पड़ा रहा। इस बीच वे ग़ायब हो गए। गुद जो 'लंडूरे' की देख-भाल के लिए हमेशा साथ रहता था, निष्क्रिय साक्षी की भांति इस घटना को देखता रहा। कोलोनी में लौटने पर दोनों ने इस दुर्घटना का सविस्तार वर्णन हमारे कानों में उंडेलना शुरू किया—कालीना इवानोविच ने नाटकीय पक्ष पर ज़ोर देते हुए, और गुद ने उसके परिहासपूर्ण पक्ष को उभारते हुए। लेकिन सबने मिलकर एकमत से प्रस्ताव किया कि आगे से गाड़ी को लिवा लाने के लिए कोलोनी से हमेशा एक रक्षक दल जाया करे।

दो साल तक हम अपने इस प्रस्ताव से नहीं डिगे। इतना ही नहीं, राजमार्ग के अपने इन अभियानों को हमने एक सैनिक नाम भी दे दिया—"सड़क की मोर्चेबन्दी!"

रक्षक-दल में आम तौर से क़रीब दस आदमी होते थे। कभी-कभी मैं भी उनका साथ देता, क्योंकि मेरे पास रिवाल्वर था। उसे मैं यों ही चाहे जिसके हवाले नहीं कर सकता था, और बिना रिवाल्वर हमारा दस्ता अपने आपको काफ़ी सशक्त अनुभव नहीं करता था। केवल ज़दोरोव

ही एक ऐसा था जिसे, कभी-कभी, मैं अपना रिवाल्वर सौंप देता और वह बड़ी शान के साथ उसे अपने चिथड़ों के ऊपर लटका लेता।

सड़क की ड्यूटी अत्यन्त दिलचस्प कार्य था। सड़क के क़रीब एक मील के विस्तार में नदी के पुल से लेकर कोलोनीवाले मोड़ तक हम फैल जाते। अपने को गरमाने के लिए लड़के बर्फ़ में उछलते-कूदते, चिल्लाते-पुकारते जिससे एक-दूसरे से सम्पर्क न टूट जाए, और झुटपुटे में देर से आनेवाले यात्री के हृदय में आकस्मिक मौत के आतंक का संचार करते। घर की ओर आनेवाले गाँववासी अपने चाबुकों को फटकारते, लगे-बंधे अन्तर पर बार-बार आनेवाली अत्यन्त भयावह आकृतियों के पास से तेज़ी से गुज़र जाते। सोवख़ोज़ डाइरेक्टर तथा अधिकारी वर्ग के अन्य प्रतिनिधि अपनी खड़खड़ाती गाड़ियों में तेज़ी से निकल जाते और इस बात का ध्यान रखते कि उनकी दोनाली बन्दूक़ें तथा टुंटी राइफ़लें लड़कों की नज़र से ओझल रहे, पैदल चलनेवाले पुल पर आकर अटक जाते, —इस आशा से कि अगर अन्य पैदल सहयात्री आ जाएं तो संख्या के बल से पुष्ट होकर आगे बढ़ें।

जब मैं उनके साथ होता तो लड़के कभी अपना बल न दिखाते, या यात्रियों को कभी आतंकित न करते, लेकिन मेरे नियंत्री प्रभाव के अभाव में वे कभी-कभी हद से बाहर हो जाते, और ज़दोरोव ज़ोर देता कि मैं उनके साथ चला करूं, हालांकि ऐसा करने पर उसे रिवाल्वर रखने के मोह को छोड़ देना पड़ता सो मैंने रक्षा-दल के साथ हर बार जाना शुरू कर दिया, लेकिन मैं रिवाल्वर उसके पास ही रहने देता और उसके इस सुअर्जित सुख से उसे वंचित न करता।

जैसे ही 'लंडूरा' सामने से आता दिखाई पड़ता, ललकारकर हम उसका अभिवादन करते: "हाल्ट! हाथ ऊपर करो!" लेकिन कालीना इवानोविच केवल मुसकराता और अतिरंजित सन्तोष के साथ अपने पाइप से धुआँ छोड़ना शुरू कर देता। उसका पाइप रास्ते-भर उसका साथ देता था और यह परिचित कहावत कि "पता ही न चला समय कैसे बीत गया," यहां पूरी तरह लागू होती थी।

रक्षा-दल क्रमशः 'लंडूरे' के पीछे पंगत बनाकर चलता और ख़ुशी से चहकता हमारा दल कोलोनी के क्षेत्र में प्रवेश करता, रसद सम्बन्धी नवीनतम समाचार जानने के लिए उत्सुकता के साथ हम कालीना इवानोविच को घेर लेते।

इन्हीं जाड़ों में हमने एक ऐसी मुहिम सर की जिसका महत्त्व कोलोनी के हितों से कहीं ज़्यादा विस्तृत था,—एक ऐसी मुहिम जो राष्ट्रीय महत्त्व की थी। एक दिन जंगल का रक्षक हमारी कोलोनी में ग्राया ग्रौर उसने हमसे ग्रनुरोध किया कि जंगल की रखवाली करने में हम उसकी मदद करें। कारण, जंगल के पेड़ों को नाजायज़ ढंग से काट डालना ग्रत्यधिक बढ़ रहा है।

सरकारी जंगल की रक्षा करने की बात ने हमें ख़ुद ग्रपनी ग्रांखों में काफ़ी ऊंचा उठा दिया ग्रौर एक ऐसे काम का ग्रवसर हमें मिला जो ग्रत्यन्त दिलचस्प था ग्रौर जिसने ग्रन्ततः, हमें भी कुछ कम लाभ नहीं पहुंचाया।

रात। पौ फटने में ग्रब देर नहीं थी, लेकिन ग्रंधेरा ग्रभी भी घना था। खिड़की पर ठकठक की ग्रावाज़ से मेरी नींद उचट गई। ग्रांखें खोलने पर खिड़की के शीशे में से जिस पर पाले ने बेल-बूटे-से बना दिए थे—उससे सटी चपटी नाक ग्रौर उलझे सिर के सिवा मैं ग्रौर कुछ नहीं देख सका।

"क्यों, क्या है?"

"ग्रन्तोन सेम्योनोविच, वे जंगल में पेड़ काट रहे हैं।"

मैंने ग्रपना तथाकथित ग्रारज़ी लैम्प जलाया, जल्दी से कपड़े पहने, ग्रपना रिवाल्वर ग्रौर दोनाली बन्दूक़ उठाई ग्रौर बाहर निकल ग्राया। दरवाज़े पर उस रात निशा-ग्रभियान के उत्कट प्रेमी मौजूद थे—बुरून ग्रौर शेलापूतिन नाम का एक ग्रन्य नन्हा-मुन्ना निश्छल लड़का। बुरून ने बन्दूक़ ले ली ग्रौर हमने जंगल में प्रवेश किया।

"कहां हैं वे?"

"ग्रावाज़ की टोह लीजिये।"

हम रुक गए। पहले-पहल तो मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, लेकिन धीरे-धीरे रात की उलझी हुई ग्रावाज़ों ग्रौर ग्रपने सांस लेने की ग्रावाज़ के बीच लोहे के लकड़ी से टकराने की ग्रस्पष्ट ठक-ठक का ग्राभास मिलने लगा। हम ग्रावाज़ के सहारे चले, झुके हुए जिससे कोई देख न ले। सनोबर के किशोर पेड़ों की टहनियों ने हमारे चेहरों को खरोंच डाला, मेरी ऐनक को गिरा दिया ग्रौर हिमकणों की हम पर बौछार की। बीच-बीच में कुल्हाड़ी की ग्रावाज़ रुक जाती, तब पता न चलता कि किस दिशा में

हम बढ़ें, सो आवाज़ के फिर शुरू होने तक धीरज के साथ हम प्रतीक्षा करते। और इन आवाज़ों की, कुछ देर बाद, रह-रहकर पुनरावृत्ति होती, और हर क्षण वे अधिक ज़ोरदार तथा अधिक निकट होती जातीं।

हम यथासम्भव चुपचाप उन तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे जिससे चोर खटका पाकर भाग न जाएं। बुरून भालू-जैसी फुर्ती से झूमता बढ़ रहा था, उसके पीछे-पीछे टुइँयाँ-सा शेलापूतिन चल रहा था। अपने को गरमाए रखने के लिए वह अपनी जाकेट को खींचकर बदन से सटाए था। मैं सबसे पीछे था।

आख़िर हम अपने लक्ष्य पर पहुंच गए। सनोवर के एक वृक्ष के तने के पीछे हमने अपना अड्डा जमाया,—ठीक उस समय जबकि एक ऊंचा छरहरा पेड़ अपनी समूची लम्बाई में कंपकंपा रहा था, और उसके तल में पेटी कसे एक आकार मौजूद था। अन्दाज़ के लिए दो चार ढीली-ढीली चोटें मारने के बाद कुल्हाड़ी चलानेवाले ने अपनी कमर को सीधा किया, चारों ओर नज़र घुमाकर देखा और फिर पेड़ काटने में जुट गया। हम अब उससे क़रीब पांच गज़ की दूरी पर थे। दोनाली का मुँह ऊपर को किए बुरून एकदम तैयार था। उसने मेरी ओर देखा और स्थिर बना रहा। शेलापूतिन जो मेरी बग़ल में दुबका था, उचककर मेरे कंधे पर झुका और फुसफुसा उठा:

"इजाज़त है? ठीक मौक़ा है न?"

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी। शेलापूतिन ने बुरून के कोट की आस्तीन में एक झटका दिया।

गोली दग़ने की भयानक आवाज़ हुई और उसकी गूंज से जंगल थरथरा उठा।

कुल्हाड़ी चलानेवाला आदमी अनायास ही धरती पर पसर गया। सन्नाटा। हम उसके पास गए। शेलापूतिन अपना काम जानता था, और कुल्हाड़ी को उसने पहले ही अपने क़ब्ज़े में कर लिया था। बुरून ने ख़ुशी से ऊँची आवाज़ में अभिवादन किया:

"अरे, यह तुम हो, मूसी कारपोविच! सलाम!"

उसने मूसी कारपोविच के कंधे थपथपाये, लेकिन मूसी कारपोविच की बोलती बंद थी, जवाब में उसने एक शब्द नहीं कहा। एड़ी से चोटी तक

उसका बदन कांप रहा था और अपने कोट की वाईं आस्तीन से यंत्रवत् हिमकणों को तोड़ रहा था।

"तुम्हारा घोड़ा कहां है?" मैंने पूछा।

मूसी कारपोविच का बोल अभी भी नहीं लौटा था। बुरून ने उसके बदले जवाब दिया:

"वह है वहां। ऐ, कौन है तू, आ!"

केवल तभी, सनोबर के पेड़ों की झिलमिल में से, घोड़े के सिर और ढचरा गाड़ी के बम की कमान पर मेरी नजर पड़ी।

बुरून ने मूसी कारपोविच की बांह थामी।

"इधर आइये, मूसी कारपोविच, एम्बुलैन्स इधर है!" उसने प्रसन्नता से कहा।

आख़िर मूसी कारपोविच में चेतनता के कुछ चिन्ह प्रकट हुए। टोपी उतारकर उसने अपना हाथ सिर पर फेरा और हमारी ओर देखे बिना ही फुसफुसाया: "हे मेरे भगवान! .."

एक साथ हम सब गाड़ी की ओर चले। धीरे-से गाड़ी का मुंह मोड़ा, और शीघ्र ही हम गहरी लीकों पर हो लिए जो अब बर्फ़ के गालों से क़रीब-क़रीब ढकी थीं। हमारा गाड़ीवान, चौदह-एक वर्ष का लड़का, भीमाकार टोपी पहने और पांवों में बड़े आकार के जूते डाले, तक-तक की आवाज़ से घोड़े को उकसा रहा था और उदास हाथों से लगाम को झटक रहा था। वह बराबर नाक सुड़कता जा रहा था, लगता था जैसे एकदम घबरा गया हो। सब चुप हैं।

जंगल के छोर के निकट पहुंचने पर बुरून ने उसके हाथों से लगाम ले ली।

"तुम ग़लत रास्ते जा रहे हो," उसने चिल्लाकर कहा, "अगर तुम बोझ लादे होते तो यह रास्ता ठीक होता, लेकिन चूंकि तुम केवल अपने दादा को ले जा रहे हो, सो राह यह है!"

"कोलोनी की ओर न?" लड़के ने पूछा, लेकिन बुरून ने उसे फिर लगाम नहीं लौटाई, और कोलोनी की दिशा में घोड़े का मुंह मोड़ दिया।

दिन का उजाला फैलने लगा था।

सहसा मूसी कारपोविच ने बुरून के बांह के ऊपर से लगाम खींचकर घोड़े को रोक दिया और इसी के साथ-साथ, अपने ख़ाली हाथ से सिर की टोपी उतार ली।

"अन्तोन सेम्योनोविच," वह गिड़गिड़ाया, "मुझे जाने दो। एकदम पहली बार ही यह हुआ है। घर पर ईंधन नहीं है... मुझे छोड़ दो।"

बुरून ने झुंझलाकर मूसी कारपोविच का हाथ लगाम से झटक दिया, लेकिन घोड़े को नहीं हांका। वह यह जानने के लिए ठिठका था कि जवाब में मैं क्या कहता हूं।

"नहीं, मूसी कारपोविच, नहीं!" मैंने कहा, "यह नहीं चलेगा। हमें एक बयान लेना होगा। यह राज्य का मामला है,—जानते ही हो।"

सूरज के निकलते न निकलते शेलापूतिन की खनखनाती आवाज़ ने भी उभार लिया:

"और यह पहली बार भी नहीं है। पहली नहीं, यह तीसरी बार है। एक बार तूम्हारा वसीली पकड़ा गया था, और दूसरी बार..."

बुरून की भारी पुरुष आवाज़ ने खनखनाती आवाज़ के संगीत को बीच में ही काट दिया:

"लेकिन यहां अटके रहने से क्या फ़ायदा? तुम, आन्द्रेई, घर जाओ! तुम एकदम छोटी मछली हो! जाओ, और अपनी मां से कहो कि दादा पकड़े गए। अच्छा है, उसके लिए वह कुछ तैयार करके भेज देगी।"

आन्द्रेई भय से एकदम बेसुध, लपझप करके गाड़ी से उतरा और पत्ता-तोड़ गति से गाँव की ओर भाग गया। अब हम फिर अपने रास्ते पर चल दिये। जैसे ही हमने कोलोनी में प्रवेश किया, लड़कों के एक दल से हमारा सामना हुआ जो हमारी टोह लेने जा रहा था।

"भई वाह, हम तो समझे थे कि आप लोग मौत के चंगुल में फंस गए हैं, सो हमने सोचा कि चलकर आप लोगों को बचाना चाहिए।"

"मोर्चा पूर्ण सफलता के साथ सर करके आ रहे हैं!" बुरून ने हंसते हुए कहा।

मेरे कमरे में सब कोई जमा हो गए। मूसी कारपोविच गहरी निराशा में डूबा मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठा था। बुरून खिड़की की चौखट पर आसन जमाए था, और अभी तक बन्दूक़ अपने हाथ में थामे था। शेला-पूतिन रात की मुहिम का भयानक विवरण अपने साथियों के कानों में फुस-फुसा रहा था। दो लड़के मेरे बिस्तरे पर दख़ल जमाए थे और बाक़ी बेंचों पर बैठे थे। सभी एकटक कैसे-क्या बयान लिया जाता है, यह देखने में निमग्न थे।

बयान के रूप में हृदय को विदीर्ण करनेवाला विवरण प्रकट हुआ।

"तो तुम्हारे पास बारह देस्यतीना* भूमि है, क्यों है न? और तीन घोड़े?"

"घोड़े!" मूसी कारपोविच कराह उठा, "क्या आप उसे घोड़ा कह सकते हैं! केवल दो साल का शावक ही तो है।"

"तीन घोड़े!" भले मन से मूसी कारपोविच का कंधा थपथपाते हुए बुरून ने ज़ोर दिया।

मैंने लिखना जारी रखा:

"...और कटाव छः इंच गहरा था..."

मूसी कारपोविच की बांहें हवा में फैल गईं:

"ओह, अन्तोन सेम्योनोविच! ख़ुदा के लिए रहम कीजिये। भला, यह आप कैसे कहते हैं? मुश्किल से चार इंच का होगा!"

सहसा शेलापूतिन ने अपने फुसफुसपुराण को अधबीच में ही छोड़, अपने हाथों से क़रीब आधा मीटर की माप करके दिखायी और रोब के साथ मूसी कारपोविच के मुंह पर अपनी बत्तीसी चमकाते हुए चिल्ला उठा:

"एकदम इतना! क्यों, इतना ही गहरा था न वह?"

मूसी कारपोविच ने ऐसा भाव जताया जैसे उसने यह सब कुछ देखा ही न हो, और विनय की प्रतिमा बना अपनी आंखों से मेरी लेखनी की हरकत का अनुसरण करता रहा।

बयान लेने का काम पूरा हुआ। विदा होते समय मूसी कारपोविच ने आहत मासूमियत के रूप में मुझसे हाथ मिलाया और बुरून की ओर, उपस्थित लड़कों में सबसे बड़ा होने के नाते, उसने अपनी बांह बढ़ाई।

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, लड़को," उसने कहा, "आख़िर हम सभी को जीना है!"

बुरून ने उपहासपूर्ण शालीनता के साथ जवाब दिया:

"यह भी कोई कहने की बात है! सेवा के लिए हम हमेशा ख़ुशी से तैयार हैं।"

इसके बाद सहसा एक विचार उसके मस्तिष्क में कौंधा:

"लेकिन, अन्तोन सेम्योनोविच, उस पेड़ का क्या होगा?"

---

* देस्यतीना – १,०९ हैक्टर। सं०

उसने हम सब को चेता दिया।

आख़िर पेड़ क़रीब-क़रीब काट डाला गया था। कल तक निश्चय ही कोई उसका तमाम कर देगा और उसे उठा ले जाएगा। इससे पहले कि हम किसी नतीजे पर पहुंच पाते, बुरून दरवाज़े की ओर लपका। बाहर जाते-जाते, अपने कंधे के ऊपर से मुंह घुमाकर, अब पूरी तरह से परास्त मूसी कारपोविच को लक्ष्य कर वह कहता गया:

"चिन्ता न करो, तुम्हारा घोड़ा हम लौटा लाएंगे। हां तो लड़को, मेरे साथ कौन-कौन चल रहा है? ठीक, छः काफ़ी होंगे। वहां रस्सा तो है न, मूसी कारपोविच?"

"हां, गाड़ी से बंधा है।"

सभी बाहर हो लिए। घंटा-भर बाद सनोबर का एक लम्बा वृक्ष कोलोनी में ले आया गया। यह हमारा पुरस्कार था। कुल्हाड़ी भी कालसम्मत परम्परा के अनुसार कोलोनी में ही रही। एक लम्बे अर्से तक, आनेवाले दिनों में जब भी कोलोनी के माल की जांच की जाती, हम एक-दूसरे से पूछते:

"मूसी कारपोविचवाली कुल्हाड़ी कहां है?"

नैतिक उपदेशों या जब-तब गुस्से के विस्फोटों ने उतना नहीं जितना कि द्रोही तत्त्वों के विरुद्ध इस आकर्षक तथा जीवन्त संघर्ष ने स्वस्थ्य सामूहिक भावना के प्रथम सलज्ज उभार को प्रेरित किया। सांझ होने पर, जब-तब, हम लम्बी बहसें करते, जी भरकर हंसते, कभी-कभी अपनी मुहिमों—अभियानों को लेकर उनपर हाशिया-आराई करते और इन मुहिमों के संघर्ष में एक-दूसरे को अपने अधिकाधिक निकट खींचते। इस प्रकार, धीरे-धीरे, हम उस सम्बद्ध इकाई के रूप में ढलते गए जिसे गोर्की कोलोनी कहा जाता है।

६. लोहे की टंकी पर क़ब्ज़ा

इस काल के समूचे दौरान में हमारी कोलोनी धीरे-धीरे अपने अस्तित्व के आर्थिक पक्ष को मज़बूत बनाने में जुटी रही। न तो अति पर पहुंची ग़रीबी, भीतर ही भीतर चट कर जानेवाली जूं, न ही पाला-काटे पांव—अधिक ख़ुशहाल भविष्य के हमारे सपनों पर तुषारपात कर सकते थे।

बावजूद इसके कि अपने अधेड़ 'लंडूरे' तथा बाबा आदम के ज़माने की सीड-ड्रिल के सहारे हम कृषि के विकास की कोई ख़ास उम्मीद नहीं बांध सकते थे, हमारे सारे सपने खेती के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे थे। लेकिन अब तक हमारे ये सपने निरे सपने ही थे। 'लंडूरे, की शक्ति खेती की ज़रूरतों को देखते हुए इतनी नगण्य थी कि उसके हल खींचने की कल्पना मात्र की जा सकती थी। फिर, हम सब के साथ-साथ, वह भी भूख का मारा था। ज़मीन-आसमान एक कर देने के बाद हम उसके लिए भूसा-भर ही बटोर पाते थे। घास की तो बात तो ख़ैर जाने ही दीजिये। कोड़ा फटकारते-फटकारते में कालीना इवानोविच की दाहिनी बांह में दर्द गहरी जड़ पकड़ गया था। इसके बिना 'लंडूरा' टस से मस भी नहीं होता था।

और सबसे बढ़कर यह कि वह ज़मीन भी जहां हमारी कोलोनी स्थित थी, खेती के लिए अनुपयुक्त थी। उसमें और हवा के झोंकों के साथ उड़कर आनेवाले रेत के ढेरों में उन्नीस-बीस का ही अन्तर होगा।

और आज उस समय भी जबकि इतने दिन बीत चुके हैं, मेरे लिए यह हृदयंगम करना कठिन है कि उस हालत में जिसमें कि हम तब थे, वह क्या चीज़ थी जिसने उस कल्पनातीत मुहिम में हाथ डालने के लिए हमें तैयार कर दिया जिसकी बदौलत सब कुछ होते हुए भी, हम अपने पांवों पर खड़े हो सके।

अत्यन्त अजीब—कल्पना की पकड़ में आनेवाले—ढंग से उसकी शुरुआत हुई।

सहसा हमारा भाग्य चमका—बलूत के लट्ठों का एक आर्डर हमें मिल गया। उन्हें सीधे जंगल से, जहां वे कटे पड़े थे, लाना था। हालांकि यह सम्बन्धित जंगल उस दिशा में स्थित था जहां तक हम पहले कभी नहीं गए थे।

गाँव के अपने दो पड़ोसियों के साथ वहां जाना तय करने के बाद, जिन्होंनें घोड़े देने का ज़िम्मा लिया था, हम उस अनजान प्रदेश की यात्रा पर चल पड़े। वहां पहुंचने पर कालीना इवानोविच का और मेरा ध्यान पोपलर के गगनचुम्बी पेड़ों की उस सुदूर पांत की ओर गया जो पाले से जमी नदी के नरकटों के ऊपर छाए थे। कटे हुए पेड़ों के बीच गाड़ीवानों को लदाई करते और रास्ते में लट्ठों के गिरने की सम्भावना पर बहस करते छोड़कर हमने जमी नदी पार की। वहाँ एक तरह के कुंज की बग़ल

में पहाड़ी पर चढ़े और एक ऐसी जगह पहुंच गए जिसे 'भूतों की सल्तनत' कहना चाहिए। हमारी आंखों के सामने, अत्यन्त खण्डहर अवस्था में, विभिन्न आकार-प्रकार की क़रीब एक दरजन इमारतें खड़ी थीं—घर, छप्पर, झोंपड़ियां, सराय और इसी तरह कुछ और। सब एक-सी ख़स्ता हालत में थी। पहले जहां कभी भट्टियाँ रही होंगी वहां अब ईंट-मिट्टी के ढेर पड़े थे जो बर्फ़ से अधढके थे। फ़र्श, दरवाज़े, खिड़कियां, ज़ीने, सभी ग़ायब थे। बीच की कितनी ही दीवारें और छतें चकनाचूर की हुई थीं, और जहां-तहां से ईंटें तथा नींवें, समूची निकाल ली गई थीं। लम्बे-चौड़े अस्तबलों की जगह पर आगे-पीछे की दीवारों के सिवा और कुछ बाक़ी नहीं बचा था। इनके ऊपर शून्य उदासी के साथ लोहे की एक शानदार टंकी या हौज़ पड़ा था। लगता था जैसे इसपर हाल ही में रंग किया गया हो। समूची जागीर में यह टंकी ही एक ऐसी चीज़ थी जो जीवन का कुछ आभास देती थी—बाक़ी हर चीज़ निपट मुर्दा मालूम होती थी।

अहाते के एक ओर एक नया दोमंज़िला घर खड़ा था, बिना पलास्तर किया हुआ, लेकिन यों था कुछ रोबदार। उसके ऊंचे और चौड़े कमरों में पलास्तरी सजावट के अंश तथा खिड़कियों के संगमर्मर के दासे अभी भी मौजूद थे। अहाते के सामनेवाले छोर पर पोली कंकरीट का बना एक नया अस्तबल था। ख़स्ता-से-ख़स्ताहाल इमारतें भी निकट से देखने पर चकित कर देनेवाले ठोस काम का परिचय देती थीं,— बलूत की भीमाकार कड़ियां, बलिष्ठ गठजोड़, कोमल धरने और एकदम चौकस खड़ी रेखाएं। वह सशक्त माली ढांचा बुढ़ापे और रोग से ग्रस्त होकर नहीं मरा, बल्कि भरपूर जवानी में ही उसे बलपूर्वक नष्ट कर दिया गया था।

कालीना इवानोविच समृद्धता के इस वारापार को देखकर कराह उठा।

"ज़रा देखो न यह सब!" वह कह उठा। "नदी, बाग़, और कितनी बढ़िया चरागाहें!.."

नदी जागीर को तीन ओर से पखारती उस पहाड़ी की बग़ल से गुज़रती थी। और वह पहाड़ी हमारे इन मैदानों के लिए कितनी विरल चीज़ थी! बाग़ ऊपर-तले तीन चकों में, नदी की ओर ढलवां पर फैला था, पहले में चेरी के पेड़ लगे थे, दूसरे में सेब और नाशपाती के, और सबसे निचले में कृष्ण बदरी की घनी झाड़ियां छाई थीं।

मुख्य इमारत के दूसरी ग्रोर एक ग्रहाते में पांच-मंज़िला एक बड़ी मिल खड़ी थी जिसके पंखे ज़ोरों से घूम रहे थे। मिल के मज़दूरों से मालूम हुग्रा कि त्रेपके बन्धू इस जागीर के मालिक थे जो ग्रपने घरों को जैसा-का-तैसा छोड़कर देनीकिन की सेना के साथ भाग गए। जागीर कॉ चल-सम्पत्ति, सारी की सारी, बहुत पहले ही गोंचारोव्का गांव ग्रौर ग्रास-पास के गांवों में पहुंच चुकी थी, ग्रौर ग्रब ख़ुद घरों के ग़ायब होने की बारी थी।

कालीना इवानोविच की ज़बान खुल चली

"जंगली!" वह बड़बड़ाता रहा। "सूग्रर! काठ के उल्लू! कितनी बढ़िया जायदाद है! रहने के घर! ग्रस्तबल! कुत्तों की ग्रौलाद, यहां ग्राकर रहते क्या नानी मरती है? तुम यहां ग्रपना डेरा जमाते, खेती करते, मज़े से काफ़ी पीते, लेकिन कुल्हाड़ी लेकर इस ढांचे का क़ीमा बनाने के सिवा तुम्हारे दिमाग़ में ग्रौर कुछ नहीं धंसता! ग्रौर किस लिए? केवल इसलिए कि जान से प्यारे तुम्हें ग्रपने मालपूए पकाने हैं ग्रौर ग्रालसी तुम इतने हो कि लकड़ी काटकर ला नहीं सकते!.. राम करे मालपूए तुम्हारे गले में ग्रटक जाएं, गधे ग्रौर काठ के उल्लू कहीं के! ग्रौर देख लेना – जैसे ये हैं, ऐसे ही ये क़ब्रों में समा जाएंगे, – कोई क्रांति ऐसों को नहीं उबार सकती! ग्रोह, सूग्रर की ग्रौलाद घुन खाए, ग्रभिशप्त मिट्टी के माधो! जहन्नुमी जीव!"

पास से मिल का एक मज़दूर गुज़र रहा था। कालीना इवानोविच ग्रब उसकी ग्रोर मुड़ा।

"यह तो बताग्रो, कामरेड," उसने पूछा, "उस टंकी के लिए कहां किसका द्वार खटखटाना होगा? वह जो ग्रस्तबल के ऊपर नज़र ग्रा रही है। यहां रखे-रखे वह वैसे भी नष्ट हो जाएगी, बिना किसी को कोई लाभ पहुंचाए!"

"वह टंकी? मुझे क्या मालूम! यहां की हर चीज़ ग्राम-सोवियत के ज़िम्मे है।"

"समझा। चलो, तुमने कुछ तो ग्रता-पता दिया!" कालीना इवानोविच ने कहा, ग्रौर हम लोग घर के लिए रवाना हो गए।

ग्रपने पड़ोसियों की गाड़ियों के पीछे-पीछे हम लम्बे डग भरते घर की ग्रोर चल रहे थे। सड़क की सतह चिकनी थी ग्रौर ग्रासन्न वसन्त का

प्रभाव उसपर दिखाई पड़ने लगा था। कालीना इवानोविच अपने दिवास्वप्नों में डूबा था: कितना बढ़िया हो अगर वह टंकी हमारे हाथ लग जाए, उठाकर उसे हम अपनी कोलोनी में ले जाएं और धोबी-घर के ऊपर अटारी में उसे जमा दें और इस प्रकार धोबी-घर को स्नान-गृह में परिवर्तित कर डालें!

अगली सुबह जंगल के लिए फिर रवाना होने से पहले कालीना इवानोविच ने मुझे आ घेरा।

"ओह, तुम बड़े अच्छे हो। बस, उस ग्राम-सोवियत के लिए मुझे एक काग़ज़ लिखकर दे दो। टंकी उनके लिए वैसे ही है जैसे बन्दर के लिए अदख। और हमारे लिए इसका अर्थ है स्नान गृह! .. "

कालीना इवानोविच को ख़ुश करने के लिए मैंने उसे काग़ज़ लिख कर दे दिया! सांझ होते वह लौटा, ग़ुस्से से क़रीब-क़रीब पागल!

"हरामख़ोर! सिद्धान्त का चश्मा लगाकर वे हर चीज़ को देखते है, व्यावहारिक दृष्टि से देखना जानते ही नहीं! कहते हैं–खूसट कहीं के यह टंकी राष्ट्रीय सम्पत्ति है। ऐसे गधे कहीं खोजे नहीं मिलेंगे! मुझे एक दूसरा काग़ज़ लिख दो–अब मैं सीधा वोलोस्त (छोटा देहाती ज़िला कार्यकारिणी समिति का दरवाज़ा खटखटाऊंगा।"

"लेकिन तुम वहां पहुंचोगे कैसे? कोई पन्द्रह मील दूर जगह है। किस तरह जाओगे?"

"जान-पहचान का एक आदमी उधर जा रहा है। वह मुझे भी अपनी गाड़ी में बैठा लेगा।"

कालीना इवानोविच की स्नान-गृह की योजना कोलोनी में सभी को अच्छी लगी, लेकिन टंकी उसके हाथ लग सकेगी, यह विश्वास किसी को नहीं था।

"वह न हो, तब भी तो चल सकता है। हम लकड़ी की टंकी बना सकते हैं।"

"बस-बस, ज़्यादा ज्ञान न बघारो। लोग जब लोहे की टंकी बनाते हैं, तो इसका मतलब यह कि कुछ समझ-बूझकर ही बनाते हैं। जो हो, मैं उसे लेकर ही रहूंगा, भले ही इसके लिए मुझे उनका गला दबोचना पड़े! .. "

"और उसे यहां लाया कैसे जाएगा? क्या 'लंडूरा' उसे खींचकर लाएगा?"

"वह सब हो जाएगा। गुड़ है तो गुलगुले बनानेवालों की भी कभी न रहेगी!"

वोलोस्त कार्यकारिणी समिति से जब कालीना इवानोविच लौटा तो वह अन्य सब दिन से ज़्यादा भड़का हुआ था। ऐसा मालूम होता था जैसे गालियों के सिवा वह अन्य सब शब्द भूल गया हो!

अगले सप्ताह-भर वह बराबर मेरे पीछे लगा रहा, लड़के उसे देखकर हंसते और वह, इतना होने पर भी, "उयेज़्द कार्यकारिणी समिति के नाम" एक और काग़ज़ लिखने के लिए अनुरोध करता।

"मेरी जान छोड़ो, कालीना इवानोविच," मैं चिल्लाया। "तुम्हारी इस टंकी के अलावा मुझे और चीज़ों के बारे में भी सोचना है।"

"एक काग़ज़ लिख दो और बस," उसने ज़ोर देते हुए कहा। "इससे तुम्हारा कुछ बिगड़ नहीं जाएगा! क्या तुम्हें काग़ज़ का मोह है, अथवा और कुछ? बस तुम लिख-भर दो और मैं टंकी तुम्हारे सामने लाकर रख दूंगा।"

कालीना इवानोविच के लिए मैंने यह काग़ज़ भी लिख दिया। उसे जेब में खोंसते हुए कालीना इवानोविच ने आख़िर राहत का अनुभव किया—उसके चेहरे पर मुसकराहट दिखाई दी।

"इतने मूर्खतापूर्ण क़ानून का होना असम्भव है—अच्छी-ख़ासी निधि को नष्ट होने दिया जाए, और कोई उंगली तक न उठाए! ज़ारशाही का वह ज़माना अब नहीं रहा!"

सांझ गए कालीना इवानोविच उयेज़्द कार्यकारिणी समिति से लौटा और न तो वह शयनागार में ही प्रकट हुआ और न ही मेरे कमरे में। अगली सुबह तक ओझल रहकर जब वह मेरे पास आया तो वह एकदम सर्द था, उसकी आँखें पहुंच से बाहर दूर कहीं किसी बिन्दु पर जमी थीं।

"इन तिलों में से तेल नहीं निकल सकता," मुझे काग़ज़ लौटाते हुए उसने रुक्षता से कहा।

पूरे विस्तार से बारीकी के साथ लिखी गई हमारी अर्ज़ी के ठीक आर-पार, लाल स्याही में, दो टूक अन्दाज़ में एक शब्द लिखा हुआ था,—

निर्णयात्मक और हृदय को टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाली हद तक अन्तिम—"अस्वीकृत"।

इस घटना ने कालीना इवानोविच को गहरी और सुदीर्घ उलझन में डाल दिया। क़रीब दो सप्ताह तक उसकी वह आह्लादपूर्ण प्रौढ़ चपलता जैसे उससे विदा हो गई।

अगले रविवार को, उस समय जबकि मार्च का महीना बची-खुची बर्फ़ को बेरहमी से ठिकाने लगा रहा था, मैंने कुछ लड़कों को सैर-सपाटे के लिए अपने साथ चलने का बुलावा दिया। उन्होंने झटपट कुछ गर्म कपड़े लपेटे और हम चल पड़े... त्रेपके जागीर के लिए!

"कहो, अगर हम अपनी कोलोनी यहां ले आएं तो कैसा हो?" मैंने सस्वर विचार प्रकट किया।

"यहां?'

"हां, इन घरों में।"

"लेकिन ये रहने लायक़ कहां हैं?"

"हम इन्हें ठीक-ठाक कर सकते हैं।"

ज़दोरोव हंसी के मारे दोहरा हो गया और अहाते में चक्कर काटने लगा।

"अभी तीन घर मरम्मत के लिए हमारा मुंह ताक रहे हैं," उसने मुझे याद दिलाया। "सारे जाड़े बीत चले, और हम अभी तक उन्हें ठीक नहीं कर सके!"

"जानता हूं। लेकिन कल्पना करो, अगर हम इस जगह की मरम्मत कराने में सफल हो जाएं तो?"

"ओह, तब तो कोलोनी सचमुच में कोलोनी बन जाए! नदी का किनारा, बाग़, और एक मिल।"

खण्डहरों में मंडराते हुए अपनी कल्पना को हमने उन्मुक्त छोड़ दिया:

"यहां हम अपना शयनागार बनाएंगे, यहां भोजनालय होगा, क्लब के लिए यह बहुत शानदार रहेगा और वह स्कूल के कमरे..."

पूरी तरह थके लेकिन स्फूर्ति से भरे हम घर लौटे। शयनागार में भावी कोलोनी की रूप-रेखा को लेकर ख़ूब ज़ोर-शोर से हमने चर्चा की। सोने के लिए बिछुड़ने से पहले येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने कहा:

"लेकिन, लड़को, तुमने यह भी सोचा कि दिवास्वप्न देखना अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण नहीं। यह बोल्शेविकों का तरीक़ा नहीं है।"

शयनागार में एक अटपटी ख़ामोशी छा गई।

कठोर दृष्टि से मैंने येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की ओर देखा और झन-झनाहट के साथ मेज़ पर अपना घूंसा पटकते हुए मैंने घोषणा की:

"तो मेरी बात गांठ बांध लो। महीने-भर के भीतर ही वह जागीर हमारी हो जाएगी। क्यों, यह तो बोल्शेविक तरीक़ा है न?"

हंसी और ख़ुशी की बाढ़ लड़कों में उमड़ी, मैं भी उनके साथ हंसा, और इसी प्रकार येकातेरिना ग्रिगोरियेवना भी।

सारी रात बैठकर प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के लिए मैं एक बयान तैयार करता रहा।

एक सप्ताह बाद प्रान्तीय जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष ने मुझे बुलाया।

"ख़याल तो बुरा नहीं है वह जो आपने सुझाया है। चलिये, उस जगह को थोड़ा देख-भाल लें।"

एक और सप्ताह बीता, और प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति में हमारी योजना पर विचार किया जाने लगा।

मालूम हुआ कि यह जागीर काफ़ी पहले से अधिकारयों के दिमाग़ में थी। मौक़े से लाभ उठाकर मैंने उन्हें कोलोनी की उपेक्षित अवस्था, और ग़रीबी के, अपनी निराशा और सामूहिकता की उस जीवित चेतना के बारे में बताया जो इस सबके बावजूद हम लोगों में उभर रही थी।

प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष ने कहा:

"उस जगह के लिए एक स्वामी की दरकार है, और काम में जुट जानेवाले लोग यहां हमारे सामने मौजूद हैं। अच्छा हो, इन्हें वह दे दी जाए।"

फिर क्या था,–खेती-योग्य साठ देस्यतीना भूमि में फैली त्रेपके बन्धुओं की भूतपूर्व जागीर के लिए वारण्ट मेरे हाथों में आ गया। मरम्मत के लिए मेरा तख़मीना भी उसमें मंजूर कर लिया गया था। उसे हाथ में लिए मैं शयनागार के बीचोंबीच खड़ा था और एकाएक मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब सच है–सपना नहीं है, और मेरे ईर्द-गिर्द लड़कों का समूह था–ख़ुशी से विह्वल, उछाह का बगूला, उठी हुई बांहों का जंगल...

"ज़रा दिखाइये, हमें भी दिखाइये!" वे अनुरोध कर रहे थे।

तभी येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने प्रवेश किया। लड़के उसकी ओर लपके और निश्छल ताने-तिशनों की बाढ़ उमड़ पड़ी। शेलापूतिन की तेज़ खनखनाती आवाज़ गूंजी:

"क्या यही बोल्शेविक तरीक़ा है या और कुछ? बोलिये, क्या कहती हैं आप?"

"अरे, बात क्या है? हुआ क्या?"

"यह तो बोल्शेविक तरीक़ा है न? देखिये, ज़रा अपनी आंखों से देखिये!"

कालीना इवानोविच की ख़ुशी अब से ज्यादा बढ़ी-चढ़ी थी।

"भई वाह, तुमने तो कमाल कर दिया," उसने कहा। "यह तो वैसे ही हुआ जैसे कि धर्मोपदेशक कहा करते हैं: 'मांगों और वह तुम्हें देगा, खटखटाओ और पट तुम्हारे लिए खुल जाएंगे!.. और तुम्हें मि-लेगा..."

"मुंह पर एक झापड़!" ज़दोरोव ने बीच में ही कहा।

"यह झापड़ नहीं है," उसकी ओर मुड़ते हुए कालीना इवानोविच ने कहा—"यह वारण्ट है, वारण्ट!"

"गए थे टंकी के लिए हाथ पसारने, और मिला क्या,—मुँह पर एक झापड़। लेकिन यह राजकीय महत्त्व का मामला है, हमारी-तुम्हारी इच्छा का नहीं!"

"तुम अभी बच्चे हो, धर्म-सूत्रों का भेद क्या जानो," कालीना इवा-नोविच ने ख़ुशी से उमगते हुए कहा, इस समय उसे किसी तरह भी रंग से बेरंग नहीं किया जा सकता था।

इसके बाद एकदम अगले रविवार को ही, मेरे और लड़कों के एक दल के साथ, हमारी इस नयी रियासत का उसने निरीक्षण किया। का-लीना इवानोविच का पाइप त्रेपके-खण्डहरों की हर ईंट के चेहरे पर धुएँ के विजयी बादल छोड़ रहा था। गर्वीले अन्दाज़ में वह टंकी के पास से गुज़रा।

"तो इस टंकी को हम कब उठा रहे हैं?" बुरून ने पूरी गम्भीरता के साथ पूछा।

"भला, इस नाचीज़ को उठाने की क्या ज़रूरत है!" कालीना इवा-

नोविच ने कहा। "यहां भी यह बेकार नहीं रहेगी। और देखो, एकदम नयी तकनीक से इन अस्तबलों को बनाया गया है—कोई उंगली तक नहीं उठा सकता!"

७. "हर कोई किसी-न-किसी काम के लायक़ होता है!"

त्रेपके बन्धुओं की जागीर में पड़ाव डालने की अपनी ख़ुशी और उल्लास को हम तुरन्त तथ्यों की—वास्तविकता की—भाषा में परिवर्तित नहीं कर सके। इसके लिए हमें धन की जरूरत थी, सामग्री की ज़रूरत थी। उनका मिलना एक देर तलब मामला बन गया। मुख्य बाधा कोलोमाक नाम की एक छोटी लेकिन बड़ी खोटी नदी थी। यह हमारी कोलोनी और त्रेपके जागीर के बीच पड़ती थी, और अप्रैल के महीने में प्रकृति की अंधी शक्तियों का दुर्दमनीय रूप धारण कर लेती थी। शुरू में, धीमी लेकिन अडिग गति से, यह अपने तटों को प्लावित करती। इसके बाद, और भी धीमी गति से जब अपनी विनीत सीमाओं में सिमटती भी तो एक नयी मुसीबत छोड़ जाती—दलदल और कीचड़ जिसे आदमी या जानवर, दोनों में से कोई भी पार न कर पाता।

इस प्रकार त्रेपके—अपनी इस नयी उपलब्धि का यही नाम हमने रख छोड़ा था—काफ़ी अर्से तक खण्डहरों का एक समूह बनी रही। इस बीच लड़के आते हुए वसन्त के रंग में रंगते जा रहे थे। सुबह नाश्ते के बाद खलिहन से बाहर निकल वे काम की घंटी बजने की प्रतीक्षा करते सूरज की धूप का आनन्द लेते, उसकी किरणों में अपने वक्ष को गरमाते, और लापरवाही से फेंकी हुई उनकी जाकेटें पूरे अहाते में छितरा जातीं। लगातार घंटों तक मुंह से एक शब्द कहे बिना वे धूप में बैठे रहते, और इस प्रक़ार जाड़ों के महीनों की कसर निकालते जबकि—शयनागार में पहुंच जाने पर भी—अपने आपको गरम रखना इतना कठिन होता था।

घंटी की आवाज़ उन्हें उठने के लिए बाध्य करती, और अनमने से वे अपनी-अपनी जगहों के लिए छंट जाते। लेकिन काम के दौरान भी, किसी-न-किसी बहाने, अपने बाजुओं को धूप में गरमाने, वे जब-तब बाहर निकल आते।

अप्रैल के प्रारम्भ में वास्का पोलेश्चूक नौ दो ग्यारह हो गया। वह

कोलोनी के, जैसा कि कहते हैं, कोलोनी के आकर्षक सदस्यों में से नहीं था। दिसम्बर के महीने में जन-शिक्षा विभाग के एक दफ़्तर से, उससे मेरा सम्पर्क हुआ था। गंदा, चिथड़ा हुआ, और एक छोटे मजमे से घिरा। बाल रोग-विभाग ने उसे विकृत मस्तिष्क करार दे दिया था और उसे ऐसे लड़कों के आश्रय में भेजा जा रहा था। चिथड़ों में लिपटा वह विरोध कर रहा था, रो रहा था, कह रहा था कि वह पागल ज़रा भी नहीं है, यह कि धोखे से वे उसे शहर ले आए हैं,—यह कहकर कि वे उसे क्रास्नोदर ले जा रहे हैं जहां उसे स्कूल में भर्ती कर दिया जाएगा।

"लेकिन इस तरह चीख़-चिल्ला क्यों रहे हो?" मैने उससे पूछा।

"ये कहते हैं कि मैं पागल हूं..."

"अच्छी बात है। मैंने तुम्हारी बात सुन ली। अब चीख़ना बंद करो, और मेरे साथ चलो।"

"कैसे चलेंगे?"

"अपने दोनों पांवों पर। चलो।"

लड़के का चेहरा-मोहरा ऐसा कुछ बुद्धि का आईना नहीं मालूम होता था। लेकिन वह स्फूर्त्ति से छलछल रहा था। मैंने मन ही मन सोचा— "बला से! हर कोई किसी-न-किसी काम लायक़ होता है।"

बाल रोग-विभाग ने अपने इस बोझ को हल्का कर प्रसन्नता अनुभव की, और हम तेज़ डगों से कोलोनी की ओर चल दिए। रास्ते में उसने वही घिसी-पिटी अपनी कहानी सुनाई। माता-पिता की मृत्यु और घोर ग़रीबी से उसकी शुरुआत होती थी। वास्का पोलेश्चूक उसका नाम था। वह, ख़ुद उसी के शब्दों में, 'एक बलि' था—पेरेकोप के धावे में उसने हिस्सा लिया था।

कोलोनी में उसका पहला दिन एकदम मुंहबंद किए बीता। न तो शिक्षक और न लड़के ही उसके मुंह से एक भी शब्द निकलवाने में सफल हो सके। सम्भवत: उसके ऐसे ही किसी रवैये की बदौलत पंडितों को इस निश्चय पर पहुंचना पड़ा था कि पोलेश्चूक का दिमाग़ सही नहीं है।

अन्य लड़कों में उसकी ख़ामोशी ने रहस्य-कौतुक का संचार कर दिया। उन्होंने उसपर अपने निजी तरीक़े आज़माने की इजाज़त मांगी। उनका कहना था कि इसे ज़रा कसकर सकपकाने की ज़रूरत है। देखना, अपने

आप ठीक-ठाक बोलने लगेगा। इस तरह का कोई उपाय काम में लाने की मैंने साफ़ मनाही कर दी। मुझे अफ़सोस हो रहा था कि कहां से गूंगे को कोलोनी में ले आया।

और इसके बाद अचानक प्रत्यक्षतः रत्ती-भर भी बिना किसी उकसावे के, पोलेश्चूक ने बोलना शुरू कर दिया। हो सकता है कि यह केवल वसन्त के सुहावने दिन का असर हो, जो सूरज द्वारा अभी तक नम धरती से निष्कासित सुगंध से व्याप्त था। वह कर्कश जोश के साथ बोल रहा था, अपने शब्दों के साथ क़हक़हों की बाढ़ लगाते और अचानक छलांग भरते हुए। लगातार कई दिन तक वह मेरे दामन से चिपका और लाल सेना में जीवन की रंग-रेलियों तथा कमाण्डर ज़ुबाता के बारे में बतियाता रहा,—इस तरह जैसे उसकी बातों का कभी अन्त नहीं होगा।

"क्या आदमी था वह भी! उसकी आंखें इतनी काली, और इतनी नीली थीं,—कि जब वह पेरेकोप में था तो हमारे अपने जवान उससे कांपते थे..."

"ज़ुबाता का राग अलापते तो तुम नहीं अघाते," लड़कों ने कहा, "लेकिन तुम्हें उसका कुछ अता-पता भी मालूम है ?"

"पता, पता क्या?"

"उसका पता, चिट्ठी-पत्री भेजने का पता क्यों, तुम्हें मालूम है?"

"नहीं, मुझे नहीं मालूम। और उसे पत्र लिखने की मुझे ऐसी ज़रूरत भी क्या है? बस, निकोलायेव जाने-भर की देर है। वहां उसका पता चल जाएगा।"

"और वह तुम्हें गरदनिया देकर निकाल बाहर करेगा!"

"नहीं, सो नहीं। वह दूसरा था जिसने मुझे धता बताया था। उसी ने यह कहा था—'इस ख़र-दिमाग़ के साथ माथा-पच्ची करने से क्या लाभ?' लेकिन मैं ख़र-दिमाग़ नहीं हूं, नहीं हूं न?"

जो भी मिलता उसी से ज़ुबाता के, उसकी अच्छी शक्ल-सूरत के, उसके साहस और इस बात के बारे में दिन-दिन-भर बतियाता कि कोसने में भी वह कभी सचमुच में बुरी ज़बान का प्रयोग नहीं करता था।

"क्या तुम उड़न-छू होना चाहते हो?" लड़कों ने उससे पूछा।

पोलेश्चूक ने एक नज़र मेरी ओर डाली और कुछ सोचने-सा लगा।

प्रत्यक्षत: वह बहुत पहले ही यह सब सोच चुका था, और उस समय जबकि वह अन्य सब के ध्यान से उतर जाता और वे किसी अन्य विषय में डूबे होते, वह अचानक उस लड़के को पकड़ता जिसने कि यह सवाल पूछा था, और कहता:

"अन्तोन नाराज़ तो नहीं होंगे?"

"किस बात पर?"

"ओह... मेरे उड़न-छू हो जाने पर!"

"मेरी समझ में तो होंगे! आख़िर इतनी मेहनत जो उन्होंने तुम्हारे साथ की है!"

वास्का फिर कुछ सोचने लगता।

और एक दिन, ठीक कलेवा करने के बाद, शेलापूतिन दौड़ता हुआ मेरे कमरे में आया।

"वास्का का कोलोनी में कुछ पता नहीं है। उसने कलेवा भी नहीं किया, उड़न-छू हो गया। ज़ुबाता के पास उड़ गया!"

लड़के अहाते में मेरे चारों ओर जमा हो गये। वे यह देखना चाहते थे कि वास्का की विदाई का मुझपर क्या असर होता है।

"पोलेश्चूक आख़िर भाग ही गया..."

"वसन्त है न..."

"वह क्रीमिया गया है..."

"नहीं, क्रीमिया नहीं, निकोलायेव..."

"अगर हम स्टेशन चलें तो शायद वह पकड़ में आ जाए!.."

वास्का ऐसे कोई गर्व की चीज़ नहीं था, लेकिन उसके भाग जाने से मुझे दुःख हुआ। इस बात को स्वीकार करना काफ़ी कटु था कि एक आदमी ने हमारी तुच्छ भेंट को स्वीकार नहीं किया, और किसी अच्छी चीज़ की टोह में यहां से चला गया। इसी के साथ-साथ मैं यह भी अच्छी तरह जानता था कि ग़रीबी की मारी हमारी कोलोनी एसी नहीं है कि लोगों को अपने साथ सटाये रखे।

लड़कों से मैंने कहा:

"जहन्नुम में जाए वह! गया, सो गया! और बहुत-सी चीज़ें हैं जिनकी हमें फ़िक्र करनी है।"

अप्रैल में कालीना इवानाविच ने जोताई शुरू की। एक अत्यन्त अप्र-

त्याशित घटना ने यह सम्भव बना दिया। कमीशन के सामने एक घोड़ा-चोर की पेशी हुई। यह घोड़ाचोर भी बालक ही था। अपराधी को तो किसी-न-किसी जगह भेज दिया गया, लेकिन घोड़े के मालिक का कुछ पता नहीं चल पा रहा था। कमीशन पूरे सप्ताह-भर से परेशान था। घोड़े जैसे मुश्किल जानदार प्रमाण से निबटना उसके लिए एक नया अनुभव था। तभी कालीना इवानोविच कमीशन के पास पहुंचा, पत्थर के चौके जड़े अहाते के बीच परित्यक्त की हालत में खड़े घोड़े की दुःखद बेचारगी पर नज़र डाली, बिना मुंह से एक शब्द निकाले उसकी लगाम थामी और उसे कोलोनी की ओर ले चला। कमीशन के सदस्यों ने बोझ हल्का होते देख सन्तोष की सांस ली।

कोलोनी में उल्लास और आश्चर्य के उदगारों से कालीना इवानोविच का स्वागत हुआ। गुद ने कालीना इवानोविच से घोड़े की रास अपने कांपते हुए हाथों में संभाली और कालीना इवानोविच के मुंह से निकले शब्द उसकी आत्मा के ओर-छोर में ख़ूब गहरे समाते चले गए:

"देखो, होशियारी से काम लेना। ऐसा न हो कि इसके साथ भी वैसा ही बरताव करने लगो जैसा कि आपस में एक-दूसरे के साथ करते हो। यह केवल पशु ही तो है,—मूक पशु। तुम ख़ुद जानते हो, यह शिकायत नहीं कर सकता। लेकिन अगर तुम इसे चिढ़ाओगे, और अगर इसने कहीं तुम्हारे खोपड़े पर दुलत्ती जमा दी, तो हाय तोबा मचाते हुए अन्तोन सेम्योनोविच के पास जाने से कोई लाभ न होगा। चाहे तुम अपना गला ही क्यों न फाड़ डालो, लेकिन उससे कोई मदद नहीं मिलेगी। ऊपर से मैं जो तुम्हारी खोपड़ी पर धौल जमाऊंगा, सो अलग।"

बाक़ी हम सब भी इस धीर-गम्भीर दल के इर्द-गिर्द जमा हो गए, और गुद के सिर के ऊपर लटकती भयावह धमकियों के प्रति विक्षोभ प्रकट करने का हम में से किसी को सपने में भी ख़याल नहीं आया। कालीना इवानोविच ख़ुशी से चमकता चेहरा लिए खड़ा था और मुंह में पाइप दबाए अपना आतंकप्रद लेक्चर झाड़ रहा था। घोड़ा कत्थई रंग का था, एकदम पट्ठा, ख़ूब हृष्ट-पुष्ट

कालीना इवातोविच और कुछ लड़के कई दिन तक सायबान में खुटर-पुटर करते रहे। हथौड़ियों, पेचकसों और लोहे के उल्टे-सीधे टुकड़ों की मदद से – अन्तहीन सूत्रों की बौछार के साथ—भूतपूर्व कोलोनी द्वारा छोड़

गए कचरे में से सामग्री के टुकड़े खोज-खाजकर उन्होंने हल जैसी एक चीज़ बनाने में सफलता प्राप्त की।

और आख़िर वह उल्लासपूर्ण घड़ी भी आ गई जब बुरून और ज़दोरोव ने हल की मूठ थामी। कालीना इवानोविच भी उनके साथ लगा रहा। बीच-बीच में वह झिड़कियां भी देता जाता था:

"ओह, हरामख़ोर कहीं के! कम्बख़्त हल तक नहीं चला सके,– वह देखो, ग़लती की, वह देखो, वह!"

लड़के मगन भाव से पलटकर कहते:

"ख़ुद चलाकर हमें दिखाए न, कालीना इवानोविच! शायद आपने भी अपने जीवन में कभी हल की मूठ नहीं थामी?"

कालीना इवानोविच अपने मुँह से पाइप निकालता और भरसक ग़ुस्से से उनकी ओर घूरकर देखता:

"मैंने? मैंने कभी हल की मूठ नहीं थामी? यह क्यों नहीं कहते कि ख़ुद तुम्हें कभी हल की मूठ थामने की ज़रूरत नहीं पड़ी। तुम्हें समझना चाहिए। तुम्हारी ग़लती मुझे मालूम हो जाती है, और तुम्हें उसका आभास तक नहीं होता।"

गुद और ब्रातचेन्को उनके साथ थे। गुद छिपी नज़रों से हल चलानेवालों को ताक रहा था कि कहीं वे घोड़े से दुर्व्यवहार तो नहीं कर रहे, जबकि ब्रातचेन्को निरी मुग्ध दृष्टि से 'लाल' का अनुसरण कर रहा था। गुद के संरक्षण में उसने अस्तबल के काम का ज़िम्मा लिया था।

बड़े लड़कों में से कुछ ने सायबान में पुराने बीज-ड्रिल को ठीक करना शुरू कर दिया। सोफ़रोन गोलोवान उनपर चिल्ला रहा था और उनकी प्रभावशील आत्माओं में अपनी व्यापक तकनिकल सूझबूझ के प्रति सराहना का संचार कर रहा था

सोफ़रोन गोलोवान में कुछ ऐसी सुस्पष्ट विशेषताएं मौजूद थीं जो उसे उसके साथी-जीवों से अलग करती थीं। भीमाकार डील-डौल, पाशविक वृत्तियों से पूर्ण, हर घड़ी जैसे नशा किए हुए–हालांकि वास्तव में वह कभी नशे में नहीं रहता था। दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसके बारे में वह अपनी निजी राय न रखता हो, और उसकी हर राय अद्भुत अज्ञान में डूबी होती थी। गोलोवान कुलक (धनी किसान) और लोहार का एक असाधारण मिश्रण था। वह दो झोंपड़ियों, तीन घोड़ों, दो गा-

यों और एक लोहारघर का स्वामी था। लेकिन अपनी सारी कुलक सम्पन्नता के बावजूद वह एक योग्य, सक्षम लोहार था, और उसके दिमाग़ की अपेक्षा उसके हाथ कहीं अधिक कुशल थे। सोफ़रान का लोहारघर सराय के पास राजमार्ग के दाहिनी ओर स्थित था और इस उपयुक्त जगह की बदौलत ही गोलोवान परिवार ने अपनी यह सम्पन्नता प्राप्त की थी।

गोलोवान कालीना इवानोविच के निमंत्रण पर कोलोनी में आया था। हमारे सायबानों में कुछ औज़ार मौजूद थे, हालांकि लोहारघर का जहां तक सम्बन्ध है, वह ख़स्ता हालत में पड़ा था। सोफ़रोन ने वचन दिया कि वह ख़ुद अपनी निहाई और धौंकनी ले आएगा, साथ में कुछ अन्य औज़ार भी, और उस्ताद की हैसियत से काम करेगा। वह, ख़ुद अपने ख़र्च पर, लोहारघर की मरम्मत करने के लिए भी तैयार था। एकाएक मैं समझ नहीं सका कि हमारी मदद करने के लिए उसकी इस उत्सुकता का क्या रहस्य है, लेकिन सांझ को कालीना इवानोविच ने जब अपनी रिपोर्ट दी तब इसका रहस्य समझ में आया।

अपना पाइप सुलगाने के लिए मेरे आरज़ी लैम्प की चिमनी के भीतर काग़ज़ का एक टुकड़ा खोंसते हुए कालीना इवानोविच ने कहा:

"वह हरामख़ोर सोफ़रोन कुछ यों ही हमारे पास नहीं आया। आप जानो, किसान उसके पीछे पड़े हैं, और उसे डर है कि वे उसका लोहारघर ज़ब्त कर लेंगे। सो अगर वह यहां बना रहता है तो, आप जानो, सबको यही लगेगा कि वह सोवियतों के लिए काम कर रहा है।"

"तो हम उसके बारे में क्या करें?" मैंने पूछा।

"पड़ा रहने दो उसे यहां! हमारे पास भला और आता भी कौन है? धौंकनी हम कहां से लाएंगे? और औज़ार? और हमारे पास जगह कहां है जो किसी निर्देशक को—काम सिखानेवाले को—लाकर रखें। झोंपड़ियां हैं, लेकिन उन्हें ठीक-ठाक करने के लिए बढ़ई लाने पड़ेंगे। और अन्त में," कालीना इवानोविच ने अपनी आंखों को सिकोड़ा, "अगर वह कुलक है तो इससे क्या? वह भी वैसे ही काम करेगा जैसे कि कोई ईमानदार आदमी करता।"

कालीना इवानोविच के चेहरे पर, जो विचारपूर्ण अन्दाज़ में मेरे कमरे की नीची छत की ओर धुएँ के ग़ुबार छोड़ रहा था, सहसा मुसकराहट खेल गई।

"ये किसान–हरामख़ोर कहीं के–जैसे भी हो, उसका लोहारघर तो जब्त कर लेंगे, लेकिन इससे किसी का क्या कुछ भला होगा? वह ठप्प पड़ा रहेगा। सो क्या हर्ज है अगर लगे हाथ हम अपना लोहारघर खड़ा कर लें–सोफ़रोन पर जो बीतनी है वह तो बीतेगी ही। हम उसकी नकेल थामे रहेंगे, और जब काम पूरा हो जाएगा तो उसे धता बताएंगे। 'यह सोवियत की संस्था है,' हम उससे कहेंगे, 'और तुम, कुछ नहीं कुतिया के पिल्ले तुम ख़ून चूसनेवाली जोंक के सिवा और कुछ नहीं हो, तुम जनता के शोषक हो।' हो-हो-हो-हो! .."

जागीर की मरम्मत के लिए हमें कुछ रक़म मिल गयी थी। लेकिन वह इतनी कम थी कि कतर-ब्योंत में हमें ज़मीन-आसमान एक कर देनी पड़ी। हर काम ख़ुद हमें ही करना था। हमें ख़ुद अपने लोहारघर की भी ज़रूरत थी और बढ़ईघर की भी। ढलाई का काम-चलाऊ ढांचा हमारे पास था, औज़ार हमने ख़रीदे, और शीघ्र ही बढ़ई का काम सिखाने-वाले एक उस्ताद को भी हमने हासिल कर लिया। उसकी देख-रेख में, जोशो-ख़रोश के साथ, लड़के नगर से लाए हुए तख़्तों को चीरने में जुट गए। नयी कोलोनी के लिए खिड़कियों की चौखटें और दरवाज़े तैयार किए गए। दुर्भाग्य से हमारे बढ़इयों का तकनीकी स्तर इतना नीचा था कि अप-नी नयी ज़िन्दगी के लिए खिड़कियां तथा दरवाज़े बनाने का काम शुरू-शुरू में अत्यन्त कठिन सिद्ध हुआ, इतना कठिन कि जानलेवा–लगने लगा। लोहारघर में हमारे काम का भी यही हाल था। लोहारघर में हमें काफ़ी काम करना पड़ता था। वह ऐसा नहीं था कि गर्व के साथ उसका उल्लेख किया जा सके। सोवियत राज्य का पुनर्निर्माणकाल जल्दी से पूरा हो, सोफ़ोन की इसमें दिलचस्पी नहीं थी, हालांकि काम सिखाने के एवज़ में उसे पगार भी कुछ अधिक नहीं मिलती थी। पगार मिलने के दिन प्रदर्शन के साथ लड़कों में से किसी एक को अपनी समूची पगार देकर एक बढ़ी स्त्री के पास भेजता जो दारू बनाती थी: "तीन बोतल सबसे बढ़िया दारू के लिए!'

कुछ दिनों तक इस सब की मुझे कोई ख़बर नहीं लगी। मैं तब कुला-बों, कब्ज़े की पत्तियों, कब्ज़ों और सिटकनियों जैसे जादुई शब्दों के असर में पूर्णतया खोया था। मेरी ही भांति लड़के भी काम के इस आकस्मिक विस्तार से उमंगे थे। देखते-देखते उनके बीच बढ़इयों और लोहारों की

फ़सल तैयार हो गई, और ख़र्च करने के लिए भी थोड़ा कुछ हमारे पास सचमुच जमा हो गया।

लोहारघर में काम की हलचल ने हम सभी में रोमांच का संचार कर दिया था। आठ बजते ही समूची कोलोनी में निहाई की आह्लादपूर्ण ध्वनि गूंजने लगती। क़हक़हों से लोहारघर हमेशा गुंजार रहता। उसके चौड़े दरवाज़े के आस-पास दो या तीन देहाती हर घड़ी बैठे नजर आते। वे खेती, कर, ग़रीब किसानों की समिति "कोमबैड" के अध्यक्ष वेरख़ोला, चारे और हमारे बीज-ड्रिल के बारे में बहसें करते। हम किसानों के घोड़ों के पांवों में नाल जड़ते, उनकी गाड़ियों के पहियों पर टायर चढ़ाते, और उनके हलों की मरम्मत करते। ग़रीब किसानों से हम आधी मजदूरी लेते और इससे शुरू करके सामाजिक न्याय तथा अन्याय सम्बन्धी अन्तहीन बहसों का सिलसिला छिड़ जाता।

सोफ़रोन ने हमारे लिए एक गाड़ी बनाकर देने का वायदा किया। कोलोनी के सायबानों में दुनिया-भर का कचरा भरा था। उसमें खोज-बीन कर एक ढांचा निकाल लिया गया। कालीना इवानोविच नगर से एक जोड़ी धुरे ख़रीद लाया। पूरे दो दिन तक लड़कों ने इन धुरों को छोटी और बड़ी हथौड़ियों से निहाई पर पीट-पीटकर ठीक किया। आख़िर सोफ़रोन ने घोषणा की कि गाड़ी एकदम तैयार है। बस, पहियों और कमानियों की कसर और है। लेकिन हमारे पास न तो पहिये थे और न कमानी। पुरानी कमानियों के लिए मैंने सारा नगर छानना शुरू किया, और कालीना इवानोविच देहात की गहराइयों में लम्बी यात्रा के लिए रवाना हो गया।

पूरे एक सप्ताह तक वह ग़ायब रहा, और पहियों के दो जोड़ी, एकदम नये चक्कों को लेकर लौटा। साथ ही अनुभवों-संस्मरणों का भी वह एक अच्छा-ख़ासा ज़ख़ीरा बटोर लाया था जिसमें मुख्य यह था: "कितने जाहिल हैं ये लोग—ये देहाती!"

एक दिन सोफ़रोन अपने साथ कोज़िर को ले आया जो किसानों के एक गांव में रहता था। वह चुप्पा और उदार आदमी था। उसके चेहरे पर हर समय मृदु मुसकान खेलती रहती थी और क्रास का निशान बनाने की गहरी आदत उसे पड़ी हुई थी। अभी हाल ही में पागलख़ाने से छूटकर वह आया था और जब भी वह अपनी पत्नी का नाम सुनता था,

उसका सारा बदन कांपने लगता था। कारण, प्रान्तीय दिमाग़ी बीमारियों के डाक्टरों के ग़लत निदान की जड़ में उसी का हाथ था। पेशे से वह पहिये बनाने का काम करता था। जब उससे चार पहिये बनाने के लिए कहा गया तो उसके लिए अपनी ख़ुशी को छिपाकर रखना कठिन हो गया। अपने घरेलू जीवन की स्थिति और अपनी सन्यासोन्मुखी प्रवृत्तियों से प्रेरित हो उसने विशुद्ध रूप में एक व्यावहारिक सुझाव रखा:

"साथियो, (ख़ुदा माफ़ करे मुझे), तुमने इस बूढ़े को बुलाया, क्यों, ठीक है न? और अब मान लो कि मैं यहीं टिककर तुम्हारे साथ रहना शुरू कर दूं तो!"

"लेकिन तुम्हें रखने के लिए हमारे पास जगह कहां है?"

"इसकी फ़िक्र न करो। मैं ख़ुद अपने लिए जगह खोज लूंगा। ख़ुदा मेरी मदद करेगा। गर्मियों के दिन तो अब हैं ही, और जब जाड़े आएंगे तब भी कुछ-न-कुछ हो ही जाएगा। मैं वहां उस सायबान में रह सकता हूं। मुझे क़तई तकलीफ़ नहीं होगी..."

"अच्छी बात है। यहीं रहो।"

कोज़िर ने क्रास का चिन्ह बनाया और मामले के व्यावहारिक पहलू से निबटने में तुरन्त जुट गया।

"हम पहियों के हाल ले आएंगे। यह काम कालीना इवानोविच के बूते का नहीं, लेकिन मैं जानता हूं कि कैसे क्या करना चाहिए। हाल हमारे पास आ जाएंगे। ख़ुद किसान उन्हें ले आएंगे। आप बस देखते रहना। ख़ुदा कोई कमी नहीं रहने देगा।"

"लेकिन, हवाई अनार, हमें और हाल नहीं चाहिए!"

"नहीं चाहिए,–तुम्हें नहीं चाहिए,–तुम्हें नहीं चाहिए? ओह, ख़ुदा बख़्शे! हो सकता है तुम्हें ज़रूरत न हो, लेकिन औरों को तो है। बिना हाल के भला किसान कैसे रह सकता है? तुम उन्हें बेचकर धन बना सकते हो, और लड़के मुनाफ़े में रहेंगे।"

कालीना इवानोविच हंसा, और कोज़िर की मनुहारों का उसने समर्थन किया।

"इसे यहीं पड़ा रहने दो, रहने दो इस कम्बख़्त को! आप जाने, क़ुदरत की शान का कुछ ठिकाना नहीं। एक इनसान की जान भी किसी-न-किसी काम आ सकती है।"

कोज़िर ने समूची कोलोनी के हृदय में घर कर लिया। शयनागार के बराबरवाले छोटे कमरे में उसने अपना अड्डा जमाया। यहां वह अपनी पत्नी से—जो बड़ी मर्दानी स्त्री थी—पूर्णतया सुरक्षित था। लड़कों को बेहद मजा आता जब उसकी पत्नी के आक्रमणों से वे उसकी रक्षा करते। चीख़ती-चिल्लाती और कोसती—बाक़ायदा भँवर बनी—वह कोलोनी में प्रवेश करती। वह मांग करती कि उसके पति को परिवार की गोद में लौटा दिया जाए। वह मुझपर, लड़कों पर, सोवियत सरकार और "उस लफ़ंगे" सोफ़रोन पर आरोप लगाती कि हमने उसके पारिवारिक सुख-चैन को नष्ट कर दिया है। अपने व्यंग्य को छिपाने का कोई प्रयत्न न करते हुए लड़के उसे विश्वास दिलाते कि पति के रूप में कोज़िर किसी काम का नहीं है, और यह कि पारिवारिक सुख-चैन के मुक़ाबले पहिये बनाने का कहीं ज़्यादा महत्व है। इस समूचे दौरान में ख़ुद कोज़िर अपने छोटे कमरे में दुबककर बैठा रहता और धीरज के साथ अन्ततः हमले का मुंह मुड़ने की प्रतीक्षा करता। केवल उस समय जब घायल पत्नी की आवाज़ झील के दूसरे किनारे से आती सुनाई देती और उसके ऊपर की जानेवाली शुभ वचनों की बौछार के कुछ उड़ते हुए छींटे ही पल्ले पड़ते—"...कुत्ते की... ख़ुदा ग़ारत करे..."—कोज़िर अपनी शरणगृह से बाहर निकलता: "ख़ुदा हमारा उद्धार करे, बेटो! कितनी झगड़ालू औरत है!"

वातावरण के अनुकूल न होने पर भी पहियों के व्यापार ने मुनाफ़ा देना शुरू कर दिया। कोज़िर क्रास का चिन्हमात्र बनाकर ही अच्छा धंधा कर लेता था। हम क़तई कोई प्रयास नहीं करते थे, पर पहियों के हाल लुढ़कते चले आते थे। उनके लिए हमें कोई धन भी नहीं चुकाना पड़ता था। इसमें सन्देह नहीं कि कोज़िर बहुत ही बढ़िया पहिये बनाता था और उसके हाथों का काम हमारे ज़िले की सीमाओं से बाहर काफ़ी दूर-दूर तक प्रसिद्ध था।

हमारा जीवन अब अधिक जटिल और अधिक उज्जवल हो चला था। कालीना इवानोविच ने आख़िर और भी कुछ नहीं तो हमारे खेतों की पांच देस्यतीना भूमि में जई ही बो डाली थी। 'लाल' अब हमारे अस्तबल की शोभा बढ़ाता था। हमारे अहाते में एक नयी गाड़ी नज़र आती थी जिसका एकमात्र दोष यही था कि उसकी ऊंचाई असाधारण थी। वह धरती से

क़रीब सात फुट ऊंची थी, और उसके भीतर बैठे आदमी को हमेशा ऐसा मालूम होता था जैसे अगले हिस्से में घोड़ा जुता तो निश्चित रूप से है, लेकिन है वह गाड़ी से कहीं बहुत-बहुत दूर।

हमारा कार्य-कलाप इस हद तक विकसित हो गया था कि अपनी जन-शक्ति का अभाव अब हमें अखरने लगा। शयनागार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए झटपट हमने एक अन्य इमारत की मरम्मत की, और अधिक दिन न बीते होंगे कि लड़कों की नयी टोलियां आ गईं। यह टोलियाँ पहले के लड़कों से सर्वथा भिन्न प्रकृति की थीं। अब तक काफ़ी बड़ी संख्या में अतामानों* को पंगु किया जा चुका था, और उनके कतिपय किशोर अनुयायी जिनकी सैनिक या लुटेरी भूमिकाएं साईसों या रसोईघर के छोकरों के कार्य-कलाप तक सीमित थीं, कोलोनी के लिए रवाना कर दिए गए। ऐतिहासिक स्थिति की बदौलत कोलोनी के सदस्यों की सूची, कराबानोव, प्रीख़ोद्को, गोलोस, सोरोका, वेर्शनेव, मित्यागिन, तथा अन्य कितने ही नामों से समृद्ध हो गई।

८. चरित्र और संस्कृति

हमारी कोलोनी में नये सदस्यों के आगमन ने हमारे सामूहिक जीवन को – जो पहले से ही काफ़ी डांवाडोल था – चूल के साथ हिला दिया। और हम एक बार फिर अपने पुराने बुरे तौर-तरीक़ों में जा गिरे।

हमारे आदि सदस्य क़ानून और व्यवस्था को केवल अत्यन्त प्राथमिक स्तर तक ही पहचान सके थे। और नवागन्तुकों का अनुशासन से क़तई कोई वास्ता नहीं पड़ा था। वे किसी भी प्रकार के क़ानून और व्यवस्था के नीचे आने से और भी अधिक बिदकते थे। फिर भी इतना तो कहना ही होगा कि शिक्षकों को लेकर खुले प्रतिरोध या गुण्डागर्दी के प्रदर्शन का कभी कोई दृश्य प्रस्तुत नहीं हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं कि ज़दोरोव, बुरुन, तारानेत्स तथा अन्य ने नवागन्तुकों को गोर्की कोलोनी के शुरू के दिनों के इतिहास से सार रूप में परिचित करा दिया था। पुराने और नये दोनों ही यह समझते थे कि शिक्षकगण कोई ऐसी शक्ति नहीं हैं

* अतामान – लुटेरों का मुखिया। सं०

जिसे उनसे दुश्मनी हो। इस भावना के अस्तित्व का मुख्य कारण निस्सन्देह उस काम में देखना चाहिए जो कि ख़ुद शिक्षक कर रहे थे। यह काम इतना निस्स्वार्थपूर्ण और प्रत्यक्षतः इतना कष्टप्रद था कि वह अनायास ही सहज सम्मान का संचार करता था। सो लड़कों की, अत्यन्त विरल अपवादों की बात जाने दीजिये, हमारे साथ हमेशा अच्छी पटती थी। स्कूल में काम तथा अध्ययन करने की आवश्यकता का वे आदर करते थे और इस बात को पूर्णतया समझते थे कि इसमें हम सभी का फ़ायदा है। कठिनाइयों से बचने की तथा आलस्य की भावना हमेशा निरे शारीरिक रूप में प्रकट होती थी, प्रतिरोध या विक्षोभ के रूप में नहीं।

ख़ुद हम भी इस तथ्य से परिचित थे—और उससे हम निबटना चाहते थे। हमारी स्थिति में जो सुधार होता था, वह अनुशासन के निरे बाह्य रूप से आता था। उसमें संस्कृति का अत्यन्त आदिम रूप में भी अंश मौजूद नहीं था।

लेकिन लड़कों का हमारी इस ग़रीबी के बीच रहने और ऐसे श्रम में हिस्सा लेने—जो स्पष्टतः कष्टप्रद था—के कारण कहने की आवश्यकता नहीं—निरे शिक्षात्मक स्तर पर ही खोज नहीं की जा सकती। १९२१ के दिनों में सड़कों का जीवन ऐसा कोई ख़ास आकर्षक नहीं था। हमारा प्रान्त भुखमरीवाले जिलों की सूची में नहीं था। लेकिन यह सब होने पर दौर-दौरे में भी ख़ुद नगर में जीवन की परिस्थितियां अत्यन्त कठिन थीं, और भूख के भी कोई शक-व-शुबहा नहीं था। इसके अलावा, शुरू के सालों में हमारे लड़के सच्चे अर्थों में उपेक्षित भी नहीं थे,—ऐसे जो सड़कों पर जीवन बिताने के आदी हों। हमारे अधिकांश लड़के घरों में से आये थे जिनसे केवल हाल ही में वे विच्छिन्न हुए थे।

इसी के साथ कोलोनी के सदस्य एक ओर जहां अत्यन्त सुस्पष्ट विशेषताओं का नमूना पेश करते थे, वहां उनका सांस्कृतिक स्तर उतना ही नीचा था जितना नीचा कि वह हो सकता था। हमारी कोलोनी के लिए जो ख़ास तौर से कठिन केसों के लिए खोली गयी खोली गयी थी, जान-बूझकर ठीक इसी अन्दाज़ के लड़के चुने जाते थे। उनमें से आधे अनपढ़ या पूर्णतया अनपढ़ हुआ करते थे। वे क़रीब-क़रीब सब के सब, गंदगी और जुओं के अभ्यस्त थे और अपने साथियों के प्रति उनके रवैये ने

आक्रमणात्मक आत्मरक्षा की झूठी वीरतापूर्ण मुद्रा का रूप धारण कर लिया था।

कुछ गिने-चुने लड़के, जिनकी बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत ऊंचा था—ज़दोरोव, वुरून, वेत्कोवस्की, ब्रातचेन्को, और बाद में आनेवालों में से करावानोव तथा मित्यागिन — भीड़ में सब से अलग नज़र आते थे। बाक़ी अन्य मानवीय संस्कृति की ओर क्रमश: तथा धीरे-धीरे बढ़ रहे थे; और हमारी ग़रीबी तथा भूख का परिमाण जितना अधिक होता था, उतना ही अधिक उन्हें इसमें देर लगती थी।

पहले साल के दौरान आपस में लड़ने की उनकी शाश्वत प्रवृत्ति हमारा सबसे बड़ा सिरदर्द थी। सम्बन्धों की भयावह कमज़ोरी से यों कोई भी सामूहिक शक्ति अछूती नहीं होती, लेकिन उनके मामले में तो एकदम मामूली बातों पर भी हर घड़ी बन्धन टूटते रहते थे। और ऐसा, काफ़ी हद तक किसी दुश्मनी के कारण नहीं, बल्कि राजनीतिक चेतना के मिश्रण से मुक्त उनकी उसी कृत्रिम वीरतापूर्ण मुद्रा के कारण होता था। बावजूद इसके कि उनमें से कितने ही अपने वर्ग-दुश्मनों के ख़ेमों में रह चुके थे, उनमें किसी ख़ास वर्ग से सम्बन्धित होने की चेतना ज़रा भी नहीं थी। मज़दूरों के बच्चे हमारे यहां थे नहीं, और सर्वहारा श्रेणी उनके लिए एक दूर की तथा अनजान चीज़ थी। साथ ही कृषि सम्बन्धी श्रम से उनमें से अधिकांश लड़के घृणा करते थे। यों कहिए कि श्रम से इतनी नहीं जितनी कि किसानों के जीवन के ढांचे और उनकी मनोवृत्ति से, इसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया-भर की सनकों के लिए चौड़ा मैदान खुल गया, व्यक्तित्व का उभार अर्द्ध-बर्बरता में जकड़ गया और आध्यात्मिक एकाकीपन से नैतिक ह्रास हो गया।

चित्र का बाह्य आकार प्रकार—उसकी सामान्य रूप-रेखा—हालांकि काफ़ी उदासी का संचार करती थी, लेकिन सामूहिक भावना के वे अंकुर जो पहले जाड़ों के दौरान फूटना शुरू हो गए थे, रहस्यमय ढंग से हमारी बिरादरी में पनप रहे थे, और इन अंकुरों को हर क़ीमत पर संजो कर रखना ज़रूरी था,—ज़रूरी था कि उनकी कोमल हरियाली को नष्ट करनेवाले घातक तत्वों को न पनपने दिया जाए। मैं समझता हूं कि मेरी मुख्य विशेषता इस तथ्य में निहित थी कि इस महत्वपूर्ण विकास को मैंने उस समय पहचाना, और उसके सही मूल्य का मैंने अन्दाज़ा लगाया। इन

पहले अंकुरों को पालने-पोसने की प्रक्रिया कुछ इतनी कष्ट-साध्य और लम्बी सिद्ध हुई कि अगर मैं पहले से उसे देख पाता तो शायद डर के मारे कांप उठता और उसे दूर से ही नमस्कार करता। ग़नीमत यही थी—ओह, कितना अड़ियल आशावादी था मैं! —कि मैं हमेशा यही विश्वास करता रहा कि सफलता की मंज़िल पर पहुंचने में बस अब एक इंच की ही कसर है!

इस काल के मेरे जीवन का हर दिन विश्वास खुशियों और हताशाओं का संगम हुआ था।

हर चीज़ जैसे तैरती हुई चल रही थी। शिक्षक अपना दिन का काम निबटा चुके थे, उनका सस्वर पाठ करना ख़त्म हो चुका था। वे गप-शप कर रहे थे या फिर अपने छात्रों काजी बहला रहे थे, और शुभ-रात्रि कहकर अपने निजी कमरों में चले गए थे। लड़कों की मनःस्थिति शान्त थी, सोने की वे तैयारी कर रहे थे। मेरे कमरे में दिन के काम की अन्तिम धड़कनें विराम के निकट पहुंच रही थीं। कालीना इवानोविच कमरे में मौजूद था,—सदा की तरह अपने सूत्रों का प्रतिपादन कर रहा था। गिनती के दो-चार लड़के, जो अधिक जिज्ञासु थे, इधर-उधर डोल रहे थे। ब्रातचेन्को और गुद दरवाज़े पर खड़े थे और चारे के सवाल को लेकर सदा की भांति कालीना इवानोविच पर हमला बोलने के मौक़े की बाट देख रहे थे। तभी अचानक वायु-मण्डल चीख़ों की आवाज़ से विदीर्ण हो उठा:

"कम्बख़्त चाकू से एक-दूसरे पर वार कर रहे हैं।"

झटपट मैं कमरे से बाहर लपका। शयनागार में एक हंगामा मचा था। एक कोने में ग़ुस्से से पागल जीवों के दो ख़ूंख़ार दल जमा थे। आतंकप्रद अंग संचालन और उछल-कूद के साथ अत्यन्त गंदी गालियों का बाज़ार गर्म था। कोई किसी अन्य की कनपटी पर घूंसे जड़ रहा था। बुरून एक 'वीर' के हाथों में से फ़िन्निश चाकू छीनने में जुटा था। कमरे के दूसरे हिस्से में से विरोध में आवाज़ें उठ रही थीं:

"तुम बीच में टांग अड़ानेवाले कौन होते हो? क्या थूथन तुड़वाने का जी चाहता है?"

पलंग की पाटी पर एक घायल हीरो हमदर्दों से घिरा बैठा था और ख़ून-सने अपने हाथ में चादर से फटे चिथड़े की पट्टी चुपचाप बांध रहा था।

ठीक मेरे पीछे भयभीत स्वरों में कालीना इवानोविच फुसफुसा रहा था: "जल्दी! अरे, जल्दी! नहीं तो एक-दूसरे का गला ही काट डालेंगे, हरामी कहीं के!"

मैंने यह अपना नियम बना लिया था कि लड़नेवालों को अलग करने या उनपर चिल्लाने की मैं कभी कोशिश नहीं करूंगा। सो मैं चुपचाप दरवाज़े में खड़ा दृश्य को देख रहा था। थोड़ा-थोड़ा करके लड़कों को मेरी उपस्थिति का चेत हुआ और वे चुप हो गये। सबसे अधिक हंगामी लड़के भी एकाएक ख़ामोशी का अनुभव कर संभल गये। चाकू इधर-उधर खिसक गए, तने हुए घूंसे नीचे आ गए और गालियों का बवण्डर बीच अधर में ही रुक गया। लेकिन मैं अभी भी चुप खड़ा था, हालांकि भीतर-ही-भीतर इस सारे जंगलीपन के विरुद्ध घृणा और गुस्से से उबल रहा था। लेकिन यह घृणा पंगु थी। कारण, मैं अच्छी तरह जानता था कि आज का यह दिन आख़िरी नहीं होगा।

अन्तत: शयनागार में एक बोझिल, भुतही नीरवता छा गई। गहरे तनाव से युक्त सांसों की धूंधली ध्वनि तक ठंडी पड़ गई।

तभी मानवीय गुस्से की एक बाक़ायदा बाढ़, बांध तोड़कर, मेरे अन्तर से फूट पड़ी,—इस विश्वास से बल पाकर कि जो कुछ मैं कर रहा हूं, ठीक कर रहा हूं।

"चाकू मेज़ पर! एकदम जल्दी! नासपिटे कहीं के!"

मेज़ पर चाकुओं का ढेर लग गया। फ़िन्निश चाकू, रसोई-घर के चाकू, क़लमतराश चाकू, और लोहारघर में हाथ के बने फलके!

शयनागार में अभी भी नीरवता छाई थी। मेज़ के पास ज़दोरोव खड़ा था, मुसकराता हुआ—प्रिय और सुहावना ज़दोरोव, केवल वही जैसे मेरा एक सजातीय रह गया था। तड़ककर मैंने फिर एक फ़रमान जारी किया:

"कोई लाठी-सोंटा?"

"यहां मेरे पास एक है। मैंने उठा ली थी," ज़दोरोव ने कहा।

वे सब सिर लटकाए इर्द-गिर्द खड़े थे।

"बिस्तरों पर!"

मैं शयनागार से तब तक विदा नहीं हुआ जब तक कि उनमें से प्रत्येक बिस्तरे में न लेट गया।

अगले दिन लड़कों ने विगत रात के हंगामे के बारे में किसी क़िस्म का

कोई ज़िक्र नहीं किया। वे उसके ज़िक्र से कतराते रहे। ख़ुद मैंने भी उस-की ओर ज़रा-सा भी इशारा नहीं किया।

दो या तीन महीने गुज़र गये। इस दौरान इक्की-दुक्की जगह, सुदूर कोनों में, व्यक्तिगत द्वेष की आग धुंआँ देती, लेकिन इससे पहले कि लपटों का रूप धारण करने का चिन्ह प्रकट करे, ख़ुद सामूहिक प्रयास द्वारा तुरन्त बुझा दी जाती। इसके बाद अचानक फिर कोई हिंस्र विस्फोट होता और गुस्से से पागल लड़के, अपना तमाम मानवीय रूप भूलकर, हाथों में चाकू लिए एक बार फिर एक-दूसरे के पीछे झपटने लगते!

ऐसी ही एक सांझ थी वह जब मैंने अनुभव किया कि मुझे सख़्ती से पेच सकना चाहिए था। लड़ाई के बाद फ़िन्निश चाकू के एक दुर्दमनीय योद्धा चोबोत को मैंने अपने कमरे में चलने का आदेश दिया। वह मेमने की भांति चल पड़ा। कमरे में पहुंचते ही मैंने उससे कहा:

"तुम्हें यहां से विस्तरा गोल करना होगा।"

"कहां के लिए?"

"मेरी राय में किसी ऐसी जगह के लिए जहां तुम लोगों पर अपने चाकू की धार आजमा सको। केवल इसलिए कि भोजन के कमरे में तुम्हारा साथी तुम्हारे लिए अपनी जगह से आज नहीं हटा, तुम उसपर चाकू लेकर टूट पड़े। ऐसी हालत में अच्छा यही है कि तुम कोई ऐसी जगह अपने लिए खोजो जहां मतभेद चाकू के द्वारा सुलझाए जाते हों।"

"मुझे कब तक चले जाना होगा?"

"कल सुबह तक।"

वह मुंह लटकाए कमरे से बाहर चला गया। अगली सुबह, नाश्ते के समय, सब लड़कों ने आकर मुझसे विनती की: चोबोत को रहने दीजिये। उसकी जवाबदेही हम अपने ऊपर लेते हैं।

"लेकिन तुम्हारे पास उसकी गारंटी क्या है?"

यह बात वे नहीं समझ सके।

"तुम कैसे उसकी जवाबदेही दोगे? मान लो कि वह फिर किसी के चाकू घोंप देता है, तब तुम क्या करोगे?"

"तब आप उसे निकाल दीजियेगा!"

"सो तुम्हारे पास कोई गारंटी नहीं है! नहीं, उसे जाना ही होगा।"
नाश्ते के बाद निम्न शब्दों के साथ ख़ुद चोबोत मेरे सामने हाज़िर हुआ:

"विदा, अन्तोन सेम्योनोविच। सीख के लिए धन्यवाद!"

"विदा, और बिना किसी दुर्भावना के। अगर अत्यधिक कठिन मालूम हो तो लौट आना। लेकिन एक पखवारे से पहले नहीं।"

एक महीने बाद वह लौट आया। क्षीण और पीला चेहरा लिए।

"मैं लौट आया, जैसा कि आपने कहा था।"

"सो तुम्हें अपने मन की जगह कोई नहीं मिली, क्यों?"

वह मुसकराया।

"कोई नहीं मिली? ऐसी जगह है अवश्य... लेकिन मैं कोलोनी में रहूंगा, और चाकू का इस्तेमाल नहीं करूंगा।"

लड़कों ने शयनागार में प्रेम से हमारा अभिवादन किया।

"सो आपने उसे माफ़ कर ही दिया। हमने कहा ही था कि आप माफ़ कर देंगे।"

९. "शौर्य का युग उक्राइन में ख़त्म नहीं हुआ है।"

रविवार के दिन ओसाद्‌ची नशे में धुत्त हो गया। शयनागार की शान्ति में ख़लल डालने के कारण उसे मेरे सामने लाया गया। वह मेरे कमरे में बैठा नशे की झोंक में बिना रुके धारा-प्रवाह बकवास किए जा रहा था। उससे तर्क करना बेकार था। मैंने उसे वहीं छोड़ दिया और कहा कि पड़कर सो रहे। मेमने की भांति उसने आदेश का पालन किया।

शयनागार में पांव रखते ही दारू की गंध मुझे मालूम हुई। कई एक लड़के प्रत्यक्षत: मेरे सामने न पड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। अपराधी की टोह लेने का झमेला न खड़ा कर मैंने केवल इतना ही कहा:

"अकेला ओसाद्‌ची नशे में धुत्त नहीं हुआ है। कुछ और भी हैं जिन्होंने चुक्कड़ ख़ाली किए हैं।"

इसके कई दिन बाद कोलोनी में सदस्यों ने फिर दारू का दौर चलाया। उनमें से कुछ तो मुझसे कन्नी काटते रहे, लेकिन अन्य—इसके प्रतिकूल—नशे की धुन में तोबा करते मेरे सामने आ हाज़िर हुए और मौज में मुझसे प्रेम तक जताने लगे।

उन्होंने यह तथ्य भी नहीं छिपाया कि वे बस्ती में चक्कर लगाते रहे हैं।

सांझ को शयनागार में नशे की बुराइयों पर वार्ता हुई। अपराधियों ने क़सम खाई कि अब वे कभी दारू नहीं पिएंगे और मैंने किसी को सज़ा देने की बात तो दूर, सन्तोष का भाव जताया। अब तक अनुभव का कुछ भंडार मेरे पास संचय हो गया था, और मैं यह ख़ूब अच्छी तरह जानता था कि नशे के ख़िलाफ़ संघर्ष में कोलोनी के निवासियों पर आघात करने से कोई लाभ नहीं होगा – कुछ और भी हैं जिनसे भुगतना होगा। और इन कुछ औरों का पता लगाने के लिए कहीं दूर जाने की ज़रूरत नहीं थी।

हमारे चारों ओर नाजायज़ दारू बनानेवालों का सागर फैला था। नशे में धुत्त – नौकरपेशा और किसान लोग–अक्सर कोलोनी में आते थे। इसके अलावा मुझे यह भी पता चला था कि गोलोवान लड़कों को बराबर दारू के लिए भेजा करता था। उसने इससे इनकार तक करने का प्रयास नहीं किया।

"हां, तो इससे क्या अगर मैं उन्हें भेजता था?"

कालीना इवानोविच जो कभी दारू को छूता भी नहीं था, गोलोवान पर बरस पड़ा:

"क्या तुम इतना भी नहीं जानते, हरामख़ोर, कि सोवियत सत्ता क्या है? क्या तुम समझते हो कि वह इसलिए बनी है कि तुम नाजायज़ ढंग से बनी दारू में डूबे रहो?"

गोलोवान अटपटे से अन्दाज़ में अपनी आजू-बाजू चरचर करती कुर्सी में कसमसाया और अपनी सफ़ाई देने का प्रयत्न करने लगा।

"हां तो इससे क्या? दुनिया पीती है ... बोलिये, आप ही बताइये, कौन नहीं पीता? हर घर में भट्ठी मौजूद है, और हर कोई छककर पीता है। सोवियत सरकार पहले ख़ुद अपना पीना तो बंद करे ..."

"सोवियत सरकार कौन?"

"सभी कोई! वे नगर में पीते हैं, देहात में पीते हैं।"

"क्या तुम जानते हो कि यहां घर की दारू कौन बेचता है?" मैंने सोफ़रोन से पूछा।

"भला मैं कैसे जान सकता हूं। मैंने ख़ुद तो कभी ख़रीदी नहीं। जब ज़रूरत पड़ती, लड़कों में से एक को उधर भेजता। लेकिन आप यह पूछते क्यों हैं? क्या उसे ज़ब्त करना चाहते हैं?"

"तुम्हारा क्या ख़याल है? निश्चय ही मैं ऐसा करना चाहता हूं।"

"हूंह! मालूम हैं मिलीशिया ने लोगों की धर-पकड़ की, पर सब बेकार। हुआ कुछ नहीं।"

अगले दिन मैं नगर गया और अपनी ग्राम-सोवियत के इलाक़े में क़ायम सभी नाजायज़ दारू बनानेवाले घरों के ख़िलाफ़—जहां और जिस कोने में भी वे हों—निर्मम संघर्ष करने का आदेश ले आया।

उसी सांझ कालीना इवानोविच और मैंने एक साथ बैठकर परामर्श किया। कालीना इवानोविच के झुकाव में सन्देह का पुट मिला था।

"इस गंदे पचड़े में आप न पड़ें," उसने मुझे सलाह दी, "सच मानो, वे सब के सब बावन गज हैं। ग्राम-सोवियत का अध्यक्ष ग्रेचानी भी,—आप जानो,—उन्हीं का भाई-बन्धू है। और चाहे आप समूचे गाँव को छान डालो, सब के सब ग्रेचानी के चचा-भतीजे ही निकलेंगे। और आप तो जानते ही हो कि कैसे लोग हैं वे—हल में वे घोड़ों को नहीं, बैलों को जोतते हैं। और देखो न, गोंचारोव्का को तो उन्होंने इस तरह पकड़ रखा है!" और कालीना इवानोविच ने कसकर बंधी मुट्ठी को ऊंचा उठाया।" उसे उन्होंने—हरामख़ोर कहीं के—अपनी मुट्ठी में दबोच रखा है, सो कुछ भी करो, कोई नतीजा नहीं निकलेगा।"

"यह सब तुम क्या कह रहे हो, कालीना इवानोविच? मेरी समझ में कुछ नहीं आया। भला इसका और दारू की भट्ठियों का क्या वास्ता?"

"आप भी ख़ब हैं, सच? और आप अपने को पढ़ा-लिखा कहते हैं। क्या आप इतना भी नहीं देख सकते कि सारी ताक़त उन्होंने अपने हाथों में कर रखी है। भला इसी में है कि उन्हें न छुआ जाए, नहीं तो जीता ही निगल जाएंगे। सच, मेरी यह बात चाहे गांठ बांध रखो!"

शयनागार में मैंने लड़कों से कहा:

"सुनो, लड़को, मैंने तय कर लिया है कि तुम अब शराब नहीं पियोगे! और स्याहपोशों के उस गिरोह को कुचलने का मेरा इरादा है जो गाँव में दारू का धंधा करते हैं। बोलो, कौन मेरी मदद करना चाहता है?"

उनमें से काफ़ी लड़के अचकचा गये, लेकिन कुछ ने उत्साह से मेरे सुझाव को पसन्द किया।

"बहुत बढ़िया सुझाव है यह, बहुत बढ़िया!" कराबानोव ने कहा।

उसकी काली आंखें चमक रही थीं। "इन कुलकों को अब और अधिक छुट्टा नहीं छोड़ा जा सकता!"

मैंने उनमें से तीन की मदद स्वीकार की—ज़दोरोव, वोलोख़ोव और तारानेत्स की।

शनिवार के दिन, काफ़ी सांझ हो जाने पर, हमने अपनी रण-नीति की योजना बनाई। आरज़ी लैम्प की रोशनी में हम गांव के नक़्शे पर झुक गए। पर नक़्शा मैंने तैयार किया था। तारानेत्स लाल बालों के झुंड में अपनी उंगलियां खोंसे था और उसकी नाक नक़्शे पर मंडरा रही थी।

"अगर हमने एक अकेली झोंपड़ी पर धावा किया तो उन्हें समय मिल जाएगा और वे अपनी भट्ठियों को अन्य झोंपड़ियों में छिपा देंगे। नहीं, हम तीन काफ़ी नहीं हैं।"

"तो क्या इतनी झोंपड़ियों में भट्ठियां मौजूद हैं?"

"क़रीब-क़रीब हरेक में। मूसी ग्रेचानी, आन्द्रेई कारपोविच, और ख़ुद अध्यक्ष सेर्गेई ग्रेचानी तक—सबके सब दारू बनाते हैं। सारे वेरख़ला दारू बनाते हैं, और स्त्रियां नगर में जाकर उसे बेचती हैं। हमें और अधिक साथी लेने चाहिएं, नहीं तो वे हमें पीटकर देंगे और कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा।"

वोलोख़ोव जो कोने में बैठा जंभाई ले रहा था, सहसा बोल उठा:

"पीटकर रख देंगे! इतना दम भी है उनमें!" उसने कहा, "एक कराबानोव को ही अपने साथ ले जाओ, औरों को छोड़ो। और देखना, जो कोई हाथ तक लगा सके। इन कुलकों को मैं जानता हूं। वे कराबानोव से थरथराते हैं।"

वोलोख़ोव ने बिना किसी उत्साह के इस मामले में अपना योग दिया। वह अब भी अपने-आपको मुझसे दूर रखे था, टुइंयां से इस लड़के को, अनुशासन पसंद नहीं था। लेकिन ज़दोरोव से उसका गहरा लगाव था, और सिद्धान्त-विद्वान्त की परवाह न कर उसकी अगुवाई में चलता था।

ज़दोरोव, सदा की भांति, शान्त भाव से और विश्वास के साथ, मुसकरा रहा था। उसकी यह विशेषता थी कि सक्रिय होते समय न तो वह अपनी शक्ति को नष्ट होने देता था, और न अपने व्यक्तित्व पर रत्ती-भर भी आंच आने देता था। और इस मौक़े पर, सदा की भांति, मुझे अन्य किसी पर उतना भरोसा नहीं था जितना कि ज़दोरोव पर। मैं जा-

नता था कि वह जीवन में हर बलिदान करने की क्षमता रखता है–किसी भी त्याग से वह मुंह नहीं मोड़ेगा, और उसी प्रकार वह उसका स्वागत करेगा जैसे कि हर चीज़ का करता है, अपने व्यक्तित्व पर रत्ती-भर भी आंच न आने देते हुए। सो उसने अब तारानेत्स की ओर रुख़ किया:

"ज़्यादा बग़लें न झांको, फ़्योदोर! हमें बस यह बताओ कि किस झोंपड़ी से हम शुरुआत करें, और किधर हमें जाना चाहिए। फिर देखना, कल क्या होता है। वोलोख़ोव ठीक है। कराबानोव को अपने साथ ले चलना चाहिए। वह जानता है कि कुलकों से किस तरह बात की जानी चाहिए–वह ख़ुद भी कुलक रह चुका है। अच्छा तो अब सोना चाहिए, कल तड़के ही हमें उठना है, इससे पहले कि वे नशे में धुत्त नज़र आएं। क्यों, ठीक है न ग्रित्स्को?"

"हूं-ऊं-ऊं–हूं-ऊं-ऊं!" वोलोख़ोव ने मगन भाव से कहा।

हम उठकर चल दिए। लिदोच्का और येकातेरिना ग्रिगोरियेवना अहाते में टहल रही थीं। लिदोच्का ने पुकारकर मुझ से कहा:

"लड़कों का कहना है कि आप दारू की भट्ठियों की रूह पर कब्ज़ा करने जा रहे हैं? यह आपको क्या सूझी? यह भला कहां का शिक्षात्मक कार्य है? मैं तो इसे हाथ काले करना कहती हूं।"

"असली शिक्षा-कार्य तो यही है," मैंने जवाब दिया, "कल हमारे साथ चल रही हो न?"

"चलने से क्या मैं डरती हूं? मैं वहां मौजूद रहूंगी! लेकिन जो हो, शिक्षा-कार्य यह फिर भी नहीं है।"

"क्या तुम सचमुच चलोगी?"

"कहो तो!"

यकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने मुझे अलग ले जाकर कहा:

"इस नन्ही बच्ची को भला अपने साथ क्यों ले जाना चाहते हैं?"

"सो कुछ नहीं," लीदिया पेत्रोवना ने जोरों से कहा, "चाहे जो हो, मैं जाऊंगी।"

और इस प्रकार हमारे कमीशन की संख्या पांच हो गई।

सुबह के सात बजे अपने निकटतम पड़ोसी आन्द्रेई कारपोविच ग्रेचानी के दरवाज़े पर पहुंच हमने कुण्डी खटखटाई। खटखटाने की आवाज़ का

संकेत पाते ही कुत्तों ने अपना संगीत शुरू कर दिया जो पांच मिनट तक चलता रहा।

असल कार्रवाई केवल इस संगीत के बाद शुरू हुई।

इसकी शुरुआत मंच पर आन्द्रेई ग्रेचानी के प्रगट होने से हुई। वह गंजेसिर का मुख़्तसर-सा आदमी था। उसक दाढ़ी ख़ूब साफ़-सूथरी छंटी हुई थी।

"कहिए, आप हमसे क्या चाहते हैं?" रूखे अन्दाज़ में दादा आन्द्रेई ने पूछा।

"तुम्हारे यहां नाजायज़ भट्टी है। हम उसे नष्ट करने आए हैं," मैंने उसे बताया। "प्रान्तीय मिलीशिया का वारंट मेरे पास मौजूद है।"

"नाजायज़ भट्टी!" दादा आन्द्रेई ने विचलित स्वर में दोहराया और हमारे चेहरों तथा लड़कों के चित्रमय कपड़ों पर उसकी तीक्ष्ण नज़र घूम गई।

लेकिन ऐन इसी वक़्त कुत्तों का आर्केस्ट्रा अपने उच्चतम शिखर से जा टकराया। करावानोव कन्नी काटकर दादा के पीछे मंच की पीठ से जा लगा था। अहतियातन वह अपने हाथ में एक छड़ी लिए था। भूरे रंग के एक झबरीले कुत्ते पर ज़ोरों से खींचकर उसने छड़ी से प्रहार किया। नतीजा यह कि समवेत स्वर के चुकते न चुकते इस कुत्ते का एकाकी कान-फोड़ आलाप शुरू हो गया, जो कुत्तों के स्वर के आम फैलाव से कुछ नहीं तो दो अष्टक अधिक ऊंचा था।

कुत्तों को छितराते हुए हमने तेज़ी से झोंपड़ी में प्रवेश किया। अपने सशक्त परुष स्वर में वोलोख़ोव उनपर चिंघाड़ा और कुत्ते दूर अहाते में पीछे हट गए—अपनी आहत किकियाहट के मंद संगीत के साथ आगे की घटनाओं को अपने हाल पर छोड़ते हुए। करावानोव पहले ही झोंपड़ी के भीतर पहुंच गया। दादा के साथ जब हमने भीतर प्रवेश किया तो उसने विजयी अन्दाज़ में उस चीज़ को दिखाया जिसका कि उसने इस बीच आविष्कार कर लिया था। वह चीज़ थी—दारू की भट्टी!

"यह लीजिए, सामने मौजूद है!"

दादा आन्द्रेई, छछूंद की खाल के रंग जैसी जाकेट में चमचमाता, झोंपड़ी में पांव पटक रहा था।

"क्या कल तुमने दारू निकाली थी?" ज़दोरोव ने पूछा।

"अरे हां, निकाली थी," दादा आन्द्रेई ने हामी भरी, खोए से अन्दाज में अपनी दाढ़ी में उंगली फेरते और तारानेत्स की ओर देखते हुए जो कोने में रखे एक बेंच के नीचे नीलापन लिए गुलाबी सोमरस की एक गैलनवाली बोतल खींचकर बाहर निकाल रहा था।

दादा आन्द्रेई अचानक गुस्से से भड़क उठा और तारानेत्स की ओर झपटा। उसका ख़याल था—और यह बहुत कुछ सही भी था— कि बेंचों, देव-प्रतिमाओं और मेज़ से भरे उस तंग कोने में उससे निबटना आसान होगा। और उसने तारानेत्स को दबोच भी लिया, लेकिन वह था कि उसने, आराम के साथ, दादा के सिर के ऊपर से बोतल ज़दोरोव के हाथों में थमा दी। नतीजा यह कि तारानेत्स की भन्ना देने की हद तक खुली, मुग्धकारी मुसकान और उसकी मृदु आवाज़ "क्या हुआ, दादा!" के सिवा और कुछ गृहपति के पल्ले नहीं पड़ सका। उसकी सारी मेहनत बेकार गई।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए!" दादा आन्द्रेई ने गरमाहट के साथ चिल्लाकर कहा। "तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए जो इन झोंपड़ियों का चक्कर लगाते और डाका मारते-फिरते हो! तिस पर तुर्रा यह कि अपनी लड़कियों को भी साथ लिये हो! जाने लोगों को कब कुछ शान्ति का मुंह देखना नसीब होगा, कब तुम्हें अपने किए की सज़ा मिलेगी!"

"वाह, दादा, तुम तो एकदम कवि मालूम होते हो!" करावानोव ने मज़े से मुंह बनाते हुए कहा। अपनी छड़ी के सहारे टिकते हुए दादा के सामने बहुत ही नफ़ासत के साथ विनीत मुद्रा में वह खड़ा हो गया।

"निकल जाओ मेरी झोंपड़ी में से!" दादा आन्द्रेई ने चिल्लाकर कहा। उसने लपककर भट्टी की बग़ल में से लोहे का एक भारी-भरकम चिमटा उठा लिया और औघड़पन के साथ वोलोख़ोव के कंधे पर उससे आघात कर दिया।

वोलोख़ोव की हँसी छूट गई। चिमटे को उठाकर उसने अपनी जगह रख दिया और एक नयी घटना की ओर दादा का ध्यान दिलाया।

"ओह, ज़रा उधर तो देखो!"

दादा ने नज़र घुमाकर देखा। तारानेत्स, अपने चेहरे पर अभी भी वही निश्छल मुसकान लिए, हाथ में दारू की एक अन्य गैलनवाली बोतल

थामे, भट्टी की छत पर से नीचे उतर रहा था। दादा आन्द्रेई ने, सिर लटकाए हुए, निराशा का भाव जताते, बेंच की शरण ली।

लिदोच्का भी वहीं, ठीक उसकी बग़ल में बैठ गयी और मृदु स्वर में बोली:

"आन्द्रेई कारपोविच! तुम जानते हो कि भट्टी रखना ग़ैरक़ानूनी काम है। इसके अलावा, अनाज का इसमें अलग नाश होता है। सो भी उस हालत में जब चारों ओर लोग भूखों मर रहे हैं!"

"केवल कामचोर ही भूखों मरते हैं। काम करें तो कभी कोई तंगहाल न रहे!"

"और तुम, तुम क्या करते हो, दादा?" तारानेत्स ने भट्टी के ऊपर से प्रसन्नता से छलछलाती अपनी गूंजती हुई आवाज़ में पूछा, "और स्तेपान नेचीपोरेन्को, क्या वह काम नहीं करता?"

"स्तेपान?"

"हां, स्तेपान! तुमने उसे निकाल दिया, तुमने उसका पैसा नहीं दिया, उसके कपड़े उसे नहीं दिए, और अब वह कोलोनी में आने की कोशिश कर रहा है।"

दादा की ओर प्रसन्न अन्दाज़ में अपनी जीभ चटखाते हुए भट्टी से कूदकर तारानेत्स नीचे आ गया

"इस सबका हमें क्या करना है?" ज़दोरोव ने पूछा।

"इस सब को बाहर ले जाकर तोड़ डालो!"

"यंत्र को भी?"

"हां, यंत्र को भी!"

दादा बाहर निकलकर उस जगह नहीं आया जहां यंत्र का ख़ात्मा कर देना था,—एक के बाद एक बड़ी प्रतिभा के साथ लीदिया पेत्रोवना द्वारा प्रतिपादित आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक तर्कों को सुनने के लिए वह झोंपड़ी के भीतर ही बना रहा। मालिकों के एकमात्र प्रतिनिधियों के रूप में केवल कुत्ते अहाते में मौजूद थे जो, कूल्हों के बल, सुरक्षित दूरी पर, विक्षोभ से भरे बैठे थे। केवल उस समय जब हम बाहर सड़क पर आए—सांप के निकल जाने पर लकीर पीटने की भांति—उनमें से एकाध ने अपना पंगु विरोध प्रकट किया।

लीदोच्का को झोंपड़ी में से बाहर बुलाकर ज़दोरोव ने काफ़ी समझदारी का काम किया।

"चलो, हमारे साथ चली आओ, नहीं तो दादा आन्द्रेई तुम्हारा क़ीमा बनाकर रख देगा!"

लीदोच्का, दादा आन्द्रेई के साथ अपने वार्तालाप से प्रसन्न, दौड़कर बाहर निकल आई।

"वह चुपचाप सब कुछ सुनता रहा," चहकते हुए लीदोच्का ने कहा, "उसने मंज़ूर किया कि भट्टी रखना जुर्म है!"

जवाब में लड़कों के क़हक़हों की बाढ़ लगा दी।

"वह मंज़ूर करता है, क्यों, करता है न?" अपनी अधमुंदी पलकों के बीच से लीदोच्का की ओर देखते हुए कराबानोव ने पूछा। "भई ख़ब! अगर तुम उसके पास थोड़ी देर और टिकी रहतीं तो शायद वह ख़ुद यंत्र को नष्ट कर देता! क्यों, क्या ख़याल है तुम्हारा?"

"ख़ुदा को शुकराना भेजो कि उसकी बुढ़िया स्त्री घर पर नहीं थी," तारानेत्स ने कहा। "वह गोंचारोव्का गांव के गिरजाघर में गई हुई थी। लेकिन, वेरख़ोला की गृहिणी से तुम्हें निबटना ही पड़ेगा।"

लूका सेम्योनोविच वेरख़ोला तरह-तरह के कामों से बराबर कोलोनी में आता रहता था, और ज़रूरत पड़ने पर कभी-कभी हम उसकी ओर उन्मुख होते थे, कभी उससे घोड़े का साज़ उधार लेते थे, कभी गाड़ी और कभी पीपा। लूका सेम्योनोविच एक प्रतिभाशाली कूटनीतिज्ञ था, ख़ब बातूनी, मिलनसार और हर जगह मौजूद। देखने में वह बहुत ही ख़ूबसूरत था और अपनी लहरदार लाल दाढ़ी एकदम साफ़-सुथरी और तराशदार रखता था। उसके तीन बेटे थे जिनमें सबसे बड़ा इवान अपने तीन पिरती वियनी अकार्डियन बजाने तथा अपनी स्तब्ध कर देनेवाली कलाबाज़ियों के लिए इर्द-गिर्द के इलाक़े में दस-दस कोस तक प्रसिद्ध था।

लूका सेम्योनोविच ने गर्मजोशी के साथ हमारा स्वागत किया।

"ओह, मेरे भले पड़ोसियो!" चहकते हुए उसने कहा, "आइए, आइए! मैं सुन चुका हूं, मुझे मालूम है! तुम लोग 'समावारों' की टोह में निकले हो! बहुत ख़ूब! बहुत ख़ूब! अरे बैठिए! बेंच पर बैठिए, युवा भाई! हां, तो कैसे चल रहा है? त्रेपके के लिए क्या तुम्हें साज मिल गए? अगर नहीं तो मैं कल ही ग्रीगादिरोव्का रहा हूं,

ग्रौर तुम्हारे लिए वहां से कुछ ला सकता हूं। ग्रौर साज भी कैसे! .. ग्ररे, युवा भाई, ग्राप बैठ क्यों नहीं जाते? मेरे पास कोई भट्टी नहीं है, नहीं, सो कुछ नहीं। मैं ऐसे धंधों में नहीं फंसता। उसकी मनाही है। वाह, तुमने भी क्या ख़ूब सोचा! सोवियत सरकार की उसपर पाबन्दी लगी है। सो मैं जानता हूं कि उसे नहीं किया जा सकता। ग्ररे भई है नहीं, बूढ़ी मालकिन, ये लोग तो ग्रपने ही मेहमान हैं!"

ऊपर तक खट्टी क्रीम से भरा कटोरा तथा पनीरी रोटियों से भरी एक रकाबी लिए वे मेज़ पर ग्रा गए। बिना किसी लल्लो-चप्पो या ग्रवांछनीय तकल्लुफ़ के लूका सेम्योनोविच ने इन नफ़ासतों में हाथ बंटाने के लिए हमें ग्रामंत्रित किया। उसकी परुष ग्रावाज़ उन्मुक्त ग्रौर मित्रतापूर्ण थी, ग्रौर ग्रपने तौर-तरीक़ों से वह एक योग्य श्रीमन्त मालूम होता था। मुझ से यह छिपा नहीं रहा कि खट्टी क्रीम ने किस हद तक हमारे लड़कों के हृदयों को डिगा दिया था। वोलोख़ोव ग्रौर तारानेत्स की लोलुप ग्रांखें, ग्रमीरी के इस प्रदर्शन पर बुरी तरह चिपकी हुई थीं। ज़दोरोव दरवाजे में खड़ा था, उसके मुंह से लार टपकी जा रही थी। पर वह मुसकराये जा रहा था ग्रौर इस बात के प्रति पूर्णतया सचेत था कि एक ग्रसम्भव स्थिति सामने ग्रा खड़ी हुई थी। करावानोव मेरे बराबर में बैठा था। मौक़ा निकाल मेरे कान में वह फुसफुसाया– "ग्रोह, हरामी कहीं का! लेकिन, ग्राप जानो, कुछ किया भी नहीं जा सकता। हाथ बंटाना ही पड़ेगा। सच, ख़ुदा जानता है, हाथ बंटाना पड़ेगा। कोई चारा नजर नहीं ग्राता, ख़ुदा साक्षी है कोई चारा नज़र नहीं ग्राता।"

लूका सम्यवनोविच ने ज़दोरोव के लिए एक कुर्सी खींच ली।

"शुरू करो, प्यारे पड़ोसियो, शुरू करो! कुछ रंग-पानी का भी ग्रापके लिए जुगाड़ कर सकता था, लेकिन जिस काम के लिए ग्राप लोग निकले हैं... "

ज़दोरोव ठीक मेरे सामने ग्राकर बैठ गया। उसने ग्रपनी ग्रांखें झुका लीं ग्रौर मुंह में ग्राधी पनीरी रोटी भरते समय उसकी सारी ठोड़ी खट्टी क्रीम में लिथ गई। तारानेत्स के चेहरे पर, इस कान से उस कान तक, क्रीम की मूंछें लगी थीं। वोलोख़ोव, सिर का बिना एक बाल तक हिलाए, एक के बाद एक रोटियां गटक रहा था।

"अरे, कुछ और रोटियां लाओ," लूका सेम्योनोविच ने अपनी घर-वाली से कहा, "इवान, मेहमानों को कोई धुमन सुनाओ न!"

"गिरजाघर में पूजा चल रही है, " गृहिणी ने आपत्ति की।

"कोई बात नहीं!" लूका सेम्योनोविच ने कहा, "अपने प्रिय मेहमानों की ख़ातिर आज थोड़ा उल्लंघन ही सही।"

चुप्पे चटुल इवान ने 'चाँदनी खिली हुई' गीत सुनाया। करावानोव हंसी के मारे क़रीब-क़रीब मेज़ के नीचे जा लुढ़का।

"क्या ख़ूब मेहमान बने हैं हम!"

खान-पान के बाद बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। लूका सेम्योनोविच ने, भारी उत्साह के साथ, त्रेपके जागीर सम्बन्धी हमारी योजनाओं का समर्थन किया, और अपने तमाम अमली साधनों के साथ हमारी मदद तक करने की तत्परता प्रकट की।

"देखो, यहां इस जंगल में न फंसे रह जाना!" उसने सलाह दी, "जितनी भी जल्दी हो, तुम्हें वहां पहुंचना चाहिए। बस, एक स्वामी का वहां अभाव है जो निगाह रख सके। और तुम लोग मिल पर क़ब्ज़ा कर लो, हां, मिल को अपने हाथों में कर लो। और वहां जो बोर्ड उन्होंने बनाया है, उसके बूते का यह सब धंधा नहीं! किसान रो रहे हैं, बुरी तरह रो रहे हैं। उन्हें ईस्टर के अवसर पर पनीरी रोटियाँ और मीठे पूए पकाने के लिए आटा चाहिए। उसे पाने के लिए वे महीने-भर से रोज़ वहां जाकर सिर पटकते हैं। किसानों को मीठे पूए चाहिएं, ज़रूर चाहिएं, लेकिन मीठे पूए कहां से आएं जबकि तुम्हारे पास असल चीज़ ही नहीं है– आटा!"

"हम अभी इतने मज़बूत कहां हैं, जो मिल को संभाल सकें," मैंने कहा।

"इतने-वितने कुछ नहीं! तुम्हें मदद मिल सकती है। और यह तुम्हें मालूम ही है कि आस-पास के लोग तुम्हारी कितनी इज़्ज़त करते हैं। सब यही कहते हैं–सोना आदमी है यह!"

ठीक उस समय यह कृत्रिम अभिनय अपने शिखर पर पहुंचा हुआ था, तारानेत्स दरवाज़े में प्रकट हुआ, और झोंपड़ी गृहिणी की भयभीत चीख़ों से गूंज उठी। तारानेत्स अपने हाथों में दारू बनानेवाले यंत्र का एक अत्यन्त

महत्वपूर्ण हिस्सा —'कॉयल' लिए था। जाने कब—हम में से कोई भी तो उसे जाते नहीं देख सका—तारानेत्स वहां से खिसक गया था।

"अटारी में मुझे यह मिला," तारानेत्स ने कहा, "और दारू भी वहां मौजूद है। अभी तक गरम।"

लूका सेम्योनोविच ने अपनी दाढ़ी को अपनी मुट्ठी में बटोरा और क्षण-भर के लिए उसके चेहरे पर एक गम्भीरता-सी छा गई। लेकिन इसके तुरन्त बाद ही वह खिल गया और चेहरे पर मुसकराहट लिए तारानेत्स के पास जाकर उसके सामने खड़ा हो गया। फिर, अपने कान के पीछे खुजलाते तथा मेरी आंख विचकाते हुए बोला:

"यह युवक जो न करे थोड़ा। अच्छी बात है, जो है सो है। मुझे एक शब्द नहीं कहना। मैं आहत तक अनुभव नहीं करता। क़ानून क़ानून है। समझता हूं, तुम इसे नष्ट करना चाहोगे। अच्छा तो इवान, तुम जाओ, और इनकी मदद करो!"

लेकिन वेरख़ोलिख़ा क़ानून और व्यवस्था के प्रति अपने ऋषितुल्य पति की भावना का आदर नहीं कर सकी। तारानेत्स के हाथों से कॉयल छीनते हुए चीख़ उठी:

"मैं भी तो देखूं कि कैसे तुम उसे तोड़ते हो? कौन तुम्हें ऐसा करने देता है? चीज़ों को तोड़ने के सिवा तुम्हें और आता भी क्या है? कुछ बनाकर भी तो दिखाओं। तुम, नरक के कीड़ो! निकल जाओ यहां से, अगर अपनी खोपड़ियों की ख़ैर चाहते हो तो!"

वेरख़ोलिख़ा ने कोसने की झड़ी लगा दी, रुकने का नाम तक नहीं लिया। लिदोच्का ने जो अब तक एक कोने में चुपचाप खड़ी थी, घर पर खिंची दारू की बुराइयों के बारे में ठंडे दिमाग़ के साथ उससे तर्क करने का प्रयत्न किया। लेकिन वेरख़ोलिख़ा के फेफड़े किसी बहुत ही बढ़िया धातु के बने थे! घरेलू दारू की बोतलें तोड़ डाली गईं। कराबानोव, आंगन के बीचोंबीच, लोहे की एक छड़ से यंत्र को ख़त्म कर रहा था। लूका सेम्योनोविच ने कमनीयता के साथ, हमसे विदा ली, हमें यह विश्वास दिलाते हुए कि वह ज़रा भी बुरा नहीं मानता। ज़दोरोव इवान से हाथ मिला चुका था और इवान अपने अकार्डियन पर अब एक धुन झनझना रहा था। लेकिन वेरख़ोलिख़ा थी कि अभी तक चीख़-चिल्ला और कोस रही थी, हमारी करतूत का बखान करने के लिए एक से एक नये

विशेषणों की बौछार कर रही थी, और हमारे मनहूस भविष्य का खाका खींच रही थी। पड़ोस के अहातों-आंगनों में स्त्रियां बुत की भांति स्थिर खड़ी थीं, कुत्ते भौंक और किकिया रहे थे। अहाते के आर-पार सिर के ऊपर तने तारों के साथ फिसलती जंजीरों को खींच और झटक रहे थे। और अस्तबलों में काम करते मर्द-मानस व्याकुलता में अपने सिरों को हिला रहे थे।

लपककर हम बाहर सड़क पर आ गए। करावानोव लड़खड़ाकर एक मुंडेर से जा टकराया।

"मर गया। हे भगवान, मैं मर गया। प्रिय मेहमान—ओह, ओह! आंतों को जला डाले तुम्हारी यह खट्टी क्रीम! तुम्हारा पेट क्या दर्द कर रहा है, वोलोख़ोव?"

उसी दिन हमने छः भट्ठियों को नष्ट किया। ख़ुद अपनी ओर से हमने कोई क्षति नहीं सही। केवल उस समय जबकि हम आख़िरी झोंपड़ी से विदा हो रहे थे, ग्रामसोवियत के अध्यक्ष सेर्गेई-प्रेत्रोविच ग्रेचानी से हमारी मुठभेड़ हुई। अध्यक्ष कज़्ज़ाक सरदार की भांति मालूम होता था। काले चिकने-चुपड़े बाल और मोम लगी घुंघराली मूंछें। उम्र में एकदम युवा होने पर भी ज़िले-भर में वह सबसे सफल किसान था और अत्यन्त योग्य आदमी माना जाता था। अभी कुछ दूर ही था कि वहीं से चिल्लाकर बोला: "ऐ, ज़रा रुको!"

हम एकदम खड़े रह गये।

"सबको नमस्कार!" उसने कहा, "मजे में तो हो! क्या मैं जान सकता हूं कि इस हिंस्र दख़लन्दाज़ी का—लोगों की भट्ठियों को चकनाचूर करने आदि का—कौनसा परवाना तुम्हारे पास है? किस अधिकार से तुम लोग यह सब हरकतें कर रहे हो?"

उसने अपनी मूं ों में एक और अतिरिक्त बल डाला, पैनी नज़र से हमारे ग़ैर-सरकारी चेहरों को जांचा।

'हिंस्र दख़लन्दाज़ी' का अपना परवाना मैंने चुपचाप उसके हाथों में थमा दिया। उसने बारम्बार उलट-पलटकर उसे देखा, और प्रत्यक्षः नाराज़ी की मुद्रा में उसे लौटा दिया।

"परवाना तुम्हारे पास है, इसमें शक नहीं। लेकिन अगर हर ऐरी-ग़ैरी कोलोनी इस तरह की हरकत कर सकती है, तब कोई नहीं कह सक-

ता कि सोवियत सत्ता की क्या हस्ती रहेगी? नाजायज़ दारू के धंधे को ख़त्म करने के लिए मैं ख़ुद बरावर प्रयत्न कर रहा हूं।"

"तभी ख़ुद ग्रापने भी ग्रपने यहां एक यंत्र रख छोड़ा है!" तारानेत्स ने शान्त भाव से कहा ग्रौर उसकी सर्वदर्शी दृष्टि बिना किसी मुलाहिज़े के ग्रध्यक्ष के चेहरे पर तैर गई।

ग्रध्यक्ष ने चिथड़ों में लिपटे तारानेत्स की ग्रोर ऐसे देखा जैसे उसे कच्चा ही चबा जाएगा।

"तुम ग्रपने काम से काम रखो!" उसने कहा। "तुम ग्रपने को समझते क्या हो? कोलोनी से ग्राए हो न? उच्चतम ग्रधिकारियों तक हम इस मामले को ले जाएंगे, ग्रौर तब मालूम होगा कि तलछटियों के एक गिरोह को स्थानीय ग्रधिकारियों का ग्रपमान करने की कहां तक बेरोक छूट दी जा सकती है!"

हम विदा हो गये–वह ग्रपनी दिशा में, ग्रौर हम ग्रपनी। हमारे इस ग्रभियान का ग्रसर ग्रच्छा हुग्रा। ग्रगले दिन लोहारघर के पास जमा हुए हमारे ग्रसामियों की हाज़िरी में ज़दोरोव ने कहा:

"ग्रगले रविवार को हमारा मोर्चा ग्रौर भी ज़ोरदार रहेगा–कोलोनी के हम सभी पचासों के पचास–एक साथ धावा करेंगे।"

गांवालों ने ग्रपनी दाढ़ियों को सरसराया ग्रौर तुरन्त सहमति प्रकट की:

"ठीक, बेशक, ठीक! इसमें ग्रनाज खपता है, ग्रौर जब इसकी मनाही है तो उसे बंद करना जायज़ है।"

दारू की गंध ने तो फिर कोलोनी में प्रवेश नहीं किया, लेकिन एक नयी मुसीबत उठ खड़ी हुई। यह मुसीबत थी–जुग्रा। हमारे पास शिकायतें पहुंचनी शुरू हुईं कि कुछ लड़के भोजन के वक़्त रोटी नहीं लेते, ग्रौर यह कि कमरों की सफ़ाई तथा कुछ ग्रन्य कम प्रिय काम ग़लत व्यक्तियों द्वारा किए जा रहे हैं।

"कमरे की सफ़ाई ग्राज तुम क्यों कर रहे हो, इवानोव क्यों नहीं कर रहा है?"

"उसने मुझसे कहा कि उसके लिए यह काम मैं कर दूं।"

'ग्रनुरोध से' किया हुग्रा, काम ग्राए दिन की घटना बन गया था, ग्रौर प्रार्थियों के ऐसे कुछ सुनिश्चित दलों का उदय हो गया था। ख़ुद न

खाकर अपना हिस्सा दूसरे साथियों को देनेवाले लड़कों की संख्या बढ़ने लगी थी।

बालकों की कोलोनी में जुआ से बढ़कर दुर्भाग्य और कुछ नहीं हो सकता। जुआड़ी के लिए उसका औसत दौर काफ़ी नहीं होता, अतिरिक्त धन की खोज करने के लिए वह अपने-आपको मजबूर पाता है, और इसका एकमात्र तरीक़ा होता है चोरी। इस दुश्मन पर धावा बोलने में मैंने एक क्षण की भी देरी नहीं की।

ओवचारेन्को एक हंसमुख सक्रिय लड़का था। वह हमारे साथ मजे से रह रहा था। अचानक वह भाग गया। इसके कारणों की मैंने खोजबीन की, लेकिन बेकार। अगले दिन, भरे बाज़ार में, नगर के बीच वह ठीक मेरे आमने-सामने पड़ गया। लेकिन लाख मनुहार करने पर भी उसने कोलोनी में लौटने से इनकार कर दिया। उसके बोलने के ढंग से ऐसा मालूम होता था जैसे वह बेहद परेशानी अनुभव कर रहा हो।

जुए में चढ़े क़र्ज़ों को हमारी कोलोनी के छात्र अपने लिए आन की चीज़ समझते थे। इस तरह के क़र्ज़ को चुकता करने में चूकने का अर्थ केवल मार या हिंसा का अन्य कोई रूप ही नहीं, बल्कि बिरादरी की घृणा का भी कारण होता था।

कोलोनी में लौटने पर सांझ के समय मैंने लड़कों से पूछताछ की।

"ओवचारेन्को के भागने का क्या कारण है?"

"यह हम कैसे जान सकते हैं?"

"सो नहीं, जानते तो तुम ख़ूब अच्छी तरह हो!"

ख़ामोशी।

उसी रात, सहायता के लिए कालीना इवानोविच को अपने साथ लेकर, मैंने पूरी तरह तलाशी ली। तलाशी के नतीजों ने मुझे स्तब्ध कर दिया। तकियों के नीचे, ट्रंकों में, सन्दूकों में, यहां तक कि कुछ लड़कों की जेबों में भी, भारी परिमाण में चीनी मिली। बुरून का भंडार सबसे ज़्यादा सम्पन्न था—उसके ट्रंक में, मेरी अनुमति लेकर जिसे बढ़ई घर में ख़ुद उसने बनाया था, पन्द्रह सेर से भी ज़्यादा चीनी भरी थी। लेकिन सब से ज़्यादा दिलचस्प मित्यागिन के क़ब्ज़े में मिली। उसके तकिए के नीचे, भेड़ की खाल की एक पुरानी टोपी में छिपे—चांदी तथा ताम्बे के सिक्कों में पचास रूबल बरामद हुए।

वुरून ने, अत्यन्त निराश मुद्रा में खुलकर मंज़ूर किया:

"मैंने यह जुए में जीती थी।"

"अन्य लड़कों से?"

"हां-आं-आं!"

मित्यागीन ने भी सारे सवालों का जवाब दिया:

"मैं नहीं बताऊंगा।"

चीनी तथा विभिन्न प्रकार की अन्य चीज़ों—जैसे ब्लाउज़ों, रूमालों तथा हाथ के थैलों का—सबसे बड़ा ख़ज़ाना उस कमरे में मिला जिसमें कि हमारी तीन लड़की सदस्याएं—ओल्या, रईसा और मारूस्या क़ब्ज़ा जमाए थीं। लड़कियों ने यह बताने से इनकार कर दिया कि ये किसकी चीज़ें हैं। ओल्या और मारूस्या तो रो पड़ीं, लेकिन रईसा अपने को संभाले रही।

कोलोनी में तीन लड़कियां थीं। रिहाइशी घरों से चोरी करनेवालों के लिए बने कमीशन ने इन सबको कोलोनी में भेजा था। इनमें से एक—ओल्या वोरोनोवा—(सम्भवत: घटनावश) एक गंदे व्यापार में फंस चुकी थी, एक ऐसे व्यापार में जिसे बाल-नौकरों के जीवन के लिए विरल नहीं कहा जा सकता। मारूस्या लेवचेन्को और रईसा सोकोलोवा अत्यन्त निर्लज्ज और मर्यादाहीन थीं। वे लड़कों के साथ बैठकर पीतीं और गालियां देती थीं जुए के खेलों में हाथ बंटाती थीं जो कि आम तौर से लड़कियों के कमरे में जमते थे। इतना ही नहीं बल्कि मारूस्या क्रूरता की हद तक उन्मादग्रस्त थी, बहुधा अन्य दोनों का अपमान करती थी—उन्हें मारती-पीटती तक थी, और हमेशा लड़कों से—अत्यन्त बेहूदा कारणों को लेकर—लड़ती थी। वह अपने को गया-बीता जीव समझा करती थी और तमाम लानत-मलामत का जवाब निम्न एकरस वाक्य के रूप में देती थी:

"क्या फ़ायदा? जो हो, मेरा अब कुछ बन नहीं सकता!"

रईसा मोटी गावदुम थी—फूहड़, आलसी, और खिलखिल हंसनेवाली। लेकिन उसे मूर्ख कहना ग़लत होगा, बल्कि—तुलनात्मक शब्दों में—शिक्षा से वह एकदम कोरी नहीं थी। किसी ज़माने में वह माध्यमिक स्कूल में पढ़ती थी और हमारी महिला-शिक्षकों की इच्छा थी कि वह रबफ़ाक—मज़-दूरों का एक पाठ्यक्रम—के लिए तैयारी करे। उसका पिता हमारे नगर में जूते बनाने का धंधा करता था, लेकिन दो साल पहले शराब के नशे

में हुए एक झगड़े में छुरा खाकर उसकी मौत हो गई थी। उसकी मां नशा करती और भीख मांगती थी। रईसा ने हमें विश्वास दिलाते हुए बताया कि उसके वास्तविक माता-पिता ये नहीं थे, यह कि शिशु के रूप में उसे सोकोलोव-दम्पति के दरवाज़े पर छोड़ दिया गया था। लेकिन लड़कों ने घोषित किया—"सो कुछ नहीं, यह सब उसकी मनगढ़न्त है।"

"देखते जाम्रो, अभी वह तुम्हें बताएगी कि उसका पिता कोई शाहज़ादा था!"

रईसा और मारूस्या लड़कों के प्रति एक प्रकार का उन्मुक्त रवैया बनाए रखती थीं और लड़के खेली-खाई होने के नाते, एक हद तक उनका मान भी करते थे। इसी वजह से मित्यागिन तथा अन्य की काली चालों के महत्वपूर्ण सूत्रों का भार उन्हें सौंपा गया था।

मित्यागिन के आगमन के साथ कोलोनी के गुण्डा-तत्वों में, परिमाण और गुण दोनों ही दृष्टियों से वृद्धि हो चली।

मित्यागिन एक अभ्यस्त चोर था, मौलिक, साहसपूर्ण और सफल। और इस सबके साथ-साथ वह अत्यन्त आकर्षक भी था। सत्रह वर्ष की, या हो सकता है कि इससे कुछ अधिक उसकी उम्र थी।

उसके चेहरे पर झाड़ीनुमा सनीली भौंहों के रूप में पहचान का 'साइन बोर्ड' लगा था। जैसा कि ख़ुद उसका कहना था, यह 'साइन बोर्ड' उसकी मुहिमों की सफलता को बहुधा खटाई में डाल देता था। लेकिन यह बात कभी उसके दिमाग़ में नहीं आई कि वह और चाहे जो भी धंधा अपना सकता है, लेकिन चोर नहीं बन सकता। ठीक उसी सांझ जबकि वह कोलोनी में आया था, अत्यन्त उन्मुक्त और मित्रतापूर्ण अन्दाज़ में उसने मुझसे कहा:

"लड़के आपकी ख़ूब तारीफ़ करते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच।"

"तो इससे क्या?"

"यह बढ़िया है। अगर लड़के आपको चाहते हैं तो उनकी उम्र मौज से गुज़रती है।"

"मतलब यह कि तुम भी मुझे पसन्द करने लगोगे, क्यों?"

"अरे नहीं, मैं कोलोनी में ज़्यादा नहीं टिकूंगा।"

"क्यों नहीं टिकोगे?"

"भला, किस लिए मुझे टिकना चाहिए? मैं चोर हूं, ग्रौर हमेशा चोर ही बना रहूंगा।"

"क्यों, यह ग्रादत तो छूट सकती है।"

"जानता हूं, लेकिन मैं इसे महत्व नहीं देता।"

"तुम कुछ बन रहे हो, मित्यागिन!"

"नहीं, मैं बन नहीं रहा! चोरी करने में मज़ा है! केवल तुम्हें उसका तरीक़ा मालूम होना चाहिए, ग्रौर यह नहीं कि चाहे जिसको लूटने चल दिए। कुछ हरामी होते हैं जिन्हें लूटने को ख़ाहमख़ाह जी चाहता है, ग्रौर कुछ लोग होते हैं जिन्हें कभी लूटना नहीं चाहिए।"

"सो तो ठीक," मैंने कहा, "लेकिन ग्रसली भुक्तभोगी तो वह बनता है जो चोरी करता है, न कि वह जिसकी चोरी की जाती है।"

"भुक्तभोगी, क्या मतलब?"

"बताता हूं। तुम चोरी के ग्रादी हो जाते हो, ग्रौर काम करने की ग्रादत छुट जाती है। हर चीज़ को तुम खेल समझते हो, पीने की लत तुम्हें पड़ जाती है, ग्रौर बस, एक ग्रावारा के सिवा तुम ग्रौर कुछ नहीं रह जाते। इसके बाद जेल का नम्बर ग्राता है, ग्रौर जेल के बाद फिर कहीं..."

"माना कि जेल में जो रहते हैं वे इनसान नहीं होते! लेकिन काफ़ी बड़ी संख्या में, जेल से बाहरवाले लोग उनसे भी बदतर होते हैं जो जेल के भीतर हैं। सो यह कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"क्या तुमने कभी ग्रक्तूबर क्रान्ति के बारे में सुना है?"

"बेशक, मैंने सुना है, मैं लाल गारद के साथ था।"

"बहुत ठीक। लोगों के लिए ग्रब जीवन ग्रच्छा होगा। जेल उनके लिए मुंह बाए नहीं रहेगी"

"यह तो देखने की बात है," मित्यागिन ने सोचपूर्ण ग्रन्दाज़ में कहा। "लेकिन हरामख़ोरों का दल ग्रभी भी छुट्टा घूम रहा है। वे ग्रपनी लीक छोड़नेवाले नहीं, ऐसे न होगा तो वैसे करेंगे। कोलोनी के इर्द-गिर्द ही देखो न, कैसा झुण्ड जमा है,—ग्रोहो!"

कोलोनी में जुए के संगठन को जब मैंने भंग किया तो मित्यागिन ने यह बताने से इनकार कर दया कि उसकी टोपी में धन कहां से ग्राया था।

"क्या यह चोरी का माल है?"

वह मुसकराया।

"आप भी ख़ूब हैं, अन्तोन सेम्योनोविच!" उसने कहा, "निश्चय ही यह सब मैंने ख़रीदा नहीं है। वेवकूफ़ दुनिया में अभी तक काफ़ी मौजूद हैं। यह सारा धन वेवकूफ़ों द्वारा एक जगह लाया गया, और सिर नवा-कर तथा दोहरे हो-होकर मोटी तोंदवाले शैतानों के हवाले कर दिया गया। सो मैं ही क्यों पीछे पड़ूं? क्यों न उसे ख़ुद ही हथिया लिया जाए? सो मैंने उसे हथिया लिया। लेकिन मुसीबत यह कि कोलोनी में किसी चीज़ को छिपाकर कहां रखा जाए! मुझे कभी ख़याल तक नहीं हुआ कि आप इस जगह की तलाशी भी ले सकते हैं..."

"अच्छी बात है। यह धन कोलोनी के काम आएगा। और हम अभी, हाथ के हाथ, एक सूची बनाए लेते हैं, और अपने, खाते में उसे डाल देंगे। तुम्हारे बारे में फ़िलहाल मैं कुछ नहीं कहूंगा।"

मैंने लड़कों से चोरियों के बारे में बात की

"जुए की मैं एकदम मनाही करता हूं। पत्तेबाज़ी अब नहीं चलेगी। पत्तेबाज़ी का अर्थ है ख़ुद अपने साथियों पर ही हाथ साफ़ करना।"

"ठीक है। आप उन्हें जुआ न खेलने दें।"

"वे खेलते हैं इसलिए कि बेवक़ूफ़ हैं। हमारी कोलोनी के काफ़ी सद-स्य भूखे रहते हैं, न रोटी खाते हैं, न चीनी ।केवल जुए की बदौलत ही ओवचारेन्को कोलोनी छोड़कर चला गया, और अब चोरबाज़ार में रो-ता-चिल्लाता जूतियां चट-खा रहा है।"

"हां, ओवचारेन्को बुरा फंस गया था," मित्यागिन ने कहा।

"ऐसा लगता है," मैं कहता गया, "कि कोलोनी में एक कमज़ोर साथी की रक्षा करनेवाला कोई नहीं है। सो यह ख़ुद मुझे करना होगा। मैं लड़कों को भूखा रहने और अपने स्वास्थ्य को केवल इसलिए नष्ट नहीं होने दूंगा कि उनका पासा उल्टा पड़ गया। सो तुम ख़ुद सोच-समझ लो कि क्या चाहते हो! यह न ख़याल करना कि तुम्हारे सोने की जगहों की तलाशी लेते फिरने में मुझे कोई आनन्द आता है! लेकिन नगर में ओवचारेन्को को रोते और नष्ट होते देखने के बाद मैंने निश्चय किया कि तुम्हारे साथ अब कोई मुलाहज़ा मैं नहीं करूंगा। अगर तुम चाहो तो हम यह तय कर सकते हैं कि आगे कोई जुआ नहीं होगा। बोलो, क्या तुम

ईमानदारी से वचन देने को तैयार हो? केवल मुझे एक ही डर है। वह यह कि तुम्हारे वचन का कोई ख़ास मूल्य नहीं है। वुरून ने वचन दिया था...

वुरून आगे बढ़ आया।

"यह सच नहीं है, अन्तोन सेम्योनोविच!" उसने चिल्लाकर कहा, "'आपको झूठ बोलते शर्म आनी चाहिए। अगर आप भी झूठ का सहारा लेने लगेंगे तो हम... जुए के बारे में एक शब्द भी मैंने कभी नहीं कहा था।"

"माफ़ करना! तुम बिलकुल ठीक कहते हो। यह मेरा दोष था कि मैंने उसी समय तुमसे जुआ न खेलने का भी वचन नहीं लिया, न ही घरेलू दारू के बारे में..."

"मैं दारू नहीं पीता।"

"अच्छा-अच्छा। बस, इतना ही काफ़ी है। हां तो बोलो, अब क्या कहते हो?"

करावानोव धीरे-धीरे खिसककर आगे आया। सदा की भांति अदम्य निखार और नफासत लिए, थोड़ा तर्ज़दारी के साथ वह खड़ा था। स्तेपी में रहकर स्तेपीय बैलों की भारी शक्ति का कुछ अंश उसमें भी आ गया था और जिस ढंग से वह इस शक्ति को अपने क़ाबू में रखता था, उससे वह और भी अधिक प्रभावपूर्ण मालूम होती थी।

"साथियो! यह दिन की रोशनी की भांति साफ़ है! जुए के ज़रिये हम अपने साथियों की लूट जारी नहीं रख सकते। चाहे तुम मुझसे नाराज़ हो या ख़ुश, मैं जुए की मुख़ालफ़त करने जा रहा हूं। मैं और किसी चीज़ का भण्डा चाहे न भी फोड़ूं, लेकिन जुए का अवश्य फोड़ूंगा। या फिर, अगर किसी को मैंने ताश खेलते हुए देखा, तो ख़ुद ही उसकी मरम्मत कर दूंगा। मैंने ओवचारेन्को को जाते देखा। ऐसा मालूम होता था जैसे क़ब्र में दफ़न होने के लिए जा रहा हो। और ओवचारेन्को में, तुम जानो, चोरी का माद्दा नहीं है। यह तो कहो कि वुरून और रईसा ने उसका सफ़ाया किया। अब मैं कहता हूं, इन्हें यहां से रवाना करना चाहिए कि जाकर उसकी खोज करें! और इन्हें तब तक वापस न लौटने दिया जाए जब तक कि यह उसका पता न लगा लें।"

वुरून ख़ुशी से तैयार हो गया, लेकिन साथ ही बोला:

"रईसा का पुछल्ला बांधकर भला मैं क्या करूंगा? मैं ख़ुद ही उसे खोज लूंगा।"

सबके सब लड़के एक साथ चहकने लगे। जो निर्णय किया गया था, उससे सभी ख़ुश थे। बुरून ने तमाम पान्तों को ज़ब्त कर लिया और उन्हें ख़ुद अपने हाथों से कूड़े के डोल में फेंक दिया। कालीना इवानोविच ने ख़ुशी-ख़ुशी चीनी के भंडार को जमा किया।

"धन्यवाद, लड़को!" उसने कहा। "इसको कहते हैं भारी बचत!"

मित्यागिन मेरे साथ शयनागार से बाहर तक आया।

"तो क्या मुझे जाना होगा?" उसने पूछा।

"तुम कुछ दिन और रह सकते हो," मैंने रुक्षता के साथ कहा।

"लेकिन चोरी मैं फिर भी करता रहूंगा।"

"अच्छा-अच्छा, जहन्नुम में जाओ तुम! जाओ, करो चोरी। तुम अपनी ही अर्थी तैयार करोगे!"

चकित और स्तब्ध वह खड़ा रहा।

अगली सुबह बुरून नगर के लिए रवाना हुआ, ओवचारेन्को को खोजने। लड़के, रईसा को खींचते हुए, उसके पीछे पड़ गए। कराबानोव ने बुरून के कंधे पर हाथ मारा, और समूची कोलोनी को गुंजाता हुआ बोला:

"शौर्य का युग उक्राइन में ख़त्म नहीं हुआ है!"

ज़दोरोव ने बत्तीसी चमकाते हुए लोहारघर के भीतर से अपना सिर बाहर निकाला और सदा की भांति अपने उसी सहज, विश्वासपूर्ण अन्दाज़ में बोला:

"हरामी कहीं के, लेकिन ज़रा इनकी अकड़ तो देखो, सच!"

"और तुम... तुम अपने को क्या समझते?" कराबानोव ने झल्लाकर पूछा।

"भूतपूर्व ख़ानदानी हरामी, और अब अलेक्सान्द्र ज़दोरोव, मैक्सिम गोर्की कोलोनी के लोहारघर का मिस्त्री!" एकदम गर्वपूर्ण खड़े होते हुए उसने कहा।

"ऐट ईज़!" ठाठ के साथ लोहारघर के सामने से गुज़रते हुए कराबानोव ने कहा।

सांझ को बुरून, ओवचारेन्को को वापस लौटा लाया, भूख का सताया हुआ लेकिन बेहद सन्तुष्ट!

१०. "सामाजिक शिक्षा के वीर"

हम पांच लोग थे। हमें 'सामाजिक शिक्षा के वीर' की संज्ञा दी गई थी। हम अपने आपको इस नाम से नहीं पुकारते थे, बल्कि हमारे दिमाग़ में कभी यह आया भी नहीं था कि हम कोई ख़ास तौर से वीरता-पूर्ण काम कर रहे हैं, न तो कोलोनी के अस्तित्व के प्रारम्भिक दिनों में, और न बाद में ही जबकि उसने अपनी आठवीं वर्षगांठ मनाई।

'वीर' शब्द का प्रयोग केवल गोर्की कोलोनी के सम्बन्ध में ही नहीं किया जाता था। अपने हृदयों के गुप्त कोनों में इस तरह के शब्दों को हम केवल सजावटी शब्द या सुख़न तकिया ही समझते थे जिनका उद्देश्य अनाथालयों तथा कोलोनियों के कर्मचारियों के मनोबल को ऊंचा करना होता था। कारण, उन दिनों सोवियत जीवन और क्रान्तिकारी आन्दोलन वीरत्व से सराबोर थे, जबकि हमारा काम—तत्वतः और उपलब्धियों की दृष्टि से—केवल ज़रूरत से ज़्यादा श्रीहीन था।

हम केवल साधारण, क्षण-भंगुर आदमी थे। हमारी कमज़ोरियों का कोई ठिकाना नहीं था। हम, यदि सच पूछा जाये तो, ख़ुद अपने काम तक से अनभिज्ञ थे। हमारा काम का दिन ग़लतियों, शंकायुक्त हरकतों और उलझे विचारों से भरा होता था। सामने अभेद्य धुंध फैली थी जिसे बेधकर, अत्यन्त कठिनाई के साथ, शिक्षा के क्षेत्र में अपने भावी जीवन की हम केवल धुंधली बाह्य रूप-रेखा ही देख पाते थे।

हमारे द्वारा उठाये जानेवाले हर क़दम की हर पहलू से आलोचना की जा सकती थी। कारण, हमारा हर क़दम योजनाविहीन होता था। हमारे काम में ऐसा कुछ नहीं था जिसमें रद्दोबदल की ज़रूरत न हो। और जब हम बहस शुरू करते, तब हालत और भी बदतर हो जाती—कारण, इन बहसों से कभी कोई सत्य नहीं प्रकट होता था।

केवल दो बातें ऐसी थीं जिनके बारे में कभी कोई सन्देह नहीं उठा,—इनमें से एक थी हमारा यह दृढ़ निश्चय कि काम को कभी नहीं छोड़ेंगे, बल्कि उसे किसी-न-किसी नतीजे तक पहुंचाकर ही हम लेंगे, चाहे वह नतीजा विफलता के रूप में ही क्यों न सामने आये। दूसरी थी हमारा आए दिन का जीवन—कोलोनी के भीतर और उसके इर्द-गिर्द का हमारा जीवन।

जब ओसिपोव-दम्पति पहले-पहल हमारी कोलोनी में आए तो कोलोनी

के निवासियों के प्रति कंपा देनेवाली घृणा का उन्होंने अनुभव किया था। हमारा यह क़ायदा था कि जिस शिक्षक की डयूटी होती थी, उसे लड़कों के साथ बैठकर भोजन करना पड़ता था। लेकिन इवान इवानोविच और उनकी पत्नी दोनों ने दृढ़ता से घोषणा की कि वे लड़कों के साथ मेज़ पर नहीं बैठेंगे। कारण – उनकी नफ़ासतपसंदी इसे गवारा नहीं कर सकती।

"हमें भी देखना है," मैंने कहा।

शयनागार में अपनी सांझ की ड्यूटी के दौरान इवान इवानोविच किसी एक पलंग पर कभी नहीं बैठते, और चूंकि बैठने के लिए अन्य कोई चीज़ वहां नहीं थी, इसलिए सांझ की ड्यूटी-भर वह अपने पैरों पर ही खड़े रहते। इवान इवानोविच और उनकी पत्नी दोनों को यह बड़ा अजीब मालूम होता था कि जूँओं से भरे इन बिस्तरों पर बैठना मैं कैसे गवारा करता हूं।

"सो कुछ नहीं," मैंने उन्हें बताया, "अन्त में सब ठीक हो जाएगा। जूँओं से हमें छुट्टी मिल जाएगी, या कोई और उपाय किया जाएगा..."

तीन महीने बाद इवान इवानोविच न केवल यह कि लड़कों के साथ उसी मेज़ पर चाव से खाता था, बल्कि वस्तुत: अपने साथ निजी चम्मच लेकर मेज़ पर आना भी उसने बंद कर दिया था। अब वह मेज़ पर बीचोंबीच लगे लकड़ी के चम्मचों के ढेर में से ही अपना चम्मच उठाता था और केवल उंगलियां फेरकर उसे साफ़ करना ही उसके लिए काफ़ी होता था। और शयनागार में सांझ को जब उसकी ड्यूटी होती थी तो ख़ुशी से उमंगते बच्चों के एक झुंड से घिरा वह पलंग पर बैठ जाता था, 'चोर-व मुख़बिर' नाम के खेल में हिस्सा लेता था। इस खेल को चलाने के लिए सभी लड़कों को टिकट दिए जाते थे। इन टिकटों पर 'चोर', 'मुख़बिर', 'जांच करनेवाला', 'न्यायाधीश' या 'जल्लाद' लिखा होता था। जिसके हाथ में 'मुख़बिर' टिकट निकलता था, उसे खेल के लिए बनाए गए एक कोड़े से लैस कर दिया जाता था, और उसे चोर को भांपना पड़ता था। हर लड़का बारी-बारी से अपना हाथ फैलाता था और मुख़बिर को अन्दाज़ से संदिग्ध चोर की हथेली पर कोड़ा फटकारना होता था। अधिकतर ऐसा होता कि वह न्यायाधीश या खोज करनेवाले की हथेली पर कोड़ा फटकारता जो कि ईमानदार नागरिक थे। उनपर सन्देह करके उसने उनका अपमान किया था। इसलिए पलटकर अब वे ख़ुद उसकी हथेली

पर कोड़ा जमाते और इस प्रकार निर्धारित दस्तूर के मुताबिक़ उसकी धृष्टता की उसे सज़ा देते। जब मुख़बिर चोर का पता लगाने में सफल हो जाता, तब उसकी मुसीबतें ख़त्म हो जातीं और चोर की शुरू होतीं। न्यायाधीश सज़ा का एलान करता—पांच गरमागरम कोड़े, दस गरमागरम कोड़े, पांच ठंडे कोड़े। जल्लाद तब कोड़ा उठाता और सज़ा को अमल में उतारता।

और चूंकि खेल में हिस्सा लेनेवालों की भूमिकाएं बराबर बदलती रह-ती थीं, एक बार जो चोर बनता था वह अगली बार न्यायाधीश या ज-ल्लाद बन जाता था। इसलिए खेल का मुख्य आकर्षण मार खाने और बद-ला लेने की भूमिका-परिवर्त्तन में निहित था। सख़्त न्यायाधीश या ज़ालिम जल्लाद जब मुख़बिर या चोर बनता था तो हाकिमे वक़्त—न्यायाधीश या जल्लाद—के सामने उसे अब अपनी पीठ उघारनी पड़ती थी, और वह उन सज़ाओं तथा मारों को याद रखता था जो कि पहले अमल में लाई गई थीं। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तथा लीदिया पेत्रोवना भी खेल में हि-स्सा लेती थीं, लेकिन लड़के उनके साथ पुरुषोचित उदारता से पेश आते थे,—केवल तीन या चार ठंडे कोड़ों की सज़ा उन्हें देते थे और जल्लाद, दुनिया में सर्वाधिक मृदु भाव धारण कर, कोमल स्त्रैण हथेली को अपने कोड़ों से सरसराता था।

जब मैं उनके साथ खेल में हिस्सा लेता था तो लड़के मेरी सहन-शक्ति की थाह लेने के लिए अत्यन्त कौतुक का परिचय देते थे। सो साहस के साथ परीक्षा देने के सिवा और कोई चारा नहीं था। न्यायाधीश बनने पर मैं ऐसी सज़ाएं देता था कि जल्लाद की भी रूह क़ब्ज़ हो जाती थी, और सज़ाओं को अमल में उतारने की जब मेरी बारी आती थी तो अपराधी सारी हेकड़ी भूल चीख़ उठता था:

"अन्तोन सेम्योनोविच, यह सरासर ज़्यादती है!"

और वे भी ख़ूब कसकर इसकी कसर निकालते थे। हमेशा सूजा हुआ बायां हाथ लिये मैं अपने दरबे में लौटता था। हाथ को बदलना शान के खिलाफ़ समझा जाता था, और मेरा दायाँ हाथ लिखने के लिए ज़रूरी था।

इवान इवानोविच ओसिपोव, निरे डर के मारे, स्त्रियों जैसी हरकत करने लगता था, और शुरू-शुरू में लड़के उसके साथ नरमी का बरताव

करते थे। एक दिन मैंने उससे कहा कि ऐसी हरकतें करना ग़लत है; हमें लड़कों को साहसी और वीर बनाना है। उन्हें ख़तरे से नहीं डराना चाहिए, शारीरिक पीड़ा से तो और भी नहीं। इवान इवानोविच मुझसे सहमत नहीं हुआ।

एक सांझ जबकि हम दोनों खेल में हिस्सा ले रहे थे, न्यायाधीश की हैसियत से, मैंने उसे बारह गरम कोड़ों की सज़ा दी, और इसके बाद अगली पारी में, जल्लाद की हैसियत से, निर्ममता के साथ सनसनाते कोड़ों से उसकी हथेली को झनझना दिया। वह ग़ुस्से से बेक़ाबू हो गया, और जब उसकी बारी आई तो उसने मुझसे बदला लिया। उसके इस व्यवहार को मेरे भक्त भला कैसे ख़ाली छोड़ सकते थे। सो उनमें से एक ने उसे अपना हाथ बदलने के लिए—सब के सामने देखने के लिए—बाध्य कर दिया।

अगली सांझ इवान इवानोविच ने इस 'बर्बर खेल' से निकल भागने की चेष्टा की, लेकिन लड़कों ने उसकी ऐसी ख़बर ली कि शर्म के मारे उसे फिर उसमें हिस्सा लेना पड़ा, और इसके बाद जब भी होता, हमेशा गर्व के साथ वह अग्नि-परीक्षा में से निकलता,—न्यायाधीश बनने पर न तो वह लल्लो-चप्पो से काम लेता, न ही मुख़बिर या चोर बनने पर कभी दुम दिखाता!

ओसिपोव दम्पति बहुधा शिकायत करते कि उनके घर में भी जुँओं ने दख़ल जमा लिया है।

"छात्रों के शयनागारों में हमें जूँओं का सफ़ाया करना चाहिए," मैंने उन्हें बताया, "न कि अपने कमरों में!"

और हमने अपनी कोशिशों में कोई कसर नहीं छोड़ी। भारी ऊहापोह के बाद हमने बदलने के लिए दो-दो चादरें और हरेक के लिए दो-दो सूट उपलब्ध किए। ये सूट थेगलियों से भरे थे, लेकिन उन्हें भाप दी जा सकती थी। नतीजा यह हुआ कि उनमें मुश्किल से ही कोई दो-चार जूँएं बच पायी हों। फिर भी, जूँओं से पूर्णतया छुटकारा पाने में हमें काफ़ी समय लगा। कारण, एक तो नये सदस्य बराबर आते रहते थे, दूसरे गांववालों से भी हमारा सम्पर्क होता था।

अध्यापक-वर्ग का काम, अधिकृत रूप से तीन हिस्सों में विभाजित था—मुख्य ड्यूटी, काम की ड्यूटी और सांझ की ड्यूटी। इनके अला-

वा शिक्षक सुबह के समय पाठ पढ़ाते थे। मुख्य ड्यूटी एक तरह का कड़ा श्रम था जो सुबह से सोने के समय की घंटी बजने तक चलता था। ड्यूटी पर तैनात शिक्षक को समूचे दिन के कार्यक्रम पर निगाह रखना, खाद्य-सामग्री की निकासी की जाँच-पड़ताल करना, कार्यों की पूर्ति का निरीक्षण करना, तमाम द्वन्द्वों की पूछ-ताछ और लड़नेवालों में मेल कराना, आपत्ति करनेवालों को समझाना-बुझाना, सप्लाई के लिए आर्डर देना; कालीना इवानोविच के भण्डारघर की सामग्री की जांच करना, और चादरों तथा कपड़ों को अपनी देख-रेख में बदलवाना होता था। मुख्य ड्यूटी का काम इतना अभिभूत कर देनेवाला था कि दूसरे के शुरू होते न होते हमारे पुराने छात्रों ने भी, अपनी आस्तीनों पर लाल पट्टियां लगाकर, शिक्षकों का हाथ बंटाना शुरू कर दिया।

काम की ड्यूटीवाला शिक्षक केवल किसी भी चालू काम में, ख़ास तौर से जिसमें ज़्यादा संख्या में छात्र जुटे होते थे या जहां नवागन्तुकों की संख्या ज़्यादा होती—हाथ बंटाता था। शिक्षक की भूमिका प्रस्तुत काम में वस्तुत: हिस्सा लेने की होती थी, हमारी जो परिस्थितियां थीं, उनमें इसके सिवा कुछ और हो भी नहीं सकता था। शिक्षक वर्कशाप में काम करते थे, जंगल में जाकर पेड़ काटते थे, खेतों में काम करते थे, साग-भाजी की क्यारियों में जुटते थे और कोलोनी में मौजूद साज़-सामान की मरम्मत का जब भी काम होता था, तब उसमें हिस्सा लेते थे।

सांझ की ड्यूटी क़रीब-क़रीब औपचारिक—उससे कुछ ही अधिक—होती थी। कारण कि सांझ को सभी शिक्षक—वे ड्यूटी पर हों चाहे न हों—छात्रों के शयनागारों में जमा होते थे। और इसके लिए किसी ख़ास वीरता की दरकार नहीं थी। कारण, जाने के लिए और कोई जगह थी भी नहीं। हमारे सूने कमरे कोई बहुत सुहावने नहीं थे। रात को केवल तेल में तैरती बत्ती उनमें उजाला करती थी। इसके अलावा, सांझ की चाय के बाद, हम जानते थे कि प्रसन्नता से छलछलाते और उत्सुकता से उमगे अपने चेहरों, सच्ची और झूठी कहानियों के अन्तहीन पिटारों, सामयिक, दार्शनिक, राजनीतिक और साहित्यिक विषयों पर कभी न चुकनेवाले सवालों, 'चूहे और बिल्ली' से लेकर 'चोर व मुख़बिर' तक अपने खेलों के साथ कोलोनी के छात्र हमारा इन्तज़ार करते होंगे। वहां हमारे जीवन की घटनाओं पर—वैसी जिनका कि हम वर्णन कर चुके हैं—बहसें चलतीं,

पड़ोसी किसानों का गहरा विश्लेषण किया जाता, और मरम्मतों, हमारे भविष्य, नयी कोलोनी में हमारे सुखी जीवन, आदि के सम्बन्ध में बढ़िया नुक़्तों को पेश किया जाता।

कभी-कभी मित्यागिन कोई कहानी गढ़कर सुनाता। कहानियों का वह भारी उस्ताद था, बड़ी दक्षता के साथ उन्हें सुनाता था, साथ ही अपनी ओर से नाटकीय तत्व तथा समृद्ध हाव-भावों की चाशनी भी चढ़ाता जाता था। मित्यागिन को छोटे लड़कों से प्यार था, और उसकी कहानियां सुनकर वे ख़ूब ख़ुश होते थे। उसकी कहानियों में जादू-चमत्कार मुश्किल से ही कभी रहता था। वे ज़्यादातर मूर्ख और बुद्धिमान किसानों, सत्वहीन रईसों, काइयां कारीगरों, साहसपूर्ण मौलिक चोरों, शैतान-रूह पुलिसवालों, वीर और विजयी सैनिकों और औघड़, कुन्दबुद्धि पादरियों के बारे में होती थीं।

बहुधा शयनागारों में सांझ को पुस्तकें पढ़कर सुनाने की बैठकों का आयोजन किया जाता। एकदम शुरू से ही हमने एक पुस्तकालय बनाना शुरू कर दिया था। मैं पुस्तकें ख़रीदता था, निजी घरों से मांग कर लाता था। जाड़ों का अन्त होते न होते क़रीब-क़रीब सभी रूसी क्लासिकल तथा कितनी ही राजनीतिक और कृषि-सम्बन्धी पुस्तकें हमने जमा कर लीं। सार्वजनिक शिक्षा के प्रान्तीय विभाग के अराजकतापूर्ण गोदामों में से भी विज्ञान की विभिन्न शाखाओं पर आम फ़हम ढंग से लिखी गई कितनी ही पुस्तकें बटोरने में मैंने सफलता प्राप्त की।

हमारे छात्रों में से कितने ही पढ़ने के शौक़ीन थे। लेकिन, निश्चय ही, पुस्तक के विषय को समझने में वे सब के सब समर्थ नहीं थे। इसी लिए हम पुस्तकें पढ़ने की बैठकों का आयोजन करते थे जिनमें, नियमित रूप से सभी हिस्सा लेते थे। पुस्तक पढ़ने का काम या तो ज़दोरोव करता था, जिसका पढ़ना बेदाग़ था या फिर मैं। पहले जाड़ों के दौरान हमने काफ़ी परिमाण में पुश्किन, कोरोलेन्को, मामिन-सिबिर्याक और वेरेसायेव को पढ़ा लेकिन सर्वाधिक पढ़ा हमने गोर्की को।

गोर्की की कृतियों का हम पर बहुत ही सशक्त लेकिन दोमुखी असर पड़ा। कराबानोव, तारानेत्स, वोलोख़ोव तथा अन्य कई को गोर्की की रोमांटिकता ख़ूब अच्छी लगती थी, और उनके विश्लेषणात्मक अंशों में वे कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे। जब वे 'माकार चुद्रा' सुनते थे तो उन-

की आंखें दमकने लगती थीं, मुंह खुले रह जाते थे। गोर्देयेव को लक्ष्य कर वे मुट्ठियां तानते थे, और "दादा अर्ख़िप तथा लेन्का" के जीवन की ट्रैजेडी उनमें ऊब का संचार करती थी। करावानोव उस दृश्य का ख़ास तौर से शौक़ीन था जिसमें गोर्देयेव, बर्फ़ के तड़कने के कारण, अपनी 'बोयारिन्या' को नष्ट होते हुए देखता है। सेम्योन, अपने चेहरे को कसे हुए, नाटकीय स्वरों में चिल्ला उठाता:

"वाह, क्या आदमी है यह! काश कि सब उस जैसे बन सकते!"

'त्रय' नाम की कहानी में इल्या की मृत्यु का वर्णन भी वह समान उत्साह से सुनता।

"महान आदमी है वह! एकदम महान! पत्थर से टकराकर अपने भेजे को चूर-चूर करना, —वाह, क्या मृत्यु है यह भी!"

मित्यागिन, ज़दोरोव और वुरून हमारे इन रोमांटिकों के उछाह पर अजीब ढंग से ख़ूब हंसते थे और उनके सर्वाधिक मार्मिक स्थलों को आहत करते थे।

"तुम लोग अपने कान तो खड़े रखते हो, लेकिन सुनते कुछ नहीं!"

"मैं कुछ नहीं सुनता, क्यों?"

"हां, क्या खाक तुम सुनते हो,—भला, भेजे को चूर-चूर करने ऐसी क्या बढ़िया बात है? वह बुद्धू है, तुम्हारा वह इल्या, बिलकुल गया-गुज़रा! जहां औरतों ने खट्टी निगाह से उसकी ओर देखा, और वह पिघलकर आंसू बन चला! अगर मैं उसकी जगह होता, तो मैं उन सौ-दागरों में से एकाध का दम घोट डालता, वे सब गर्दन मरोड़ने लायक़ हैं, तुम्हारा वह गोर्देयेव भी!"

केवल 'पाताल लोक' के पात्र लूका के बारे में दोनों पक्ष एकमत थे।

"चाहे कुछ भी तुम कहो!" अपने सिर को हिलाते हुए करावानोव कहता, "इस तरह के खूसट लोग भारी नुक़सानदेह होते हैं। भन-भन और अचानक ग़ायब... मैं उन्हें पहचानता हूं!"

"वह वृद्ध लूका था जानकार," मित्यागिन ने कहा, "उसके लिए सभी कुछ बहुत ठीक है—वह हर चीज़ को समझता है, हर कहीं अपने ही ढर्रे पर चलता है। कभी चोरी कर रहा है, कभी धोखा दे रहा है, कभी प्यारे बूढ़े बाबा की भूमिका निभा रहा है। कुछ भी हो, वह ख़ुद हमेशा सही होता है!"

•

"बचपन" और "जनता के बीच" ने उन सब पर गहरा प्रभाव डाला। सांस रोककर वे सुनते, पढ़ना जारी रखने का अनुरोध करते हुए "कम-से-कम गहरी रात तक।" और जब मैंने ख़ुद गोर्की के जीवन की कहानी उन्हें सुनाई तो शुरू-शुरू में उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया। कहानी को सुनकर वे सन्न रह गए, और अचानक उन्हें लगा:

"सो गोर्की हमारे जैसा था। सच, कितना अच्छा है यह!"

इस ख़याल ने लड़कों को अत्यन्त छुआ और प्रसन्नता प्रदान की।

मक्सिम गोर्की का जीवन ऐसा मालूम होता था जैसे हमारे जीवन का हिस्सा बन गया हो। उसकी अनेक घटनाएं तुलना के लिए मिसाल बनकर हमारे सामने आती थीं। उपनामों का एक भण्डार हमारे लिए खुल गया था, बहसों के लिए पृष्ठभूमि हमें मिलती थी और मानवीय मूल्यों की माप करने का एक पैमाना जैसे हमारे हाथ लग गया था।

जब, कोई तीन किलोमीटर दूर, बच्चों की कोरोलेन्को कोलोनी का संगठन हुआ, तब हमारे लड़कों ने उनसे ईर्ष्या करने में ज़रा भी समय ज़ाया नहीं किया!

"उन छोकरों को उनके उपयुक्त ही कोरोलेन्को नाम मिला है। लेकिन हम... हम गोर्की के छौने हैं।"

कालीना इवानोविच की भी राय यही थी।

"मैं उस कोरोलेन्को से मिला हूं, और मैंने उससे बातें भी की हैं— वह एक इज़्ज़तदार आदमी था। और तुम... तुम आवारा हो, सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही रूपों में!"

बिना किसी अधिकृत नामकरण या पुष्टि के हमारा नाम 'गोर्की कोलोनी' पड़ गया था। नगर में भी वे इस नाम के, जिससे कि हम अपने आपको पुकारते थे, क्रमश: आदी हो गए, और इस नये नाम की हमारी नयी मोहरों तथा रबड़ के छापों पर उन्होंने कोई आपत्ति नहीं की। दुर्भाग्यवश अलेक्सेई मक्सिमोविच गोर्की से हम पहले पत्र-व्यवहार नहीं कर सके। हमारे नगर में किसी को उनका पता नहीं मालूम था। केवल १९२५ में जाकर ही एक चित्रमय साप्ताहिक पत्र में इटली में गोर्की के जीवन के बारे में हमें एक लेख पढ़ने को मिला। इस लेख में उनके नाम का इटालियन रूपान्तर—'मैस्सिमो गोर्की'—दिया हुआ था। तभी हमने—इस आशा से कि शायद मिल जाए—उन्हें अपना पहला पत्र लिखा। इस पत्र

पर बहुत अनपढ़ ढंग से, अतिसंक्षिप्त पता लिखा था: इटालिया, मैस्सि-मो गोर्की।

क्या छोटे क्या बड़े, सभी गोर्की की कहानियों तथा उनकी आत्मकथा जानने के लिए उत्सुक रहते थे, हालांकि छोटों में से अधिकांश अनपढ़ थे।

दस वर्ष और इससे अधिक की आयु के क़रीब एक दरजन छोटे लड़के हमारी कोलोनी में थे। इस छोटे-से दल का प्रत्येक सदस्य ज़िन्दादिल, चंचल, हथलपक और स्थायी तथा कल्पनातीत रूप से भ्रष्ट था। हमेशा अत्यन्त दयनीय स्थिति में वे कोलोनी आते थे—चमरियल, काजू-बाजू, दाद-खुजली के शिकार। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, हमारी स्वैच्छिक डाक्टर, अफ़सर तथा रोगियों की परिचारिका थीं उनसे ज़रा न छुट्टी पाती। उसकी शुष्कता के बावजूद सब के सब उसकी ओर आकर्षित होते थे। वह उन्हें एक मां की तरह झिड़कना जानती थी। वह उनकी सारी कमज़ोरियों से परिचित थी, जो कुछ वे कहते थे कभी उस पर विश्वास नहीं करती थी (यह एक ऐसी उपलब्धि थी जिससे मैं सदा कोरा ही रहा), ज़रा से भी अपराध को कभी बर्दाश्त नहीं करती थी, और अनुशासन के प्रत्येक उल्लंघन पर खुलकर अपने विक्षोभ का प्रदर्शन करती थी।

लेकिन अन्य कोई इतनी सरलता और इतनी मानवीय भावना के साथ छोटे बच्चों से बतिया भी नहीं सकता था,—जीवन के बारे में, उनकी मां के बारे में, उनके नाविक, लाल सेना का कमाण्डर या इंजीनियर बनने के बारे में। अन्य किसी में उन चोटों की थाह लेने की इतनी सामर्थ्य नहीं थी जो कि अंधे अभिशप्त भाग्य ने इन छोटे-छोटे बच्चों को पहुंचाई थीं। इतना ही नहीं, वह उनके पेट भरने के उपाय जानती थी। सप्लाई विभाग के तमाम नियम क़ायदों को आड़े-तिर्छे वह ताक़ पर रखती और मृदु-शब्दों से कालीना इवानोविच की बड़ी अफ़सरशाही को निरस्त्र कर देती।

बड़े लड़के येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तथा कोलोनी के सब से छोटे सदस्यों के बीच इस सम्पर्क को देखते, वे इसका आदर करते और अत्यन्त प्रसन्नता तथा उदारता के साथ, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की हर छोटी-से-छोटी प्रार्थना को पूरा करने के लिए तैयार हो जाते, — देखते कि अमुक नन्हा क़ायदे से ठीक नहाता-धोता है, अपने समूचे बदन पर साबून लगा-

ता है, कि अमुक सिगरेट नहीं पीता, कि कपड़े न फटने पाएं, कि अमुक पेत्या से न लड़े, आदि-आदि।

इस बात का श्रेय येकातेरिना ग्रिगोरियेवना को ही था कि कोलोनी में बड़े लड़के छोटों को चाहते थे, और छोटे भाइयों की भांति उनसे व्यवहार करते थे—स्नेह से, कड़ाई से और हर बात का ख़याल रखते हुए।

११. बीज-ड्रिल की प्रतिष्ठा

यह बात अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही थी कि कृषि-कर्म और हमारी कोलोनी में पटरी बैठना टेढ़ी खीर है। हमारी नज़र एक नयी जगह की ओर—कोलोमाक नदी के तटों की ओर अधिकाधिक उन्मुख होती जा रही थी, जहां वसन्त का स्पर्श पाकर बग़ीचे बौरों फूलों से एकदम लदे थे और ज़मीन ख़ुद अपनी समृद्धता से चमक उठी थी।

लेकिन नयी कोलोनी में मरम्मत का काम घोंघे की चाल से प्रगति कर रहा था। ले-देकर जिन बढ़इयों को काम पर लगाना हमारे बस की बात थी, वे केवल लकड़ी के केबिन बनाना जानते थे, लेकिन अधिक पेचीदा डिज़ाइन की इमारत बनाने का सवाल उठने पर सिर खुजलाने लगते थे। कांच के शीशों का किन्हीं दामों पर भी मिलना मुहाल था और पैसों का हमारे पास वैसे ही अभाव था। फिर भी, गर्मियों का अन्त होने से पहले जैसे-तैसे दो या तीन बड़ी इमारतों को हमने खड़ा कर लिया, लेकिन खिड़कियों के पल्लों के अभाव में हम उनमें दख़ल नहीं जमा सके। इनके साथ ही कुछेक छोटे कोठे और कोठरियां हमने उठायी थीं, लेकिन उनके लिए बढ़-इयों, राजगीरों, भट्टी बनानेवालों और चौकीदारों की मदद की ज़रूरत थी। फिर वर्कशापों के अभाव तथा धरती पर करने के लिए अभी कोई वास्तविक काम न होने के कारण, लड़कों को उनमें स्थानान्तरित करने में कोई तुक भी नहीं थी।

हमारे लड़के नित्य नयी कोलोनी का चक्कर लगाते थे, बल्कि कहिये कि काम का काफ़ी बड़ा हिस्सा वही सरंजाम देते थे। गर्मियों में क़रीब दस लड़कों ने अपने लिए आरज़ी घरौंदे खड़े किए और बग़ीचों में काम करने लगे। उन्होंने गाड़ी-भर सेब और नाशपातियां मूल कोलोनी में भेजे।

उनके प्रयासों के फलस्वरूप त्रेपके बग़ीचों की शक्ल काफ़ी निखर आई, हालांकि उनमें सुधार की अभी भी गुंजाइश थी।

गोंचारोव्का के निवासी त्रेपके-खण्डहरों में नये स्वामियों के आगमन से अत्यधिक घबड़ा उठे, ख़ास तौर से उस समय जब उन्होंने देखा कि ये नये स्वामी एकदम तलछटिया थे, चिथड़ों में लिपटे थे और ज़रा भी रोब-दार नहीं थे। इससे मुझे बड़ी निराशा हुई कि साठ देस्यतीना का हमारा आर्डर रद्दी का एक टुकड़ामात्र सिद्ध हुआ। कारण, त्रेपके जागीर में जित-नी भी खेती-योग्य ज़मीन थी—मय उसके जो हमें दी गई थी—उसे १९१७ से ही स्थानीय किसानों ने अपनी जोताई में ले रखा था।

नगर में हमारी इस परेशानी पर केवल मुसकराने के सिवा उन्होंने और कुछ नहीं किया। बोले:

"अगर आपके पास आर्डर है, तो उसका मतलब यह है कि ज़मीन पर आपका अधिकार है। बस, खेतों में जाकर हल चलाना शुरू कर दें।"

लेकिन ग्राम-सोवियत के अध्यक्ष सेर्गेई पेत्रोविच ग्रेचानी का मत इससे भिन्न था।

"आप जानें कि बात क्या है। एकदम क़ानून के अनुसार हाड़तोड़ मेह-नत करनेवाले किसान के हाथ में जब ज़मीन आती है तो," उसने हमें समझाया, "वह उसे जोतना शुरू कर देता है। और वे लोग जो दुनि-या-भर के ऐसे आर्डर तथा परवाने काले करते हैं, मेहनतकशों की पीठ में केवल छुरी भोंकते हैं। और मेरी सलाह है कि आप अपने इस आर्डर को लेकर बीच में टांग न अड़ाएं।"

नयी कोलोनी की पगडंडियां केवल कोलोमाक नदी के तट तक ही जा-ती थीं। इसलिए हमने अपनी नौका का बन्दोबस्त किया, और हमारे लड़कों ने बारी-बारी से मांझी बनने की ज़िम्मेदारी ली। लेकिन बोझ ले जाने या घोड़े अथवा गाड़ी पर वहां पहुंचने के लिए हमें घूम-घुमाकर जा-ना और गोंचारोव्का में जो पुल था उसका उपयोग करना पड़ता था। इस पुल पर अच्छी-ख़ासी दुश्मनों से हमारी मुठभेड़ होती थी। गांव के लड़के हमारी ग़रीबाना साज-सज्जा को देखकर हमारी खिल्ली उड़ाते थे।

"ऐ चिथड़ों के सांई! हमारे पुल पर अपने जूँएँ न झाड़ना। अच्छा हो कि यहां पांव न रखो! त्रेपके में अगर नाक में दम न कर दिया तो हमारा नाम नहीं!"

गोंचारोव्का में हमने अपना पड़ाव डाला, लेकिन शान्त पड़ोसियों के रूप में नहीं, बल्कि विजेताओं के रूप में। और अगर अपनी इस सैनिक स्थिति में हम दृढ़ न रहते या मुक़ाबले में कुछ कमजोर पड़ते, तो हम निश्चय ही इस जागीर से—जमीन आदि सभी कुछ से—हाथ धो बैठते। किसान जानते थे कि झगड़े का निबटारा दफ़्तरों में नहीं, बल्कि ठीक स्थल पर—खेतों में होगा। त्रेपके की ज़मीन को वे तीन साल से जोतते आ रहे थे, एक तरह का निषेधाधिकार उन्होंने क़ायम कर लिया था और इसी के बल पर उनका दावा टिका था। उनके लिए यह ज़रूरी था कि चाहे जो भी हो, हर क़ीमत पर अपने इस निषेधाधिकार की अवधि का विस्तार करें। कारण, उनकी समूची आशाएं इन्हीं कार्यनीतियों पर टिकी थीं।

बहुत कुछ इसी प्रकार हमारी एकमात्र आशा यह थी कि जैसे भी हो, जल्दी से जल्दी खेती का कार्य शुरू कर दिया जाए।

गर्मियों में हमारी सीमाओं के निशान डालने के लिए पटवारियों का आगमन हुआ। लेकिन वे खेतों में अपने औज़ार ले जाने में डरते थे। उन्होंने नक़्शे को सामने फैलाकर उन खाइयों, मेड़ों और झाड़ियों को हमें दिखाया जिनके अनुसार हमें अपनी ज़मीन की माप करनी थी। पटवारी के रुक़्क़े से लैस होकर तथा बड़े लड़कों में से कुछ को अपने साथ लेकर, मैंने गोंचारोव्का में पांव रखा।

हमारा 'पुराना मित्र' लूका सेम्योनोविच वेरख़ोला अब ग्राम-सोवियत का अध्यक्ष था। उदारता के साथ उसने हमारा स्वागत किया, बैठने के लिए हमें जगह दी, लेकिन पटवारी के रुक़्क़े की ओर उसने नज़र तक उठाकर नहीं देखा।

"प्यारे साथियो," उसने कहा, "आपके लिए कुछ करना मेरे बस की बात नहीं। हमारे किसान एक मुद्दत से इस धरती को जोत रहे हैं। मैं उन्हें नाराज़ नहीं कर सकता। सो ज़मीन के लिए कहीं और जाकर खटखटाइये।"

जब किसान बाहर निकलकर हमारे खेतों में आये और उन्होंने उन्हें जोतना शुरू किया तो मैंने इस आशय का एक नोटिस वहां लटका दिया कि कोलोनी अपने खेतों की जोताई के लिए कुछ नहीं देगी।

ख़ुद मुझे इन उपायों में विश्वास नहीं था। कारण, यह सोच-सोचकर

मेरा हृदय बैठा जा रहा था कि जमीन किसानों से ली जा रही है, उन किसानों से जो कड़ी मेहनत करते हैं और जिनके लिए ज़मीन उतनी ही जरूरी है जितनी कि सांस लेने के लिए हवा।

और फिर कुछ सांझों के बाद किसी अजनबी को लिए हुए ज़दोरोव शयनागार में मेरे पास आया। वह गांव का एक युवक था। ज़दोरोव अत्यधिक विह्वल मालूम होता था।

"इसकी सुनो, ज़रा सुनो तो कि यह क्या कहता है!" उसने चीख़कर कहा।

करावानोव को भी जैसे उसकी विह्वलता की छूत लग गई और उक्राइनी लोक नृत्य होपक की थाप देता हुआ शयनागार के ओर-छोर में चिल्ला उठा:

'हो, हो! अब वेरख़ोला को दाल-चावल का सब भाव मालूम हो जाएगा!"

लड़के हमारे इर्द-गिर्द जमा हो गए।

आगन्तुक गोंचारोव्का युवक संगठन कोमसोमोल का सदस्य निकला।

"क्या गोंचारोव्का में काफ़ी कोमसोमोल हैं?" मैंने उससे पूछा।

"केवल हम तीन हैं।"

"केवल तीन?"

"सच जानो, हमें काफ़ी मुसीबत का सामना करना पड़ा है," वह कहता गया। "गांव कुलकों के अंगूठे के नीचे दबा है। मुझे हमारे साथियों ने भेजा है,—यह बताने के लिए कि जितनी भी जल्दी हो सके, चले आओ। तब हम उन्हें छठी का दूध याद करा देंगे। आपके लड़के ख़ूब पक्के हैं। काश, हमारे पास भी दो-चार ऐसे होते!"

"लेकिन यह भी नहीं जानते कि इस ज़मीन के मामले में क्या किया जाए?"

"ठीक इसी लिए तो मैं आया हूं। ज़मीन को बलपूर्वक अपने कब्ज़े में कर लो। लाल बालोंवाले उस लूका शैतान को एकदम ताक़ पर रखो। क्या आप जानते हैं कि आपके नाम से मिली ज़मीन को कौन जोत रहा है?"

"कौन जोत रहा है?"

"हां-हां, बताओ स्पिरिदोन, हमें बताओ!"

स्पिरिदोन ने अपनी उंगलियों पर नामों को जांचना शुरू किया।

"ग्रेचानी आन्द्रेई कारपोविच..."

"दादा आन्द्रेई! लेकिन उसके पास तो इस ओर ज़मीन है!"

"हुआ करे, इससे क्या... पेत्रो ग्रेचानी, ओनोपरी ग्रेचानी, स्तोमुख़ा–वह जो गिरजा की बग़ल में रहता है... अरे, हां, सेरेगा... स्तोमुख़ा यावतुख़, और ख़ुद लूका सेम्योनोविच। बस, इतने ही–छहों के छ:!"

"क्या सचमुच! यह सब कैसे हुआ? और तुम्हारे कौमबेड का क्या हाल है?"

"हमारा कौमबेड तो एक मामूली चीज़ है। उसे घरेलू दारू से ख़रीदा जा सकता है। सारा मामला इस प्रकार हुआ। वह ज़मीन जागीर के साथ रहने दी गई, जाने किस काम में उसका इस्तेमाल किया जाना था। और ग्राम-सोवियत उनके हाथों में है ही। सो उन्होंने बस ज़मीन को आपस में ही बांट लिया, चलो, छुट्टी हुई।"

"अब मामला गरमाना शुरू होगा।" कराबानोव ने चिल्लाकर कहा, "ज़रा संभलकर रहना, लूका!"

एक दिन सितम्बर के प्रारम्भ में मैं नगर से लौट रहा था। दोपहर के क़रीब दो बजे का समय होगा। हमारी ऊंची गाड़ी धीमी गति से ढुरक रही थी। अन्तोन लाल घोड़े के करतबों का बखान कर रहा था। उसकी आवाज़ जैसे सपने में मेरे कानों के पास भनभना रही थी। मैं उसे सुनने का प्रयत्न कर रहा था साथ ही कोलोनी से सम्बन्धित कतिपय समस्याओं के बारे में भी जैसे-तैसे सोचता जाता था।

अचानक ब्रातचेन्को एकबारगी चुप हो गया। सड़क पर कुछ दूर आगे की ओर एक नुक़्ते पर नज़र जमाकर देखते हुए वह अपनी गद्दी पर उचका और घोड़े पर एक चाबुक कसा। नतीजा यह कि खड़खड़ की भयानक आवाज़ करती गाड़ी पत्थर के चौकों पर से उड़ चली। अन्तोन घोड़े पर चाबुक कसे जा रहा था–जो कि वह कभी नहीं करता था–और उसने चिल्लाकर मुझसे कुछ कहा। आख़िर उसके ये शब्द मेरी पकड़ में आए।

"हमारे लड़के... बीज-ड्रिल लिए हैं!"

कोलोनी की ओर जानेवाले मोड़ पर हम बीज-ड्रिल से टकरा ही गए होते, जो विचित्र प्रकार की धातुई आवाज़ें करता पूरी तेज़ी से दौड़ रहा

था। मुश्की घोड़ों का एक जोड़ा, अपने पीछे अपरिचित रथ की खड़खड़ से भयभीत, अंधाधुंध हवा को चीरता, आगे भागा जा रहा था। बीज-ड्रिल बोझिल-सा राजमार्ग पर से लुढ़कता, रेत के ऊपर से घरघराता और फिर गरज के साथ सड़क पर से होता कोलोनी की ओर बढ़ रहा था। अन्तोन गाड़ी पर से उछलकर नीचे सड़क पर आ गया और रास मेरे हाथों में फेंकते हुए बीज-ड्रिल के पीछे लपका। कराबानोव और प्रीख़ोद्को बीज-ड्रिल की तनी हुई रासों से लटके, जाने किस जादू के बल, अपना सन्तुलन क़ायम किए थे। अत्यन्त कठिनाई के साथ जैसे-तैसे अन्तोन ने इस विचित्र वाहक को रोका। थकान और विह्वलता से बेदम कराबानोव ने हमें सारा क़िस्सा सुनाया।

"हम अहाते में ईंटों का ढेर चुन रहे थे। अचानक एक बीज-ड्रिल पर हमारी नज़र पड़ी। क़रीब पांच आदमी उसके साथ थे और, बड़ी शान के साथ, उसे खेतों में ले जा रहे थे। हम उनके पास पहुंचे। 'चले जाओ यहां से,' हमने कहा। हम चार थे—दो हम, और चोबोत तथा... भला, और कौन था?"

"सोरोका," प्रीख़ोद्को ने कहा।

"ठीक, सोरोका! 'भाग जाओ!' मैंने कहा। 'जो हो, तुम यहां बोवाई नहीं कर सकते!' तब उनमें से एक ने, जिसका रंग काला था और जिप्सी-सा लगता था, आप जानते ही हैं कि क्या कहना चाहता हूं मैं, हां तो उसने अपने चाबुक से चोबोत पर प्रहार किया। बदले में चोबोत ने उसका जबड़ा ढीला कर दिया। अचानक हमने देखा कि बुरून लाठी लिए झपट रहा है। मैंने घोड़ों में से एक की रास थामी, और अध्यक्ष लपककर आगे आया और उसने मेरी क़मीज़ का अग्रभाग दबोच लिया..."

"अध्यक्ष कौन?"

"कौन क्या? अरे, वही हमारावाला अध्यक्ष, वही लाल बालोंवाला लूका सेम्योनोविच! हां तो प्रीख़ोद्को ने पीछे से उसके एक लात जमाई, और वह नाक के बल धरती पर लुढ़क गया। 'बीज-ड्रिल की रास थामो'! मैंने प्रीख़ोद्को से चिल्लाकर कहा, और वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। जब हम गोंचारोव्का में से गुज़रे तो गांव के लड़कों ने सड़क छेंक ली। अब क्या किया जाए? मैंने घोड़ों के चाबुक जमाया, और वे सरपट

पुल पर दौड़ चले। अब क्या था, हम राजमार्ग पर आ गए... हमारे तीन साथी अभी भी वहां हैं। लगता है, किसानों ने उनकी ख़ूब मरम्मत की होगी।"

करावानोव ऊपर से नीचे तक विजय की भावना से थरथरा रहा था। प्रीख़ोद्को बिना किसी उद्वेग के अपने लिए सिगरेट लपेटते हुए शान्त भाव से मुसकरा रहा था। मैं अपने मन में दस अत्यन्त रोचक इतिहास के अगले परिच्छेदों का चित्र मूर्त्त कर रहा था: कमीशन, पूछ-ताछ, जांच-पड़ताल और अन्य सभी कुछ!

"शैतान उठा ले जाए तुम सब को! तुमने फिर एक जंजाल खड़ा कर दिया!"

करावानोव मेरी इस प्रतिक्रिया से एकदम सकपका गया।

"शुरूआत उन्होंने की! .."

"अच्छी बात है। अब कोलोनी में चलो। वहीं इस पर विचार करेंगे।"

कोलोनी, में बुरून हमें मिला। उसके माथे में अच्छी-खासी चोट लगी हुई थी, हंसते हुए लड़कों का एक झुण्ड उसे घेरे था। चोबोत और सोरोका नल पर सफ़ाई कर रहे थे।

करावानोव ने बुरून को उसके कंधों से पकड़ा।

"हां तो तुम उनके चंगुल से निकल आए! बढ़िया लड़के हो तुम!"

"पहले तो वे बीज-ड्रिल के पीछे झपटें," बुरून ने कहा। "फिर, इसमें कोई लाभ न देख, उन्होंने हमारी ओर रुख़ किया। और हम ऐसे भागे कि बस!"

"और वे कहां हैं?"

"हम नाव में इस पार आ गए। और वे तट पर खड़े रह गए, गालियां देते हुए। हम उन्हें वहीं छोड़ आये!"

"क्या हमारे लड़कों में से भी अभी कोई वहां है?"

"केवल बच्चे—तोस्का और दो अन्य। उन्हें कोई चोट नहीं पहुंचाएगा।"

घंटा-भर बाद दो गांववालों को साथ लिए लूका सेम्योनोविच कोलोनी में आया। हमारे लड़कों ने शालीनता से उसका अभिनन्दन किया:

"क्या अपना बीज-ड्रिल लेने आये हो?"

मेरे कमरे में दर्शकों की इतनी भीड़ थी कि हिलना-डुलना तक मुश्किल था। स्थिति परेशानी से भारी थी।

लूका सेम्योनोविच ने मेज़ पर बैठते हुए पहले बोलना शुरू किया।

"उन लड़कों को सामने बुलाओ जिन्होंने मुझे और मेरे संगी-साथियों को पीटा!" उसने मांग की।

"इधर देखिये, लूका सेम्योनोविच!" मैंने उससे कहा, "अगर आप पर मार पड़ी है तो जाइये और जी चाहे जहां शिकायत कीजिये। इस समय मैं किसी को नहीं बुलाऊंगा। अब बताइये कि आप और क्या चाहते हैं, और किस काम से आप कोलोनी में आए हैं?"

"सो आप उन्हें बुलाने से इनकार करते हैं?"

"हां, इनकार करता हूं।"

"अच्छा, आप इनकार करते हैं, करते हैं न? तब तो हमें किसी दूसरी जगह निबटना पड़ेगा।"

"मंज़ूर है।"

"और बीज-ड्रिल कौन वापस करेगा?"

"वापस करेगा, लेकिन किसको?"

"मालिक यहां मौजूद है!" काले रंग के घुंघराले बालोंवाले एक उदास-से आदमी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा। सम्भवत: यही वह आदमी था जिसे कराबानोव ने जिप्सी समझा था।

"क्या यह आपका बीज-ड्रिल है?" मैंने उससे पूछा।

"हां, मेरा ही है।"

"अच्छा तो सुनिये, बीज-ड्रिल को मैं ज़िला मिलीशिया के पास भेज दूंगा, दूसरों की मिल्कियत पर ग़ैर-क़ानूनी बोवाई करते पकड़ा गया। और आप... ज़रा अपना नाम तो मुझे बताने की कृपा कीजिये।"

"मेरा नाम? ओनोपरी ग्रेचानी! और यह दूसरों की मिल्कियत कैसी, क्या मतलब है आपका? यह मेरी ज़मीन है। सदा से मेरी रही है..."

"यह सब भी देखा जाएगा, लेकिन अभी नहीं। हां तो अब हम ग़ैर-क़ानूनी प्रवेश और खेतों में काम करते समय कोलोनी के सदस्यों को पीटने के बारे में बयान लेंगे।"

बुरून आगे बढ़ा।

"वह है जिसने मुझे मार ही डाला था," उसने कहा।

"तुम्हें तो कोई हाथ से छूना भी नहीं चाहे गा! ऊंह, तुम्हें मार डालता? दिमाग़ ख़राब हो गया है क्या?"

काफ़ी देर तक इसी अन्दाज़ में बातें चलती रहीं। न मुझे नाश्ते का ध्यान रहा, न ब्यालू का, सभी कुछ भूल गया। सोने की घंटी भी बज गई, और हम अभी तक गांववालों के साथ बैठे मामले पर बहस कर रहे थे—कभी कोमलता के साथ, कभी धमकियों तथा आवेग-उद्वेग के साथ, और कभी प्रकट व्यंग्य के साथ।

मैं अपनी जगह से नहीं डिगा, दृढ़ता के साथ बीज-ड्रिल को समर्पित करने से इनकार करता रहा तथा बयानों को लेने पर ज़ोर देता रहा। सौभाग्य से गांववालों के बदन पर मार-पीट के कोई चिन्ह नहीं थे, जबकि हमारे लड़के नोच-खरोंचों के निशान दिखा सकते थे। आख़िर ज़दोरोव ने और आगे बहस करने की गुंजाइश नहीं छोड़ी। मेज़ पर हाथ पटकते हुए उसने निम्न छोटा-सा भाषण दिया:

"बस, इतना ही काफ़ी है, साथियो! जमीन हमारी है, और ख़ैर इसी में है कि तुम बीच में दख़ल न दो। हम पचास हैं, सब के सब डट कर जूझनेवाले!"

लूका सेम्योनोविच ने देर तक कुछ सोचा और अन्त में अपनी दाढ़ी को सहलाते तथा कांखते हुए बोला:

"अच्छी बात है, जहन्नुम में जाइये सब! लेकिन कम-से-कम जोताई का पैसा दे ही सकते हैं!"

"नहीं," मैंने रुखाई से कहा। "मैंने तुम्हें पहले ही काफ़ी चेता दिया था।"

कुछ देर फिर विराम रहा।

"अच्छा तो हमें बीज-ड्रिल वापस दे दो।"

"यह हो सकता है, अगर आप पटवारी के रुक्क़े पर दस्तख़त कर दें।"

"अच्छी बात है। उसे ले आइये!"

अन्ततः यह कि उस शरद्, नयी कोलोनी में हमने राई की बोवाई कर ही डाली। हम सब खेती के काम में अकुशल थे। कालीना इवानोविच खेती के बारे में बहुत कम जानता था, और बाक़ी हम सब तो उससे भी ज़्यादा कोरे थे। लेकिन हल और बीज-ड्रिल से काम करने के लिए

हर कोई बेताब था। हर कोई, यानी केवल ब्रातचेन्को को छोड़कर, जो अपने प्रिय घोड़ों को लेकर ईर्ष्या के मारे जला जा रहा था, ज़मीन, राई, और हमारे उत्साह को कोस रहा था!

"गेहूं से इनका दोज़ख़ नहीं पटता, इन्हें अब राई भी चाहिए!" वह भनभनाता।

अक्तूबर तक आठ देस्यतीना भूमि हरे अंकुरों से सजीव हो उठी। कालीना इवानोविच रबड़ के छोरवाली अपनी छड़ी से पूर्व की ओर किसी धुंधले नुक़्ते की ओर गर्व से संकेत करता।

"हमें यहां मसूर बोनी चाहिए," वह कहता। "शानदार चीज होती है वह मसूर!"

'लाल' और 'डाकू' (घोड़ों के नाम) वसन्तकालीन बोवाई के लिए जमीन को अपने पसीने से सींचते और ज़दोरोव सांझ को थका और धूल-धूसरित घर लौटता!

"जहन्नुम में जाए यह सब,—हाड़ तोड़ डाले इस दहक़ानी काम ने! मेरे लिए तो अपना लोहारघर ही भला!"

हमारा काम आधा ही पूरा हुआ था कि बर्फ़ पड़नी शुरू हो गई। लेकिन हमने सोचा, हमारे जैसे नवसिखुओं के लिए इतना हो जाना भी कुछ कम नहीं हैं!

१२. ब्रातचेन्को और सप्लाई का ज़िला-कमिश्नर

हमारा कृषि-कार्य चमत्कारों और कष्टों की तरह से गुज़र रहा था। यह चमत्कार ही था कि जब कालीना इवानोविच ने किसी एक या दूसरे विभाग से उनकी सम्पत्ति के वितरण के वक़्त, एक पुरानी गाय झटकने में सफलता प्राप्त की, एक ऐसी गाय जिसने ख़ुद उसी के शब्दों में, 'सूखे ही जन्म लिया था'। यह एक चमत्कार ही था कि हमने निख़ालिस कृषि सम्बन्धी एक विभाग से—जिससे हमारा क़तई वास्ता नहीं था—उतनी ही पुरानी एक काली घोड़ी हासिल की—मटके ऐसे पेटवाली, आलसी, दौरों की मरीज़। यह एक चमत्कार ही था कि खेत-गाड़ियां, अरबे (एक तरह की बैल गाड़ी) और यहाँ तक कि एक फ़िटन, भी हमारे घोड़ों की जोतवाली, उस समय सायबान की शोभा बढ़ाने लगी। यह फ़िटन

दो। हमें बहुत ही प्यारी और अत्यन्त आरामदेह मालूम होती थी। लेकिन ऐसा कोई चमत्कार होता अभी नहीं दिखाई देता था जिसकी बदौलत इस फिटन की जोड़ के घोड़े हमें मिल जाते!

गुद ने मोचियों के वर्कशाप में जाकर काम करने के लिए अस्तबलों को छोड़ दिया था। अन्तोन ब्रातचेन्को ने अब मुख्य साईस का पद संभाला। यों वह चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति था, लेकिन उसका अहम् कुछ इतना नाज़ुक था कि लम्बी टांगोंवाली सींकिया 'लाल' और मज़बूत काठी तथा मरोड़दार टांगोंवाली 'डाकू'–काली घोड़ी का अन्तोन ने यही (और बिलकुल असंगत) नाम रख छोड़ा था–के पीछे ढचरा गाड़ी के बॉक्स पर बैठे-बैठे अपमान के गहरे क्षणों में से उसे गुज़रना पड़ता था। 'डाकू' हर क़दम पर लड़खड़ाती थी, कभी-कभी सचमुच गिर भी जाती थी और तब नगर के मध्य और अन्य गाड़ीवानों तथा बाज़ार के छोकरों की फ़ब्तियों के बीच अपनी इस शानदार उपलब्धि को हमें सीधा करना पड़ता था। ये फ़ब्तियां अन्तोन को बहुधा उत्तेजित कर देती और इन अवांछनीय दर्शकों के साथ उसकी भयानक झड़प शुरू हो जाती। नतीजा यह कि इससे गोर्की कोलोनी के अस्तबलों के नाम में और भी अधिक बट्टा लगता।

अन्तोन ब्रातचेन्को लड़ाई-झगड़ों का बेहद शौक़ीन था। कैसा भी विरोधी क्यों न हो, झगड़े में बराबर डटा रहता था। गालियां देने तथा कोसने की बौछार लगाने की कला में उसे कोई मात नहीं कर सकता था। इसके साथ-साथ मुंह मटकाने और नक़लें उतारने में भी वह काफ़ी गुणी था।

अन्तोन ने परित्यक्त अनाथों जैसा जीवन कभी नहीं बिताया था। उसका बाप नगर की एक बेकरी में काम करता था। उसकी मां भी ज़िन्दा थी, और अपने योग्य माता-पिता का वह इकलौता बेटा था। लेकिन जीवन के एकदम शुरू के सालों से ही अन्तोन के हृदय में घर के चूल्हे-चक्की के प्रति घिन घर कर गई थी। केवल सोने के लिए वह घर में लौटकर आता था और सड़क के आवारा लड़कों तथा नगर के चोर-उचक्कों के बीच अपनी जान-पहचान का दायरा उसने काफ़ी बड़ा बना लिया था। दुस्साहस से भरी तथा रोचक मुहिमों में अनेक बार मशहूर होने तथा जेल की अनेक लघु-परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के बाद अन्त में उसने कोलोनी की शरण ली। वह केवल पन्द्रह वर्ष का था–देखने में सुन्दर, घुंघराले बाल,

नीली आंखें, छरहरा बदन। भीड़ का, संग-साथ का वह असाधारण रूप से प्रेमी था, और क्षण-भर के लिए अपने आपको अकेला नहीं रख सकता था। चाहे जैसे भी हो, उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया था, और साहस-पूर्ण कहानियों की पूरी पुस्तकें उसे ज़बानी याद थीं। लेकिन अध्ययन करना उसके बस की बात नहीं थी। केवल बलपूर्वक ही उसे कक्षा में बैठाए रखा जा सकता था। शुरू-शुरू में वह अक्सर कोलोनी से चम्पत हो जाता, लेकिन हमेशा एक या दो दिन बाद फिर लौट आता था,—नाममात्र को भी यह अनुभव किए बिना कि उसने कोई अपराध किया है। पलायन की अपनी इन भावनाओं पर वह क़ाबू पाने का प्रयत्न करता। "जितना भी हो, मेरे साथ सख़्ती से काम लें," वह कहता, "नहीं तो मैं निश्चय ही आवारा हो जाऊंगा, अन्तोन सेम्योनोविच!"

वह कोलोनी में कभी कोई चीज़ नहीं चुराता था और सत्य का पक्ष लेना पसन्द करता था, लेकिन अनुशासन की भाषा समझना उसके बूते की बात नहीं थी। केवल उसी हद तक वह उसे स्वीकार करता था जिस हद तक क्षण-विशेष की परिस्थितियों से उत्पन्न होनेवाले सिद्धान्त से वह अपने आपको सहमत पाता था। कोलोनी के नियमों का पालन करने के प्रति वह किसी दायित्व को नहीं मानता था, और न ही इस बात को वह छिपाकर रखता था। यह सच है कि मुझसे वह कुछ भय खाता था, लेकिन मेरी झिड़कियों को वह कभी अन्त तक नहीं सुनता था, आवेगपूर्ण सम्भाषण के साथ बीच में ही मुझे रोक देता था और अपने इस सम्भाषण में निश्चय ही अपने अनगिनत दुश्मनों पर दुनिया-भर के अपराधों की—जैसे मेरी ख़ुशामद करने की, लांछन या अनुशासनहीनता की—बौछार करता। इसके बाद, ग़ैर-मौजूद दुश्मनों की ओर अपना चाबुक हिलाता और विक्षोभ से भरा, फटाक-से दरवाज़ा बंद कर कमरे से बाहर चला जाता। शिक्षकों के साथ वह असह्य अक्खड़पन बरतता था, लेकिन उसके इस अक्खड़पन में भी एक आकर्षण था, और हमारे शिक्षक इसका बुरा नहीं मानते थे। उसके तौर-तरीक़ों में निर्लज्जता या दुश्मनी जैसी कोई चीज़ नहीं थी, कारण—मानवीय अनुराग का उद्वेगपूर्ण स्वर हमेशा ऊपर तिर आता था। उसके झगड़ों का आधार कभी स्वार्थपूर्ण नहीं होता था।

घोड़ों और अस्तबल के काम के प्रति अन्तोन के हृदय में गहरा अनुराग था, और कोलोनी में उसका व्यवहार उसके इस अनुराग से ही परि-

चालित होता था। इस अनुराग के स्रोत का पता लगाना कठिन है। कोलोनी के औसत निवासी के मुक़ाबले वह कहीं अधिक समझदार था और ख़ूब अच्छी शहरी रूसी भाषा का वह प्रयोग करता था। यों बीच-बीच में केवल रोब जमाने के लिए वह उक्राइनी अन्दाज़ का भी पुट मिला लेता था। वह अपने आपको साफ़-सुथरा रखने का प्रयत्न करता था, काफ़ी पढ़ता था और बड़े चाव से पुस्तकों के बारे में बातें करता था। इससे अस्तबल में उसके अपना समूचा समय बिताने, लीद साफ़ करने, निरन्तर घोड़ों को जोत में कसने और खोलने, लगामों और ब्रीचिंगों को चमकाने, चाबुक को गूंथने में कोई रुकावट नहीं पड़ती थी। धूप हो चाहे बरसात वह कभी थका हुआ नहीं मालूम होता था और नगर या नयी कोलोनी तक गाड़ी ले जाने के लिए बराबर तैयार रहता था; बावजूद इस तथ्य के कि वह निरन्तर अधभूखी स्थिति में रहता था क्योंकि कलेवा या ब्यालू के लिए उसे देर हो जाती थी। अगर किसी को उसका हिस्सा रखना याद नहीं भी रहा तो वह अपने मुंह से कभी इसका ज़िक्र नहीं करता था।

साईस के रूप में अपनी गतिविधि के दौरान कालीना इवानोविच के साथ, लोहारों के साथ, भण्डारियों के साथ और सब से बढ़कर हर उसके साथ जो घोड़ों को बाहर ले जाना चाहता, उसका अन्तहीन कलह चलता रहता। केवल सुदीर्घ चखचख और बीच-बीच में घोड़ों के प्रति बेरहमी के अभियोगों और उन अवसरों की याद दिलाने के बाद जबकि 'लाल' और 'डाकू' अपनी गरदन पर ज़ख़्म लिए वापस लौटे थे, तथा चारे अथवा नाल जड़ने की मांगें पेश करने के बाद ही कहीं जाकर वह घोड़ों को जोतने तथा उनके साथ कहीं जाने के आदेश का पालन करता। कभी-कभी केवल इस कारण कि न तो अन्तोन का कहीं पता चलता और न घोड़ों का, कोलोनी से बाहर जाना असम्भव हो जाता। वह कहां ग़ायब हो गया, इसका क़तई कोई चिन्ह नजर नहीं आता। काफ़ी कष्टप्रद खोज के बाद, जिसमें आधी कोलोनी हिस्सा लेती, वह या तो त्रेपके के मैदानों में नज़र आता या फिर पड़ोस की किसी चरागाह में!

अन्तोन हमेशा दो या तीन लड़कों से घिरा रहता था, जो उसके अनुराग में उतना ही पगे थे जितना कि वह घोड़ों के अनुराग में पगा था। ये लड़के घोड़ों को ख़ूब ढंग से रखते, और अस्तबल बेदाग़ सफ़ाई से लक़-दक़ रहते – फ़र्श झाड़े-बुहारे हुए, जोत का सामान ठीक अपनी जगह पर

रखा हुआ, गाड़ियां सीधी पांत में लगी हुई, एक मृत मैना हरेक घोड़े के सिर के ऊपर लटकी हुई,* और खुद घोड़े भी अपने आपमें खूब संवरे हुए, उनकी अयालें गुंथी हुई और उनकी पूँछें सफ़ाई के साथ बंधी हुई।

जून में एक दिन सांझ को विलंब से कुछ लड़के शयनागारों से मेरे पास भागे हुए आए। वे चिल्ला रहे थे:

"कोजिर बीमार है—वह मर रहा है!"

"मर रहा है?"

"हां मर रहा है। वह तवे-सा जल रहा है और उसक सांस क़रीब-क़रीब रुकी-सी है।"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने भी उनके शब्दों की पुष्टि की। कहा कि कोज़िर को दिल का दौरा हुआ है, और यह कि उसके लिए फ़ौरन डाक्टर की खोज करनी चाहिए। मैंने अन्तोन को बुलाया। वह आया, प्रत्यक्षत: पहले से ही पक्का इरादा किए कि चाहे जो भी आदेश मैं दूँ, उसका वह विरोध करेगा।

"अन्तोन, घोड़ों को फ़ौरन तैयार करो। तुम्हें तुरन्त नगर जाना है।"

अन्तोन ने पूरी तरह मुझे अपनी बात कहने भी नहीं दी।

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा, और न घोड़ों को जाने दूंगा। दिन-भर उनकी जान मारी जाती रही है, घड़ी-भर ठण्डा होने का भी उन्हें मौक़ा नहीं मिला... मैं अब फिर उन्हें जोतने के लिए तैयार नहीं हूं!।"

"क्या तुम इतना भी नहीं समझते, डाक्टर को लाना है।"

"बीमार हो तो हुआ करे। मुझे इसकी तिनका-भर भी परवाह नहीं! 'लाल' भी बीमार है, और उसके लिए कोई डाक्टर को नहीं बुलाता।"

मैं गुस्से से क़रीब-क़रीब बेक़ाबू हो चला।

"इसी क्षण अस्तबल ओप्रिश्को के हवाले करो। तुम्हारे साथ काम करना असम्भव है!"

"दे दें उसे। मुझे परवाह नहीं। हमें भी देखना है कि ओप्रिश्को कैसे उसे संभालता है। लोग कुछ भी कहें, आप झट विश्वास कर लेते हैं, 'वह बीमार है, वह मर रहा है,' और घोड़ों का आपको ज़रा भी

---

* नज़र लगने से बचाने का एक चिन्ह।

ख़याल नहीं, भले ही वे मर जाएं... अच्छी बात है, मरना हो मरें, लेकिन मैं आपको उन्हें हाथ नहीं लगाने दूंगा!"

"सुना तुमने? तुम अब मुखिया साईस नहीं हो! अस्तबल ओप्रिश्को के हवाले करो!"

"अच्छी बात है, कर दूंगा! जो भी चाहे, ले लें! कोलोनी में मैं अब नहीं टिक सकता!"

"जो मन में आए करो। तुम्हें कोई नहीं रोक रहा है!"

अन्तोन ने आंखों में आंसू भरे हुए अपनी जेब की गहराइयों में टटोलना शुरू किया और तालियों का एक गुच्छा बाहर निकालते हुए उसे मेज़ पर रख दिया। ओप्रिश्को, जो अन्तोन का दाहिना हाथ था, कमरे में दाख़िल हुआ और अचरज से आंखें फाड़े अपने रोते हुए मुखिया की ओर ताकने लगा। ब्रातचेन्को की आंखों में हक़ारत का भाव था। वह जैसे कुछ कहना चाहता था लेकिन उसने केवल अपनी नाक को आस्तीन से पोंछा और बिना एक शब्द कहे कमरे से बाहर चला गया।

वह उसी सांझ कोलोनी से विदा हो गया, शयनागार तक में वह नहीं गया। डाक्टर को लाने जो नगर गए थे, उन्होंने उसे सड़क पर डग नापते हुए देखा। लेकिन उसने उनसे गाड़ी में बैठा लेने का अनुरोध नहीं किया और उनके निमंत्रण को हवा में उड़ा दिया।

दो दिन बाद सांझ को ओप्रिश्को एकाएक मेरे कमरे में फूट पड़ा। वह रो रहा था, और उसके मुंह से ख़ून चू रहा था। इससे पहले कि मैं उससे पूछता कि मामला क्या है, लीदिया पेत्रोवना, जो उस दिन ड्यूटी पर थी, अत्यन्त विचलित अवस्था में भागी हुई मेरे कमरे में आ धमकी।

"अन्तोन सेम्योनोविच!" उसने चीख़कर कहा, "ज़रा अस्तबल में जाकर देखिये। ब्रातचेन्को वहां है, और उसने भयानक कुहराम मचा रखा है"

अस्तबल की ओर जाते हुए रास्ते में हमें साईस–भीमाकार फ़ेदोरेन्को मिला उसकी चिल्लाहट से सारा जंगल गूंज रहा था।

"क्यों, क्या हुआ है तुम्हें?" मैंने पूछा।

"मैं... वह... क्या अधिकार है उसे?.. उसने पिचफोर्क से मेरे मुंह पर मारा!"

"किसने, क्या ब्रातचेन्को ने?"

"हां, ब्रातचेन्को, उसी ब्रातचेन्को ने!"

अस्तबल में पहुंचकर देखा कि अन्तोन और हमारे बाल-साईसों में से एक अन्य बड़ी सरगर्मी से काम में जुटे हैं। अन्तोन ने उदास भाव से मेरा अभिवादन किया, लेकिन ओप्रिश्को को मेरे पीछे देखकर मेरी उपस्थिति को उसने एकदम नज़रन्दाज़ कर दिया और उसके ऊपर टूट पड़ा।

"बस, यहां से दूर ही रहो, नहीं तो फिर थूथनी रगड़कर रख दूंगा! बड़ा कोचवान की दुम बनता है! देखिये न, 'लाल' का क्या हाल कर दिया है इसने!"

अन्तोन ने लपककर एक लालटेन अपने हाथ में ली और खींचकर मुझे 'लाल' के पास ले गया। सचमुच, 'लाल' की गरदन पर एक बुरा घाव था जो कपड़े की एक साफ़ पट्टी से ढका था। अन्तोन ने इस पट्टी को बड़ी सावधानी से हटाया और फिर उसे वैसे ही लगा दिया।

"मैंने इसपर क्सेरोफार्म की बुकनी छिड़क दी है," उसने गम्भीरता-से कहा।

"लेकिन बिना इजाज़त अस्तबल में आने, लोगों से बदला चुकाने और उन्हें मारने-पीटने का तुम्हें क्या अधिकार है?"

"क्या आप समझते हैं कि इतना ही काफ़ी हो गया? ख़ैर इसी में है कि वह मेरे सामने न पड़े–मैं फिर उसकी मरम्मत करके रख दूंगा!"

अस्तबल के दरवाज़े को घेरे हुए लड़कों का एक दल हंस रहा था। ब्रातचेन्को पर क्रोध प्रकट करने का मुझे साहस नहीं हुआ। उसे पक्का यक़ीन था कि वह और उसका घोड़ा एकदम सही हैं।

"देखो, अन्तोन," मैंने कहा, "लड़कों को पीटने के अपराध में तुम्हें मेरे कमरे में सारी सांझ क़ैद रहना पड़ेगा।"

"मेरे पास इसके लिए समय नहीं है!"

"शट अप!" मैंने चिल्लाकर कहा।

"अच्छा, अच्छा...तो मुझे एक कमरे में चिपका रहना ही बाक़ी था।"

एक पुस्तक पर मुंह फुलाए उसने सांझ मेरे कमरे में काटी।

१९२२ के जाड़ों में अन्तोन को और मुझे बुरे वक़्तों का सामना करना पड़ा। खिसकते हुए रेतों में बिना किसी खाद के कालीना इवानोविच ने जो जई बोई थी, न तो उससे कुछ फ़सल हुई, और न ही ऐसा कुछ ख़ास भूसा हाथ लगा। निज के खेत हमारे पास अभी तक कोई थे नहीं। जनवरी के आते न आते हमारे पास चारा नहीं रहा। शुरू-शुरू में हमने

किसी तरह काम चलाया, कभी शहर से चारा मांग लेते, कभी पड़ोसियों के सामने हाथ पसारते। लेकिन शीघ्र ही लोगों ने हमें चारा देने से हाथ खींच लिया। कालीना इवानोविच और मैंने दफ़्तरों की ख़ाक छानी, लेकिन बेकार!

आख़िर वही हुआ, जिसका सचमुच में अंदेशा था। ब्रातचेन्को ने आंखों में आंसू भरे मुझे बताया कि दो दिन से घोड़ों के पेट में कुछ नहीं पड़ा है। मैं चुप। कोसते और सुबकियां लेते हुए अन्तोन अस्तबलों को साफ़ करने में लगा रहा; लेकिन इसके सिवा और कुछ करने को उसके पास था भी नहीं। घोड़े ज़मीन पर पड़े थे, और अन्तोन ने ख़ास तौर से इस स्थिति की ओर मेरा ध्यान खींचा।

दूसरे दिन कालीना इवानोविच नगर से लौटा। उसका मिज़ाज बुरी तरह बिगड़ा हुआ था।

"क्या किया जाए? वे कम्बख़्त कुछ नहीं देंगे। क्या किया जाए?"

अन्तोन दरवाज़े में चुपचाप खड़ा था।

कालीना इवानोविच ने अपनी बांहें हवा में फेंकी और ब्रातचेन्को की ओर देखा।

"जाकर हम कहीं चोरी करें, या क्या? क्या किया जाए? बेचारे बेज़बान जीव!"

दरवाज़े को धकियाकर खोलते हुए अन्तोन कमरे से बाहर निकल गया। एक घंटे बाद किसी ने बताया कि वह कोलोनी से चला गया है।

"कहां गया वह?" मैंने पूछा।

"यह मैं क्या जानूं? वह किसी से कुछ कहकर नहीं गया।"

अगले दिन वह वापस लौट आया, गांव के एक आदमी के साथ भूसा भरी एक गाड़ी लिए हुए। गांव का आदमी एक बढ़िया टोपी पहने हुए था। गाड़ी ताल के साथ खड़खड़ करती अहाते में आ लगी। गाड़ी में बहुत ही चौकस डट्टे लगे थे और उसके घोड़ों के बाल चमक रहे थे। कालीना इवानोविच को देखते ही गांववाले ने तुरन्त समझ लिया कि यही अफ़सर है।

"एक लड़के ने सड़क पर मुझे बताया कि जिन्स के रूप में यहां कर जमा* किया जा सकता है।"

---

*नयी आर्थिक नीति के दौरान कर जमा करने का अस्थायी तरीक़ा। सं०

"कौन से लड़के ने?"

"यहीं तो था वह अभी... मेरे साथ ही आया था..."

अन्तोन अस्तबल में से झांक रहा था और रहस्यमय अंग-संचालन से मुझे कुछ बताने का प्रयत्न कर रहा था।

कालीना इवानोविच अपने पाइप के भीतर मुसकराता हुआ मुझे अलग ले गया:

"क्या किया जाए? चलो, इसका यह बोझ उतरवा लें, बाक़ी बाद में देखा जाएगा।"

अब तक मैं समझ गया था कि मामला क्या है।

"कितना होगा यह?" मैंने गांववाले से पूछा।

"क़रीब बीस पूड होना चाहिए। मैंने वज़न नहीं किया।"

अन्तोन दृश्य-स्थल पर प्रकट हुआ।

"लेकिन रास्ते में ख़ुद तुमने मुझसे तो यह कहा था कि केवल सत्रह पूड होगा," उसने विरोध किया। "और अब तुम बीस बताते हो। नहीं, सत्रह पूड है।"

"इसे उतार डालो। इसके बाद मेरे दफ़्तर में आ जाना, और मैं तुम्हें रसीद दे दूंगा।"

दफ़्तर में या कहिए कि उस छोटे-से कमरे में जिसे जैसे-तैसे कोलोनी के अहाते में अलग कर लिया था, ख़ुद अपने अपराधी हाथ से एक फ़ार्म पर मैंने लिखा कि नागरिक ओनुफ़री वत्स से भद्दे अदायगी कर जिन्स के रूप में जई का सत्रह पूड भूसा वसूल पाया।

वत्स ने झुककर माथा नवाया, मुझे धन्यवाद दिया जो वह ख़ुद भी नहीं जानता था कि किस लिए दे रहा है, और उसने वहां से विदा ली।

ब्रातचेन्को ख़ुशी के मारे गुनगुनाता हुआ अपने तमाम पिछलग्गुओं के साथ अस्तबल में व्यस्त था। कालीना इवानोविच बेचैनी-सी हंसी हंसता अपने हाथों को मल रहा था।

"जहन्नुम में जाए यह सब! इसके लिए हमें मुसीबत में फंसना पड़ेगा!" उसने कहा। "लेकिन हम और करते भी क्या? जानवरों को हम भूखा तो मरने नहीं दे सकते थे! वे भी तो, आख़िर, राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं!"

•

"समझ में नहीं आता कि वह देहाती जाते समय इतना खुश किस लिए था?" मैंने पूछा।

"खुश क्यों न होता? वह सोचता था कि उसे शहर जाना होगा। पहाड़ी पर चढ़ना पड़ेगा, और वहां पहुंचने पर लाइन में खड़े होना होगा। और यहां उसने—हरामखोर कहीं का—कहा कि सत्रह पूड, और किसी ने इसकी जांच नहीं की, कौन जाने केवल पन्द्रह ही पूड निकले!"

दो दिन बाद घास लदी एक गाड़ी हमारे अहाते में आ विराजी।

"जिन्स के रूप में कर की अदायगी के लिए। वत्स ने अपना कर यहीं अदा किया था।"

"और तुम्हारा क्या नाम है?"

"मैं भी वत्सों में से ही हूं। वत्स, स्तेपान वत्स!"

"जरा एक मिनट ठहरो।"

मैं कालीना इवानोविच की टोह में चला और झटपट उससे सलाह की। दरवाजे में अन्तोन मिल गया।

"हां तो तुम उन्हें जगह बता आये कि जिन्स के रूप में वे कहाँ अपने कर अदा कर सकते हैं और अब..."

"ले लो, अन्तोन सेम्योनोविच, हम किसी-न-किसी तरह समझा देंगे।"

लेकिन इसे लेना असम्भव था, और उतना ही असम्भव इसे लेने से इनकार करना था। यह क्या बात है जो—सवाल किया जाएगा—एक वत्स से तो हम ले लेते हैं, और दूसरे से इनकार करते हैं?

"जाओ और घास को उतार डालो, और मैं जाकर रसीद तैयार करता हूं।"

भूसे की गांठों और चालीस पूड जई से भरी दो गाड़ियों का बोझ हमने और स्वीकार किया।

भीतर ही भीतर कांपता मैं प्रतिकार की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्तोन सोचपूर्ण मुद्रा में जब-तब मेरी ओर नज़र डालता और क़रीब-क़रीब न मालूम किस अन्दाज़ में अपने मुंह के छोर के भीतर से मुसकराता। लेकिन उन सबसे जो उससे घोड़े मांगने आते थे, उसने अब लड़ना छोड़ दिया था, माल आदि ले जाने के तमाम आदेशों को वह ख़ुशी-ख़ुशी पूरा करता था और भीम की भांति अस्तबलों में जुटा रहता।

आख़िर एक संक्षिप्त तथा प्रभावपूर्ण पूछ-ताछ आई:

"आपसे प्रार्थना है कि हमें तुरन्त यह सूचित करें कि कोलोनी किस अधिकार से जिन्स के रूप में कर की अदायगी स्वीकार कर रही है

आग्नेयेव,

सप्लाई का ज़िला-कमिश्नर।"

इस पूछ-ताछ के बारे में मैंने कालीना इवानोविच तक कुछ नहीं बताया और न ही उसका कोई जवाब दिया। जवाब देता भी क्या?

अप्रेल में उक्राइनी गाड़ी 'तचान्का' में जुते काले घोड़ों की एक जोड़ी ने तेज़ी से कोलोनी में प्रवेश किया और भय से त्रस्त ब्रातचेन्को भागा हुआ मेरे दफ़्तर में पहुंचा।

"वे आ गये!" उसने हांफते हुए कहा।

"कौन आ गये?"

"शायद भूसेवाला मामला है। वह बुरी तरह ग़ुस्से से भरा लगता है।"

वह भट्टी के कोने की ओट में बैठकर चुप हो गया।

सप्लाई का ज़िला-कमिश्नर अपनी बिरादरी का सच्चा प्रतिनिधि प्रतीत होता था: चमड़े की जाकेट कसे, रिवाल्वर से लैस, युवा और बना-चुना!

"क्या संचालक आप ही हैं?" उसने पूछा।

"हां।"

"क्या आपको पूछ-ताछ का मेरा परवाना मिला था?"

"मिला था।"

"तो आपने जवाब क्यों नहीं दिया? क्या मतलब है इसका, क्या आप समझते थे कि ख़ुद मुझे इसके लिए आना चाहिए? किसकी इजाज़त से आप जिन्स के रूप में कर वसूल कर रहे हैं?"

"बिना इजाज़त के हमने जिन्स के रूप में कर वसूल किया है।"

सप्लाई का ज़िला-कमिश्नर चिल्लाते हुए अपनी कुर्सी से उछल पड़ा:

"क्या कहा आपने—बिना इजाज़त के? क्या आप समझते हैं कि क्या मतलब होता है इसका? इसके लिए आपको गिरफ़्तार किया जा सकता है, क्या आप यह जानते हैं?"

मैं यह जानता था।

"कीजिये जो ग्रापको करना हो," खोखली ग्रावाज़ में मैंने सप्लाई के ज़िला-कमिश्नर से कहा। "मैं ग्रपना बचाव या इससे निकल भागने का प्रयत्न नहीं करता। ग्रौर कृपा कर चिल्लाएं नहीं। जो ग्राप ज़रूरी समझें करें।"

वह, ग्राड़े रुख़ – इस कोने से उस कोने तक – मेरे छोटे-से दफ़्तर में डग नापने लगा।

"क्या मुसीबत है!" वह जैसे ग्रपने ग्रापसे ही बुदबुदाया ग्रौर इसके बाद जंगी घोड़े की भांति उसने नाक से फुंकार छोड़ी।

ग्रन्तोन भट्टी के पीछे ग्रपने कोने की ग्रोट में से बाहर निकल ग्राया, सप्लाई के क्रोधी ज़िला-कमिश्नर का ग्रपनी ग्रांखों से ग्रनुसरण करते हुए। इसके बाद ग्रचानक झींगुर की भांति मन्द स्वरों में कह उठा:

"ग्रगर घोड़ों के पेट में चार दिन तक कुछ न पड़े तो कोई इस बात की परवाह नहीं करेगा कि ग्रदायगी जिन्स के रूप में थी या क्या थी! ग्रगर ग्रापके इन काले घोड़ों को चार दिन तक समाचार-पत्रों को पढ़ने के सिवा ग्रौर कुछ न दिया जाता तो ग्राप तब भी इसी सरपट चाल से कोलोनी में दौड़े चले ग्राते जैसे कि ग्रब ग्राये हैं?"

ग्रागेयेव रुक गया, ग्रचरज का भाव लिए।

"ग्रौर ग्राप हैं कौन? यहां ग्राप किस लिए मौजूद हैं?"

"यह हमारा मुखिया साईस है, कमोबेश रूप में वह भी इस मामले से वास्ता रखता है," मैंने कहा।

सप्लाई के ज़िला-कमिश्नर ने इस कोने से उस कोने तक कमरे में फिर डग भरना शुरू कर दिया, ग्रौर ग्रचानक ग्रन्तोन के सामने ग्राकर रुक गया।

"कम-से-कम ग्रापने इसे ग्रपनी किताबों में तो दर्ज किया है न? उफ़, क्या मुसीबत है!"

ग्रन्तोन उछलकर मेरी मेज़ के पास ग्राया ग्रौर व्यग्र भाव से फुसफुसाया:

"क्यों, ग्रन्तोन सेम्योनोविच, यह दर्ज तो है न?"

न तो ग्रागेयेव ग्रौर न ही मैं, हम दोनों ही हंसे बिना नहीं रह सके।

"हां, दर्ज किया हुग्रा है।"

"बड़ा लाजवाब लड़का है। कहां से लाए हो इसे?"

"इन्हें हम ख़ुद बनाते हैं," मैं मुसकराया।

ब्रातचेन्को ने सप्लाई के ज़िला-कमिश्नर के चेहरे की ओर अपनी आंखें उठाई और मित्रतापूर्ण अन्दाज़ में पूछा:

"इजाज़त हो तो आपके कलुओं के चारे-पानी का कुछ इन्तज़ाम कर दूं।"

"पूछते क्या हो, जाओ, कर डालो!"

१३. ओसाद्ची

१९२२ का जाड़ा और वसन्त भयानक विस्फोटों का घर बनकर सामने आये। एक के बाद एक इतनी तेज़ी से वे आये कि दम तक मारने का मौक़ा नहीं मिला। और मेरी स्मृति में अब वे मुसीबतों की एक पहेली, न सुलझनेवाला जंजाल-सा बनकर रह गये हैं।

बावजूद इसके कि बहुत कुछ उन दिनों शोकजनक था, वे फिर भी हमारी अभिवृद्धि के दिन थे–भौतिक और चारित्रिक अभिवृद्धि के दिन। यह कैसे हुआ कि ये दोनों घटनाक्रम–शोकपूर्ण और अभिवृद्धिपूर्ण–तर्कसंगत रूप में एक-दूसरे के समक्ष रह सके? इस रहस्य को स्पष्ट कर पाना अभी मेरे लिए कुछ कठिन होगा। लेकिन ऐसा हुआ, यह सच है। आमतौर से कोलोनी का दिन, तब भी एक अद्भुत दिन होता था: श्रम, पारस्परिक विश्वास और मानवीय भाईचारे की भावनाओं से पगा हुआ। इनके अलावा क़हक़हों, हंसी-मज़ाक़, उछाह और प्रफुल्लता की एक बढ़िया भावना हर घड़ी छलछलाती रहती थी। तिस पर भी मुश्किल से ही ऐसा कोई सप्ताह गुजरता जिसमें कोई अनघट घटना हमें अतल गर्त में न पटक देती घटनाओं का एक इतना जानलेवा सिलसिला न शुरू कर देती कि हमारी सहज चेतना क़रीब-क़रीब लुप्त हो जाती, हम रोगियों के समान बन जाते और झनझनाए हुए स्नायुओं के साथ बाह्य दुनिया की प्रतिक्रिया हमें धर दबोचती।

एकदम अप्रत्याशित रूप में यहूदी-दुश्मनी की भावना हमारे बीच उठ खड़ी हुई। तब तक हमारी कोलोनी में कोई यहूदी नहीं था। शरद् में पहले यहूदी का आगमन हुआ, और इसके बाद, एक साथ ही, कई और

आ गए: उनमें से एक किसी रूप में प्रान्तीय खुफ़िया विभाग में काम कर चुका था। हमारी कोलोनी के आदि-निवासियों का भयानक आक्रोश पूरे ज़ोरों के साथ उसी पर सब से पहले टूटा।

शुरू-शुरू में मैं यह पता नहीं लगा सका कि अपराधियों में मुखिया कौन है और छुटभैया कौन। बाद में जो कोलोनी में आये उनके लिए यहूदी-विरोध केवल एक सहज साधन था जिसके द्वारा उन्हें अपनी उत्पाती प्रवृत्तियों को सन्तुष्ट करने का मौक़ा मिल जाता था। लेकिन जो पुराने लड़के थे, उन्होंने तो यहूदी लड़कों को दबाने तथा लांछित करने का जैसे तार ही बांध दिया था।

हमारे पहले यहूदी का नाम ओस्त्रोमुख़ोव था। उसे बराबर मौक़े-बे-मौक़े पीटा जाता था।

पीटा जाना, निरन्तर खिल्ली उड़ाया जाना, अच्छी-ख़ासी पेटी या मज़बूत जूतों को ग़ायब कर उनकी जगह सड़ी-पुरानी चीज़ों को रख दिया जाना, भोजन के मामले में चारसौबीसी किया जाना या उसे गंदा कर देना, हर घड़ी चिढ़ाया जाना, दुनिया-भर के नामों से लांछित किया जाना, और सब से बदतर तो यह कि निरंतर भय तथा अपमान की स्थिति में रखा जाना,—अकेले ओस्त्रोमुख़ोव के ही नहीं, बल्कि श्नाइदेर, ग्लेइ-सर और काइनिक के भाग्य में भी कोलोनी में यही सब बदा था। और इस सब के ख़िलाफ़ संघर्ष करना हमारे लिए बहुत ही जानमार और कठिन काम था। हर चीज़ को अत्यन्त गुप्त रूप में, अत्यन्त सावधानी के साथ—क़रीब-क़रीब बिना किसी ख़तरे के—किया जाता था। इसलिए और भी अधिक कि यहूदी लड़कों की भय के मारे शुरू से ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम थी, और वे शिकायत करते डरते थे। केवल अप्रत्यक्ष चिन्हों—जैसे निराश मुखमुद्रा, मूक और सहमे रवैये, या शिक्षकों तथा अधिक स्पन्दन-शील कमउम्र लड़कों के बीच मैत्रीपूर्ण बातचीत के दौरान उभर आनेवाली धुंधली अफ़वाहों के सहारे इसका कुछ जोड़-तोड़ लगाया जा सकता था।

लेकिन यह सब होने पर भी यह असम्भव था कि छात्रों के एक समूचे दल का बाक़ायदा दमन हो, और शिक्षक-समुदाय से यह बात एकदम छिपी रहे। आख़िर वह समय आया जब कोलोनी में यहूदी-विरोध की बाढ़ कोई छिपी हुई चीज़ नहीं रही, और जो पूरे घाघ थे, उनके नामों तक का पक्का पता लगाना सम्भव हो गया। ये सारे पुराने मित्र थे—बुरून,

मित्यागिन, वोलोख़ोव, प्रीख़ोद्को। लेकिन दो इन सबके सरगना थे–ओसाद्ची और तारानेत्स।

अपनी ज़िन्दादिली, हाज़िरजवाबी और संगठन-क्षमता के कारण कोलोनी के लड़कों में तारानेत्स बहुत पहले से ही अग्रिम पांत में स्थान रखता था। लेकिन वयस्क लड़कों के आगमन ने उसकी गतिविधि का क्षेत्र कुछ सीमित कर दिया था। उसकी शक्ति का अहम् अब यहूदी लड़कों को धकियाने और सताने में व्यक्त होने लगा। ओसाद्ची जो सोलह वर्ष का था, झल्लाया हुआ, ज़िद्दी, सबल और पूर्णतया चरित्रहीन था। उसे अपने अतीत पर गर्व था, और यह इसलिए नहीं कि उसे अपने अतीत में कोई मोहक सौन्दर्य दिखाई देता था, बल्कि विशुद्ध रूप में अपने हठीलेपन की वजह से, इसलिए कि वह उसका अपना अतीत था, और उसकी ज़िन्दगी उसकी अपनी चीज़ थी, जिसमें किसी को दख़ल देने का अधिकार नहीं!

ओसाद्ची जीवन को रसीला बनाना जानता था, और हमेशा इस बात का ख़ास ध्यान रखता था कि उसके दिन किसी-न-किसी प्रकार के मनोरंजन से ख़ाली न बीतें। आनन्द लेने की उसकी कल्पना, ऐसी कोई ख़ास बारीक, नफ़ासत भरी नहीं थी। आम तौर से पिरोगोव्का का एकाध चक्कर उसकी तसल्ली के लिए काफ़ी होता था। यह एक गांव था जिसकी आबादी धनी किसानों–कुलकों–और छोटे व्यापारियों का मिश्रण थी। उन दिनों पिरोगोव्का गांव सुन्दर लड़कियों की बहुतायत तथा घरेलू दारू के लिए प्रसिद्ध था, और ये आकर्षण ही ओसाद्ची के आनन्द का मुख्य आधार थे। कोलोनी का अत्यन्त बदनाम निकम्मा तथा पेटू गलातेन्को उसका अविच्छिन्न साथी था।

ओसाद्ची के माथे पर बालों की एक शानदार लट खेलती रहती थी, जो इर्द-गिर्द की दुनिया को देखने के मार्ग में अड़चन डालती थी। लेकिन इसमें शक नहीं, पिरोगोव्का की कुमारियों के हृदयों को उलझाने में यह लट एक अत्यन्त कारगर हथियार का काम देती थी। जब कभी मुझे उसके निजी जीवन में दख़ल देने का मौक़ा मिलता, तो कुत्सित मनोभावना और, जैसा कि मुझे लगता, नाराज़गी के साथ, अपनी इस लट की ओट में से ओसाद्ची मेरी ओर ताकता। मैं उसे पिरोगोव्का जाने से रोकता और बराबर मांग करता कि कोलोनी में और ज़्यादा दिलचस्पी के साथ हाथ बंटाये।

ग्रोसाद्ची यहूदी-लड़कों के लिए मुख्य त्रासकर्त्ता बन गया। यों, सच पूछो, तो उसे यहूदी-विरोधी कहना मुश्किल था। केवल इसलिए कि यहूदी लड़के ग्ररक्षित थे, ग्रौर बिना किसी ख़तरे के उन्हें सताया जा सकता था, —ग्रोसाद्ची को जैसे खुला मैदान मिल गया, ग्रौर ग्रपने समूचे देशी चातुर्य तथा दुस्साहसिकता के साथ वह कोलोनी में चमक उठा।

ग्रपने इन यहूदी-विरोधियों के खिलाफ़ सीधा ग्रौर खुला ग्रभियान शुरू करने से पहले हमें दो बार सोचना पड़ा। कारण, इस तरह का कोई भी ग्रभियान ख़ुद यहूदी लड़कों के लिए ग्रत्यन्त ख़तरनाक सिद्ध हो सकता था। ग्रोसाद्ची जैसे लड़के, जिनके लिए कुछ भी ग्रसंभव नहीं था, कुरेदे जाने पर चाकू तक इस्तेमाल कर सकते थे। इसलिए यह जरूरी था कि या तो छुप-छुपकर हर तरह की सावधानी के साथ काम किया जाए, या फिर एक ही धमाके में इसका ग्रन्त कर दिया जाए।

मैंने पहले तरीक़े को ग्राज़माना शुरू किया। मेरा लक्ष्य यह था कि ग्रोसाद्ची ग्रौर तारानेत्स ग्रकेले पड़ जाएं। करावानोव, मित्यागिन, प्रीख़ोद्को ग्रौर बुरुन—इन सबों के साथ मेरा सम्बन्ध ग्रच्छा था। उनकी मदद पर मैं भरोसा करता था। लेकिन यहूदी लड़कों को ग्रपने हाल पर छोड़ने के वचन से ग्रधिक मैं उनसे ग्रौर कुछ नहीं पा सका।

"हम भला उनकी रक्षा करनेवाले कौन होते हैं समूची कोलोनी से?"

"सो कुछ नहीं, सेम्योन," मैंने कहा, "तुम ख़ूब जानते हो कि क्या मतलब है इस कौन से?"

"ग्रच्छा, ग्रगर जानता भी हूं तो इससे क्या? मान लो, मैं उसकी हिमायत में खड़ा होता हूं, लेकिन ग्रोस्त्रोमुख़ोव को तो मैं ग्रपने से बांधकर रख नहीं सकता, नहीं रख सकता न? वे उसे—चाहे कुछ भी कहो —फिर पकड़ लेंगे ग्रौर पहले से भी ज़्यादा बुरी तरह उसका भुर्ता बना देंगे!"

मित्यागिन ने खुलकर मुझसे कहा:

"मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता—यह मेरा काम नहीं। हां, इतना है कि मैं उन्हें चोट नहीं पहुंचाऊंगा। मुझे भला उनसे क्या लेना?"

ज़दोरोव ने मेरे रवैये के साथ ग्रन्य सबसे ग्रधिक सहानुभूति प्रकट की, लेकिन ग्रोसाद्ची जैसे लड़कों के विरुद्ध वह खुले युद्ध का एलान नहीं कर सका।

"कोई बहुत ही उग्र उपाय काम में लाना होगा," उसने कहा, "लेकिन वह क्या हो, यह मैं नहीं जानता। वे मुझसे भी सब छिपाकर रखते हैं, जैसे कि वे आपसे छिपाकर रखते हैं। मेरी मौजूदगी में वे कभी किसी को हाथ न लगाते।"

इस बीच यहूदी लड़कों की स्थिति बद से बदतर होती जा रही थी। यहूदी लड़के अब हर दिन अपने बदन पर चोट के निशान लिए नज़र आते थे, लेकिन पूछने पर अपने आततायियों का नाम लेने से इनकार कर देते थे। ओसाद्ची अपनी शानदार लट की ओट में से मेरी तथा शिक्षकों की ओर उद्धतपन के साथ नज़र डालता, कोलोनी में गर्वपूर्ण मंडराता था।

म्याऊं की ठोर पकड़ने का निश्चय कर मैंने उसे अपने दफ़्तर में बुलाया। हर चीज़ से साफ़ इनकार किया, लेकिन उसके समूचे हाव-भाव से पता चलता था कि केवल औपचारिकता की ख़ातिर वह यह कह रहा है, और यह कि उसे बाल बराबर भी इस बात की परवाह नहीं है कि मैं उसके बारे में क्या सोचता हूं।

"तुम रोज़ उन्हें पीटते हो!"

"नहीं, मैं ऐसा कुछ नहीं करता!" उसने उपेक्षा से कहा।

मैंने उसे कोलोनी से निकाल देने की धमकी दी।

"अच्छी बात है, ऐसा ही करें।"

वह यह अच्छी तरह जानता था कि किसी को कोलोनी से निष्कासित करना कितना लम्बा और कितना दुःखद काम है। कमीशन के पास अनगिनत आवेदन-पत्र देने होंगे, दुनिया-भर के फ़ार्म और रिपोर्टें दाख़िल करनी पड़ेंगी, और ख़ुद ओसाद्ची को–अन्य ढेर सारे गवाहों की बात छोड़िये–पूछ-ताछ के लिए बारम्बार भेजना पड़ेगा।

इसके अलावा, इस समय अपने आप में ख़ुद ओसाद्ची में मेरी दिलचस्पी नहीं थी। समूची कोलोनी की उसके कारनामों पर नज़र थी, और कितने ही सराहना तथा समर्थन के साथ उसे देखते थे। उसे कोलोनी से निकालने का मतलब इस भावना को शहीद हीरो ओसाद्ची की याददाश्त के रूप में स्थायी बना देना होता। एक ऐसे हीरो की याददाश्त के रूप में जो किसी से नहीं डरता था, किसी का हुक्म नहीं बजाता था, यहूदियों की पिटाई करता था, और इसी लिए कोलोनी से निकाला गया। फिर, अकेला ओसाद्ची ही यहूदी लड़कों को नहीं सताता था। तारानेत्स,

ओसाद्ची से कम हिंस्र होते हुए भी, बेहद मौलिक और सूक्ष्म तरीक़ों से काम लेता था। वह कभी उनकी मरम्मत नहीं करता था, बल्कि औरों की मौजूदगी में क़रीब-क़रीब प्रेम से उनके साथ पेश आता था, लेकिन रात को उनमें से किसी एक की उंगलियों के बीच वह काग़ज़ के टुकड़े खोंस देता, काग़ज़ में दियासलाई दिखाता, और अपने बिस्तर पर वापस लौटकर ऐसे पड़ जाता जैसे सो रहा हो। या फिर क़ैंची लेकर फ़ेदोरेन्को जैसे भारी-भरकम जीव को पट्टी पढ़ाता कि श्नाइदेर के एक तरफ़ के बालों को जड़ से काट डाले, और फिर ऐसा हाव-भाव दिखाये जैसे क़ैंची बिगड़ गई हो, उस ग़रीब की खिल्ली उड़ाये जों अब, आंखों में आंसू भरे, उसके पीछे-पीछे घूमता और मनुहार करता है कि बालों को काटने का काम जो उसने शुरू किया था उसे पूरा ही कर डाले।

और इन सब मुसीबतों से अत्यन्त अप्रत्याशित रूप में—एक ऐसे रूप में जिसे कोलोनी के लिए कुछ श्रेयजनक नहीं कहा जा सकता—छुटकारा मिला।

एक सांझ मेरे दफ़्तर का दरवाज़ा खुला, और इवान इवानोविच ने ओस्त्रोमुख़ोव तथा श्नाइदेर को भीतर दाख़िल किया,—दोनों बुरी तरह ख़ून चुवा रहे थे और मुंह से थूक रहे थे। लेकिन वे उफ़ तक नहीं कर रहे थे—इस हद तक हिंसा के वे अभ्यस्त हो गए थे।

"ओसाद्ची ने, क्यों?" मैंने पूछा। ड्यूटीवाले शिक्षक ने बताया कि ओसाद्ची श्नाइदेर के पीछे पड़ गया जो भोजनघर में ड्यूटी पर था और ब्यालू के समूचे दौरान उसकी नाक में दम करता रहा—भरी हुई तश्तरियों को वह लौटा देता जो कि वह परोस रहा था, रोटियां बदलकर लाने के लिए बाध्य करता, आदि-आदि। अन्त में केवल इसलिए कि अकस्मात् रक़ाबी के डगमगा जाने पर श्नाइदेर का अंगूठा उस शोरबे में जा डूबा जिसे कि वह परोस रहा था, ओसाद्ची अपनी जगह से उठा और, उन शिक्षक के सामने जो ड्यूटी पर थे, और समूची कोलोनी के सामने, श्नाइदेर के चेहरे पर उसने प्रहार किया। श्नाइदेर तो इस पर भी चुप कर जाता, लेकिन जिन शिक्षक की ड्यूटी थी वे डरपोक न थे। शिक्षक-वर्ग के किसी सदस्य की हाजिरी में इससे पहले कभी कोई लड़ाई नहीं हुई थी। इवान इवानोविच ने ओसाद्ची को भोजनघर से निकल जाने और ख़ुद मेरे पास आकर रिपोर्ट करने का आदेश दिया। ओसाद्ची भोजनघर

के दरवाज़े की ओर चला, लेकिन फिर चौखट के पास रुककर चिल्ला उठा :

"संचालक के पास तो मैं जाऊंगा, लेकिन इस टुनुवा से चीं करा लेने के बाद!"

और इसके बाद ही, एक ऐसी घटना हुई जिसे छोटा-मोटा चमत्कार ही कहिये। ओस्त्रोमुख़ोव जो यहूदी लड़कों में सबसे ज़्यादा दब्बू था, अचानक उछलकर मेज़ पर से उठा और ओसाद्ची के ऊपर टूट पड़ा।

"मुझे भी देखना है कि कैसे तुम उसे पीटते हो?" चिल्लाकर उसने कहा।

अन्त में यह हुआ कि वहीं, भोजनघर में ही, ओसाद्ची ने ओस्त्रो-मुख़ोव की मरम्मत कर डाली और बाहर निकलते समय श्नाइदेर को ढके हुए दरवाज़े में दुबकते देखकर, इतने ज़ोरों से उस पर आघात किया कि उसका एक दांत बाहर आ गिरा। ओसाद्ची ने मेरे पास आने से इनकार कर दिया।

मेरे दफ़्तर में ओस्त्रोमुख़ोव और श्नाइदेर अपनी चीकट आस्तीनों से अपने चेहरों को ख़ून से पोत रहे थे, लेकिन चीख़-चिल्ला नहीं रहे थे। प्रत्यक्षत: वे निराश हो चुके थे। मैं ख़ुद भी यह पक्की तौर से जानता था कि अगर इस तनाव का एकबारगी हमेशा के लिए मैंने अन्त नहीं किया तो उलटे पांव पलायन करने के सिवा यहूदी लड़कों के लिए बचाव का अन्य कोई उपाय नहीं रहेगा, या फिर बाक़ायदा शहीद बनने के लिए उन्हें तैयार रहना होगा। और सबसे ज़्यादा त्रस्त तथा ख़ून जमा देनेवाली बात वह उपेक्षा थी जो भोजनघर में इस हत्याकाण्ड के प्रति अन्य सभी लड़कों ने दिखाई,—यहां तक कि ज़दोरोव ने भी। इस क्षण मैं अपने आपको उतना ही एकाकी अनुभव कर रहा था जितना कि कोलोनी के अस्तित्व के शुरू के दिनों में करता था। लेकिन शुरू के उन दिनों में किसी कोने से न तो मैं किसी समर्थन की आशा करता था और न सहानुभूति की। वह एक स्वाभाविक एकाकीपन था जिसे मैं अनिवार्य मान चुका था। लेकिन अब छात्रों के निरन्तर सहयोग का मुझे चस्का ही नहीं पड़ गया था, बल्कि मैं उसका आदी भी हो गया था।

अब तक और भी कई व्यक्ति भुक्तभोगियों सहित, मेरे दफ़्तर में आ गये थे।

"ओसाद्ची को बुलाओ," मैंने उनमें से किसी एक से कहा।

मुझे क़रीब-क़रीब पक्का विश्वास था कि ओसाद्ची इस हद तक दांत गड़ाने के बाद आने से इनकार कर देगा, और मैंने यह पक्का निश्चय कर लिया था कि अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं ख़ुद उसे पकड़कर ले आऊंगा, भले ही इसके लिए मुझे अपना रिवाल्वर तक निकालना पड़े।

लेकिन ओसाद्ची आया—अपनी जाकेट को कंधे पर फेंके, हाथों को पतलून की जेबों में खोंसे और बीच में रखी मेज़ को उलटते हुए मेरे दफ़्तर में प्रकट हुआ तारानेत्स उसके साथ था। तारानेत्स ऐसा दीख रहा था जैसे यह सब अत्यन्त रोचक हो, और वह केवल एक मनोरंजक दृश्य देखने की आशा से यहां चला आया हो।

ओसाद्ची ने अपने कंधे के ऊपर से मेरी ओर देखते हुए कहा:

"हां तो मैं हाज़िर हूं... कहिये, क्या मामला है!"

मैंने श्नाइदेर और ओस्त्रोमुख़ोव की ओर इशारा किया।

"यह क्या हरकत है?"

"बस? क्या तूफ़ान खड़ा किया है! ये दो नन्हे बौने! मैं तो समझा था कि आप सचमुच मुझे कोई बड़ी चीज़ दिखाने जा रहे हैं।"

और अचानक भयानक विस्फोट के साथ शिक्षण-दीक्षण का आधार, मेरे पांवों के नीचे से खिसक गया। मुझे लगा जैसे मैं किसी मानवीय शून्य में पहुंच गया हूं। भारी गिनतारा जो मेरी मेज़ पर पड़ा था, अचानक ओसाद्ची के सिर की ओर उड़ चला। मेरा निशाना चूक गया, झन्नाटे के साथ गिनतारा दीवार से टकराया और ज़मीन पर आ गिरा।

ग़ुस्से से बेसुध किसी भारी चीज़ की टोह में मेरे हाथ मेज़ पर घूमे लेकिन बजाय इसके अचानक एक कुर्सी मैंने उठाई और उसे लिए हुए ओसाद्ची की ओर झपटा। डर के मारे लड़खड़ाकर वह दरवाज़े की ओर लपका, उसका जाकेट उसके कंधे से खिसककर ज़मीन पर उसके पांवों से उलझा और वह नीचे आ रहा।

मैं जब चेता, कोई मेरा कंधा थामे था। मैंने घूमकर देखा—ज़दोरोव मेरी ओर मुसकरा रहा था।

"आप भी किस मरदूद के पीछे पड़े हैं!"

ओसाद्ची फ़र्श पर बैठा किकिया रहा था। तारानेत्स पीला ज़र्द पड़ गया था, उसके होंठ कांप रहे थे, और खिड़की की ओट होकर एकदम स्थिर बैठा था।

"तुम भी तो इन छोकरों को सताते रहे हो, क्यों?" मैंने कहा।

तारानेत्स खिड़की के दासे पर से खिसककर नीचे ग्रा गया।

" मैं ग्रापको वचन देता हूं कि फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा।"

"दफ़ा हो जाग्रो यहां से!"

वह पंजों के बल वहां से चल दिया।

ग्राख़िर ग्रोसाद्ची उठा, एक हाथ में ग्रपनी जाकेट को थामे हुए तथा दूसरे से ग्रपनी स्नायु-दुर्बलता के ग्राख़िरी चिन्ह-ग्रपने चीकट गाल पर से धीरे-धीरे ढुलकते हुए एक एकाकी ग्रांसू को-पोंछकर साफ़ करते हुए। उसने मेरी ग्रोर देखा-चुपचाप, गम्भीरता से।

"चार दिन तुम्हें मोचीघर में बिताने होंगे, पानी ग्रौर रोटी के सहारे।"

"ग्रच्छी बात है, ऐसा ही होगा।"

गिरफ़्तारी के दूसरे दिन उसने मुझे मोचीघर में बुलाया ग्रौर कहा:

"ग्रब मैं ऐसा नहीं करूंगा। मुझे माफ़ कर देंगे न?"

"माफ़ी के बारे में फिर बात करेंगे, जब तुम सज़ा की ग्रपनी ग्रवधि पूरी कर लोगे।"

चार दिन की ग्रवधि पूरी हो जाने पर उसने माफ़ी का ज़िक्र तक नहीं किया, बल्कि मुंह फुलाये बोला:

"मैं जा रहा हूं।"

"ग्रच्छी बात है, जाग्रो।"

"मुझे मेरे काग़ज़-पत्र दे दें।"

"तुम्हें कोई काग़ज़-पत्र नहीं मिलेंगे।"

"ग्रच्छा तो विदा।"

"विदा।"

१४. सद्भावना की प्रतीक दावातें

नहीं मालूम कि ग्रोसाद्ची कहां गया। कुछ का कहना था कि वह ताशक़न्द गया है जहां हर चीज़ सस्ती थी ग्रौर मौज का जीवन बिताया जा सकता था। कुछ ग्रन्य का कहना था कि हमारे नगर में उसका एक चाचा था, या शायद केवल मित्र ही था जो ठेला हांकने का काम करता था।

मेरी समझ में नहीं आता था कि शिक्षक के रूप में इस ताजा पछाड़ के बाद अपने मानसिक सन्तुलन को किस प्रकार ठीक करूं?। लड़के सवालों की झड़ी लगाये थे—ओसाद्‌ची के बारे में क्या मुझे कुछ मालूम हुआ?

"ओसाद्‌ची से तुम्हें क्या मतलब?" मैंने पूछा, "आख़िर तुम इतने परेशान क्यों हो?"

"हम परेशान नहीं हैं," कराबानोव ने कहा, "लेकिन अच्छा होता अगर वह यहां होता। आपके लिए अच्छा होता।"

"क्या फ़िज़ूल बकते हो?"

करावानोव ने कुटिलता से मेरी ओर देखा।

"हो सकता है कि आपको अपने भीतर... अपनी आत्मा में... यह कुछ अच्छा न मालूम होता हो!"

"जहन्नुम में जाओ तुम, और तुम्हारा यह आत्मा-पुराण!" मैं चिल्लाया। "क्या तुम समझते हो कि मैं अब तुम्हारे हाथों में अपनी आत्मा सौंपने जा रहा हूं!"

करावानोव चुपचाप मेरे पास से खिसक गया।

इस बीच कोलोनी में जीवन की चहल-पहल जारी थी। मेरे चारों ओर उसका आह्लादपूर्ण संगीत गूँज रहा था, और मुझे अपनी खिड़की के नीचे (जाने क्यों, मुझे सब अपनी खिड़की के नीचे जमा होते मालूम पड़ते थे। हंसी-मज़ाक़ों और चिलबिलेपन की आवाज़ें सुनाई देती थीं जो रोज़ाना के कामों में चहल-पहल बनाये रखती थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे लड़ाई-झगड़ा सब ग़ायब हो गया हो। तभी एक दिन किसी रोगी को ख़ुश रखने का प्रत्यत्न करनेवाली नर्स की भांति येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने मुझसे कहा: "क्यो अपने हृदय को नोंचे डालते हो। सब ठीक हो जाएगा।"

"अरे नहीं, मैं अपने हृदय को नोच-वोच नहीं रहा हूं। बेशक यह सब गुज़र जाएगा। कोलोनी का अब क्या रंग-ढंग है?"

"कैसे बताऊं, मैं ख़ुद मुश्किल से समझ पाती हूँ," उसने जवाब दिया।" कोलोनी का हाल-चाल अच्छा है—बढ़िया; बिलकुल मानवीय, आप जानो। हमारे यहूदी लड़के तो एकदम प्यारे हैं, हालांकि जो कुछ हुआ उससे कुछ अतिभयभीत हैं। लेकिन वे काम शानदार करते हैं, थोड़ा

शर्मीले हैं तो क्या! शायद आप यक़ीन न करें, लेकिन बड़े तो उनसे वह दुलार करते हैं कि बस! मित्यागिन नर्स की भांति उनके पीछे लगा रहता है,—और एक बार तो, सच, ग्लेइसर को पकड़कर उसने नहलाया-धुलाया तक, उसके बाल काटे, यहां तक कि उसकी क़मीज़ में बटन तक ख़ुद टांके।"

हर चीज़ ठीक-ठाक चल रही थी। लेकिन सच, शिक्षक की आत्मा का क्या हाल था? अराजकता में वह फंसी थी, एक ऐसे जंजाल में जिस में विचारों और भावनाओं ने बाक़ायदा धांधली मचा रखी थी। एक प्रश्न ख़ास तौर से मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा था,—क्या मैं कभी यह पता नहीं लगा सकता कि इसका रहस्य कहां निहित है? यों हर चीज़ मेरे अपने हाथों में मालूम होती थी, केवल उसे बटोरने-भर की देर थी। कितने ही लड़कों की आंखों में एक नयी रोशनी चमकने लगी थी, और तभी हर चीज़ निहायत बेहूदगी के साथ भरभराकर ढह गई। तो क्या हमें फिर एकदम नये सिरे से शुरुआत करनी होगी?

शिक्षण-तकनीक का लज्जास्पद हद तक नीची स्तर और ख़ुद अपनी तकनीकी दक्षता का अभाव मुझे बौखला देता था, और भिन्नाहट तथा ग़ुस्से से भरे शिक्षण-विज्ञान में मैं अपना सिर खपाता था।

"जाने कितने हज़ार वर्ष हो गए इसका अस्तित्व क़ायम हुए?" मैं सोचता। "कितने बड़े-बड़े नाम—कितने प्रतिभाशाली विचार —पेस्तालोज़्ज़ी, रूसो, नातोर्प, ब्लोन्स्की! कितने पोथी-पोथे, मनों काग़ज़, कितनी प्रसिद्धियां! तिस पर भी—इतना शून्य! सब मिलाकर कोई यह बतानेवाला नहीं था कि एक किशोर लुच्चे को कैसे संभाला जाए! कोई तरीक़ा नहीं, कोई साधन नहीं, कोई तर्क नहीं—कुछ नहीं। बस, आल-जाल का एक अम्बार, और कुछ नहीं!"

ओसाद्‌ची का जहां तक सम्बन्ध था, सो उसके बारे में मैं सबसे कम परेशान था। बलाए नागरानी समझ मैंने उसे एक ओर डाल दिया था, क्षति और छीजन के उस खाते में मैंने उसका नाम टांक दिया था जो कि किसी भी उद्योग-धंधे में अनिवार्य होती है। उसकी नाटकीय विदा ने भी मुझे कुछ ख़ास प्रभावित नहीं किया था।

इसके अलावा, वह जल्दी लौट भी आया।

और तब एक नयी मुसीबत हम पर सवार हुई जिसे सुनकर आख़िर

मुझे यह जानने का मौक़ा मिला कि सिर के बाल कैसे खड़े होते हैं।

जाड़ों की निस्तब्ध रात थी। गोर्की कोलोनी के लड़कों के एक दल का—ओसाद्‌ची भी उनमें था—पिरोगोव्का के लड़कों के साथ झगड़ा हो गया। झगड़े ने बाक़ायदा लड़ाई का रूप धारण किया, हमारा पक्ष मुख्यत: निर्मम इस्पात (फिन्निश चाकुओं) से लैस था और दूसरा पक्ष बारूदी हथियार इस्तेमाल कर रहा था। लड़ाई में हमारे पक्ष की जीत हुई। गांव के लड़के अपने मोर्चे से—बाज़ार के सिरे पर से—उखाड़ दिए गए, बुरी तरह मुंह की खाकर वे भागे और ग्राम-सोवियत की इमारत में घुसकर उन्होंने भीतर से दरवाज़े बंद कर लिए। तीन बजे तक ग्राम-सोवियत पर तूफ़ानी धावा हुआ, दूसरे शब्दों में दरवाजे और खिड़कियां तोड़ डाली गईं और लड़ाई ने भगोड़ों को कसकर खदेड़ने का रूप धारण कर लिया। गांव के लड़के इन दरवाज़ों और खिड़कियों में से निकल भागे, और गोर्की कोलोनी के लड़के विजय के साथ वापस लौट आए।

इसका सबसे बुरा पहलू यह था कि ख़ुद ग्राम-सोवियत की इमारत को तहस-नहस कर डाला गया था। अगले दिन उसमें काम तक करना असम्भव था। दरवाज़ों और खिड़कियों के अलावा मेज़ों और बेंचों को बेकार कर दिया गया था, काग़ज़ छितरे हुए पड़े थे और स्याही की दावातें तोड़-फोड़ डाली गयी थीं।

अगले दिन लुटेरे इस तरह उठे जैसे मासूम बच्चे हों और अपने-अपने कामों में जुट गए। लेकिन दोपहर को पिरोगोव्का ग्राम-सोवियत का अध्यक्ष विगत रात्रि के क़िस्से के साथ मेरे पास आया।

मैंने अचरज के साथ कंकालमात्र, टुइँयाँ से इस चतुर देहाती की ओर देखा। मेरी समझ में नहीं आया कि वह कैसे बातें किये जा रहा है, मिलीशिया को क्यों नहीं उसने बुलाया और तलछटियों के इस समूचे दल को—मुझ सहित गिरफ़्तार क्यों नहीं करा दिया।

लेकिन अध्यक्ष ग़ुस्से से इतना नहीं जितना कि शोक के साथ इस सब का वर्णन कर रहा था। उसकी मुख्य चिन्ता यह थी कि खिड़कियों और दरवाज़ों की मरम्मत तथा मेज़ों की टूटफूट कोलोनी दरुस्त कराए! उसने अपनी वार्ता का अन्त इस प्रश्न के साथ किया कि क्या कोलोनी उसे, पिरोगोव्का ग्राम-सोवियत के अध्यक्ष को, दो-चार दावात दे सकती है!

आश्चर्य ने मुझे एकदम अभिभूत कर लिया। मेरी समझ में यह क़ई नहीं आ रहा था कि अधिकारियों के इस रवैये का—इस तरह ढील देने का—क्या कारण हो सकता है। अन्त में मैं इस निश्चय पर पहुंचा कि अध्यक्ष भी मेरी भांति घटना की भयानकता पूर्णतया नहीं पकड़ सका है, और केवल इसलिए यह सब बातें कर रहा है कि कुछ-न-कुछ तो ऐसी हालत में करना चाहिए। मैंने ख़ुद अपने से ही उसे आंका,—जो फ़िज़ूल की बातें बघारने के सिवा और कुछ नहीं कर पाता।

"बेशक, बेशक!" मैंने उसे आश्वस्त किया। "हम हर चीज़ की मरम्मत करा देंगे। और दावात? वे भी आपको मिल जाएंगी!"

अध्यक्ष ने दावातें उठाईं, सावधानी के साथ अपने बाएं हाथ में उनको थामा और पेट के साथ उन्हें सटा लिया। वे मामूली दावातें थीं।

"हम हर चीज़ की मरम्मत करा देंगे," मैंने फिर दोहराया। "मैं अभी आदमी भेज दूंगा। केवल खिड़कियों के लिए कुछ रुकना पड़ेगा, हमें शहर जाकर शीशे लाने पड़ेंगे।"

अध्यक्ष ने कृतज्ञता से मेरी ओर देखा।

"ओह, कल करा देना—तब तक आप शीशे भी ले आएंगे, और सब काम एक साथ ही हो जाएगा।"

"आं—हूं! अच्छी बात है। तो कल ही सही।"

लेकिन इसके बाद भी वह —बेहद दब्बू यह अध्यक्ष—यहां से हिलता क्यों नहीं?

"तो क्या अब आप सीधे घर जाएंगे?" मैंने उससे पूछा।

"हां।"

अध्यक्ष ने अपने कंधे के ऊपर से एक नज़र डाली, जेब में से खींचकर पीले रंग का एक रूमाल निकाला, और एकदम साफ़-सुथरी अपनी मूंछों को उससे पोंछा। इसके बाद खिसककर वह मेरे और अधिक निकट आ गया।

"बात यह है कि आप जानो," उसने कहा, "आपके लड़कों ने कल एक... आप जानो, निरे लड़के ही तो हैं वे सब के सब... और मेरा लड़का भी उनमें मौजूद था। हां तो, मैंने कहा न, कि लड़के पिए हुए थे!"

"और आप के?"

अध्यक्ष कुछ अचकचाया।

"कहा न, मैं तो वहां मौजूद था नहीं," उसने दोहराया। "बेशक, कल रविवार का दिन था। लेकिन छोड़िये, इसके लिए मैं नहीं आया। आपके वे... वे भी तो अभी लड़के ही हैं। मैं कोई शिकायत नहीं करता... ख़ाली एक झड़प थी, न कोई मरा, न घायल हुआ। या शायद आपके लड़कों में से?.." अचकचाहट के साथ अन्त में उसने कहा।

"अपने लड़को से अभी मेरी कोई बातचीत नहीं हुई।"

"कह नहीं सकता... सुना है कि दो या तीन गोलियां चलीं। हो सकता है कि भागते समय–आपके लड़के, आप जानो, पूरे अगियाबैताल हैं, और हमारे देहाती लड़के, आप जानो, मोर्चा लेने में कुछ ऐसे तेज़ नहीं हैं... ही-ही!"

बुढ़ऊ हंसा, अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए, बहुत ही प्यारे और मित्रतापूर्ण अन्दाज़ में... ऐसे बड़े-बूढ़े हमेशा सबके 'दादा' कहलाते हैं। उसकी ओर देखते हुए मैं भी हंसे बिना न रह सका, लेकिन मेरे भीतर पूरी बवण्डर मचा हुआ था।

"सो आपकी समझ में कोई ऐसी ख़ास बात नहीं हुई–वे लड़े, मेल भी कर लेंगे," मैंने सुझाया।

"बिलकुल, बिलकुल, वे मेल भी कर लेंगे। अपनी युवावस्था में मैं भी जान तोड़कर लड़कियों के पीछे लड़ बैठता था। मेरे भाई याकोव की तो अन्य लड़कों ने मार-मारकर जान ही निकाल ली। सो आप अपने लड़कों को बुलाकर ज़रा दो-चार सुना देना, जिससे वे आगे ऐसा न करें।"

मैं बाहर पोर्च में निकल आया।

"उन सब लड़कों को बुलाओ जो पिछली रात पिरोगोव्का पहुंचे थे!"

"कहां हैं वे?" एक तेज़-तर्रार छोटे लड़के ने पूछा जो जाने अपनी किस अत्यन्त जरूरी धुन में अहाते में से गुज़र रहा था।

"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि पिछली रात पिरोगोव्का में कौन-कौन थे?"

"आप भी कैसे चतुर हैं... अच्छा मैं जाकर बुरून को बुलाऊंगा।"

"तो बुरून को बुला दो।"

बुरून पोर्च में आया।

"क्या ओसाद्ची कोलोनी में है?" मैंने पूछा।

"हां, है। बढ़ईघर में काम कर रहा है।"

"तो उससे जाकर कहना—कल हमारे लड़कों ने पिरोगोव्का में नशे में शैतानी की और यह एक बहुत ही गम्भीर मामला है।"

"हां, वे इस बारे में कुछ कह तो रहे थे।"

"तब ठीक है। ओसाद्‌ची से बस यह कहना कि वे सब के सब मेरे पास चले आएं, अध्यक्ष यहां आए हुए हैं। और देखो, कोई गड़बड़ न होने पाए, नहीं तो नतीजा बुरा होगा।"

मेरा दफ़्तर पिरोगोव्का के 'वीरों' से भर गया—ओसाद्‌ची, प्रीख़ोद्‌को, चोबोत, ओप्रिश्को, गलातेन्को, गोलोस, सोरोका और कुछ अन्य जिनके नाम मेरी स्मृति से ओझल हो गए हैं। ओसाद्‌ची एकदम स्थिर-चित्त मालूम होता था, जैसे हमारे बीच कोई ग़लत चीज़ हुई न हो, और मैं यह चाहता नहीं था कि बाहरी लोगों के सामने पुरानी चीज़ों को कुरेदा जाए।

"कल तुम पिरोगोव्का में थे, तुम पिए हुए थे और तुमने घरों में हुड़दंग मचाया। लोगों ने तुम्हें रोकने की कोशिश की, और तुमने गांव के लड़कों को मारा, ग्राम-सोवियत में तोड़-फोड़ की। क्यों ठीक है न?"

"ठीक ऐसा तो नहीं जैसा कि आप कहते हैं," ओसाद्‌ची ने अपने आप कहना शुरू किया। "यह सच है कि साथी पिरोगोव्का में थे, और मैं वहां तीन दिन से था, लेकिन मैं, आप जानो... हम पिए हुए नहीं थे। यह बात सच नहीं है। उनके पनास और हमारे सोरोका कुछ ज़्यादा 'टेंट' हो गये थे... कुछ ही ज़्यादा, आप जानो। गोलोस को दोस्तों ने रंग-पानी कराया था, बाक़ी हम सब बिलकुल खुस्कैट थे, सूखी हड्डी की भांति। हमने किसी के साथ झगड़े की कोई शुरुआत नहीं की, सब की भांति हम केवल मटरगश्ती करते रहे। तभी कोई उपद्रवी—शायद ख़रचेन्को था वह—मेरे पास आया और चिल्लाकर बोला—"हाथ ऊपर करो।" और उसने बन्दूक़ मेरी ओर तान ली। और तभी, यह सच है, मैंने उसका जबड़ा ढीला कर दिया। इस तरह वह सब शुरू हुआ। व हमसे खार खाए थे, इसलिए कि लड़कियां हमारे साथ जाना ज़्यादा पसंद करती थीं।

"'वह सब' क्या जो शुरू हुआ?"

"ओह, सो कुछ नहीं। यों ही थोड़ी ले-दे। अगर वे गोलियां न चलाते तो कुछ न होता। लेकिन पनास ने गोली दाग़ दी, और ख़रचेन्को ने भी,

सो हमने उन्हें खदेड़ना शुरू किया। हम उन्हें मारना नहीं चाहते थे,– केवल उनकी बन्दूक़ें छीनना चाहते थे–और उन्होंने भीतर घुसकर दरवाज़े बन्द कर लिए। प्रीख़ोद्को–आप तो जानते ही हैं कि वह क्या बला है–वह उठा और... "

"छोड़ो वह सब। यह बताओ कि बन्दूक़ें कहां हैं? और कितनी तुम्हारे हाथ लगीं?"

"दो।"

ओसाद्ची ने सोरोका की ओर देखा।

"जाओ, उन्हें लेकर आओ!" मैंने आदेश दिया।

बन्दूक़ें लाई गईं। मैंने लड़कों को वर्कशापों में वापस भेज दिया। अध्यक्ष बन्दूक़ों के इर्द-गिर्द घूम रहा था।

"तो मैं इन्हें ले जा सकता हूं?"

"ओह, नहीं। तुम्हारे लड़के को बन्दूक़ रखने का कोई अधिकार नहीं है। न ही ख़ेरचेन्को को है। और उन्हें आपको लौटाने का मुझे भी कोई अधिकार नहीं है।"

"नहीं-नहीं, मुझे उनको लेकर क्या करना? रहने दीजिए, उन्हें यहीं रखिए, संभव है कि जंगल में उनकी ज़रूरत पड़े, चोरों को दूर भगाने के लिए... मैं तो आपसे केवल इतना ही कहना चाहता था कि इस सारे मामले को ज़्यादा तूल न दें... लड़के ही रहेंगे, आप जानो..."

" मतलब यह कि आप नहीं चाहते कि मैं मामले की रिपोर्ट करूं..."

"हां-हां, आप जानो..."

मैं हंसा।

"भला, मैं क्यों रिपोर्ट करूंगा। हम पड़ोसी जो ठहरे, क्यों, ठीक है न?"

"वही तो!" वृद्ध ने ख़ुशी से चहकते हुए कहा, "हम पड़ोसी हैं। यह सब तो चलता ही रहता है। अगर ज़रा-ज़रा-सी बातों की अधिकारियों से रिपोर्ट करने लगे तो..."

अध्यक्ष विदा हुआ और खुलकर मैंने सांस ली।

इस मामले को मुझे शिक्षा की पूंजी के रूप में काम में लाना चाहिए था। लेकिन लड़के और मैं दोनों ने यह देखकर कि हर चीज़ सन्तोष के साथ निबट गई, कुछ इतना हल्कापन अनुभव किया कि इस बार सीख

देने की बात को मैंने ताक़ पर रख दिया। मैंने किसी को सज़ा नहीं दी, केवल उनसे इतना ही वचन लिया कि विना मेरी अनुमति के अब वे फिर कभी पिरोगोव्का नहीं जाएंगे और गांव के लड़कों से मित्रतापूर्ण सम्बध बनाने का प्रयत्न करेंगे।

१५. कामदेव का हमारा अवतार

१६२२ के जाड़ों तक हमारी कोलोनी में लड़कियों की संख्या बढ़कर छः तक पहुंच गई। ओल्या वोरोनोवा अपने सपाटपन को पीछे छोड़ अब एक काफ़ी सुन्दर लड़की वन गई थी। लड़के सच्चे दिल से उसकी ओर ध्यान देने लगे थे, लेकिन ओल्या भी उतनी ही भले स्वभाव की थी और अपने को उन सबसे अछूता रखती थी। उनमें उसका एकमात्र मित्र बुरून था। भीमकाय बुरून से सुरक्षित ओल्या कोलोनी में किसी से नहीं डरती थी, यहां तक कि वह प्रीख़ोद्को के मजनूंपन को भी—जो कि कोलोनी में सबसे ज़्यादा मज़बूत, सबसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ लड़का था—आंखों की ओट कर सकती थी। बुरून ओल्या के प्रेम में नहीं पगा था; बल्कि उसके और ओल्या के बीच एक स्वस्थ, युवा-सुलभ मित्रता क़ायम थी, जिसने कोलोनी में उन दोनों के मान में भारी वृद्धि कर दी थी। अपनी सुन्दरता के बावजूद, किसी रूप में भी, ओल्या अपने को कुछ ख़ास उभारकर नहीं रखती थी। धरती से उसे प्यार था। खेतों में काम करना, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, उसे संगीत की भांति आकर्षक मालूम होता था। वह अपने बारे में कहा करती थी: "जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तो किसी किसान से शादी करूंगी, सच, इसमें शक नहीं!"

लड़कियों में सबकी अगुआ नास्त्या नोचेवनाया थी। दस्तावेज़ों के एक भीमाकार पुलिन्दे के साथ उसे कोलोनी में भेजा गया था। इन दस्तावेज़ों में दुनिया-भर की बातें उसके बारे में अंकित थीं—यह कि वह चोरी करती थी, चोरी का माल जमा करती थी, चोरों के एक अड्डे का संचालन करती थी। और हमारे लिए तो जैसे वह एक चमत्कार थी—असाधारण रूप में मोहक और सुसम्बद्ध। हालांकि वह मुश्किल से पन्द्रह साल की ही थी। फिर भी उसका राजसी ठाठ, उसका गोरा-चिट्टा रंग, उसके सिर का गर्वीला अन्दाज़ और उसके चरित्र की दृढ़ता देखते ही बनती थी।

ज़रूरत पड़ने पर वह अन्य लड़कियों को झिड़कना जानती थी, और बिना किसी आक्षेप या कर्कशता के, किसी भी लड़के को अपनी एक ही नज़र तथा संक्षिप्त किन्तु कारगर डपट से शान्त कर सकती थी।

"यह क्या हरकत है कि रोटी को तुम कुतरते और फिर फेंक देते हो? क्या कहीं की रियासत हाथ लग गई है या कहीं सूअरों से यह पाठ लेकर आए हो? उठाओ इसे, अभी फ़ौरन!" अपनी गहरी, गले-दार आवाज़ में नियंत्रित शक्ति का आभास देते हुए वह कहती।

नास्त्या महिला-शिक्षकों से मैत्री रखती थी, बहुत पढ़ती थी और बिना इधर-उधर हुए उस लक्ष्य की ओर वह बढ़ रही थी जो कि उसने अपने लिए–और उन अन्य सबके लिए भी जो उसकी भांति महत्वाकांक्षी थे–निर्धारित कर लिया था,–रबफ़ाक* की ओर। लेकिन नास्त्या के लिए कराबानोव, वेर्शनेव, ज़दोरोव, वेत्कोवस्की–रबफ़ाक अभी बहुत दूर की चीज़ था। हमारे पंछी अभी बहुत पिछड़े थे, और अंकगणित तथा पोलित-ग्रामोता–प्रारम्भिक राजनीतिक-नागरिक शास्त्र–की पेचीदगियों को हज़म करने में भारी कठिनाई का अनुभव करते थे। रईसा सोकोलोवा उन में सबसे आगे थी जिसे, १९३१ के शरद् में रबफ़ाक में अध्ययन करने के लिए हमने भेज दिया था।

हम अपने दिलों में जानते थे कि निराशा के सिवा और कुछ इसमें हमारे पल्ले पड़नेवाला नहीं है। लेकिन हमारी शिक्षक महिलाओं को इस बात की धुन सवार थी कि कोलोनी में रबफ़ाक की एकाध छात्रा होनी चाहिए। यों आकांक्षा यह सराहनीय थी, लेकिन रईसा इतने शुभ लक्ष्य के लिए कोई ख़ास उपयुक्त पात्रा नहीं थीं। समूची गर्मियों-भर वह रबफ़ाक प्रवेशिका परीक्षा के लिए तैयारी करती रही, लेकिन किताबों में सिर खपाने के लिए उसे बलपूर्वक खदेड़ा जाता था। कारण, ख़ुद रईसा का जहां

---

*रबफ़ाक–मज़दूर शिक्षण-संस्था का संक्षिप्त रूसी नाम। सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षों में श्रमजीवी जनता के बीच से एक नया बुद्धिजीवी समुदाय तैयार करने के उद्देश्य से सोवियत सरकार ने साधारण स्कूलों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ तथाकथित मज़दूर शिक्षण-संस्थाएं भी खोली थीं जो उच्च शिक्षा-संस्थाओं से सम्बन्धित रहती थीं और उनके लिए, ख़ास तौर पर, मज़दूरों-किसानों को तैयार करती थीं। सं०

तक सम्बन्ध था, अपने आप में वह किसी भी प्रकार की शिक्षा के लिए लालायित नहीं थी।

ज़दोरोव, वेर्शनेव, करावानोव–ये सब अध्ययन के प्रति रुचि रखते थे–इस बात से अत्यन्त नाराज़ हुए कि रईसा को बढ़ावा देकर छात्रा के पद पर पहुंचाया जा रहा है। वेर्शनेव जो दिन-रात पढ़ने की अपनी क्षमता के लिए प्रसिद्ध था और जो, उस समय भी जबकि वह लोहारघर में धौंकनी धौंकता होता था, अपनी न्यायप्रियता तथा सच की खोज़ का दामन नहीं छोड़ता था, रईसा के उज्ज्वल भविष्य का नाम लेते ही विक्षोभ से भर जाता था।

"क्या आप इतना भी नहीं देख सकते," हकलाते हुए वह कहता, "कि चाहे जो आप करें, रईसा का अन्त जेल में होगा।"

करावानोव और भी ज़्यादा निश्चयात्मकता के साथ अपने आपको व्यक्त करता था।

"मैं यह कभी सोच तक नहीं सकता था कि आप इतनी ग़ैर-ज़िम्मेदारी का काम भी कर सकते हैं?"

ज़दोरोव रईसा की उपस्थिति से ज़रा भी न अचकचाते हुए अपेक्षा से मुसकराता और जुगुप्सा भरे अंगसंचालन के साथ कहता:

"ऊंह, रबफ़ाक की छात्रा! मानो सूअरी के कान की खाल से रेशमी बटुवा तैयार किया जा सकता है!"

रईसा इन सारी फ़ब्तियों का निस्तेज बनावटी मुसकान में जवाब देती। उसकी ज़रा भी इच्छा नहीं थी कि वह रबफ़ाक में दाख़िल हो, लेकिन वह अब सन्तुष्ट थी, और कीएव जाने का ख़याल उसे सुखद मालूम होता था।

मैं लड़कों से सहमत था। बेशक, रईसा भला क्या ख़ाक छात्रा बन सकती थी? इस समय भी, जबकि वह रबफ़ाक के लिए अध्ययन कर रही थी, शहर से रहस्य भरे पुर्जे उसके पास आते थे, और नज़र बचाकर जब-तब वह कोलोनी से खिसक जाती थी। उतने ही रहस्यमय ढंग से कोर्नीयेव उससे मिलने आता था। वह एक लड़का था जो कोलोनी में केवल तीन सप्ताह रहा था, और इसी दौरान उसने इरादतन और नियमपूर्वक हमें लूटा और इसके बाद शहर में चोरी के एक मामले में फंस गया–एकदम आवारा, एक ख़ुफ़िया विभाग से दूसरे विभाग की धूल चा-

टनेवाला, पूरी तरह पतित ग्रौर घिनौना जीव, उन गिने-चुने लोगों में से एक, जिन्हें पहली नज़र में ही मैंने पहचान लिया था कि वह लाइलाज है।

रईसा ने रबफ़ाक में दाख़िले की परीक्षा पास कर ली। लेकिन इसके सप्ताह-भर बाद ही हमें एक सनसनीपूर्ण समाचार प्राप्त हुग्रा। इस या उस स्रोत से हमें पता चला कि कोर्नीयेव भी कीयेव के लिए रवाना हो गया है।

"ग्रब सचमुच वह वहां से डिग्री लेकर ग्राएगी!" ज़दोरोव ने कहा।

जाड़े बीत गए। रईसा के पत्र जब-तब ग्राते रहते थे, लेकिन उसके पत्रों से कुछ पल्ले नहीं पड़ता था। कभी ऐसा मालूम होता कि सब कुछ शान से चल रहा है, कभी उसे ग्रपनी पढ़ाई ग्रत्यन्त कठिन मालूम होने लगती, ग्रौर पैसों की तंगी तो उसे हमेशा रहती थी, हालांकि उसे वज़ी-फ़ा मिलता था। हर महीने हम उसे बीस या तीस रूबल भेजते थे। ज़दो-रोव एलानिया कहता कि इस धन पर कोर्नीयेव मज़े से मौज करता है, ग्रौर वह बात शायद सच से ज़्यादा दूर नहीं थी। कीयेव योजना के चालू करने में जिन शिक्षिकाग्रों ने तत्परता दिखाई थी, उन्हें बेरहमी के साथ कचोटा जाता:

"हर किसी को यह दिखाई देता था कि इससे कुछ भला नहीं होगा, सिवा तुम्हारे! यह कैसे हुग्रा कि हम तो इसे देख सके, लेकिन तुम नहीं।"

जनवरी में ग्रप्रत्याशित रूप में रईसा कोलोनी में लौट ग्राई, बोरिया-बिस्तरे के साथ। बोली, छुट्टियों में घर ग्राने की उसे इजाज़त मिली है। लेकिन उसके पास ऐसे कोई काग़ज़ नहीं थे जिनसे इसकी पुष्टि होती, ग्रौर उसके रंग-ढ़ंग से यह साफ़ पता चलता था कि कीयेव लौटने का ग्रब उसका क़तई इरादा नहीं है। पूछ-ताछ करने पर जवाब में कीएव रबफ़ाक ने मुझे सूचित किया कि रईसा सोकोलोवा ने संस्था में हाज़िर होना बंद कर दिया था ग्रौर छात्रालय से न जाने कहां चली गई थी।

ग्रब हर चीज़ साफ़ थी। लड़कों को इस बात का श्रेय देना चाहिए कि उन्होंने न तो रईसा को चिढ़ाया, न ही उसकी विफलता पर उसे ताने मारे। ऐसा मालूम होता था जैसे इस सारी मुहिम को उन्होंने ग्रपने दि-माग़ से निकाल दिया हो। उसके ग्रागमन के पहले कुछ दिनों के दौरान उन्होंने येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की – जो पहले से ही काफ़ी हत्प्रभ थी –

निरन्तर खिल्ली उड़ानी शुरू की, लेकिन कुल मिलाकर जो कुछ हुआ था उसे वे कोई असाधारण घटना नहीं समझते थे,—ऐसी जिसे वे पहले से ही बराबर न देखते आ रहे हों।

मार्च में नटालिया मारकोवना ओसिपोवा ने मुझे परेशान करनेवाले अपने इस सन्देह की सूचना दी कि रईसा गर्भवती होने के कुछ चिन्ह प्रकट कर रही है।

मेरा रक्त ठण्डा पड़ चला। बाल-अपराधियों की कोलोनी की लड़की सदस्यों में एक गर्भवती होने का पता लगना! हमारी कोलोनी के अग़ल-बग़ल में—शहर और सार्वजनिक शिक्षा के विभाग में—उच्च-पदासीन नैतिकता के ऐसे ठेकेदारों के अस्तित्व से मैं ख़ूब परिचित था जो चिल्ल-पों मचाने के अवसर की हर घड़ी ताक़ में रहते हैं: बाप रे, बाल-आपराधियों की कोलोनी में यह लैंगिक भ्रष्टाचार! लड़के लड़कियों के साथ रहते हैं। कोलोनी के वातावरण और अपनी एक छात्रा के रूप में रईसा की स्थिति—दोनों से मैं आशंकित था। मैंने नटालिया मारकोवना से कहा कि वह रईसा से 'हृदय खोलकर' बातें करे।

रईसा ने एकदम इनकार कर दिया कि वह गर्भवती है, उसने विक्षोभ तक प्रकट किया।

"नहीं, ऐसा क़तई कुछ नहीं!" उसने चीख़कर कहा, "यह वहशीपन किस दिमाग़ की उपज है? और कुत्सा-प्रचार में योग देने का काम शिक्षकों ने कब से अपनाया है?"

बेचारी नटालिया मारकोवना को सचमुच ऐसा लगा जैसे उसने ग़लती की हो। रईसा बहुत मोटी थी। जो चीज़ प्रत्यक्षत: गर्भ मालूम होती थी, वह उसका अस्वस्थ मोटापा भी हो सकता था, इसलिए और भी अधिक कि वास्तव में अन्य कोई निश्चित बाह्य चिन्हों का वहां अभाव था। हमने निश्चय किया कि रईसा की बात पर यक़ीन करना चाहिए।

लेकिन एक सप्ताह बाद सांझ के समय ज़दोरोव ने मुझे अहाते में बुलाया, निजी बातचीत करने के लिए।

"यह तो आपको मालूम है न कि रईसा गर्भवती है?"

"क्यों, यह तुम ने कैसे जाना?"

"आप भी अजीब हैं! क्या आप कहना चाहते हैं कि आपको ऐसा

कुछ नहीं दिखाई देता? हर कोई जानता है सो मैंने सोचा कि आप भी जानते होंगे?"

"अच्छी बात है, मान लो कि वह गर्भवती है। तो फिर?"

"फिर क्या—कुछ नहीं! लेकिन वह बनती क्यों है कि ऐसा नहीं है? जब वह गर्भवती है तो इस बात की कोशिश और ऐसा व्यवहार क्यों करती है जैसे कुछ हुआ ही न हो? यह देखिए, कोर्नीयेव का एक पत्र यहां मौजूद है! ज़रा देखिए—'मेरी गुड़िया रानी।' हम बहुत पहले ही यह सब जानते थे।"

शिक्षक भी चिन्ता के अधिकाधिक चिन्ह प्रकट करने लगे। और इस समूचे व्यापार ने मुझे चिड़चिड़ा बना दिया!

"तो यह सारा हल्ला-गुल्ला किस लिए? अगर वह गर्भवती है, तो वह बच्चे को जन्म देगी। गर्भ को छिपाया जा सकता है, लेकिन जन्म को नहीं। यह कोई ऐसी आफ़त नहीं है—बच्चा जन्म लेगा, और बस।"

रईसा को अपने कमरे में बुलाते हुए मैंने उससे पूछा:

"सच-सच बताओ, रईसा, क्या तुम गर्भवती हो?"

"जाने क्यों सब मेरे पीछे पड़े हैं? शर्म भी नहीं आती, भेड़ों की भांति बर्राते हुए! गर्भवती! गर्भवती! गर्भवती! सो मैं एकबारगी और हमेशा के लिए आपसे कहती हूं—मैं गर्भवती नहीं हूं।"

रईसा की आंखों से आंसू फूट पड़े।

"देखो, रईसा," मैंने कहा, "अगर तुम गर्भवती हो, तो तुम्हें इसे छिपाने और ऐसी कोशिश करने की ज़रूरत नहीं। हम तुम्हें कोई काम दिलाने में मदद करेंगे, हो सकता है कि ठीक यहीं, इसी कोलोनी में, और धन से भी हम तुम्हारी मदद करेंगे। बच्चे के लिए हर चीज़ की तैयारी करनी होगी, छोटे कपड़े बनवाने होंगे, और भी सब कुछ करना होगा..."

"नहीं, यह सब कुछ नहीं! मुझे कोई काम नहीं चाहिए, मुझे कोई काम नहीं चाहिए, मुझे अपने हाल पर छोड़ दें।"

"अच्छी बात है, तुम जा सकती हो!"

हम कोलोनी में निश्चित रूप से कुछ नहीं जान सके। डाक्टरी जांच के लिए उसे भेजा जा सकता था, लेकिन इस नुक़्ते पर शिक्षक-वर्ग में मतभेद था। कुछ मामले के तुरन्त स्पष्टीकरण के पक्ष में थे और दूसरे

मेरी इस बात से सहमत थे कि इस तरह की जांच एक युवा लड़की के लिए अत्यन्त अप्रिय तथा अशोभनीय होगी और यह कि अन्ततः इसकी ऐसी कोई ज़रूरत भी नहीं है, जल्दी या देर में सम्पूर्ण सत्य प्रकट हो ही जाएगा, उतावली करना ठीक नहीं। अगर रईसा गर्भवती है तो ऐसा हुए पांच महीने से ज्यादा नहीं हुए होंगे। उसे ज़रा स्थिर और अपनी इस स्थिति से अभ्यस्त हो जाने दो, तब तक कुछ भी छिपाकर रखना कठिन हो जाएगा।

रईसा को फिर किसी ने नहीं छेड़ा।

पन्द्रह अप्रैल को शहर के थियेटर में शिक्षकों की एक बड़ी कान्फ्रेन्स हुई। उसके उद्घाटन समारोह में अनुशासन पर मैंने एक भाषण दिया। पहली बैठक में ही मैंने अपना भाषण सम्पूर्ण कर दिया था, लेकिन मेरे बयानों ने कुछ इतनी गर्म बहसों को जन्म दिया कि उस पर विचार करना अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। क़रीब-क़रीब हमारा समूचा शिक्षक-दल तथा कितने ही पुराने छात्र समारोह में शामिल हुए थे, और रात को हमें वहीं, शहर में ही, रहना पड़ा था।

तब तक हमारी कोलोनी में दिलचस्पी का क्षेत्र हमारे जिले की सीमाओं को पार कर चुका था। अगले दिन थियेटर में इतनी भीड़ थी कि तिल रखने की भी जगह नहीं थी। अन्य कतिपय सवालों के साथ-साथ सह-शिक्षा का सवाल भी मुझसे पूछा गया। उन दिनों बाल अपराधियों की कोलोनियों में सहशिक्षा क़ानून से निषेद्ध था, और समूचे देश में एक हमारी कोलोनी ही ऐसी थी जिसमें परीक्षण किया जा रहा था।

सवालों का जवाब देते समय अनायास ही रईसा का ख़याल मेरे दिमाग़ में आया, लेकिन मुझे लगा कि उसके गर्भवती होने या न होने का सहशिक्षा के सवाल से कोई वास्ता नहीं है। मैंने सभा को आश्वासन दिलाया कि इस मामले में कोलोनी में सब ठीक है।

अवकाश के दौरान ड्योढ़ी में मुझे बुलाया गया। वहां हांफते हुए ब्रातचेन्को से मैं जा टकराया—वह अत्यन्त उतावली में शहर आया था, और किसी भी शिक्षक को यह बताने से इनकार कर दिया था कि मामला क्या है।

"कोलोनी में गड़बड़ है, अन्तोन सेम्योनोविच," उसने कहा "लड़कियों के शयनागार में एक मृत शिशु, पाया गया है।"

"एक मृत शिशु?"

"हां, मृत। एकदम मृत! रईसा की पिटारी में। लेन्का फ़र्श धो रही थी। संयोग से पिटारी में उसने देखा, शायद वह कुछ लेना चाहती थी। और वहां एक मृत शिशु उसे दिखाई दिया!"

"क्या बकवास है यह सब!"

हमारे हृदयों की जो उस समय हालत हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जीवन में पहले कभी मैं इतना भयाक्रांत नहीं हुआ था। शि-क्षक-महिलाएं एकदम फक और रोती हुई जैसे-तैसे थियेटर से बाहर आईं और एक घोड़ागाड़ी में कोलोनी लौट गईं। मैं नहीं जा सका। मुझे अभी उन मामलों को निपटाना था जिन्हें मेरे भाषण ने उकसा दिया था।

"बच्चा अब कहां है?" मैंने अन्तोन से पूछा।

"इवान इवानोविच ने उसे शयनागार में ताले में बंद कर दिया है।"

"और रईसा?"

"रईसा दफ़्तर में बैठी है। साथी उसकी चौकसी कर रहे हैं।"

मैंने अन्तोन को मृत शिशु के पाए जाने के सम्बन्ध में एक हलफ़नामे के साथ मिलीशिया भेज दिया और अनुशासन के विषय पर बहस को जारी रखने के लिए ख़ुद वहीं बना रहा।

मैं केवल सांझ को ही कोलोनी लौट सका। रईसा मेरे दफ़्तर में लक-ड़ी की बेंच पर बैठी थी, अस्त-व्यस्त और एप्रिन में, जिसे पहने हुए वह धोबीघर (लाण्ड्री) में काम कर रही थी। जब मैं भीतर दाख़िल हुआ तो उसने मेरी ओर नहीं देखा, बल्कि उसने अपने सिर को और भी नीचे गड़ा लिया। उसके पास ही बेंच पर वेर्शनेव बैठा था, किताबों से घिरा हुआ—प्रत्यक्षत: वह किसी हवाले की खोज कर रहा था: एक के बाद एक तेज़ी के साथ वह जिल्दों के पन्ने पलट रहा था और दीन-दुनिया से बिलकुल बेख़बर था।

मैंने शयनागार के दरवाज़े का ताला खोलने का आदेश दिया, और कहा कि लाशवाली पिटारी को वहां से हटाकर वस्त्रागार में पहुंचा दिया जाए। रात के समय सब के सोने के लिए चले जाने पर मैंने रईसा से पूछा:

"तुमने ऐसा क्यों किया?"

रईसा ने अपना सिर उठाया और सूनी—क़रीब-क़रीब अमानवीय—नज़र से मेरी ओर देखा और अपने घुटनों पर से एप्रिन को ठीक किया।

"मैंने किया, और बस, कुछ और कहने की ज़रूरत नहीं।"

"मेरा कहा तुमने नहीं माना—क्यों?"

अचानक वह फफक-फफककर रोने लगी।

"मैं नहीं जानती।"

मैंने उसे अपने दफ़्तर में रात बिताने के लिए छोड़ दिया। वेर्शनेव चौकसी के लिए था ही। पुस्तकें पढ़ने के प्रति उसका अनुराग इस बात की श्रेष्ठतम गारंटी था कि वह जागता रहेगा। हम सभी को डर था कि कहीं रईसा अपनी जान लेने का प्रयत्न न कर बैठे।

अगली सुबह जाँच-कर्त्ता आ गया। लेकिन उसकी जाँच जल्दी ही निबट गई—वहां था ही कौन जिससे पूछ-ताछ करने की ज़रूरत होती। रईसा ने बेलाग यथातथ्यता के साथ अपने अपराध का वर्णन किया। रात को उसने अपने बच्चे को जन्म दिया था, ठीक वहीं शयनागार में ही, जहां पांच अन्य लड़कियां सो रही थीं। उनमें से एक की भी नींद नहीं उचटी। सरलतम शब्दों में रईसा ने इसका भेद बताया: "मैंने कोशिश की कि मुंह से कराह तक न प्रकट हो।"

जन्म के तुरन्त बाद ही उसने शिशु का अपनी शाल से गला घोंट दिया। इस बात से इनकार किया कि हत्या के बारे में वह पहले से तय कर चुकी थी।

"मैं उसे मारना नहीं चाहती थी, लेकिन वह चीख़ने लगा।"

लाश को उसने अपनी उस पिटारी में छिपा दिया जिसे वह अपने साथ रबफ़ाक ले गई थी। उसने सोचा था कि अगली रात वह उसे बाहर निकाल लेगी और जंगल में छोड़ आएगी। उसने सोचा कि लोमड़ियां उसे चट कर जाएंगी, और किसी को कुछ मालूम नहीं पड़ेगा। अगली सुबह वह लाण्ड्री में काम करने गई जहां अन्य लड़कियां अपनी चादरें धो रही थीं। और दिनों की भांति नाश्ता भी अन्य सबके साथ ही उसने किया। केवल कुछ लड़कों को ही इसका आभास हो सका कि वह काफ़ी उदास है।

जाँच-कर्त्ता रईसा को अपने साथ ले गया और उसने आदेश दिया कि लाश को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल के मुर्दाघर में भेज दिया जाए।

इस समूचे काण्ड ने शिक्षकों के मनोबल को पूर्णतया पस्त कर दिया। उन्हें लगा कि कोलोनी के अन्तिम दिन आ पहुंचे हैं।

लड़के भी थोड़ा-बहुत विचलित स्थिति में थे। लड़कियां अंधेरे से और ख़ुद अपने शयनागार से डरती थीं। चाहे कुछ भी क्यों न हो बिना लड़कों के, वहां टिकने के लिए वे तैयार नहीं थीं। कई रात तक ज़दोरोव और करावानोव शयनागार की चौकसी करते रहे। लेकिन न तो लड़कियों की ही आंख लगी, न लड़कों की, यहां तक कि उन्होंने कपड़े तक नहीं उतारे। इन दिनों लड़कियों को डराना लड़कों का प्रिय धंधा था—चादर लपेटे अचानक लड़कियों की खिड़कियों के नीचे प्रकट होना, भट्टियों की दरारों में भयानक वाद्यों का संयोजन करना, या रईसा के बिस्तरे के नीचे छिप जाना—और रात होने पर अपने गले की समूची शक्ति से शिशु के रोने की नक़ल उतारना!

जहां तक हत्या का अपने आप में सम्बन्ध था, लड़के इसे एक पूर्णतया सरल घटना समझते थे। इसी के साथ-साथ वे रईसा के इरादे के बारे में शिक्षकों से असहमत थे। शिक्षकों को इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं था कि कुमारी-सुलभ लज्जा के अतिरेक में रईसा ने शिशु की जान ली थी,—तनाव से चूर उसकी स्थिति, सोती हुई लड़कियां अचानक बच्चे का रोने लगना... वह आतंकित हो उठी कि इससे उसकी संगी-साथिनें जाग पड़ेंगी!

जब ज़दोरोव अति-मनोवैज्ञानिक मस्तिष्कवाले शिक्षकों की इन व्याख्याओं को सुना तो हँसते-हँसते उसके पेट में बल पड़ गये।

"क्या बेकार की बातें करते हैं आप भी!" उसने चहकते हुए कहा, "कुमारी-सुलभ लज्जा, वाह! उसने पहले से ही यह सारी योजना बना रखी थी और इसीलिए वह यह स्वीकार नहीं करती थी कि वह जल्दी ही मां बनने जा रही है! कोर्नीयेव के साथ मिलकर उसने पहले ही सारी योजना बना ली थी... उसे पिटारी में छिपा रखना और जंगल में छोड़ आना। अगर उसने लज्जा के कारण यह किया होता तो क्या इतनी शान्ति के साथ वह अगली सुबह काम पर आ सकती थी अगर मेरा वश चलता तो कल ही रईसा की बच्ची को गोली से उड़ा देता। वह तो कीड़ा है और ज़िन्दगी-भर कीड़ा ही रहेगी। और आप हैं कि कुमारी-सुलभ लज्जा की बात कर रहे हैं—एक ऐसी चीज़ की जो जीवन में कभी उसके पास नहीं रही!"

"अच्छा तो फिर उसकी मंशा क्या थी? क्यों उसने ऐसा किया?" शिक्षकों ने हताशा से पूछा।

"उसकी मंशा बहुत ही सीधा-सादा थी! बच्चे को लेकर वह क्या करती? उसकी देख-भाल करो, उसका पेट भरो और भी दुनिया-भर के खटराग करो! भला क्या करते वे बच्चे को लेकर—ख़ास तौर से कोर्नीयेव!"

"अरे नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"नहीं हो सकता? क्या चमचिच्चड़पन है! बेशक, रईसा कभी स्वीकार नहीं करेगी, लेकिन मैं पक्की तौर से जानता हूं, अगर क़ायदे से काम लिया जाता तो और भी बहुत-सी बातें प्रकट होतीं..."

अन्या लड़के ज़दोरोव से पूर्णतः सहमत थे। करावानोव को पक्का विश्वास था कि रईसा ने पहली बार ही यह 'खेल' नहीं खेला है, कोलोनी में आने से पहले भी वह इस तरह की हरकतें कर चुकी है।

हत्या के बाद तीसरे दिन करावानोव बच्चे की लाश को अस्पताल ले गया। वह जब लौटा तो उछाह से छलछला रहा था।

"ओह, क्या कुछ मैंने वहां नहीं देखा! कांच के बरतनों में बच्चों की दुनिया-भर की क़िस्में—बीस... तीस... उनमें से कुछ के बड़े भयानक—ऐसे-ऐसे सिर! और एक तो अपनी टांगों को एकदम दोहरी किए था,—बिलकुल पता नहीं चलता था कि यह मानव-जीव है या मेंढक! हमारा वैसा नहीं था! उनके मुक़ाबले तो हमारा शिशु कामदेव का अवतार था!"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने झिड़की के अन्दाज़ में सिर हिलाया, लेकिन वह भी अपनी मुस्कान को छिपाए नहीं रख सकी।

"तुम्हारी ज़बान भी कटकर नहीं गिर पड़ती, सेम्योन! तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए।"

लड़के चारों ओर खड़े हंस रहे थे। शिक्षकों के उदास, ख़ार खाए-से चेहरों से वे ऊब चुके थे।

तीन महीने बाद रईसा को मुक़दमे में तलब किया गया। गोर्की कोलोनी की समूची अध्यापक-परिषद को अदालत में हाज़िर होने का सम्मन मिला। मनोविज्ञान और कुमारी-सुलभ लज्जा का सिद्धान्त अदालत में हावी रहा जज ने हमें झिड़का कि हम कोलोनी में सही वातावरण और सही

रवैया क़ायम नहीं कर सके। अपनी सफ़ाई में हम भला कहते भी तो
जज ने एकान्त में मुझे बुलाया और पूछा कि क्या मैं रईसा को कोलोनी में वापस लेने को तैयार हूं। मैंने 'हां' जवाब दिया।

रईसा को आठ साल प्रोबेशन में रहने की सज़ा मिली, और कोलोनी की निगरानी में रहने के लिए तुरन्त उसे सौंप दिया गया।

वह हमारे पास लौट आई, इस तरह जैसे कुछ हुआ ही न हो। अपने साथ किशमिशी रंग के जूतों की एक शानदार जोड़ी वह लाई थी। उन्हें पहने हुए सांझ की हमारी पार्टियों में वाल्ज़ नृत्य में फिरकी बनकर वह ऐसी चमकी कि लाण्ड्री में काम करनेवाली हमारी लड़कियों व पिरोगोव्का की युवतियों के हृदय बुरी तरह ईर्ष्या से जल उठे!

"अच्छा हो कि आप रईसा को कोलोनी से कहीं बाहर भेज दें," नास्त्या नोचेवनाया ने मुझे सलाह दी, "नहीं तो ख़ुद हमें यह करना पड़ेगा! उसके साथ एक कमरे में रहना घृणास्पद है।"

मैंने जल्दी ही बुनाई मिल में उसे एक काम दिला दिया।

शहर में जब-तब वह दिखाई पड़ जाती थी। इसके काफ़ी बाद, १६२८ में, जब मैं शहर गया तो एक भोजनालय के काउण्टर के पीछे रईसा को पहचानकर मैं चकित रह गया। पहले से अब वह काफ़ी मोटी हो गई थी, लेकिन साथ ही वह अधिक बलिष्ट भी मालूम होती थी, और उसके बदन की रेखाएं अब काफ़ी सुधर गई थीं।

"कहो, कैसे चल रहा है?" मैंने उससे पूछा।

"सब ठीक है। काउण्टर पर मैं काम करती हूं, घर में दो बच्चे और काफ़ी अच्छा पति है।"

"कोर्नीयेव!"

"अरे नहीं!" वह मुसकराई। "वह सब तो गई-बीती बात है। वह सड़क की एक लड़ाई में चाकू से मारा गया। और, अन्तोन सेम्योनोविच..."

"हां-हां, कहो न?"

"शुक्र है कि आपने मुझे गिरने से रोका। जब मैंने मिल में काम करना शुरू किया, तभी अपने अतीत को पीछे छोड़ दिया था।"

१६. गोबेर का शोरबा

वसन्त के दिनों में एक नयी मुसीबत का हमारे यहां आगमन हुआ—लाल-लचित्तीवाले बुख़ार का। कोस्त्या वेत्कोवस्की सबसे पहले बीमार पड़ा।

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना पहले किसी डाक्टरी संस्था में कुछ दिनों तक अध्ययन कर चुकी थी। वह उन दुर्लभ अवसरों पर देख-संभाल करती जब डाक्टर के बिना न तो हमारी गुज़र होती और न ही हम यह पूरी तरह निश्चय कर पाते कि डाक्टर को बुलाना ही चाहिए! दाद-खुजली के रोगों में वह कोलोनी की विशेषज्ञ थी, और कट जाने, जलने, तथा जाड़ों के दिनों में—हमारे लिलोही जूतों की बदौलत—उंगलियों-पंजों के पाला मार जाने के मामले में, प्राथमिक सहायता देने में दक्ष थी। ऐसा मालूम होता था जैसे हमारी कोलोनी के निवासियों की केवल इन्हीं रोगों से दोस्ती थी, —डाक्टरों और उनकी दवाइयों से दूर का भी वास्ता रखने की कभी कोई ज़रूरत हमें नहीं पड़ती थी।

दवाइयों की ओर अपने छात्रों की इस उपेक्षा के प्रति मैं हमेशा भारी सम्मान का अनुभव करता था और इस दिशा में बहुत कुछ मैंने उनसे सीखा था। सौ डिग्री तक के बुख़ार को कुछ न समझना मेरे लिए एकदम सहज-स्वाभाविक हो गया था, और अपनी सहनशीलता की शक्तियों का हम एक-दूसरे के सम्मुख प्रदर्शन करते थे। लेकिन सच पूछो तो यह रवैया, कमोबेश रूप में, हमारी मजबूरी का ही सूचक था। कारण डाक्टर हमारे यहां आने में अत्यन्त अन्यमनस्कता का परिचय देते थे।

हां तो जब कोस्त्या बीमार पड़ा और उसका तापमान क़रीब १०२ डिग्री तक जा पहुंचा, तब कोलोनी के इतिहास में हमें यह एक नयी घटना महसूस हुई। कोस्त्या को बिस्तरे पर लिटा दिया गया, जो कुछ हम कर सकते थे, वह सब हमने उसके लिए किया। सांझ होते ही उसके मित्र उसके बिस्तरे के इर्द-गिर्द जमा हो जाते, और चूंकि वह काफ़ी लोकप्रिय था, इसलिए हर सांझ उसके बिस्तरे के चारों ओर एक अच्छी-ख़ासी भीड़ जुट जाती। कोस्त्या संग-साथ से वंचित न रहे, या इस इच्छा से कि लड़के कहीं विचलित न हो उठें, सांझ का समय हम भी रोगी के बिस्तरे के पास ही बिताते।

तीन दिन बाद भारी भय के साथ अपने सन्देह से येकातेरिना ग्रिगो-

रियेवना ने मुझे सूचित किया कि यह तो लालचित्तीवाले बुख़ार की भांति मालूम होता है। मैंने निषेध किया कि अन्य लड़के उसके बिस्तरे के पास न जाएं, लेकिन उसे कारगर हद तक दूसरों से अलग करना क़रीब-क़रीब असम्भव था,—शयनागार के अलावा हमारे पास ऐसी कोई जगह नहीं थी जहां सांझ को हम बैठ सकते और काम कर सकते।

एक या दो दिन और बीत जाने के बाद जब कोस्त्या की हालत और भी बदतर हो चली तो रूई भरी एक रज़ाई में—जिससे वह कम्बल का काम लेता था—हमने उसे लपेटा और फिटन में लादकर शहर की ओर उसे ले चले। मैं साथ गया।

अस्पताल के प्रतीक्षा-भवन में क़रीब चालीस आदमी इधर-से-उधर डोल रहे थे या लेटे हुए कराह रहे थे। डाक्टर के आने का कोई ठिकाना नहीं था। साफ़ मालूम होता था कि अस्पताल के कर्मचारी चिरथकान से चूर हैं, और रोगी को अस्पताल में रखने से किसी लाभ की आशा करना बेकार है। आख़िर डाक्टर आया। थके हुए अन्दाज़ में उसने कोस्त्या की क़मीज़ को उठाया, थकी हुई आवाज़ में—बूढ़ों की भांति काफ़ी कांखते-कराहते हुए—अपने सहायक से, जो पेन्सिल ऊंची उठाए इन्तज़ार में था, उसने कहा:

"लालवाला बुख़ार। इसे बुख़ारवाली कोठरियों में पहुंचा दो।"

शहर से ठीक बाहर एक खेत में बारह-एक लकड़ी की कोठरियाँ खड़ी थीं। ये युद्ध का अवशेष थीं। नर्सों, रोगियों और चादर से ढके स्ट्रैचर लिए परिचारकों के बीच मैं देर तक चक्कर लगाता रहा। मालूम हुआ कि छोटा डाक्टर ही रोगी को ले सकता है, लेकिन यह किसी को पता नहीं था कि वह कहां है, और न ही कोई पता लगाने के इच्छुक था। आख़िर, अधीर हो, एक निकटतम नर्स को मैंने धर पकड़ा और "लज्जाजनक," "अमानवीय," "दिन दहाड़े" शब्दों की झड़ी लगा दी। मेरा ग़ुस्सा एकदम बेअसर सिद्ध नहीं हुआ,—कोस्त्या के कपड़े अलग कर दिए गए, और उसे वे लिवा ले गए।

कोलोनी में लौटने पर मालूम हुआ कि ज़दोरोव, ओसाद्ची और बेलूख़िन—सभी को तेज़ बुख़ार चढ़ा है। यह सच है कि ज़दोरोव इस हालत में भी अपने पांवों पर खड़ा था, और जिस समय मैंने उसे देखा तब वह येकातेरिना ग्रिगोरियेवना से बहस कर रहा था, और येकातेरिना ग्रिगोरि-

येवना उसे यह समझाने का प्रयत्न कर रही थी कि वह बिस्तरे पर पड़ा रहे।

"तुम भी अजीब हो!" वह कह रहा था, "भला मैं बिस्तरे की क्यों शरण लूं? बस, लोहारघर मेरे जाने-भर की देर है, सोफ़ोन चुटकियों में मुझे चंगा कर देगा।"

"सोफ़ोन तुम्हें कैसे चंगा कर देगा? तुम ऐसी बकवास क्यों करते हो?"

"कैसे चंगा कर देगा—जैसे कि वह अपने आपको करता है: घरेलू दारू, मिर्च, नमक, नैफ्थोल और गाड़ी की चिकनाई का पुट मिलाकर!" कहकर ज़दोरोव सदा की भांति अपनी उसी प्रभावशील तथा उन्मुक्त हंसी में दोहरा हो गया।

"देखिए न, आपने इन्हें कितना बिगाड़ दिया है, अन्तोन सेम्योनोविच!" येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने कहा, "सोफ़ोन से यह अपना इलाज कराएगा! बस, दफ़ा हो जाओ यहां से और बिस्तरे पर जाकर आराम करो!"

ज़दोरोव बुख़ार की गर्म सांसें छोड़ रहा था, और साफ़ मालूम होता था कि उसके लिए खड़े रहना मुश्किल है। मैंने उसकी कोहनी थामी और चुपचाप उसे शयनागार की ओर ले चला। शयनागार में ओसाद्‌ची और बेलूख़िन पहले से ही बिस्तरे पर पड़े थे। ओसाद्‌ची को कष्ट था और अपने आपको लेकर भारी बवाल मचाए था। मैंने एक मुद्दत से देखा है कि इस तरह के 'दुस्साहसी' लड़के बीमार पड़ने पर काफ़ी कच्चे दिल का परिचय देते हैं। बेलूख़िन इसके प्रतिकुल सदा की भांति अपने जी को ऊंचा उठाए था।

बेलूख़िन समूची कोलोनी में सबसे ज़्यादा हंसोड़ और खुशमिज़ाज आदमी था। वह निजनी-तागिल का रहनेवाला था और उसके पीछे मज़दूर वर्ग के पुरखों की एक लम्बी परम्परा थी। अकाल के दिनों में आटे की सोज में वह निकल पड़ा था, मिलीशिया के एक धावे में मास्को में वह पकड़ा गया, और एक अनाथालय में भेज दिया गया। यहां से भागकर वह सड़कों का जीव बन गया। इसके बाद एक बार फिर वह पकड़ा गया और फिर उसी प्रकार निकल भागा। उद्योगी जीव था, चोरी के बजाय सट्टे को ज़्यादा पसंद करता था और बाद में बिना किसी कुटिलता के डींग

मारते हुए अपनी कारगुज़ारियों का वर्णन करता था—ओह, कितनी साहस-पूर्ण, मौलिक और असफल होती थीं वे! अन्त में बेलूख़िन ने अनुभव किया कि वह कभी सट्टे में सफल नहीं हो सकता, और उसने उक्राइन जाने का निश्चय किया।

बेलूख़िन एक होनहार और ज्ञानवान लड़का था। कभी उसने स्कूल में भी बाक़ायदा अध्ययन किया था। वह हर चीज़ के बारे में कुछ जानता था, लेकिन यह सब होते हुए भी वह निपट, आश्चर्यजनक रूप में अज्ञानी था। ऐसे लड़के भी होते हैं: मालूम होता है कि वे शिक्षा-दीक्षावाले हैं, बटे का हिसाब जानते हैं, सरल सूद का भी उन्हें धूंधला-सा ज्ञान है, लेकिन इन सब का कुछ इतने बेढंगे तरीक़े से इस्तेमाल होता है कि नतीजा हास्यास्पद निकलता है। बेलूख़िन का बोलने का ढंग तक बेढंगा था, लेकिन साथ ही उसमें भावना तथा समझदारी का अंश रहता था।

बुख़ार में चारपाई पर पड़े-पड़े वह अत्यन्त बातूनी हो गया था,—लगता था जैसे उसकी बातों का कभी अन्त न होगा। और उसकी चुटकियां, सदा की भांति शब्दों का कुछ ऐसा सटीक—पूर्णतया दैवी-मिश्रण होती थीं कि देखकर चकित रह जाना पड़ता था।

"टाइफ़स बुख़ार—डाक्टरी बौद्धिकता की यह देन—काली कमलीवाले एक मज़दूर पर भला क्यों आ टूटी? अब जबकि समाजवाद का जन्म हो रहा है, हम इस कीटाणु को ड्योढ़ी पर पांव नहीं रखने दे सकते। और अगर वह किसी ज़रूरी काम से आती है—जैसे राशन के टिकटों या ऐसे ही किसी और चीज़ के लिए, क्योंकि, आख़िर, उसे भी तो जीवित रहना है—तो हम उसे मंत्री के पास भेज देंगे। कोल्या वेर्शनेव को हम मंत्री बनाएंगे, क्योंकि पुस्तकों से वह वैसे ही चिपका रहता है जैसे कुत्ते से मक्खियां। कोल्या डाक्टरी क्षेत्र के इस बुद्धिजीवी से निबटेगा—मक्खियां हों चाहे कीटाणु, उसके लिए सब एक हैं, और जनतंत्र में सभी समान हैं।"

"मैं तो सेक्रेटरी बनूंगा, और तुम," कोल्या वेर्शनेव ने हकलाते हुए कहा,—"समाजवाद के अन्तर्गत तुम क्या ब—ब—बनोगे?"

कोल्या बेलूख़िन के बिस्तरे पर पायताने की ओर बैठा था, सदा की भांति एक पुस्तक लिए, और सदा की भांति ही अस्त-व्यस्त तथा ख़स्ता-हाल।

"मैं तुम्हारे लिए क़ानूनों के मसविदे तैयार करूंगा, जिससे कि तुम आवारों की भांति नहीं ,बल्कि आदमियों की भांति कपड़े पहने हुए विचरण कर सको, इस हद तक कि तोस्का सोलोवियोव भी कलाबत्तू बनकर रह जाए। और यह क्या बात है कि इतना अध्ययनशील होकर भी तुम बन्दर की भांति दिखते हो? मेरी समझ में डुगडुगी बजानेवाले के पास इतना काला-कलूटा बन्दर नहीं मिल सकता। क्यों, ठीक है न, तोस्का?"

लड़के वेर्शनेव पर हंस पड़े। वेर्शनेव को यह बुरा नहीं लगा, बल्कि उसकी भूरी आंखों, जिनमें भलमनसाहत तैर रही थी, केवल प्यार के साथ बेलूख़िन पर जा टिकीं। दोनों गहरे मित्र थे, एक ही समय में कोलोनी में आए थे, और कंधे से कंधा मिलाकर लोहारघर में काम करते थे। लेकिन बेलूख़िन जहां अब निहाई पर काम करने लगा था, वहां कोल्या का मन धौंकनी में ही रमा था। कारण, वहां उसका एक हाथ पुस्तक थामने के लिए उन्मुक्त रहता था।

तोस्का सोलोवियोव जिसे अधिकतर अन्तोन सेम्योनोविच कहा जाता था (उसका और मेरा एक ही नाम और एक ही राशि थी), केवल दस वर्ष का था। वह बेलूख़िन को हमारे जंगल में मिला था,—बेहोश भूखमरी की आख़िरी अवस्था में पहुंचा हुआ। अपने माता-पिता के साथ समारा क्षेत्र से वह उक्राइन में आया था, लेकिन रास्ते में अपनी मां से बिछुड़ गया, और इसके बाद जो हुआ उसे याद नहीं पड़ता। तोस्का का निश्छल, प्यारा, नन्हा-मुन्ना-सा चेहरा था जो क़रीब-क़रीब हमेशा बेलूख़िन की ओर उन्मुख रहता था। तोस्का ने, प्रत्यक्षत: अपने छोटे-से जीवन में बहुत ही कम देखा-सुना था, और इस ख़ुशदिल, पक्के हँसोड़ बेलूख़िन ने, जो नहीं जानता था कि डर किसे कहते हैं और जो पूरी तरह पारंगत इस दुनिया का आदमी था, उसका मन हर लिया था, और उसे कच्चे धागे में अपने साथ नत्थी कर लिया था।

तोस्का बेलूख़िन के बिस्तरे के सिरहाने खड़ा था। उसकी आंखें प्रेम और सराहना से चमक रही थीं। उसकी बचकानी आवाज़ क़हक़हों की नदियां बहा रही थी:

"काला-कलूटा बन्दर!"

"देख लेना, हमारा यह तोस्का एक दिन बढ़िया आदमी बनेगा,"

बिस्तरे के सिरहाने के ऊपर से उसे अपनी ओर खींचते हुए बेलूख़िन ने कहा।

तोस्का सकपकाया-सा बेलूख़िन के गंदले कम्बल पर दोहरा हो गया।

"सुनो, तोस्का, कोल्या की भांति कहीं तुम भी किताबी कीड़े न बन जाना–देखो न, वह गया और उसने अपने दिमाग़ को जाने क्या गड़बड़-झाला बना लिया।"

"वह किताबों को नहीं पढ़ता–किताबें उसे पढ़ती हैं।" बग़लवाले बिस्तरे से ज़दोरोव ने कहा।

मैं पास ही बैठा करावानोव के साथ शतरंज खेल रहा था और मन में सोच रहा था: ऐसा मालूम होता है जैसे ये भूल गए हों कि इन्हें लाल-चित्ती ने जकड़ रखा है!

"ऐ तुम में से कोई जाकर येकातेरिना ग्रिगोरियेवना को तो बुला लाओ।" मैंने कहा। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना गुस्से की देवी बनी कमरे में दाख़िल हुई।

"यह सब क्या भावुकता है? तोस्का यहां क्यों जूझ रहा है? आख़िर सोच क्या रखा है तुम लोगों ने? उफ़, भयानक है यह!"

तोस्का सकपकाया-सा बिस्तरे से उछलकर खड़ा हुआ और पीछे हट गया। करावानोव ने उसकी बांह थामी, नीचे को झुका और बनावटी भय का भाव जताता पीछे कोने की ओर सटक गया।

"ओह मुझे भी डर लगता है!" उसने कहा।

"तोस्का!" ज़दोरोव ने दर्राकर कहा, "अन्तोन सेम्योनोविच का हाथ भी पकड़ लो। इन्हें भला किसके भरोसे छोड़ जाते हो?"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ख़ुशी से उमगते मजमे के बीच असहाय-सी अग़ल-बग़ल देख रही थी।

"बिलकुल 'जुलूस' की तरह!" उसने उद्गार प्रकट किया।

"'जुलूस'–वही न जो लंगोटी तक नहीं बांधते और अपने जान-पहचान के लोगों को बतौर खाद्य-सामग्री के इस्तेमाल करते हैं,"-बेलूख़िन ने गम्भीरता से कहा। "उनमें से कोई एक किसी युवा स्त्री के पास जाता है और उससे कहता है: 'क्या हर्ज है, अगर मैं आपके सांथ चलूं?' और वह, कहने की आवश्यकता नहीं, ख़ुश होती है। 'कृपया कष्ट न करें। मैं ख़ुद अपना साथ दे सकती हूं।' 'ओह,

नहीं! यह कैसे हो सकता है!' वह कहता है—'तुम अपना साथ नहीं दे सकती।' इसके बाद वह उसे एक कोने में ले जाता है और उसे रूखा ही हड़प जाता है, बिना तेल-मसाले के!"

दूर कोने में से तोस्का के हंसने की पैनी आवाज़ आ रही थी। यहां तक कि येकातेरिना ग्रिगोरियेवना भी मुसकराये बिना नहीं रह सकी।

"अफ़्रीकी भले ही युवा स्त्रियों को चट कर जाते हों, लेकिन तुम तो छोटे बच्चों को लालचित्ती के मुंह में धकेलते हो। यह भी उतना ही बुरा है।"

बेलूख़िन से बदला लेने के इस मौक़े को वेर्शनेव ने नहीं छोड़ा।

"अफ़्रीकी युवा स्त्रियों को च-च-च--ट नहीं करते," वह तुतला चला, "और वे तुमसे कहीं ज़्यादा स—स—स—भ्य हैं। तुम तोस्का को रोग के चंगुल में फांसकर छोड़ोगे!"

"और तुम, वेर्शनेव," येकातेरिना ग्रिगोरियवना ने कहा, "तुम क्यों उस बिस्तरे पर बैठे हो? इसी क्षण उठो यहां से!"

वेर्शनेव ने सकपकाई-सी मुद्रा में पुस्तकों को बटोरना शुरू किया जो उसने बेलूख़िन के समूचे बिस्तरे पर फैला रखी थीं।

ज़दोरोव ने उसका पक्ष लिया।

"वह युवा स्त्री नहीं है। बेलूख़िन उसे हड़प नहीं कर जाएगा!"

तोस्का, जो अब येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की बग़ल में खड़ा था, सोचता-सा बोला:

"मात्वेई काले-कलूटे बन्दर को नहीं खाएगा।"

वेर्शनेव अपनी एक बांह के नीचे पुस्तकों का बाक़ायदा एक ढेर थामे था। उसकी दूसरी बांह के नीचे से अचानक तोस्का प्रकट हो गया, हंसता और हाथ-पांव उछालता हुआ। तभी समूचा दल दूरतम कोने में वेर्शनेव के बिस्तरे पर जाकर लोट-पोट हो गया।

अगली सुबह गहरी ताबूत-नुमा गाड़ी—कालीना इवानोविच के डिज़ाइन के मुताबिक़ इसे बनाया गया था—ऊपर तक अटी थी। गाड़ी में नीचे फ़र्श पर, रज़ाइयों में लिपटे लालचित्ती के हमारे मरीज़ बैठे थे। ऊपर के हिस्से में आर-पार रखे एक तख़्ते पर ब्रातचेन्को और मैं जैसे-तैसे आसन जमाए थे। मेरा हृदय भारी था कि अब फिर उस सारी ज़हमत में से गुज़रना पड़ेगा जो कि वेत्कोवस्की को ले जाते समय भुगतनी पड़ी थी। इसके अला-

था, इस बात का भी मुझे क़तई यक़ीन नहीं था कि लड़के चंगा होने के लिए ही यह यात्रा कर रहे हैं।

श्रोसाद्‌ची गाड़ी की तलहटी में पड़ा था श्रौर उद्वेग के साथ रज़ाई को श्रपने कंधों पर खींच रहा था। मैली, भूरी रूई रज़ाई में से झांक रही थी, श्रौर श्रोसाद्‌ची के जूते, श्रौघड़ श्रौर चीथड़े हुए श्रपने पांवों के निकट मुझे दिखाई पड़ रहे थे। बेलूख़िन ने रज़ाई को श्रपने सिर के ऊपर खींचा श्रौर उसे इर्द-गिर्द लपेटकर नल जैसा बन गया।

"लोग समझेंगे कि यह पादरियों का झुंड है," उसने कहा, "श्रौर श्रचरज करेंगे कि ये सारे पादरी इस देहाती गाड़ी में श्राख़िर कहां जा रहे हैं!"

ज़दोरोव जवाब में मुसकराया, श्रौर उसकी इस मुसकराहटमात्र से पता चलता था कि वह श्रपने को कितना बीमार श्रनुभव कर रहा है।

बुख़ारवाली कोठरियों में हर चीज़ श्रब भी वैसी ही थी। मैंने एक नर्स का पता लगाया जो उसी वार्ड में काम करती थी जिसमें कि कोस्त्या पड़ा था। वह श्रपने काम में सिर तक डूबी गलियारे में से गुज़र रही थी। बड़ी मुश्किल से उसने श्रपने श्रापको सीधा किया।

"वेत्कोवस्की? वहां भीतर होगा, शायद!"

"श्रब कैसा है?"

"श्रभी कुछ मालूम नहीं!"

उसकी पीठ की श्रोट में श्रन्तोन ने चाबुक से चमड़ी उधेड़ डालने जैसा भाव जताया।

"कुछ मालूम नहीं! बहुत ख़ूब! क्या मतलब है भला इसका–कुछ मालूम नहीं?"

"क्या वह लड़का श्रापके साथ है?" गन्दे श्रन्तोन की श्रोर घृणा के साथ देखते हुए नर्स ने पूछा। श्रन्तोन के बदन से श्रस्तबल की गंध श्रा रही थी, श्रौर उसकी पतलून में भूसे के तिनके चिपके थे।

"हम गोर्की कोलोनी से श्रा रहे हैं," सतर्कता के साथ मैंने कहना शुरू किया। "हमारे लड़कों में से एक–वेत्कोवस्की–यहां है। श्रौर तीन को मैं श्रौर लाया हूं–लगता है, उन्हें भी लालचित्ती ने जकड़ लिया है।"

"श्रापको प्रतीक्षा-हॉल में जाना होगा।"

"लेकिन वहां तो बड़ी भीड़ है। इसके अलावा, मैं चाहता हूं कि सब लड़के एक ही जगह रहें।"

"लेकिन हम हर किसी की सनक पर तो नाच नहीं सकते।"

और वह आगे बढ़ चली।

लेकिन अन्तोन ने उसका रास्ता छेक लिया।

"क्यों, यह क्या बात है? कम-से-कम तुम्हें आदमी से बात तो करनी चाहिए।"

"प्रतीक्षा-हॉल में जाओ, साथियों! यहां खड़े होकर बतियाने से कुछ नहीं बनेगा।"

नर्स अन्तोन से गुस्सा थी, और मैं भी।

"दफ़ा हो जाओ यहां से," मैं ने चिल्लाकर कहा, "बीच में टांग अड़ाने के लिए तुमसे किसने कहा?"

लेकिन अन्तोन टस से मस न हुआ। आंखें फाड़े कभी वह मेरी ओर देखता था, कभी नर्स की ओर। और मैं उसी झुंझलाहट भरे स्वर में नर्स से कह रहा था:

"कृपया सुनिये तो। मैं चाहता हूं कि मेरे लड़के चंगे हो जाएं। हर उस लड़के के लिए जो इनमें चंगा हो जाता है, मैं दो पूड गेहूं का आटा देने के लिए तैयार हूं। लेकिन मैं एक ही आदमी से वास्ता रखना चाहता हूं। वेत्कोवस्की आपके वार्ड में है। अब यह आपका काम है कि अन्य भी उसी में रहें।"

नर्स को जैसे आघात लगा—निश्चय ही उसने अपमानित अनुभव किया।

"क्या मतलब है आपका गेहूं के आटे से?" उसने पूछा। "क्या है यह—रिश्वत? आख़िर बात क्या है?"

"रिश्वत नहीं, यह बोनस है। समझ गईं न? और अगर आप न समझती हों तो मैं किसी दूसरी नर्स को टोह लूंगा। यह रिश्वत नहीं है। हम अपने मरीज़ों के लिए थोड़ा अतिरिक्त देख-संभाल का, शायद थोड़ा अधिक मेहनत का अनुरोध कर रहे हैं। असल बात यह है कि इन्हें माक़ूल ख़ुराक नहीं मिली, और, आप जानो, इनके सगे-सम्बन्धी भी कोई नहीं हैं।"

"लेकिन, अगर आप चाहें तो, बिना गेहूं के भी मैं इन्हें अपने वार्ड में ले सकती हूं। कुल कितने हैं?"

"अभी तो मैं तीन और लाया हूं, लेकिन हो सकता है कि कुछ दिन बाद कुछ और लाने पड़ें!"

"अच्छी बात है, मेरे साथ चले आइये।"

मैं और अन्तोन नर्स के पीछे-पीछे चल दिये। अन्तोन ने नर्स की ओर देखते हुए सर हिलाया लेकिन यह ज़ाहिर था कि मामले के रुख़ से वे भी आश्चर्यचकित हो गए थे।

नर्स हमें अस्पताल के एकदम आख़िरी कोनेवाले एक कमरे में लिवा ले गई, और मैंने अन्तोन को अपने मरीज़ ले आने के लिए भेज दिया।

निश्चय ही उन सबको लालचित्तीवाला बुख़ार लगा। छोटा डाक्टर, जो ड्यूटी पर था, चकित-सी मुद्रा में हमारी रज़ाइयों को देख रहा था। तभी नर्स ने दृढ़ स्वर में कहा:

"ये गोर्की कोलोनी से आये हैं। इन्हें मेरे वार्ड में भेज दो।"

"लेकिन तुम्हारे पास जगह भी है?"

"हम कुछ-न-कुछ कर लेंगे। दो को आज छुट्टी मिल रही है, एक और बिस्तर के लिए भी कोई जगह निकाल ही लेंगे।"

वेलूख़िन ने प्रसन्नता के साथ हमें विदा किया।

"कुछ को और ले आओ," उसने कहा, "ज़्यादा गरमाहट रहेगी।"

दो दिन के भीतर ही हम उसके अनुरोध को पूरा करने में समर्थ हो गये—गोलोस और श्नाइदेर को लेकर हम वहां पहुंचे, और इसके एक सप्ताह बाद तीन को और वहां पहुंचाया।

सौभाग्य से, इसके अलावा कोई वृद्धि नहीं हुई।

नर्स से अपने मरीज़ों का हालचाल पूछने के लिए अन्तोन कई बार अस्पताल गया। लालचित्ती ने हमारे लड़कों को ज़्यादा नुक़सान नहीं पहुंचाया था।

उनमें से कुछ को वापस लाने के लिए हम शहर जाने की सोच ही रहे थे कि तभी, अचानक, एक दिन—वसन्त के शुरू के दिनों में—दोपहर के सूरज की रोशनी में रज़ाई में लिपटी एक भुतहा आकृति जंगल में से प्रगट हुई। वह भुतहा आकृति लोहारघर के पास पहुंची और चिचियाकर बोली: "हां तो, बहादुर मिस्त्रियो! कहो, यहां कैसे चल रहा है? अभी भी पढ़े जा रहे हो? देखना, कहीं अपने दिमाग़ों का कचूमर न निकाल डालना!"

लड़के ख़ुशी से छलछला उठे। बेलूख़िन, क्षीण-काय और चेहरे के मटियाला पड़ जाने के बावजूद अभी भी उतना ही ख़ुशमिज़ाज और निडर बना हुआ था।

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने उसे आड़े हाथों लिया: यह पैदल आने का क्या मतलब है? छुट्टी मिलने तक यह वहां क्यों नहीं रुका रहा,– वे ख़ुद इसे भेज देते!

"देखो न, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, रुका तो मैं रहता," उसने सफ़ाई दी, "लेकिन सच, इतने दिनों से मेरा जी मचल रहा था। जब भी मैं अपने मन में सोचता: "वे वहां हमारी रई की रोटी और कोन्द्योर उड़ा रहे होंगे, और देग का देग दलिया–तो मेरे मन का एक-एक अणु बुरी तरह ललक उठता... उनका वह गोबेर का शोरबा मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता था। आह, मेरे भगवान्!"

हंसी के मारे उसे बोल पाने में मुश्किल हो रही थी।

"गोबेर का शोरबा क्या?"

"आप जानो, गोगोल* ने इसके बारे में लिखा था, और इतना बढ़िया बनाकर लिखा था कि क्या कहें। गोबेर के इस शोरबे को वे इतने चाव से अस्पताल में परोसते थे, लेकिन हर बार जब भी मैं उस पर नज़र डालता, मेरी हंसी फूट पड़ती! बस, मैं अपने को आदी नहीं बना सका। ओह, मेरे भगवान्! हंसने के सिवा और कुछ मुझसे न होता। नर्स मुझे झिड़कती, और उससे मेरी हंसी और भी दुगुनी हो जाती, मैं बस हंसता ही जाता, हंसता ही जाता। जैसे मुझे गोबेर के शोरबे का–इन शब्दों का–ध्यान आता, मुझसे बस खाते न बनता। चम्मच हाथ में लेते न लेते हंसी के मारे दम निकलने लगता। सो मैं बस चला आया। क्या आप लोग यहां कलेवा कर चुके? हो न हो, आज दलिया बना होगा, क्यों?"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना कहीं से उसके लिए थोड़ा दूध ले आई। बीमार आदमी को एकदम सीधे दलिया पर नहीं टूट पड़ना चाहिए।

बेलूख़िन ने ख़ुशी से हुलसकर उसे धन्यवाद दिया।

---

* गोगोल–१९ वीं शताब्दी के रूसी लेखक। सं०

"शुक्रिया! मेरी दम तोड़ती इच्छाओं का मान रखने के लिए शुक्रिया!"

लेकिन यह सब होने पर भी उसने दूध को दलिया पर ढरका दिया। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने लाइलाज समझ उससे छुटकारा पा लिया।

बाक़ी लड़के भी इसके बाद शीघ्र ही अस्पताल से आ गये।

अन्तोन गेहूं के आटे की एक बोरी लेकर नर्स को देने के लिए उसके घर की ओर चल पड़ा।

१७. गाँवालों से हमारा सम्पर्क

त्रेपके-जागीर की मरम्मत का काम अत्यन्त उलझन भरा और कठिन सिद्ध हुआ। मरम्मत तो ख़ैर उनके लिए एक बहुत ही छोटा शब्द है। ढेरों घर थे, लेकिन सब के सब, क़रीब-क़रीब नये सिरे से बनाये जाने की अपेक्षा रखते थे। धन की हमेशा तंगी रहती थी। स्थानीय सरकारी विभाग जो मदद करते थे वह मुख्यत: निर्माण सामग्री के लिए विभिन्न अधिपत्रों के रूप में होती थी। इन अधिपत्रों को लेकर कीएव, ख़ारकोव आदि दूसरे नगरों में जाना होता था। वहां हमारे अधिपत्रों को देखकर अधिकारीगण मुंह बिचकाते तथा भौंहों में बल डालते थे। माँगी गई सामग्री का केवल दस प्रतिशत ही जारी करते, और कभी-कभी तो कोरा ही टाल देते थे। ख़ारकोव की अनेक बार धूल छानने के बाद आधा ट्रक जो काँच हमने प्राप्त किया था, रास्ते में ही—ठीक हमारे नगर के छोर पर——एक अन्य संस्था ने जो हमसे काफ़ी अधिक प्रभावशाली थी, अपने कब्ज़े में कर लिया था।

धन के अभाव ने मजदूरों को किराये पर लगाना हमारे लिए अत्यन्त कठिन बना दिया था, और क़रीब-क़रीब हर काम हमें स्वयं ही करना पड़ता था। हाँ, बढ़ईगिरी के काम में एक सहकारी संघ से थोड़ी-बहुत मदद लेने में जैसे-तैसे हम सफल हो गए थे।

लेकिन धन के स्रोतों को खोजने में हमें कुछ ज्यादा दिन नहीं लगे। नयी कोलोनी पुराने, टूटे-फूटे, औसारों और अस्तबलों से भरी पड़ी थी। त्रेपके बन्धु एक घोड़ा-पालन-केन्द्र चलाते थे, और नसली घोड़ों के

प्रजनन को अभी तक हमने अपनी योजनाओं में शामिल नहीं किया था। फिर, इन अस्तबलों की पुनर्स्थापना अभी हमारे बस की बात भी नहीं थी। "न बाबा, यह हम जैसों के लिए नहीं है," जैसा कि कालीना इवानोविच ने कहा था।

हमने इन इमारतों को गिराना और मलबे को गांववालों के हाथ बेचना शुरू किया। ग्राहकों की कमी नहीं थी—आत्म-मर्यादा रखनेवाला हर व्यक्ति चाहता है कि अपने लिए एकाध भट्टी या तहख़ाना बनवाए। और कुलक जाति के प्रतिनिधि तो, उस लपलपाहट के साथ जो कि उन की विशिष्टता होती है, केवल जमा करने के लिए ही ईंटें-मलबा ख़रीदते थे।

अस्तबलों को छाने का काम हमारे लड़के करते थे। जो भी लोहा-लंगड़ हाथ लगता लोहारघर में उसी की कुदालियां गढ़ ली जाती, और काम ज़ोरों से चल पड़ता था।

चूंकि लड़के आधा दिन काम करते थे और बाक़ी आधा दिन पढ़ने में लगाते थे, इसलिए वे दो पालियों में नयी कोलोनी में जाते थे। लड़कों के ये दल, अत्यन्त कामकाजी अन्दाज़ में दोनों कोलोनियों के बीच का रास्ता पार करते थे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यदि, उस समय कोई मुर्ग़ी हवा बदलने के लिए अपने अहाते से भटक आती थी—तो वे अपना पथ छोड़कर उसके पीछे नहीं लपकते थे। इस मुर्ग़ी को पकड़ना—और उसमें निहित तमाम कैलोरियों को उदरस्थ करना—एक काफ़ी पेचीदा—काम था जिसके लिए स्फूर्त्ति, समझदारी, शान्त स्थिरता और जोश की आवश्यकता थी। कोलोनी के सदस्य, जो सब कुछ कह-सुन लेने के बावजूद, एक हद तक सभ्यता के इतिहास का अंग थे, गोली-बारूद को एकदम ताक़ पर नहीं रख सकते थे, और यह तथ्य लड़कों के इस काम को इस तरह की मुहिमों को—और भी ज़्यादा पेचीदा बना देता था।

कुल मिलाकर नयी कोलोनी में काम करने की ये यात्राएं मूल कोलोनी के सदस्यों को किसान-दुनिया के अधिक निकट सम्पर्क में आने का अवसर प्रदान करती थीं, और ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धान्तों के अनुसार प्रथमत: और मुख्यत: किसान-जीवन का आर्थिक आधार लड़कों को आकर्षित करता था, और उस काल में जिसका कि यहां ज़िक्र कर रहे हैं, इसी के सबसे ज़्यादा घनिष्ठ सम्पर्क में वे आए। विभिन्न प्रकार के ऊपरी ढांचे की बहस में बिन अधिक पड़े ही, मेरे छात्र सीधे मांस के

भण्डारों तथा तहख़ानों की ओर रुख़ करते, और शक्ति-भर, उनमें जमा चीज़ों पर हाथ साफ़ करते। और इस बात का पहले से ही सही अन्दाज़ा करके कि आबादी, अपनी तुच्छ स्वामित्व की प्रवृत्तियों के कारण, उनकी इस क्रियाशीलता का प्रतिरोध करेगी, लड़के उन घड़ियों में संस्कृति के इतिहास का अनुसरण करते जबकि ये प्रवृत्तियां सोई होतीं—अर्थात् रात और वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार एक काल विशेष तक, लड़कों ने अपने आपको केवल मानव-जाति की प्राथमिक मांग—खाने की मांग—को तुष्ट करने तक ही सीमित रखा। दूध, मलाई, चरबी, कचौड़ी, मांस, पूए—गांव के साथ अपने सम्पर्कों में उपयोग करने के लिए ही गिने-चुने शब्दों की यह संक्षिप्त सूची गोर्की कोलोनी ने तैयार की थी।

वैज्ञानिक आधार पर स्थापित यह मामला जब तक कराबानोव, तारानेत्स, वोलोख़ोव, ओसाद्ची और मित्यागिन जैसे लड़कों के हाथ में रहा, मेरी नींद में कभी कोई बाधा नहीं पड़ी। कारण, ये सब के सब अपने विषय में पूर्णतया दक्ष और पूरी तरह पारंगत थे। सुबह को जब गांववाले उठते और अपनी सम्पत्ति का हिसाब लगाते, तो इस नतीजे पेर पहुंचते कि दो जग दूध ग़ायब है। और वहां रखे हुए दूध के ख़ाली जग उनके इस नतीजे की पुष्टि करते। लेकिन तहख़ाने के दरवाज़े का ताला कभी टूटा हुआ नज़र न आता, दरवाज़े भी वैसे ही अपनी जगह पर जुड़े होते, छत भी सही-सलामत नज़र आती, न ही रात को एक बार भी कुत्तों के भोंकने की आवाज़ सुनाई देती। सभी पदार्थ—जड़ और चेतन—अपने चारों ओर की दुनिया को उन्मुक्त और विश्वास भरी आंखों से देखते मालूम होते!

लेकिन आदिम संस्कृति का यह अध्ययन जैसे ही अधिक कच्ची पीढ़ी के सदस्यों ने शुरू किया, मामले ने एकदम दूसरा ही रूप धारण कर लिया। मालिक जब अपने ताले पर नज़र डालता तो उसकी आकृति भय से विकृत हो जाती। ताले का हुलिया, सच पूछो तो, एकदम बिगड़ा हुआ नज़र आता। ऐसा लगता जैसे कि बहुत ही औघड़ ढंग से नक़ली ताली से उसे खोलने के प्रयत्न में जैसे उसकी जान ही निकाल ली गई हो, ग़नीमत यही समझो कि लोहे की उस छड़ का इस्तेमाल नहीं किया गया जिसका मूल काम भूतपूर्व त्रेपके जागीर की पुनर्स्थापना करना था। और कुत्ता—मालिक यह अब भी याद करता है—न केवल वह रात को भोंका

ही था, बल्कि भोंकते-भोंकते उसने अपनी अंतड़ियां तक एक कर डाली थीं, लेकिन यह तो कहो कि बिस्तरा छोड़ने को मालिक का जी नहीं चाहा, और केवल इस अनमनेपन की बदौलत ही कुत्ता तुरन्त सहायता से वंचित रह गया। अपने अनाड़ी, उल्टे-सीधे ताबड़तोड़ काम की बदौलत कम-उम्र सदस्यों को, खुद अपने ऊपर, झल्लाए हुए घर के मालिक द्वारा पीछा किए जाने की भयानकताओं का भुगतान करना पड़ा, जो उपर्युक्त कुत्ते का भोंकना सुन अपने बिस्तरे से उठ खड़ा होता था, या फिर सांझ से ही इन बिन-बुलाए मेहमानों की ताक में लगा रहता था। और यही वह चीज़ थी जो मेरी चिन्ता का विषय थी। असफल छुटभैया सिर पर पांव रख कोलोनी की ओर भागते,—एक ऐसा काम जो उनके अग्रज कभी नहीं कर सकते थे। नतीजा यह कि घर का मालिक भी ऐसा ही करता, मुझे जगाता और मांग करता कि अपराधी को उसके हवाले कर दिया जाए। लेकिन अपराधी अब तक अपने बिस्तरे पर सोया होता, और इससे साहस पाकर, भोले अन्दाज़ में, मैं सवाल करता:

"क्या आप अपराधी को पहचान सकेंगे?"

"मैं उसे कैसे पहचान सकता हूं? "मैंने तो उसे केवल पीछे से इस ओर भागते हुए देखा।"

"हो सकता है कि वह हमारे लड़कों में से न हो," अधिकाधिक भोलेपन के साथ मैं सुझाता।

"आपके लड़कों में से नहीं हो? लेकिन आपके आने से पहले इस तरह की बातें कभी नहीं होती थीं।"

भुक्त-भोगी उपलब्ध तथ्यों का अपनी उंगलियों पर हिसाब लगाना शुरू करता।

"पिछली रात जाने कौन मिरोशनिचेन्को का दूध चट कर गया; इससे पहली रात वेरख़ोला का ताला टूटा हुआ मिला, पिछले शनिवार को ग्रेचानी पेत्रो के अहाते में से दो चूज़े ग़ायब हो गए, और इससे एक दिन पहले स्तोवबिन की विधवा ने—आप जान गए न कि किससे मेरा मतलब है—बाज़ार के लिए दो बाल्टी मलाई तैयार करके रख छोड़ी थी, और जब वह ग़रीब अपने तहख़ाने में गई तो देखा कि हर चीज़ औंधी पड़ी है और मलाई एकदम ग़ायब है! और वासीली मोश्चेन्को, याकोव वेरख़ोला और वह कुबड़ा—भला क्या नाम है उसका—हां, नेचिपोर मोश्चेन्को, इन सबके भी..."

"लेकिन तुरहारे पास सबूत क्या है?"

"सबूत, आप कहते हैं! मैं बाहर आया, और मैंने उसे भागकर यहां आते हुए देखा, सच! इसके अलावा, भला और कौन हो सकता है? आपके लड़के लेपके जाते समय कोई चीज़ बाक़ी नहीं छोड़ते!"

उस समय इन घटनाओं के प्रति मेरा रवैया इतना मुलायम नहीं था। गांववालों पर मुझे तरस आता था, और मैं ख़ुद अपनी निपट शक्तिहीनता को मन-ही-मन अनुभव कर ग़ुस्से और आशंका से भर जाता था। ख़ास-तौर से परेशान करनेवाली बात यह थी कि मैं इन सारी कारगुज़ारियों के बारे में जानता तक नहीं था, और इसलिए मेरे सन्देहों की कोई सीमा नहीं थी। मेरे स्नायु, जाड़ों की घटनाओं के फलस्वरूप, अब डगमग स्थिति में थे।

सतह पर, कोलोनी में हर चीज़ ठीक मालूम होती थी। दिन में सब लड़के काम और अध्ययन करते थे, सांझ को हंसी-मज़ाक़ करते और अपना जी बहलाते, रात को सोने के लिए चले जाते और प्रसन्नता तथा सन्तोष के साथ अगली सुबह उठते। रात के समय में ही उनके गांव में धावे होते थे। वयस्क लड़के मेरी विक्षुब्ध झिड़कियों को चुपचाप सुनते और विनीत रहते। कुछ दिनों के लिए किसानों की शिकायतें शान्त हो जातीं, लेकिन बहुत शीघ्र ही कोलोनी के प्रति उनका वैमनस्य फिर नये सिरे से फूट पड़ता।

हमारी स्थिति को इस बात ने और भी कठिन बना दिया था कि राज-मार्ग पर लूट की घटनाएं अभी भी जारी थीं। वैसे उनका रंग-ढंग पहले से कुछ बदल गया था। लुटेरे अब गांववालों से धन इतना नहीं छीनते थे जितना कि खाने की चीज़ें, सो भी बहुत अल्प मात्रा में। शुरू में मैंने सोचा कि यह हमारे हाथों की कारगुज़ारी नहीं है, लेकिन गांववालों ने —निजी बातचीत में—ज़ोर देते हुए कहा:

"ओह, नहीं! ज़रूर आपके ही लड़के रहे होंगे। जब वे हमारे हाथ लगेंगे और उनकी मरम्मत की जाएगी, तब आप देखेंगे।"

लड़के तत्परता के साथ मुझे आश्वस्त करते:

"वे झूठ बोल रहे हैं, कुलक कहीं के! हमारा कोई साथी कभी उनके तहख़ाने में पहुंच गया हो, ऐसा हो सकता है। लेकिन राज-मार्ग पर चोरी—असम्भव!"

मैंने साफ़ देखा कि लड़के सच्चे हृदय से यह विश्वास करते हैं कि हम में से कोई भी राज-मार्ग पर लूटने के लिए नहीं जाता, और मैंने यह भी देखा कि इस तरह की लूट को वयस्क लड़के अक्षम्य समझते हैं। मेरा स्नायु-तनाव इस ज्ञान से कुछ ढीला पड़ा, लेकिन अगली अफ़वाह ने, गांव के सरपंच के साथ अगली भिड़न्त ने, उसे उतना ही बड़ा भी दिया।

इसके बाद एकदम अचानक एक सांझ घुड़सवार मिलीशियामैनों की एक टुकड़ी ने कोलोनी पर धावा किया। हमारे शयनगारों के सभी बहिर्द्वारों पर सन्तरी तैनात कर दिए गए, और चप्पे-चप्पे की तलाशी शुरू हुई। मैं भी ख़ुद अपने ही दफ़्तर में गिरफ़्तार कर लिया गया, और मिलीशिया-मैनों की इसी हरकत ने उनका सारा मामला ही उलट दिया। लड़कों ने मुट्ठियां बांधकर मिलीशियामैनों का मुक़ाबला किया, खिड़कियों से कूदकर वे बाहर निकल आए, अंधेरे में ईंटों की बौछार पहले से ही शुरू थी, अहाते में कोनों में गुत्थम-गुत्था की लड़ाई हो रही थी। अस्तबल के सामने खड़े घोड़ों पर बाक़ायदा एक भीड़ ने हमला किया, और वे अंधाधुंध जंगल की ओर भाग खड़े हुए। जोरों की कहा-सुनी और भारी हंगामे के बाद चिल्लाता हुआ कराबानोव मेरे दफ़्तर में फूट पड़ा:

"जल्दी चलिये—एकदम—भयानक मुसीबत आया चाहती है।"

मैं लपककर अहाते में पहुंचा, विक्षुब्ध लड़कों की एक भीड़ ने ग़ुस्से से उफनते हुए, पलक झपकते ही मुझे घेर लिया। ज़दोरोव का ग़ुस्से से बुरा हाल था।

"क्या कभी इसका अन्त नहीं होगा?" उसने चिल्लाकर कहा। "कर दें मुझे जेल में बंद! मैं हर चीज़ से तंग आ गया हूं। क्या मैं क़ैदी हूं? लेकिन, क्यों? यह तलाशी किस लिए? हर जगह अपनी टांग अड़ाने से बाज़ नहीं आते..."

टुकड़ी का भयभीत कमाण्डर, भरसक, अपने अधिकारीपन को बनाए रखने का प्रयत्न कर रहा था।

"अपने लड़कों से कहिये कि इसी समय अपने शयनागारों में चले जाएं और अपने-अपने बिस्तरों के पास खड़े हों!"

"आख़िर किस आधार पर आप यह तलाशी ले रहे हैं?" मैंने पूछा।

"यह सब आपको जानने की जरूरत नहीं। मेरे पास आर्डर मौजूद है।"

"कोलोनी से एकदम चले जाइये।"

"क्यों, क्या मतलब है आपका?"

"सार्वजनिक शिक्षा के प्रान्तीय विभाग के अध्यक्ष की इजाज़त के बिना मैं कोई तलाशी नहीं लेने दूंगा। समझे आप, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा और इसे रोकने के लिए बल का प्रयोग करूंगा।"

"कहीं ऐसा न हो कि ख़ुद आपकी ही तलाशी हो जाए!" लड़कों में से कोई चिल्लाया, लेकिन मैं उसपर गरज उठा: "चुप रहो!"

"अच्छी बात है," टुकड़ी-कमाण्डर ने धमकी के अन्दाज़ में कहा। "आपको अपना यह स्वर बदलना पड़ेगा..."

उसने अपने आदमियों को अपने चारों ओर बटोरा और लड़कों की मदद से, जो अब प्रसन्न हो चले थे,—अपने घोड़ों का पता लगाया, और लड़कों के व्यंग्यपूर्ण उद्गारों को सुनते हुए, विदा हो गए।

शहर में मिलीशिया के अधिकारी को चेतावनी दिलवाने में मैंने सफलता प्राप्त की, लेकिन इस धावे के बाद घटनाओं ने असाधारण तेज गति से विकसित होना शुरू किया। गांववाले, विक्षोभ से भरे, धमकियां देते और चिल्लाते मेरे पास आए:

"कल आपके लड़कों ने राज-मार्ग पर यावतुख़ की घरवाली से मक्खन और मांस छीन लिया!"

"यह झूठ है!" लड़कों में से एक ने पलटकर जवाब दिया।

"हां, सच। और अपनी टोपियां इन्होंने अपनी आंखों पर खींच रखीं थीं, ताकि इन्हें कोई पहचान न सके।"

"कितने थे वहां?" मैंने पूछा।

"एक था, उस स्त्री के कहने के मुताबिक़। और तुम्हारे लड़कों में से ही था। वह वैसा ही कोट पहने था जैसा कि वे पहनते हैं।"

"यह सब झूठ है। हमारे लड़के ऐसी हरकत नहीं करते।"

गांववाले चले गए। हम सब उदास ख़ामोशी धारण किए थे। अचानक कराबानोव फट पड़ा:

"मैं कहता हूं, यह झूठ है—एकदम झूठ। हमसे यह छिपा न रहता..."

लड़कों ने काफ़ी दिनों से मेरी चिन्ता में हाथ बटाना शुरू कर दिया था, यहां तक कि तहख़ानों पर भी धावे बंद हो गए मालूम होते थे। सांझ का धुंधलका शुरू होते ही किसी अघट, नयी, दुःखद और अपमान-

जनक घटना की प्रत्याशा में कोलोनी को जैसे लक़वा मार जाता। कराबानोव, ज़दोरोव, बुरून एक शयनकक्ष से दूसरे का चक्कर लगाते, ग्रहाते के ग्रंधकारतम कोनों की छानबीन करते, जंगल की टोह लेते। जीवन में पहले कभी मेरी स्नायुविक स्थिति इतनी ख़राब नहीं हुई थी जितनी कि उन दिनों में थी।

ग्रौर तभी...

एक दिन सुबह के सुहावने समय मेरे दफ़्तर का दरवाज़ा फटाक-से खुला ग्रौर लड़कों का एक दल प्रीख़ोद्को को धकेलता हुग्रा कमरे में ले ग्राया। कराबानोव ने, प्रीख़ोद्को को उसके कालर से दबोचे हुए, ज़ोरों से मेरी मेज़ की ग्रोर धकेला:

"इधर!"

"क्यों, फिर चाकू चला रहे थे क्या?" मैंने ग्रलस भाव से पूछा।

"चाकू-सो कुछ नहीं। यह राज-मार्ग पर लूटता रहा है।"

मुझे ऐसा मालूम हुग्रा जैसे दुनिया भरभराकर मेरे कंधों के ऊपर ढह गई हो। चुप, कांपते हुए प्रीख़ोद्को से मैंने यंत्रवत् पूछा:

"क्या यह सच है?"

"हां," वह क़रीब-क़रीब ग्रस्पष्ट रूप में ग्रौर ग्रपनी ग्रांखों को नीचे धरती पर टिकाए रहा।

पलक झपकते ही वह कुघड़ी ग्रा पहुंची। ग्रचानक एक रिवाल्वर मेरे हाथ में ग्रा गयी।

"जहन्नुमी!" मैं चिल्लाया। "तुम मेरी जान लेकर ही मानोगे..."

लेकिन इससे पहले कि मैं रिवाल्वर को ग्रपनी कनपटी तक उठा सकता, चीख़ते ग्रौर रोते लड़कों का एक दल मुझ पर हावी हो गया।

जब मुझे चेत हुग्रा तब येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, ज़दोरोव ग्रौर बुरून मौजूद थे। मेज़ ग्रौर दीवार के बीच मैं फ़र्श पर खड़ा था, ग्रौर पानी मेरे समूचे बदन पर फैला था। ज़दोरोव ने मेरा सिर थामे हुए था, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की ग्रोर ग्रपनी ग्रांखें उठाईं, यह कहते हुए:

"उधर जाग्रो... लड़के... ऐसा न हो कि वे प्रीख़ोद्को का सफ़ाया ही कर दें..."

क्षण-भर में मैं बाहर ग्रहाते में निकल ग्राया। प्रीख़ोद्को को मैंने वहां से हटवाया। वह बेसुध ग्रवस्था में ख़ून से लथपथ पड़ा हुग्रा था।

१८. बाज़ो का खेल

१६२२ के ग्रीष्म का तब प्रारम्भ था। प्रीख़ोद्को के अपराध का कोलोनी में कभी किसी ने नाम तक नहीं लिया। अन्य लड़कों ने बुरी तरह उसकी मरम्मत की थी। एक लम्बे अर्से तक वह बिस्तरे पर पड़ा रहा, और हमने किसी तरह की भी पूछताछ से उसे परेशान नहीं किया। पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि उसने ऐसी कोई ख़ास हरकत नहीं की थी। उसके पास कोई हथियार नहीं निकले ।

लेकिन यह सब होने पर भी प्रीख़ोद्को असली डाकू था। मेरे दफ़्तर में होते-होते रह गई उस दुर्घटना का, और उसके अपने दुर्भाग्य का उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ा था। आगे भी उसने अपना सिलसिला जारी रखा, और कोलोनी के लिए काफ़ी सिरदर्द पैदा करता रहा। इसी के साथ-साथ, अपने ढंग से, वह फरमाँबरदार भी था, लोहे की छड़ अथवा कुल्हाड़ी से कोलोनी के किसी भी दुश्मन का सिर चूर करके रख देता। वह अत्यन्त सीमित व्यक्ति था, हमेशा नवीनतम प्रभाव के जोश में रहता था, उसके ठस दिमाग़ में जो भी विचार प्रवेश करता था, उसी के साथ झूलने लगता था। लेकिन प्रीख़ोद्को से अच्छा काम करनेवाला भी कोई दूसरा नहीं था। कठिन से कठिन काम भी उसे परत न कर पाते। वह बहुत ही शक्तिशाली अन्दाज़ में कुल्हाड़ी या हथौड़े को उठाता था, उस समय भी जबकि पड़ोसी की खोपड़ी चकनाचूर करने के अलावा अन्य कामों के लिए उसे उनका उपयोग करना होता था।

उन दुर्भाग्यपूर्ण अनुभवों के बाद जिनका कि हम वर्णन कर चुके हैं, कोलोनी के सदस्यों के हृदयों में किसानों के प्रति हिंस्र ग़ुस्से ने घर कर लिया। उन्हें, जो हमारी मुसीबतों का कारण थे, लड़के माफ़ नहीं कर सकते थे। मैंने अनुभव किया कि अगर वे किसानों के ख़िलाफ़ कोई अत्यन्त अंधा दुष्कृत्य नहीं करते थे, तो केवल इसलिए कि वे मुझ पर तरस खाते थे।

किसानों और उनके काम के बारे में, और इस काम के प्रति आदर का भाव रखने की आवश्यकता के बारे में मेरी और मेरे सहयोगियों की बातों को लड़के कभी इस रूप में ग्रहण नहीं करते कि ये बातें उनसे अधिक जानकार या उनसे अधिक समझदार लोगों के मुँह से निकल रही हैं। वे

समझते कि हम इन सब चीज़ों के मामले में कुछ अधिक नहीं जानते। उनकी नज़र में हम शहर के रहनेवाले बुद्धिजीवी थे, यह समझ सकने में असमर्थ कि किसान जड़-मूल से ही कितने ख़राब हैं।

"आप उन्हें नहीं जानते। हम जानते हैं कि वे क्या हैं। ख़ुद भुगतान करके हमने यह जाना है। एक पाव रोटी के लिए वे आदमी का गला काटने के लिए तैयार रहते हैं, और क्या मजाल जो उनसे कुछ ले तो लें... आदमी भूखा मरता रहे, वे एक दाना तक उसे नहीं देंगे, भले ही अनाज उनके खलिहानों में पड़ा सड़ता रहे!"

"हम लुटेरे हैं—अच्छी बात है, हम जानते हैं। लेकिन हमें यह तो ज्ञान है कि हमने ग़लत काम किया, और इसलिए हम... क्या नाम कहें... हम सभ्य भी हैं। हम यह जानते हैं। लेकिन वे... वे किसी की परवाह नहीं करते। उनकी मानो तो ज़ार बुरा था और वैसे ही सोवियत सरकार बुरी है। उनकी समझ में केवल वही लोग भले हैं जो ख़ुद कुछ नहीं चाहते, और उन्हें चीज़ मुफ़्त में दे डालते हैं। दहक़ान—निरे देहक़ान हैं वे!"

"ओह, मैं इन दहक़ानों को बरदाश्त नहीं कर सकता, मुझे वे फूटी आंखों नहीं सुहाते। मैं तो इन सबको गोली से उड़ा दूं!" बुरून ने कहा जो पक्का शहरी था।

मंडी में बुरून का यह एक प्रिय मनोरंजन था कि अपनी गाड़ी की बग़ल में खड़े तथा इर्द-गिर्द मंडराते शहर के दुष्टों को नाक चढ़ाकर देखते हुए किसी गांववाले के पास वह पहुंचता और उससे पूछता:

"क्या तुम ऐबी हो?"

गांववाला झुंझलाहट में अपनी सारी सतर्कता भूल जाता।

"ऐ?.."

"ओह, तुम दहक़ान हो!" बुरून चहकता, हंसते हुए, और बिजली की गति से—एकदम अप्रत्याशित—गाड़ी में रखे बोरे की ओर बढ़ चलता। "संभलना, दादा!"

जवाब में गांववाला गालियों की बौछार करता। ठीक यही बुरून चाहता भी था। उसे इसमें उतना ही मज़ा आता था जितना कि संगीत के किसी नये शौक़ीन को सिम्फ़ोनी कन्सर्ट में आता है।

और बुरून बिना किसी लाग-लपेट के मुझसे कहता:

"अगर आप न होते तो इन्हें छठी का दूध याद आ जाता।"

किसानों के साथ हमारे अमित्रतापूर्ण सम्बन्धों का एक मुख्य कारण यह था कि हमारी कोलोनी पूर्णतया कुलकों के अधीन गाँवों से घिरी थी। गोंचारोव्का जिसके अधिकांश निवासी सचमुच में मेहनतकश किसान थे, हमारे दैनिक जीवन से अभी भी बहुत दूर था। हमारे निकटतम पड़ोसी—मूसी कारपोविच तथा येफ़्रेम सिदोरोविच आदि—सब के सब सफ़ाई के साथ छाई तथा सफ़ेदी पुती झोंपड़ियों में रहते थे। ओट के लिए इर्द-गिर्द टट्टर नहीं, बल्कि बाड़े लगे थे, और इस बात की चौकसी रखते थे कि कोई अहाते में न घुसने पाए। जब वे कोलोनी में आते तो कर के बारे में अन्तहीन शिकायतों से हमारी जान खाते और भविष्यवाणी करते कि ऐसी नीति अपनाकर सोवियत सरकार कभी नहीं टिक सकती! इसी के साथ-साथ छुट्टियों के दिनों में वे बढ़िया घोड़ों पर सवार होते, घरेलू दारू की नदियां बहाते और उनकी बीवियां छींट की नयी पोशाकों, मलाई और पनीर की टिकियों से महकतीं रहतीं। उनके लड़के सैलानीपन में बेजोड़ थे, जब वे घुड़सवारी करते थे तो आंखें चौंधिया जाती थीं—बढ़िया सिले हुए कोट, गहरे हरे रंग की नयी चोटीदार टोपियां, पालिश से बेहद चमचमाते जूते, जाड़े और गर्मियों में खूब शानदार और चमचम करते गैलोशों से सजे हुए। ओह, उन्हें कोई मात नहीं कर सकता था।

कोलोनी के निवासी अपने इन पड़ोसियों में से हरेक की आर्थिक स्थिति से खूब परिचित थे, यहां तक कि वे प्रत्येक सीड-ड्रिल अथवा हार्वेस्टर की स्थिति से भी परिचित थे। कारण, कसने तथा मरम्मत के लिए इन औज़ारों को वे हमेशा हमारे लोहारघर में लाते रहते थे। वे उन कतिपय गड़रियों तथा मज़दूरों की अभागी स्थिति से भी परिचित थे जिन्हें ये कुलक, बेरहमी के साथ, उनकी मज़दूरी तक दिए बिना, जब देखो तब धक्के देकर अपने घरों से बाहर निकाल देते थे।

और सच तो यह है कि मैं खुद भी अपने दरवाज़ों तथा बाड़ों से रक्षित कुलकों की दुनिया के प्रति अपने छात्रों की इस घृणा से अछूता नहीं रह सका।

यह सब होने पर भी ये निरन्तर झगड़े मुझे बेचैन बनाए दे रहे थे। इसी के साथ-साथ, गांव के अधिकारियों से हमारे वैमनस्यपूर्ण सम्बन्ध, कोढ़ में खाज का कार्य करते थे। लूका सेम्योनोविच ने, हालांकि त्रेपके

के खेतों को उसे हमारे हवाले कर देना पड़ा था, नयी कोलोनी से हमें निकालने की उम्मीद एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ी थी। उसने जान-तोड़ कोशिश की कि समूची त्रेपके जागीर और मिल प्रकट रूप में एक स्कूल का संगठन करने के लिए ग्राम सोवियत के क़ब्ज़े में करा ली जाए। उसने नातेदारों तथा नगर में अपने गुर्गों की मदद से गांव में शामिल करने के लिए कोलोनी से सम्बद्ध एक हिस्सा ख़रीदने का बन्दोबस्त किया। घूंसों और फ़ब्तियों की मदद से उसका यह आक्रमण हमने विफल कर दिया। लेकिन बिक्री को रद्द कराना तथा शहर में यह साबित करना मेरे लिए अत्यन्त कठिन सिद्ध हुआ कि कोलोनी के इस हिस्से को लूका सेम्योनोविच तथा उसके नातेदारों के लिए केवल ईंधन जुटाने के वास्ते ख़रीदा जा रहा है।

लूका सेम्योनोविच तथा उसके गुर्गों ने कोलोनी के बारे में अन्तहीन शिकायतें लिखने और उन्हें शहर भेजने का तांता बांध दिया, विभिन्न सरकारी विभागों में हमें बदनाम किया। हमारे यहां मिलीशिया के धावे के लिए भी उन्होंने ही ज़ोर लगाया था।

बहुत पहले, जाड़ों के दिनों की एक सांझ लूका सेम्योनोविच मेरे दफ़्तर में आ धमका और अधिकारपूर्ण स्वरों में बोला:

"मुझे अपने रजिस्टर दिखाओ जिनमें आप लोहारघर में किए गए काम के लिए गांववालों से ली गई धनराशि अंकित करते हो!"

"दफ़ा हो जाओ यहां से!" मैंने जवाब दिया।

"क्या-आ-आ?"

"निकल जाओ यहां से!"

मेरे चेहरे का हाव-भाव, निश्चय ही ऐसा नहीं था कि लूका सेम्यो-नोविच को अपने काम में—धनराशि का क्या हश्र हुआ, इसे उजागर करने में—कुछ सफलता की उम्मीद नज़र आती। वह—बिना किसी भुन-भुनाहट के—ऐसा लोप हुआ कि फिर शक्ल दिखाने का साहस नहीं कर सका, लेकिन इसके बाद वह ख़ुद मेरा और हमारे समूचे संगठन का जानी दुश्मन बन गया। कोलोनी के सदस्य भी इसके जवाब में युवा-सुलभ अपने समूचे जोश के साथ लूका से घृणा करते थे।

जून के महीने में उस समय जबकि गर्मी तेज़ी से पड़ रही थी, झील के सामनेवाले तट पर, क्षितिज की पृष्ठभूमि में बाक़ायदा एक कारवां

प्रकट हुआ। जब वह कोलोनी के निकट आया तो उसका रंग-ढंग पहचान-कर हम स्तब्ध रह गए: दो दहक़ान ओप्रिश्को और सोरोका को खदेड़ते हुए ला रहे थे। उनकी बाँहें परस्पर बंधी हुई थीं।

ओप्रिश्को हर पहलू से एक साहसी जीव था। कोलोनी में वह किसी से नहीं डरता था, केवल अन्तोन ब्रातचेन्को को छोड़कर जिसके हाथ में वह काम करता था और जो, जब भी ठीक समझता उसके कान ऐंठता रहता था। ओप्रिश्को अन्तोन से कहीं ज़्यादा बड़ा और मज़बूत था, लेकिन मुखिया साईस के प्रति उसका यह पूर्णतया अनबूझ मुग्ध भाव और अन्तोन की विजयी प्रकृति का जादू, उसकी अपनी इन विशिष्टताओं को उसके विरुद्ध कभी-कभी काम में लाने से रोकता था। अन्य लड़कों का जहां तक सम्बन्ध था, उनके सामने ओप्रिश्को अत्यन्त गर्व के साथ चलता था, कभी उन्हें अपने पर हावी नहीं होने देता था। उसका बहुत ही अच्छा स्वभाव उसके पक्ष में था। वह हमेशा ख़ुश रहता था और ख़ुशदिल संग-साथ के सिवा और किसी चीज़ की परवाह नहीं करता था। परिणामस्वरूप वह हमेशा कोलोनी के केवल उन कोनों में दिखाई देता था जहां कभी कोई उदास या खीजा हुआ चेहरा नज़र नहीं आता था। अनाथालय से कोलोनी आने के लिए उसने क़तई इनकार कर दिया था, और ख़ुद मुझे जाकर उसे अपने साथ लाना पड़ा था। बिस्तरे पर पड़े-पड़े ही, आंखों में घृणा भरे, उसने मेरा स्वागत किया।

"भाड़ में जाएं आप!" उसने कहा। "मैं कहीं नहीं जा रहा हूं..."

उसके वीरतापूर्ण गुणों के बारे में मैं सुन चुका था, सो शुरू से ही उपयुक्त स्वर अपनाकर मैंने उसे सम्बोधित किया।

"आपको कष्ट, श्रीमान, मैं बेहद अफ़सोस का अनुभव कर रहा हूं," मैंने कहा, "लेकिन कर्तव्य से मजबूर होकर मैं आपसे विनती करता हूं कि गाड़ी में चलकर आप अपना आसन ग्रहण करें, जो आपके लिए तैयार करके लाई गई है।"

मेरे इस शौर्यपूर्ण सम्बोधन से शुरू में तो ओप्रिश्को ने चकित अनुभव किया, यहाँ तक कि बिस्तरे पर से उठने का भी उसने कुछ उपक्रम किया, लेकिन इसके बाद उसकी पहलेवाली धुन फिर उस पर हावी हो गई, और उसने एक बार फिर अपना सिर तकिए में समा जाने दिया।

"मैंने कहा न कि मैं कहीं नहीं जा रहा हूं..."

"उस हालत में, माननीय श्रीमान, अत्यन्त खेद के साथ, आपको बलपूर्वक ले जाने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ेगा।"

ओप्रिश्को ने तकिए पर से घुंघराले बालोंवाला अपना सिर उठाया और बिना किसी प्रयास के अचरज के साथ मेरी ओर देखा।

"ख़ुदा के लिए, यह आप कहां से यहां आ टपके?" उसने चहककर कहा। "क्या आप समझते हैं कि मुझे बलपूर्वक ले जाना इतना आसान होगा?"

"इस बात का ध्यान रखें..."

मैंने अपनी आवाज़ को भयोत्पादक बनाया और व्यंग्य का भी एक पुट उसमें सरसरा जाने दिया।

"...प्रिय ओप्रिश्को..."

और इसके बाद अचानक मैं उसपर गरज उठा:

"बस, अब उठो, समझे! क्या यहां पड़े-पड़े ऐंठ रहे हो? उठो, मैं कहता हूं!"

वह बिस्तरे से उछलकर खिड़की की ओर लपका।

"मैं खिड़की में से कूद जाऊंगा, तंग न करें, मैं कूद पड़ूंगा!"

"या तो तुम इसी दम खिड़की में से कूद पड़ो," मैंने भन्नाकर कहा: "या फिर गाड़ी में चलकर बैठो,—तुम्हारे साथ खिलवाड़ करने का मेरे पास समय नहीं है!"

हम तीसरी मंज़िल पर थे। उन्मुक्त और प्रसन्न भाव से ओप्रिश्को हंसा।

"आपसे बचकर नहीं भागा जा सकता!" उसने कहा। "कोई चारा नहीं। क्या आप ही गोर्की कोलोनी के संचालक हैं?"

"हां, मैं ही हूं।"

"तो आप ने एकदम शुरू में ही क्यों नहीं बताया? मैं बहुत पहले ही आपके साथ चल दिया होता।"

सरगर्मी के साथ वह रास्ते की तैयारी करने लगा।

कोलोनी में अन्य लड़कों के साथ वह हर उद्योग में हिस्सा लेता, लेकिन मीर बनने का कभी प्रयत्न नहीं करता, प्रत्यक्षत: जी बहलाने की इच्छा से, मुनाफ़े की इच्छा से नहीं।

सोरोका ओप्रिश्को से उम्र में कम था। उसका चेहरा गोल-मटोल और सुघड़ था। लेकिन वह वज्र मूर्ख, असम्बद्ध और असाधारण रूप से अभागा था। जिस चीज़ में भी वह हाथ डालता उसे क्षति उठानी पड़ती। सो लड़कों ने जब उसे ओप्रिश्को के दामन से झूलते देखा तो उन्होंने नाराज़ी प्रकट की।

"द्मित्री को भला यह क्या सूझा जो सोरोका को अपने दामन से चिपटाए घूमता है?" वे बुदबुदाए।

कारवां में दो जने थे—एक तो ग्राम-सोवियत का अध्यक्ष, और दूसरा हमारा पुराना मित्र मूसी कारपोविच।

मूसी कारपोविच आहत मासूमियत की मूर्त्ति बना हुआ था। लूका सेम्योनोविच न्यायाधीश की भांति गम्भीर और अधिकारीपन में अलिफ बना हुआ था। उसकी लाल दाढ़ी बड़ी सफ़ाई से संवारी हुई थी, और उसकी जाकेट के नीचे कशीदा की सफ़ेद बुर्राक़ क़मीज़ चमचमा रही थी। साफ़ मालूम होता था कि वह सीधे गिरजा से चला आ रहा है।

अध्यक्ष ने शुरू किया:

"वाह, कितनी बढ़िया तालीम दे रहे हैं अपने लड़कों को आप!"

"लेकिन इससे आपको दुबला होने की क्या ज़रूरत आन पड़ी?" मैंने पलटकर जवाब दिया।

"अभी बताता हूं... इनके मारे लोगों की नींद हराम है... राजमार्ग पर लूटते हैं, कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसपर हाथ साफ़ न करते हों!"

"ऐ, दादा, इन्हें बांधने का तुम्हें क्या अधिकार है?" कोलोनी के लड़कों की भीड़ में से आवाज़ आई।

"इसे भी यह पुराना राज ही समझता है!"

"इसका ज़रा मिज़ाज ठीक करने की ज़रूरत है।"

"तुम सब चुप रहो!" मैंने उन्हें झिड़का। "हां तो मुझे बताओ, मामला क्या है," उसकी ओर मुड़ते हुए मैंने कहा।

मूसी कारपोविच ने अब कहानी का सूत्र पकड़ा।

"मेरी बूढ़ी घरवाली ने बाड़े पर एक पेटीकोट तथा एक कम्बल लटका रखा था, दोनों उधर से गुज़रे। इसके बाद क्या देखता हूं कि चीज़ें वहां से ग़ायब हैं। मैं इनके पीछे दौड़ा, और ये भाग निकले। अब, आप जानो, मैं उतना तेज कहां दौड़ सकता हूं जितना तेज़ कि ये दौड़ते हैं।

सौभाग्य से ठीक तभी लूका सेम्योनोविच गिरजा से बाहर निकल रहे थे, और हमने इन्हें धर दबोचा..."

"लेकिन आपने इन्हें बांधा क्यों?" भीड़ में से फिर आवाज़ आई।

"इसलिए कि कहीं ये भाग न जाएं! समझ गए न?.."

"यह सब यहां बहस करने की जरूरत नहीं," अध्यक्ष ने बीच में कहा, "चलिए, चलकर अब एक बयान तैयार कर लें।"

"बिना बयान के भी चल सकता है। उन्होंने चीज़ें लौटा दीं कि नहीं?"

"लौटा भी दी हों तो इससे क्या? बयान तो तैयार करना ही होगा।"

अध्यक्ष हमें लांछित करने पर तुला था, और मौक़ा उसके पक्ष में था —कोलोनी के लड़के पहली बार रंगे हाथों पकड़े गए थे।

हमारे लिए यह एक अत्यन्त अप्रिय स्थिति थी। बयान का मतलब था लड़कों के लिए निश्चित जेल, और कोलोनी के लिए न मिटनेवाली बदनामी।

"ये लड़के पहली बार पकड़े गए हैं," मैंने कहा। "पड़ोसियों के बीच सभी तरह की घटनाएं घट सकती हैं। पहली बार क्षमा कर देना चाहिए।"

"नहीं," लाल सिरवाले अध्यक्ष ने कहा। "माफ़ी-वाफ़ी कुछ नहीं! चलिए, दफ़्तर चलिए और बयान लीजिए।"

मूसी कारपोविच को पुराने घावों की याद हो आई।

"आपको याद है, उस रात आपने मेरी क्या गत की थी? मेरी कुल्हाड़ी अभी भी आपके पास मौजूद है,—और वह जुरमाना जो मुझे अदा करना पड़ा था!"

मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

हां, निकलने का कोई रास्ता नहीं था, कुलकों ने हमें चित्त कर दिया था। विजेताओं को मैंने दफ़्तर की ओर रवाना किया, और लड़कों से ग़ुस्से में चिल्लाकर कहा:

"आख़िर तुम अपनी करतूत से बाज़ नहीं आए, कमबख़्त कहीं के! इस बार पेटीकोटों पर ही जा मरे! यह दाग़ छुटाए नहीं छूटेगा। लगता है, मुझे अब डंडे से कमबख़्तों की ख़बर लेनी पड़ेगी। और वे मूर्ख... वे जेल की हवा खाएंगे!"

लड़कों के बीच सन्नाटा छा गया था। सचमुच, वे ओखली में सिर दे आए थे।

इन गुरु-वचनों की अशेष बौछार करता मैं भी दफ़्तर की ओर चल दिया।

दो घंटे तक मैं अध्यक्ष से विनती और मनुहार करता रहा। मैंने वायदा किया कि इस तरह की हरक़त आगे कभी नहीं होगी। मैंने रज़ामन्दी प्रकट की कि केवल लागत लेकर ग्राम-सोवियत के लिए मय धुरी के दो नये पहिए बनवा दिए जाएंगे। अन्त में अध्यक्ष ने अपनी आख़िरी शर्त पेश की:

"तमाम लड़के ख़ुद मेरे सामने आकर कहें।"

इन दो घंटों के भीतर ही अध्यक्ष के प्रति मेरे हृदय में जीवन-व्यापी घृणा संचित हो गई। एक ओर बातचीत चल रही थी और दूसरी ओर यह भयंकर विचार रह-रहकर मेरे मस्तिष्क में कौंध रहा था—हो सकता है कि एक दिन अध्यक्ष किसी अंधेरी जगह शिकंजे में फंस जाए, और उसपर मार पड़नी शुरू हो, तब उसे बचाने के लिए मैं एक उंगली तक नहीं हिला सकता!

मैं बहुतेरा कसमसाया, लेकिन अन्य कोई रास्ता नहीं मिला। अन्त में मैंने लड़कों से पोर्च में पंक्तिबद्ध होकर खड़े होने के लिए कहा, और अधिकारीगण बाहर पैड़ियों पर आ गए। हाथ को अपनी टोपी की छज्जी पर रखे, कोलोनी की ओर से मैंने कहा कि अपने साथियों की ग़लती का हमें भारी खेद है, प्रार्थना की कि उन्हें माफ़ किया जाए, और वचन दिया कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होने दी जाएगी। लूका सेम्योनोविच ने निम्न भाषण दिया:

"निःसंदेह इस तरह के अपराधों को अत्यन्त कड़ाई के साथ कानूनन दण्डित करना चाहिए। क्योंकि गांव के निवासी वास्तव में मेहनतकश हैं। इसलिए अगर कोई किसान अपना पेटीकोट सुखाने के लिए डालता है और तुम उसे चुरा लेते हो तो तुम जनता के दुश्मन हो, सर्वहारा वर्ग के दुश्मन हो। और मैं, जिसे सोवियत सरकार ने अधिकारी बनाया है किसी गैरक़ानूनी काम करने की इजाज़त नहीं दे सकता, जिस के अनुसार कोई भी लुटेरा या अपराधी जिस चीज़ पर भी चाहे अपना हाथ साफ़ कर सकता है। और आपका मुझसे विनती करना, और वचन देना तथा...

ख़ुदा ही जानता है कि इन सब का क्या नतीजा निकलेगा। लेकिन अगर आप नत-मस्तक हो मुझसे अनुरोध करते हैं, और आपका संचालक वचन देता है कि वह आपको ईमानदार नागरिक बनने की तालीम देगा, लुटेरा बनने की नहीं... तब मैं आपको बिना शर्त माफ़ कर दूंगा।"

मैं अपमान और गुस्से से कांप रहा था। ओप्रिश्को और सोरोका, मुर्दों की भांति पीले-ज़र्द, कोलोनीवासियों की पंक्तियों में खड़े थे।

अध्यक्ष और मूसी कारपोविच ने मुझसे हाथ मिलाए, दो-चार महिमामंडित भारी-भरकम शब्दों का उच्चारण किया जिन्हें मैं, जो भी कहिए, सुन तक नहीं सका।

"तितर-बितर!"

कोलोनी के ऊपर, आकाश में, जलते हुए सूरज ने भभककर एक स्थीयी कौंध का रूप धारण कर लिया। मिण्ट घास की गंध धरती के ऊपर छाई थी। गतिहीन हवा सख़्त नीली धारियों में जंगल के वातावरण में व्याप्त थी।

मैंने इर्द-गिर्द नज़र डाली। चारों ओर वही कोलोनी थी, वही आयताकार इमारतें थीं, वही लड़के थे, और कल हर चीज़ की फिर पुनरावृत्ति होगी—पेटीकोट, अध्यक्ष, मूसी कारपोविच और मक्खियों से भिनभिनाते भयानक नगर के चक्कर! ठीक मेरे सामने ही मेरे कमरे का दरवाज़ा था, सफ़री बिस्तरों, बिना रोग़न की मेज़ और मेज़ पर मोटे कपड़ों की एक पोटली रखी हुई।

"क्या किया जाए? मैं क्या करूं? क्या करना चाहिए मुझे?" मैंने मन-ही-मन कहा।

मैं जंगल की ओर मुड़ा।

दोपहर के समय देवदार के जंगल में छांह नहीं होती, लेकिन हर चीज़ साफ़-सुथरी और चौकस रहती है, दूर तक आदमी की नज़र जा सकती है। देवदार के कोमल वृक्ष, आकाश के नीचे शानदार व्यवस्था के साथ, क़ायदे से खड़े मालूम होते हैं, जैसे बहुत ही सफ़ाई के साथ सज्जित रंगमंच!

हालांकि हम जंगल में रहते थे, लेकिन उसकी गहराइयों में जाने का

बिरले ही मुझे कभी इत्तफ़ाक़ हुआ था। मानवीय व्यापार बेरहमी के साथ मुझे मेज़ों, लेथों, सायबानों और शयनागारों से बांधे रखते थे। देवदार के जंगल की शान्ति और पवित्रता, हाल की गंध से पगी हवा, अपना एक अलग जादू रखती थी। ऐसा अनुभव होता था जैसे इसे छोड़ने को कभी जी नहीं चाहेगा, मन करता था कि ख़ुद भी एक कोमल, समझदार सुगंधित पेड़ बन जाऊँ, और आकाश के नीचे, इतनी परिष्कृत तथा बढ़िया संगत के बीच, अपना स्थान ग्रहण करूँ।

पीछे की ओर एक शाख़ चरमराई। मैंने घूमकर देखा—समूचा जंगल, जहां तक नजर जाती थी, कोलोनी के निवासियों से भरा था। पेड़ों के तनों द्वारा निर्मित बीथिकाओं के बीच से वे सावधानी से हरकत कर रहे थे, और केवल खुले हिस्से के आख़िरी छोर तक ही मेरी ओर तेज़ी से बढ़ जाते थे। अचरज से भरा मैं रुक गया। वे भी, जहां थे वहीं जाम हो गए, पैनी नज़रों से, एक तरह की गतिशून्य, भयभीत प्रत्याशा के साथ, मेरी ओर देखते हुए रुक गए।

"यहां तुम क्या कर रहे हो! क्यों इस तरह मेरे पीछे मंडरा रहे हो?"

ज़दोरोव जो संयोगवश अन्य सबसे मेरे ज़्यादा निकट था, एक पेड़ के पीछे से बाहर निकला और फुसफुसी-सी आवाज़ में बोला:

"चलिये न, कोलोनी में चलिये।"

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे हृदय की धड़कन रुक गई हो।

"क्यों, कोलोनी में क्या कुछ हुआ है?"

"हुआ कुछ नहीं। हमें चलना चाहिए।"

"कुछ मालूम तो हो, कमबख़्त, क्या कहना चाहते हो तुम?"

मैंने तेज़ी से उसकी ओर डग बढ़ाया। दो या तीन लड़के और निकट आ गए। बाक़ी सब दूर खड़े रहे। जदोरोव ने फुसफुसाकर कहा:

"हम चले जाएंगे। केवल एक कृपा हम पर कीजिये।"

"ओ-हो, आख़िर तुम चाहते क्या हो?"

"अपना रिवाल्वर हमें दे दीजिये।"

"अपना रिवाल्वर?"

अचानक उसके आशय का मुझे कुछ आभास हुआ, और मैं हंस पड़ा। "ओह, मेरा रिवाल्वर। ख़ुशी से! तुम लोग भी ख़ूब हो! अरे, मैं

लटककर या झील में कूदकर भी तो जान दे सकता हूं। भला, क्या फ़र्क पड़ता है इससे?"

ज़दोरोव की हंसी, अचानक, गूंजदार क़हक़हों में फूट पड़ी।

"अच्छी बात है तो, इसे अपने पास ही रखिये। हमारे दिमाग़ में यह आया... तो आप केवल टहलने के लिए जा रहे हैं। अच्छा, तो जाइये। चलो, साथियो, लौट चलें!"

आख़िर हुआ क्या?

हुआ यह कि जब मैं जंगल की ओर मुड़ा तो सोरोका भागा हुआ शयनागार में पहुंचा।

"ओह, लड़को! ओह, साथियो! ओह, जल्दी जंगल में पहुंचो। अन्तोन सेम्योनोविच ख़ुद अपने को गोली मारने जा रहे हैं!"

और उसे अपनी बात तक पूरी कहने का मौक़ा दिए बिना ही सब के सब शयनागार से बाहर लपक आए।

सांझ को हर कोई कुछ अन्यमनस्क और अचकचाता-सा मालूम होता था,—केवल एक करावानोव मूर्ख का अभिनय कर रहा था और बिस्तरों के बीच इस तरह बल खा रहा था जैसे उसके सिर पर भूत सवार हो। जदोरोव निरस्त्र कर देनेवाली हंसी हंस रहा था और शेलापूतिन के नन्हे-से खिले हुए चेहरे को जाने क्यों अपने से बराबर दबाए जा रहा था। बुरून मेरे बराबर में ज़रा भी टस से मस हुए बिना खड़ा था और दृढ़ता के साथ रहस्यमय चुप्पी साधे था। ओप्रिश्को उन्माद-ग्रस्त की भांति कोज़िर के कमरे में बिस्तरे पर पड़ा था और गंदे तकिए में मुंह दिए रो रहा था। लड़कों के उपहासों से बचने के लिए सोरोका कहीं जा छिपा था।

ज़दोरोव ने कहा:

"आओ, हम बाजी का खेल खेलें!"

और हम सब सचमुच बाज़ी के खेल में रम गए। शिक्षण भी कभी-कभी अजीब रूप धारण कर लेता है: चालीस लड़के, सब के सब अध-ढके और अध-भूखे, तेल की ढिबरी की रोशनी में भरसक मजे के साथ बाज़ी का खेल खेल रहे थे... केवल परम्परागत चुम्बनों को छोड़कर, जिनका वहां अभाव था।

१६. हार्वेस्टर के लिए घोड़ा

वसन्त में घोड़ों की समस्या ने हमारी गाड़ी को क़रीब-क़रीब ठप्प ही कर दिया। 'लंडूरा' और 'डाकू' अब बिलकुल किसी काम के नहीं रहे थे, उन्हें साथ रखकर काम करना असम्भव था। हर दिन सवेरे से ही कालीना इवानोविच अस्तबल में क्रान्ति-विरोधी भाषणों की झड़ी लगा देता था, सोवियत सरकार को कुप्रबंध और जानवरों के प्रति निर्दयता के लिए खरी-खोटी सुनाता था।

"अगर तुम फ़ार्म का संचालन करना चाहते हो," वह कहता, "तो तुम्हें घोड़ों की देख-भाल करनी होगी, बेजान जानवरों को सताने से काम नहीं चलेगा। सैद्धान्तिक रूप में वह, निस्संदेह एक घोड़ा है, लेकिन वस्तुत: वह एक घड़ी खड़ा तक नहीं रह सकता—भरभराकर ढह जाता है, और उसे देखकर हृदय दया से उमड़ उठता है, उससे काम लेना तो दूर की बात है।"

ब्रातचेन्को का रवैया अत्यन्त सरल था। वह घोड़ों से केवल घोड़े होने के नाते प्यार करता था, और उसके प्रियपात्रों पर जब भी कोई अतिरिक्त काम लादता था तो वह झुंझला उठता था और शोक से भर जाता था। तमाम मनुहारों और शिकवा-शिकायतों के जवाब में वह अपने पास एक लाजवाब तर्क रिजर्व रखता था:

"अगर तुम्हें हल में जोत दिया जाए तो कैसा लगेगा? मैं देखना चाहता हूं कि तब तुम क्या बावला मचाते हो..."

कालीना इवानोविच के उद्‌गारों को वह निर्देश समझता और यह अर्थ लगाता था कि घोड़ों को कोई काम न करने दिया जाए। और हम भी उसे ज़्यादा दबाना नहीं चाहते थे। नयी कोलोनी में अस्तबलों की मरम्मत हो ही चुकी थी, और वसन्त के शुरू में जोताई तथा बोवाई के लिए दो घोड़ों को वहां स्थानान्तरित भी करना था। लेकिन वहां भेजने के लिए घोड़े थे कहां।

एक दिन चेरनेन्को से बातें करते समय मैंने अपनी कठिनाइयों का ज़िक्र शुरू किया: "औज़ारों का तो जैसे-तैसे, कम-से-कम इस वसन्त के लिए, हम जुगाड़ कर लेंगे, लेकिन घोड़ों के लिए हम क्या करें? साठ देस्यतीना हैं आख़िर! और अगर हमने जोताई-बोवाई नहीं की, तो देखना गांववाले हमें लेकर क्या कांव-कांव मचाते हैं!"

चेरनेन्को ने क्षण-भर सोचा और सहसा ख़ुशी से उछल पड़ा।

"ज़रा ठहरो तो! एक अर्थ-विभाग तो हमारे पास यहां है न? वसन्त में हमें इतने घोड़ों की ज़रूरत नहीं होगी, मैं तुम्हें तीन दे दूंगा। हमें चारे की बचत हो जाएगी। क़रीब छः सप्ताह में तुम उन्हें लौटा सकते हो। हमारे सप्लाई-मैनेजर से बात कर देखो।"

मज़दूरों और किसानों के मुआयने का सप्लाई मैनेजर एक कड़ा और व्यावहारिक आदमी था। घोड़ों के किराये के लिए उसने कसकर मांग की—हर महीने के लिए पांच पूड गेहूं और उनकी गाड़ी के लिए पहिये।

"आपके पास गाड़ी के पहिये बनाने की वर्कशाप तो है, क्यों, ठीक है न?" उसने कहा।

"आप तो जीते-जी ही हमारी खाल खींच लेना चाहते हैं? क्या आप जानते हैं कि हम कौन हैं?"

"मैं सप्लाई-मैनेजर हूँ, ख़ैरात बांटनेवाला नहीं। और आप ज़रा हमारे घोड़ों पर तो नज़र डालकर देखिए। मेरी पूछो तो किसी भाव भी मैं आपको उन्हें न लेने दूं—आप उन्हें नष्ट कर डालेंगे, काम के मारे उनका कचूमर निकाल देंगे, मैं आप लोगों को जानता हूं। इन घोड़ों को खोजने में मुझे दो साल लग गए। ये निरे घोड़े ही नहीं हैं, ये आंखों के तारे हैं, तारे!"

लेकिन मैं तो उससे सौ पूड गेहूँ प्रतिमास और शहर में तमाम गाड़ियों के लिए पहियों का वायदा तक करने के लिए तैयार था। बस, हमें घोड़े मिल जाने चाहिएं।

सप्लाई-मैनेजर ने नक़ल सहित एक समझौता तैयार किया जिसमें हर चीज बड़े प्रभावशाली ढंग से, विस्तार के साथ, अंकित थी:

"...आगे जिसका कोलोनी नाम से यहां उल्लेख किया जाएगा... उपयुक्त पहिये एक स्पेशल कमीशन द्वारा स्वीकार किए जाने तथा तत्सम्बन्धी लिखा-पढ़ी हो जाने के बाद मज़दूरों और किसानों के मुआयने के अर्थ-विभाग की सम्पत्ति माने जाएंगे... घोड़ो की वापसी की नियत तिथि से परे प्रत्येक दिन के लिए कोलोनी मंज़ूर करती है कि वह प्रान्तीय मज़दूरों और किसानों के मुआयने के अर्थ-विभाग को प्रति घोड़ा दस पूड गेहूं अदा करेगी... समझौते की शर्तों को पूरा न कर सकने की सूरत में को-

लोनी, हरजाने के रूप में, तज्जन्य नुक़सान का पांच गुना परिमाण में क्षतिपूर्त्ति करेगी..."

अगले दिन कालीना इवानोविच और अन्तोन शान के साथ–जैसे भारी विजय करके लौटे हों–कोलोनी में दाखिल हुए। हमारे छोटे लड़के सुबह से उनकी बाट देख रहे थे। समूची कोलोनी शिक्षकों सहित प्रत्याशा से उत्तेजित थी। शेलापूतिन और तोस्का अन्य सबसे भाग्यशाली थे–राज मार्ग पर ही उन्होंने कारवां से भेंट की और पेश्तर से पहले ही घोड़ों पर सवार हो गए। कालीना इवानोविच का हाल अजीब था-न तो वह मुसकरा सकता था और न ही बोल पाता था–महत्व और गौरव-गरिमा ने इतनी पूर्णता के साथ उसके समूचे व्यक्तित्व को ढंक लिया था। अन्तोन ने तो, क्या मजाल जो हमारी दिशा में अपने सिर को ज़रा गति तक दी हो–हमारी गाड़ी की दुम से बंधे तीन काले घोड़ों के सिवा अन्य सभी जीवित प्राणियों का उसकी नज़र में कोई महत्व नहीं रहा था।

कालीना इवानोविच कसमसाता गाड़ी से बाहर निकला। अपनी जाकेट से चिपके तिनकों को झाड़ता हुआ अन्तोन से बोला:

"तुम इन्हें संभालो और क़ायदे से इनका बन्दोबस्त कर दो। ये मामूली घोड़े नहीं हैं, 'डाकू' की भांति!"

अन्तोन ने अपने सहायकों पर ताबड़तोड़ आदेशों की बौछार करते हुए अपने भूतपूर्व प्रियपात्रों को दूरतम और सबसे कम आरामदेह अस्तबलों में खदेड़ दिया। उन लोगों ने पट्टे से दूर भागते हुए जो कौतुकवश अस्तबल में झांकने लगते थे, निष्ठुर घनिष्ठता के साथ कालीना इवानोविच को-जवाब दिया:

"जोत भी तो अब क़ायदे की होनी चाहिए, कालीना इवानोविच! इस कबाड़ से काम नहीं चलेगा!"

घोड़े एकदम काले, ऊंचे और ख़ूब मोटे-ताज़े थे। उनके नाममात्र से लड़कों को नवाबी ठाठ का–रईसी का–बोध होता था। उनके नाम थे–सिंह, 'बाज़' और 'मेरी'।

सिंह निराशाजनक निकला। यों वह एक ख़ूबसूरत घोड़ा था, लेकिन खेती के काम का आदी नहीं था। जल्दी ही थक जाता, दम भी उसका कुछ अधिक नहीं था। लेकिन 'बाज़' और 'मेरी' हर तरह से उपयुक्त थे। मज़बूत, शान्त और देखने में अच्छे। यह सच है कि अन्तोन का यह सप-

ना कि घोड़े, अपनी दुलकी चाल से—हमारे काम के साथ-साथ—शहर के सभी कोचवानों का मुंह फीका कर देंगे, सही नहीं उतरा, लेकिन हल और सीड-ड्रिल के साथ उन्होंने शान के साथ काम किया, और केवल सांझ को—उस समय जब कालीना इवानोविच अपनी रिपोर्ट देता था कि इतनी ज़मीन में जोताई और बोवाई की गई—तो स्फुट ध्वनियों-हुंकारों के रूप में वह अपना सन्तोष प्रकट करता था। केवल एक चीज़ जो उसे परेशान करती थी वह थी—घोड़ों के मालिकों की उच्च स्थिति!

"हर चीज़ बढ़िया है," वह कहता, "केवल यही बहुत बुरा है कि मज़दूरों और किसानों के मुआयने के साथ हमें अपनी टांग फंसानी पड़ी है। वे जो चाहें कर सकते हैं। और कोई शिकायत करे भी तो किससे? क्या मज़दूरों और किसानों के मुआयने से?"

नयी कोलोनी में जीवन ने करवटें लेनी शुरू कीं। एक घर तैयार हो गया था। छः सदस्य उसमें जमा दिए गए। वे वहां अकेले रहते थे। देख-संभाल के लिए न तो उनके साथ कोई वयस्क था, न खाना बनाने के लिए कोई रसोइया। हमारे भण्डारे में से जो कुछ भी वे ले सकते थे, उससे ही अपना बन्दोबस्त करते थे और बग़ीचे में बनी एक छोटी-सी भट्टी पर, जितना भी अच्छा उनसे हो सकता था, ख़ुद अपना खाना बनाते थे। उनके कर्त्तव्यों में बग़ीचे और निर्माण-कार्य की चौकसी करना, कोलोमाक नदी पर मांझी की ड्यूटी देना और अस्तबलों में काम करना शामिल था। अस्तबलों में ओप्रिश्को की देख-रेख में दो घोड़े रखे गए थे, और वह ब्रात-चेन्को के अनुचर के रूप में काम करता था। अन्तोन ने ख़ुद अपनी मर्ज़ी से मूल कोलोनी में ही रहना निश्चय किया था, जहां ज़्यादा लोग थे, और इसलिए ज़्यादा चहल-पहल भी थी। मुआयना करने के लिए वह रोज़ नयी कोलोनी का चक्कर लगा आता था, और उसके इन मुआयनों से केवल उसका सहायक ओप्रिश्को ही नहीं, बल्कि कोलोनी के सभी निवासी डरते थे।

नयी कोलोनी के खेतों में तीव्र गति से काम चल रहा था। सब के सब—साठों—देस्यतीनों में बोवाई कर ली गई थी। यह सच है कि बिना किसी ख़ास कृषि-सम्बन्धी दक्षता से या सही ढंग से खेतों को योजनाबद्ध कर, यह काम नहीं किया गया था, फिर भी बोवाई तो की ही गई थी—वसन्तकालीन गेहूं की, जाड़ों के गेहूं की, रई और जई की। सभी

कुछ बोया गया था। इसके अलावा कुछ देस्यतीनों में आलू और चुकन्दर भी बोए गए थे। घासपात की सफ़ाई और मिट्टी गिराने की यहां ज़रूरत थी, और यह सब निबटाने के लिए हमें भारी मेहनत करनी पड़ी। कुल मिलाकर हमारी कोलोनी में अब साठ आदमी थे।

सारें दिन और रात में भी काफ़ी देर तक, दोनो कोलोनियों के बीच निरंतर आवागमन चलता रहता था। लड़कों की टोलियां काम करने जाती थीं, और काम से लोटती थीं। बारदाने और कोलोनी के निवासियों के लिए रसद के सामान से भरी हमारी अपनी गाड़ियां बाहर निकलतीं थीं। और निर्माण-सामग्री से लदी, किराये की गाड़ियां, गांव से आती थीं। अन्तोन अपनी अद्‌भुत अदा के साथ सिंह पर तथा कालीना इवानोविच एक पुराने टमटम पर, जिसे जाने कहां से झटक लाया गया था सवार दिखाई पड़ते थे।

रविवार के दिन समूची कोलोनी—शिक्षक तथा अन्य सब—कोलोमाक में स्नान करने जाते थे। साथ ही आस-पास के युवक और युवतियां, पिरोगोव्का तथा गोंचारोव्का गांव के किशोर संगठन कोम्सोमोल के सदस्य, और कुलक घरानों की सन्तान भी, क्रमशः, इस आह्लादपूर्ण नदी के किनारे हमारे साथ जमा होने के आदी हो गए। हमारे बढ़ईगीरों ने कोलोमाक के दूसरी तरफ़ एक छोटी-सी जेटी बना दी जिसके ऊपर हमने अपना झंडा फहरा दिया। झंडे पर "गो. को." अक्षर अंकित थे। एक हरी नाव, ऐसा ही एक झंडा फहराए, इस जेटी और नदी के हमारेवाले तट के बीच सारे दिन चक्कर लगाती थी। मित्का जेवेली और वित्का बोगोयावलेन्स्की डांड़ चलाते थे। हमारी लड़कियों ने, जो कोलोमाक नदी पर हमारी स्थिति के महत्व से पूर्णतया अवगत थीं, कपड़ों के सभी प्रकार के अवशेषों को जोड़-तोड़कर मित्का तथा वित्का के लिए नाविकोंवाले जम्पर बना दिए थे। कितने ही हमारी कोलोनी के छोटे लड़के और इर्द-गिर्द मीलों तक के भी—दुनिया में सब से ज़्यादा सुखी इन जोतधारियों के प्रति मन-ही-मन गहरी ईर्ष्या रखते थे। कोलोमाक के तटों ने हमारे लिए केन्द्रीय क्लब का रूप धारण कर लिया।

ख़ुद कोलोनी भी कार्य के निर्बाध प्रवाह, इस कार्य के सिलसिले में उत्पन्न होनेवाली अनिवार्य चिन्ताओं, गांव से ग्राहकों के आगमन, अन्तोन की भुनभुनाहटों, कालीना इवानोविच की झिड़कियों तथा कराबानोव,

ज़दोरोव और बेलूख़िन के अन्तहीन क़हक़हों तथा शैतानियों, सोरोका और गलातेन्को की दुर्घटनाओं, देवदार के वृक्षों के वीन सदृश संगीत, धूप और यौवन की चहल-पहल से सजीव और गूंजती रहती थी।

गंदगी, चीलर और खाज के अस्तित्व तक को अब हम भूल चुके थे... कोलोनी अब सफ़ाई और एकदम नये पेवन्दों से चमचम करती थी,–उन नये पैवन्दों से जिन्हें हमने, जहां भी कमज़ोरी का चिन्ह प्रकट हुआ, बड़ी सुघड़ता से लगा दिया था: पतलूनों में, बाड़े में, सायबान की दीवार या पुरानी पोर्च में। शयनागारों में अभी भी वही पुराने पलंग बिछे थे, लेकिन दिन के दौरान अब उन पर बैठने की मना ही थी, इसके लिए देवदार की लकड़ी के बिना रोग़न किए बेंचों की व्यवस्था कर दी गई थी। भोजन के कमरे में भी ऐसी ही बिना रोग़न की हुई मेज़ें बिछा दी गई थीं जिन्हें लोहारघर में ख़ास तौर से बनाए गए चाकुओं से हर रोज़ चमकाया जाता था।

लोहारघर भी अब पहले जैसा नहीं रहा था–अनेक महत्वपूर्ण परिवर्त्तन उसमें हो गए थे। कालीना इवानोविच की कुटिल योजना पूर्णतया पूरी हो चुकी थी। दारू पीने तथा ग्राहकों के साथ क्रांति विरोधी बातें करने के कारण गोलोवान को अलग कर दिया गया था। उसने लोहारघर के साज़-सामान को वापस ले जाने का प्रयत्न तक नहीं किया, वह जानता था कि इस तरह की हरकत का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। विदा के समय उसने केवल शिकायत और व्यंग्य भरे अन्दाज़ में, यह कहते हुए अपने सिर को झटका दिया:

"तुम भी ठीक उसी थैली के चट्टे-बट्टे हो जिसके कि अन्य मालिक! केवल इसलिए कि तुम मालिक हो, तुम समझते हो कि तुम्हें हर किसी को लूटने का अधिकार है।"

बेलूख़िन इस तरह के उद्‌गारों से पस्त होनेवाला नहीं था। उसने पुस्तकों को बेकार ही नहीं पढ़ा था और दुनिया में यों ही नहीं जीवन बिताया था। वह सीधे गोलोवान पर यह कहते हुए प्रसन्नता से मुसकराया।

"तुम भी कितने मूढ़ नागरिक हो, सोफ़ोन! एक साल से अधिक तुम हमारे साथ काम करते रहे, फिर भी तुम कुछ नहीं समझते! अरे, ये सब तो उत्पादन के साधन हैं!"

"ठीक यही तो मैं भी कहता हूं।"

"...और उत्पादन के साधन, देखो न, सर्वहारा वर्ग की सम्पत्ति हैं। और सर्वहारा वर्ग—देख रहे हो न—वह उधर मौजूद है!"

और उसने सर्वहारा वर्ग के असली, जीते-जागते प्रतिनिधियों—ज़ग़ोरोव, वेर्शनेव और कुज़्मा लेशी की ओर इशारा किया।

सेम्योन बोगदानेन्को अब लोहारघर का मुखिया नियुक्त हुआ। वह ख़ानदानी लोहार था और रेलवे यार्ड के इंजनख़ाने में काम करनेवाले एक पुराने नामी परिवार में उसने जन्म लिया था। सेम्योन लोहारघर में सैनिक अनुशासन और सफ़ाई का क़ायल था। घोड़ों की नालें और छोटी-बड़ी हथौड़ियां, बड़ी सुघड़ता के साथ अपने नियत स्थान से झांकती नज़र आती थीं। मिट्टी का फ़र्श कुशल गृहिणी की कुटिया की भांति साफ़-सुथरा रहता था। भट्ठी की छत पर कोयले का एक कण तक नज़र नहीं आता था, और ग्राहकों के साथ उसका व्यवहार संक्षिप्त तथा सारपूर्ण होता था।

"यह गिरजा नहीं है, भाव-ताव नहीं चलेगा," वह उनसे कहता।

सेम्योन बोगदानेन्को पढ़ना और लिखना जानता था, दाढ़ी-मूँछ साफ़ रखता था और कभी बुरी भाषा का इस्तेमाल नहीं करता था।

लोहारघर में काम था इतना कि निबटाए नहीं निबटता था—ख़ुद हमारा अपना भी और गांववालों का भी। यह वह समय था जबकि अन्य वर्कशापों में काम क़रीब-क़रीब बंद था, एक गाड़ी के पहिए बनानेवाली दुकान को छोड़कर जिसमें कोज़िर तथा दो अन्य लड़के जुटे रहते थे, पहियों की मांग में कोई कमी नहीं आई थी।

मज़दूरों और किसानों के मुआयना का अर्थ-विभाग ख़ास तरह के पहिये चाहता था—ऐसे जिनमें रबड़ के टायर फिट किए जा सकें, और कोज़िर ने कभी ऐसे पहिए बनाए नहीं थे।

सभ्यता की इस अजीब देन ने उसे अत्यन्त असमंजस में डाल दिया था। काम के बाद हर सांझ वह उदास भाव से भुनभुनाता था:

"रबड़ के टायर पहले कभी नहीं थे। हमारे प्रभु, ईसा-मसीह, और उनके धर्म-दूत पैदल ही घूमते थे ... और अब लोग लोहे की हाल चढ़े पहियोंवाली गाड़ी में भी सवारी नहीं कर सकते!"

कालीना इवानोविच सख़्ती के साथ कोज़िर को आड़े हाथों लेता:

"रेलवे और मोटरों के बारे में बोलो, क्या कहते हो तुम? तुम्हारे

प्रभु ईसा अगर पैदल घूमते थे तो इससे क्या? निश्चय ही वे अनजान रहे होंगे या निपट देहात के रहनेवाले, ख़ुद तुम्हारी भांति। वह पैदल घूमते थे, शायद इसलिए कि उनके पांव में सनीचर था, और अगर कोई मोटर में बैठने के लिए उनसे कहता तो शायद उन्हें इसमें कोई आपत्ति न होती। ऊंह, पैदल! तुम्हारे जैसे बूढ़े आदमी को ऐसी बात कहते लाज आनी चाहिए।"

कोज़िर सहसा मुसकराता-सा और अनमने भाव से जैसे अपने आपसे ही फुसफुसाया:

"रबड़ के टायरवाला पहिया अगर देखने-भर को मुझे मिल जाए तो, कौन जाने, प्रभु की मदद से, हम उसे बना ही डालें। हमें तो यह तक नहीं मालूम कि उनमें कितनी तलियों (आरों, स्पोक्स) की ज़रूरत होती है!"

"मज़दूरों और किसानों के मुआयने में जाकर तुम देख क्यों नहीं आते? उन्हें गिनते भी आना।"

"ख़ुदा न करे! मेरे जैसा बूढ़ा आदमी भला कहां धूल फांकता फिरेगा।"

एक दिन जुलाई के मध्य में चेरनेन्को को सूझा कि हमारे लड़कों का कुछ मनोरंजन किया जाये।

"मैं किसी से बात कर रहा था," उसने कहा, "और कुछ बैले नर्तकियाँ आपके यहां आनेवाली हैं—अच्छा है, लड़के उन्हें देखें! आप जानो, हमारे थियेटर में कुछ बहुत ही शानदार बैले नर्तकियाँ हैं। किसी भी शाम उन्हें बुला सकते हो।"

"यह बहुत बढ़िया रहेगा!"

"केवल यह ध्यान रखना, वे बहुत ही नन्ही-मुन्नी चीज़ हैं, ऐसा न हो कि तुम्हारे लुटेरे उन्हें डरा दें। उन्हें कैसे लाओगे?"

"हमारे पास एक गाड़ी है।"

"मैंने उसे देखा है। उससे काम नहीं चलेगा। आप केवल घोड़े भेज देना, और गाड़ी वे मेरी ले लेंगे, उन्हें यहीं जोता जा सकता है। बस, उन्हें बैले नर्तकियों को लाने के लिए भेज देना। और सड़क पर गार्ड खड़ी कर देना, नहीं तो कोई हाथ मारने और उन्हें दबोच ले जाने की कोशिश कर सकता है—बहुत ही मोहक जीव हैं वे!"

एक दिन संध्या समय बैले नर्तकियाँ आ गईं। वे रास्ते-भर कांपती रहीं। अन्तोन को बड़ा मज़ा आया, जो बराबर उन्हें दम-दिलासा दे रहा था।

"अरे, डरती क्यों हो?" वह कहता। "तुम्हारे पास ऐसा है क्या जो कोई चुरा ले। फिर अब जाड़ों के दिन भी नहीं हैं,—जाड़े होते तो वे तुम्हारे कोट ही उतार ले जाते।"

हमारे एक गार्ड ने अचानक जंगल के बीच से झांककर बैले नर्तकियों की ऐसी हालत कर दी कि जैसे ही वे कोलोनी में पहुंचीं, उन्हें हृदय की धड़कन दूर करनेवाली दवाई देनी पड़ी।

अत्यन्त अनमनेपन के साथ उन्होंने नृत्य किया, और हमारे लड़के बुरी तरह उनसे भिन्ना उठे। उनमें से एक काफ़ी कमउम्र थी, बिलकुल युवती। उसकी पीठ—कमर—बड़ी सुन्दर और मोहक थी, जिसके द्वारा सारी सांझ समूची कोलोनी के प्रति वह अपनी उद्धत तथा नकचढ़ी उपेक्षा का प्रदर्शन करती रही। एक अन्य, जो कुछ बड़ी थी, बहुत ही प्रकट रूप में इस तरह हमारी ओर ताकती थी जैसे हम हौवा हों। ख़ास तौर से अन्तोन बुरी तरह उससे झुंझला उठा।

"मैं पूछता हूं—क्या इसीलिए हमने शहर के दो-दो चक्कर लगाए, दोनों घोड़ों को हांककर वहां ले गए और उन्हें लेकर फिर वापस लाए? ऐसी कठपुतलियों को तो शहर से चाहे जितनी मैं पकड़कर पैदल ला सकता हूं!"

"फ़र्क़ केवल इतना है कि वे नाच नहीं सकतीं," ज़दोरोव ने हंसते हुए कहा।

"ओह, जैसे यह बहुत बड़ी बात है न!"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने पियानो को संभाला जो एक मुद्दत से हमारे शयनागारों में शोभायमान था। वह ऐसी कोई ख़ास माहिर तो थी नहीं, और बैले नृत्य के साथ बजाने का भी उसे अभ्यास नहीं था। उधर बैले नर्तकियां इतनी व्यवहार कुशल नहीं थीं कि अगर एकाध स्वर ग़लत हो जाए तो इसकी परवाह न करें। भयानक ग़लतियों और विरामों से वे भन्ना उठीं। इसके अलावा, वे अत्यधिक जल्दी में भी थीं। उसी शाम उन्हें किसी बहुत ही रोचक आयोजन में जाना था।

इधर, अस्तबलों के सामने, लालटेनों की रोशनी और अन्तोन की

फुंकार भरी गालियों के साथ, घोड़ों को जोता जा रहा था, और उधर बैले नर्तकियाँ भारी बेचैनी से कसमसा रही थीं—उन्हें निश्चय हो गया था कि वह आयोजन में देर से पहुंचेंगी। उनकी बेचैनी और बियाबान में स्थित इस कोलोनी के प्रति, इन चुप्पे लड़कों और एकदम अजनबी माहौल के प्रति, उनकी घृणा इतनी अधिक थी कि वे बोल तक नहीं पा रही थीं, केवल धीरे-धीरे कराह रही थीं और एक-दूसरे से सटी जा रही थीं। सोरोका कोचवान की गद्दी पर बैठा हुआ जोत को अटक-पटक रहा था और कह रहा था कि वह गाड़ी को नहीं ले जाएगा। अन्तोन ने मेहमानों की मौजूदगी को ताक़ पर रख जवाब दिया:

"तुम अपने को समझते क्या हो—कोचवान या बैले नर्तकी? गद्दी पर बैठे यह नाच क्या दिखा रहे हो? क्या मतलब होता है इसका—नहीं जाऊंगा? जाओगे कैसे नहीं।"

आख़िर सोरोका ने रास को झटका दिया। बैले नर्तकियाँ चुप हो गईं। सोरोका के कंधे से लटकी बन्दूक़ को देखकर उनकी जान सूख गई। लेकिन गाड़ी ने अब सचमुच हरकत की। और तभी एक बार फिर ब्रात-चेन्को की चिल्लाहट सुनाई दी।

"यह तुमने क्या किया है, बुद्धू कहीं के! तुम पगला तो नहीं गए जो घोड़ों को इस तरह जोता है? देखो तो, 'लाल' को तुमने कहां रखा है, ज़रा आंखें खोलकर देख! फिर से जोतो इन्हें! 'बाज़' हमेशा तुम्हारे दाहिने होना चाहिए — जाने कितनी बार मैंने तुम्हें यह बताया है!"

सोरोका ने आराम से अपनी बन्दूक़ को कंधे से उतारा और बैले नर्त्त-कियों के पांवों के आगे आड़ी करके उसे रख दिया। दबी हुई सुबकियों की धुंधली आवाज़ गाड़ी में से प्रकट हुई।

मेरे पीछे ही कराबानोव कह रहा था:

"लो इन्होंने आंसुओं की फुलझड़ियां छोड़नी शुरू कर दीं! मुझे डर था कि यह एक कसर रह जाएगी। बहुत बढ़िया, वाह!"

पांच मिनट बाद गाड़ी ने फिर ताज़ी हरकत की। हमने उत्तर में अभि-वादन की ज़रा-सी आशा न रखते हुए अपने हाथों को उठाकर अपनी टो-पियों के छोरों को अत्यंत संकोच के साथ छुआ। रबड़ के टायरों ने पत्थ-रों के ऊपर हिचकोले खाते हुए बढ़ना शुरू किया। तभी एक भोंडी-सी

आकृति अपनी बांहें हिलाती और चिल्लाती हमारे सामने से गाड़ी के पीछे लपकी।

"अरे रुको! ख़ुदा के लिए, रुको। रुको मित्रो, ज़रा रुको!"

सोरोका ने हैरानी से रास खींची। बैले नर्त्तकियों में से एक झटका खाकर अपनी जगह से गिरते गिरते बची।

"ओह, ख़ुदा बख़्शे मुझे, मैं तो एकदम भूल ही गया। बस मुझे ज़रा तीलियां गिन लेने दो."

कोज़िर एक पहिए के ऊपर दोहरा हो गया। गाड़ी के भीतर से सुबकियों की आवाज़ ने पहले से कुछ ज़ोर पकड़ा, और उसके साथ एक बहुत ही प्यारी महीन आवाज़ आ मिली।

"अरे बस, बस!" वह झिड़क रही थी।

करावानोव ने कोज़िर को धकियाकर पहिये से अलग कर दिया।

"ऐ दादा, हटो यहां से..."

अपने को क़ाबू में रखने में असमर्थ, फुंकार-सी छोड़ता करावानोव एक पेड़ के पीछे डुबकी लगा गया। ख़ुद मेरे लिए भी अब यह असह्य हो उठा।

"आगे बढ़ो, सोरोका!" मैंने चिल्लाकर कहा। "बस, यह टाल-मटोल रहने दो! आख़िर तुम यहां हो किस लिए?"

सोरोका ने पूरा हाथ घुमाते हुए 'बाज़' की पीठ पर चाबुक फटकारा। लड़कों की हंसी रोके नहीं रुकी। करावानोव एक झाड़ी के नीचे किकिया रहा था, यहां तक कि अन्तोन भी हंस रहा था।

"क्या ही मज़ा आए अगर रास्ते में इन्हें और लुटेरे मिल जाएं! तब सचमुच ये वहां देर से पहुंचें!"

चेहरे पर हैरानी का भाव लिए कोज़िर भीड़ में खड़ा था, यह समझने में एकदम असमर्थ कि ऐसा क्या हुआ जो वह तीलियों को गिन तक नहीं सका।

अपने कामों में हम इतना अधिक व्यस्त थे कि हमें पता ही न चला छः सप्ताह कैसे बीत गए। मज़दूरों और किसानों के मुआयने का सप्लाई-मैनेजर, एक क्षण भी इधर-उधर किये बिना, ऐन वक़्त पर आ धमका।

"हां, तो हमारे घोड़ों का क्या हुआ?"

"सब सही-सलामत हैं।"

"उन्हें कब वापस करने जा रहे हो?"

अन्तोन फ़क पड़ गया।

"क्या मतलब इस 'वापस करने' का? और काम कौन करेगा?"

"ठेका, साथियो!" सप्लाई-मैनेजर ने अपनी रूखी आवाज़ में कहा। "ठेका! और गेहूं हमें कब दे रहे हो?"

"गेहूं? पहले उसे काटना-फटकना होगा। गेहूं अभी खेती में है।"

"और पहिये?"

"ओह, देखिये न, पहिया बनानेवाला हमारा कारीगर तीलियों को नहीं गिन सका—वह नहीं जानता कि पहिये में कितनी तीली होनी चाहिए। और नाप..."

सप्लाई-मैनेजर अपने आपको कोलोनी में बहुत बड़ा आदमी समझ रहा था। मज़दूरों और किसानों के मुआयने का सप्लाई-मैनेजर, समझे।

"ठेके की शर्तों के अनुसार तुम्हें हरजाना अदा करना होगा। आज से, तुम जानो, पाँच सेर गेहूं प्रतिदिन। क़बूल करो या बस करो।"

सप्लाई-मैनेजर ने विदा ली। ब्रातचेन्को ने, ग़ुस्सा भरी नज़र से उसकी ड्रोश्की (गाड़ी) का पीछा करते हुए, संक्षेप में कहा:

"कमीना!"

हम अत्यधिक परेशान थे। घोड़ों की हमें सख़्त ज़रूरत थी, लेकिन हम अपनी समूची फ़सल उसके हवाले नहीं कर सकते थे!

कालीना इवानोविच भुनभुनाया:

"मैं उन्हें गेहूं-वेहूं कुछ नहीं देने जा रहा हूं, हरामख़ोर कहीं के! पन्द्रह पूड प्रतिमास और यह पांच सेर प्रतिदिन अलग! हर चीज वे वहां सिद्धान्त से लिखते हैं, लेकिन हम हाड़ तोड़कर रोटी पैदा करते हैं। और इसके बाद हम अपनी रोटी उन्हें दे डालें और घोड़े भी वापस कर दें? ले लेना जिससे ले सको, लेकिन इस ख़याल में न रहना कि मैं तुम्हें गेहूं-वेहूं देने जा रहा हूं।"

लड़कों ने ठेके के ख़िलाफ़ हथियार उठा लिए।

"उन्हें गेहूं देने से तो यही अच्छा है कि खेतों में ही लगा-लगा चुरमुरा जाए! वे ख़ुद आकर गेहूं काट ले जाएं और घोड़े हमारे पास रहने दें।"

ब्रातचेन्को ने समझौते की भावना से सवाल का हल पेश किया।

"गेहूं, रई, और आलू—सब उन्हें दे दो, लेकिन चाहे जो भी कहो, घोड़े उन्हें हर्गिज़ नहीं मिल सकते।"

जुलाई का महीना आया। लड़के घास काट रहे थे, और कालीना इवानोविच मन-ही-मन बुदबुदा रहा था।

"लड़के बुरी तरह काटते हैं, जानते ही नहीं कि कैसे काटी जाती है। और यह तो केवल घास है, रई की जब बारी आएगी तब क्या होगा, कुछ समझ नहीं पड़ता। सात देस्यतीना रई है, आठ गेहूं, और फिर वसन्तकालीन मक्का और जई है। क्या किया जाए? हमें हार्वेस्टर ख़रीदनी पड़ेगी"

"सो कैसे ख़रीद सकते हैं, कालीना इवानोविच? हार्वेस्टर ख़रीदने के लिए हम धन कहां से लाएंगे?"

"तो फिर—एक रीपर ही लेंगे। पहले तो डेढ़ सौ या दो सौ रूबल में आ जाते थे।"

सांझ को अंजली में अनाज लिए वह मेरे पास आया:

"यह देखिए, हमें कटाई करनी होगी दो दिन के भीतर, देर बिलकुल नहीं कर सकते।"

हंसियों से कटाई करने की तैयारी की गई। तय किया गया कि फ़सल की कटनी की ख़ुशियां मनायी जायें। पहले गट्ठे का उत्सव किया जाए। हमारी कोलोनी की गर्म रेतीली ज़मीन में रई जल्दी पक जाती है, और समारोह का आयोजन करने में यह एक सुविधाजनक बात थी, जिसके लिए हमने ऐसे तैयारी की जैसे कोई बड़ा उत्सव मनाने जा रहे हों। कितने ही मेहमान बुलाए गए, शानदार दावत का इन्तज़ाम किया गया, और अपने त्योहार के शुभारंभ के लिए एक सुन्दर और विशेष तरीक़े की खोज की गई। खेतों को पहले ही, मेहराबों और झंडियों से सजा दिया गया, लड़कों के लिए भी नयी पोशाकें बनवा ली गईं, लेकिन कालीना इवानोविच था कि अभी भी बेहद परेशान था।

"फ़सल नष्ट हो रही है। इससे पहले कि काटने की नौबत आएी, अनाज छितरना शुरू हो जाएगा। कौवे हमारी सारी मेहनत चुग जाएंगे!"

लेकिन कालीना इवानोविच को दिलासा देते हुए लड़के हंसिये तेज़ कर रहे थे और उनके लिए मूंठें तैयार कर रहे थे।

"नष्ट कुछ नहीं होगा, कालीना इवानोविच—देख लेना, हम सचमुच के दहक़ानों से कुछ ज़्यादा बुरे नहीं रहेंगे!"

आठ फ़सल काटनेवाले नियुक्त किए गए।

ठीक उत्सव के दिन, एकदम सवेरे, अन्तोन ने मुझे जगाया:

"कोई बूढ़ा आदमी हमारे लिए हार्वेस्टर लाया है।"

"हार्वेस्टर?"

"एक तरह की मशीन है। ख़ूब बड़ी, बादबान लगी हुई —हार्वेस्टर। वह जानना चाहता है कि क्या हम इसे ख़रीदेंगे?"

"उससे कहो कि यहां से जाए। भला, हम पैसा कहां से देंगे? तुम ख़ुद जानते हो कि हमारी क्या हालत है।"

"वह कहता है कि हम इसे बदले में ले सकते हैं। वह इसे घोड़े से बदलना चाहता है।"

मैंने कपड़े पहने और अस्तबल की ओर चला। अहाते के बीचों-बीच एक हार्वेस्टर मशीन खड़ी थी। अभी वह काफ़ी नयी मालूम होती थी, स्पष्ट ही बेचने के लिए उस पर ख़ास तौर से नया रोग़न किया गया था। लड़कों की एक भीड़ उसके चारों ओर जमा थी, और कालीना इवानोविच—वहशियाना नज़र से—कभी हार्वेस्टर की ओर घूरता था, कभी उसके मालिक की ओर, और कभी मेरी ओर।

"क्या यह हमारा मज़ाक़ उड़ाने यहां आया है? कौन लेकर आया है इसे?"

मालिक अपने घोड़ों की जोत खोल रहा था। शक्ल-सूरत से वह एक प्रतिष्ठित आदमी मालूम होता था। चेहरे पर बुज़ुर्गी की सूचक भूरी दाढ़ी फहरा रही थी।

"तुम इसे बेचना क्यों चाहते हो?" बुरून ने पूछा।

मालिक ने सिर उठाकर देखा।

"मुझे अपने लड़के की शादी करवानी है। और मेरे पास एक दूसरा हार्वेस्टर है। हमारे लिए एक काफ़ी है, लेकिन अपने लड़के को मुझे एक घोड़ा देना है।"

कराबानोव मेरे कान में फुसफुसाया:

"यह झूठ बोल रहा है। मैं इसे जानता हूं..."

"तुम स्तोरोजेवोय के ही रहनेवाले हो न?" वृद्ध की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा।

"हाँ, ठीक, मैं स्तोरोजेवोय का ही रहनेवाला हूं। और तुम – तुम कौन हो? अरे, तुम सेम्योन करावान ही हो न, – पनास के लड़के!"

"बेशक, मैं वही हूं!" सेम्योन ने ख़ुश होते हुए कहा। "तब तो तुम निश्चय ही ओमेलचेन्को हो! शायद तुम्हें डर है कि कहीं वे इसे जब्त न कर लें, क्यों, यही बात है न?"

"सो तो है, वे इसे ज़ब्त कर सकते हैं, और मैं अपने लड़के के ब्याह से भी निबटना चाहता हूं..."

"मेरे ख़याल में तुम्हारा लड़का अतामानों के साथ था न?"

"अरे नहीं, ख़ुदा न करे!"

मामले को तय करने की सारी ज़िम्मेदारी सेम्योन ने ख़ुद अपने ऊपर ले ली। बहुत देर तक वह मालिक से बातें करता रहा। वह घोड़ों के पास खड़ा था, उनके सिरों से लगा हुआ। दोनों एक-दूसरे के आगे सिर नवाते,, एक-दूसरे की पीठ और कंधों को थपथपाते। सेम्योन असली किसान की भांति बातें कर रहा था, और यह साफ़ मालूम होता था कि ओमेलचेन्को उसे एक जानकार आदमी समझता है।

आधे घंटे बाद सेम्योन ने कालीना इवानोविच की ड्योढ़ी पर गुप्त सलाह की। इस सभा में मैं ख़ुद, कालीना इवानोविच, करावानोव, बुरून, ज़दोरोव; ब्रातचेन्को तथा दो या तीन अन्य बड़े लड़के शामिल थे। बाक़ी सब हार्वेस्टर के चारों ओर खड़े थे। वे मौन थे और आश्चर्य कर रहे थे कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो ऐसे यन्त्रों के मालिक हैं।

सेम्योन ने बताया कि वृद्ध अपने हार्वेस्टर के बदले में एक छोड़ा चाहता है, और स्तोरोजेवोय में मशीनों की गणना होनेवाली है इसलिए हार्वेस्टर के मालिक को इस बात का डर है कि कहीं उसे बिना किसी क्षतिपूर्त्ति के ज़ब्त न कर लिया जाए, जबकि घोड़े को जब्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह अपने लड़के का विवाह करने जा रहा है...

"यह सच हो या न हो," ज़दोरोव ने कहा, "इससे हमें ग़रज़ नहीं, लेकिन हार्वेस्टर हमारे पास ज़रूर होना चाहिए। हम इसे आज ही खेतों में ले जा सकते हैं।"

"लेकिन उसे घोड़ा कौन-सा दोगे?" अन्तोन ने पूछा। "'लंडूरा' और 'डाकू' किसी काम के नहीं हैं। तो फिर क्या 'लाल' को दोगे?"

"क्यों, 'लाल' को देने में क्या हर्ज है?" ज़दोरोव ने कहा। "आ-
ख़िर, लेना भी तो हार्वेस्टर है..."

करावानोव ने गर्म दिमाग़ अन्तोन को बीच में ही रोक दिया।

"बेशक, हम 'लाल' को नहीं दे सकते," उसने सहमति प्रकट की।
"कोलोनी में वही तो एक असली घोड़ा है। 'लाल' ही क्यों? अच्छा
हो कि उसे 'सिंह' दे दें! देखने में शानदार है और मजबूत भी।

सेम्योन ने भेद भरी नज़र से कालीना इवानोविच की ओर
देखा।

कालीना इवानोविच ने सेम्योन को कोई जवाब तक नहीं दिया।
अपने पाइप को ड्योढ़ी से टकराकर झाड़ते हुए वहं खड़ा हो गया, यह
कहते हुए:

"इस तरह की बकवास के लिए मेरे पास समय नहीं है।"

और अपने कमरे की ओर मुड़ गया।

सेम्योन ने उसकी पीठ की ओर आंख बिचकाई और फुसफुसाते हुए
कहा:

"सचमुच, अन्तोन सेम्योनोविच, हम यही करें। अन्त में सब ठीक
हो जाएगा। और हम एक हार्वेस्टर के मालिक बन जाएंगे।"

"वे हमें जेल में डाल देंगे।"

"कौन? आपको? अरे, राम का नाम भजो! हार्वेस्टर घोड़े से
ज़्यादा क़ीमती चीज़ है। मजदूरों और किसानों का निरीक्षक 'सिंह' के
बदले हार्वेस्टर को ले जा सकता है। उनके लिए इससे क्या फ़र्क पड़ता
है? घाटा कुछ नहीं, और इधर हम अपने अनाज के साथ मुस्तैद हो जा-
एंगे। फिर 'सिंह' ऐसा कुछ काम का भी नहीं है!"

ज़दोरोव मुग्ध भाव से हंसा।

"भाई ख़ूब! और सच, क्यों न ऐसा ही करें?"

बुरून ने कुछ नहीं कहा। केवल मुसकराता और रई की एक बाल को
अपने दांतों के बीच ऊपर-नीचे झटके देता रहा।

अन्तोन की आंखें हंसी से चमक उठीं।

"यह भी एक मजाक़ रहेगा," उसने कहा, "मजदूरों और किसानों
का निरीक्षक अपनी फिटन में 'सिंह' के बदले हार्वेस्टर को
जोते!"

लड़कों ने ललकती हुई आंखों से मेरी ओर देखा।

"हां कह दीजिए, अन्तोन सेम्योनोविच, उससे हां कह दीजिए। इसमें नुक़सान क्या है? अगर वे आपको जेल में भी डाल देंगे, तो एक सप्ताह से ज़्यादा नहीं।

वुरुन ने आख़िर गम्भीरता धारण की और बोला:

"और कोई रास्ता भी तो नहीं है,—हमें घोड़े को विदा ही करना होगा। अगर हम नहीं करते, तो सब हमें बेवक़ूफ़ कहेंगे! मज़दूरों और किसानो के मुआयनावाले भी।"

मैंने वुरुन की ओर देखा और सीधे कहा:

"तुम ठीक कहते हो। अन्तोन, जाओ और घोड़े को ले आओ।"

वे सब बेतहाशा अस्तबल की ओर लपक गए।

हार्वेस्टर का मालिक 'सिंह' को देखकर ख़ुश हुआ। कालीना इवानोविच ने मेरी आस्तीन खींची और फुसफुसाकर कहा:

"पागल तो नहीं हो गए? क्या अपने जीवन से उकता गए हो, या क्या? भाड़ में जाए कोलोनी और रई! क्यों अपनी जान के लिए ख़तरा मोल लेते हो?"

"बस, रहने दो, कालीना! जहन्नुम को मारो गोली! हमारे पास हार्वेस्टर तो होगा!"

घंटा-भर बाद वृद्ध 'सिंह' के साथ विदा हो गया। और इसके दो घंटे बाद, चेरनेन्को ने, हमारे उत्सव में शामिल होने के लिए कोलोनी में आने पर, अहाते में खड़े हार्वेस्टर को देखा।

"ओह, तुम लोग भी एक ही हो! यह नयनतारा कहां से ले आए?"

लड़कों को अचानक जैसे सांप सूंघ गया। तूफ़ान से पहले की निस्तब्धता की भांति चुप्पी छा गयी। बैठते हुए हृदय से मैंने चेरनेन्को की ओर देखा और जवाब में कहा:

"निरे संयोग से!"

अन्तोन ने अपने हाथों को बजाया और उछलने लगा।

"सही या ग़लत, साथी चेरनेन्को, लेकिन यह हार्वेस्टर हमारा है। क्या आप आज कुछ काम करना पसन्द करेंगे?"

"हार्वेस्टर पर?"

"हां-हा, उसी पर।"

"अच्छी बात है। पुराने दिनों की याद ताज़ा हो आएगी। तो चलो। ज़रा देखें कि कैसा है।"

चेरनेन्को और लड़के एकदम उत्सव के समय तक हार्वेस्टर से उलझे रहे। उन्होंने उसमें तेल दिया, उसे चमकाया, उसे ठीक से बैठाया, उसे जांचा-परखा।

और उत्सव के समाप्त होते ही चेरनेन्को हार्वेस्टर पर जा बैठा और खड़खड़ करते हुए खेत पर चलाने लगा। कराबानोव, हंसी के मारे क़रीब-क़रीब बेदम, अपनी पूरी आवाज़ से चिल्लाया:

"ओह, ओह! वह देखो, सच्चा स्वामी वह जा रहा है!"

मज़दूरों और किसानों के मुआयने का सप्लाई-मैनेजर खेत के इधर-उधर मंडरा रहा था और जो भी उसे मिलता था उससे पूछ रहा था:

"यह क्या बात है कि 'सिंह' यहां कहीं नज़र नहीं आता? कहां है वह?"

अन्तोन ने अपने चाबुक से पूर्व की ओर इशारा किया।

"'सिंह' नयी कोलोनी में है। हम कल वहां कटाई करेंगे। सो अच्छा है, इतने में वह आराम कर ले।"

जंगल में मेज़ें लगा दी गईं। लड़कों ने चेरनेन्को को सजी हुई मेज़ पर बैठाया, समोसे और शोरबे से ख़ूब उसकी ख़ातिर की और बातों में उसे लगाए रखा।

"बहुत अच्छा सोचा तुम लोगों ने, जो हार्वेस्टर ले आए," उसने कहा।

"सो तो है, है न?"

"हां, बहुत अच्छा किया तुमने!"

"साथी चेरनेन्को, कौन ज्यादा अच्छा है—घोड़ा या हार्वेस्टर?" ब्रोतचेन्को ने पूछा। उसकी आंखें दमक रही थीं।

"हां तो यह... यह निर्भर करता है... कि घोड़ा किस क़िस्म का है..."

"मान लो कि 'सिंह' जैसा।"

मज़दूरों और किसानों के मुआयने के सप्लाई-मैनेजर ने अपना चमचा नीचे रख दिया। उसके कान तक आशंका से फड़क रहे थे। अचानक करा-बानोव की हंसी फूट पड़ी और उसने अपना सिर मेज़ के नीचे छिपा लि-

था। उसके अनुसरण में अन्य लड़के भी हंसी के मारे बल खाने लगे। सप्लाई-मैनेजर उछलकर खड़ा हो गया और वहशियाना नज़र से अपने इर्द-गिर्द पेड़ों की ओर देखा, जैसे मदद की याचना कर रहा हो। और चेरनेन्को पूर्णतया चकरा गया।

"क्यों, क्या 'सिंह' के साथ कुछ गड़बड़ हुई है?"

"'सिंह' के बदले में हमने हार्वेस्टर ले लिया है। आज ही हमने उसे बदला है," हंसी का ज़रा-सा भी आभास न देते हुए मैंने कहा।

सप्लाई-मैनेजर बेंच पर ढह गया, और चेरनेन्को मुंह बाए ताकता रहा। सब चुप हो गए।

"उसे हार्वेस्टर से बदल लिया!" सप्लाई-मैनेजर की ओर देखते हुए चेरनेन्को बुदबुदाया।

अपमानित सप्लाई-मैनेजर अपनी जगह पर उचका।

"यह स्कूली लड़कों की निखालस बदतमीज़ी है!" चीख़कर उसने कहा। "गुण्डागर्दी, ज़िद्..."

अचानक चेरनेन्को के चेहरे पर आह्लादपूर्ण मुसकान दौड़ गई।

"ओह, शैतान कहीं के! क्या तुम लोगों ने सचमुच... हार्वेस्टर का भला हम क्या करेंगे?"

"हूं–ऊं–ऊं, हमारे पास ठेके का पट्टा मौजूद है–क्षति के परिमाण से पांच गुना ज़्यादा," सप्लाई-मैनेजर ने बीच में ही काटा।

"सो कुछ नहीं!" चेरनेन्को ने घृणा से कहा। "यह सब तुम नहीं कर सकते!"

"नहीं कर सकते?"

"हां, नहीं कर सकते और इस लिए चुप रहो! और वे कर सकते हैं! उन्हें कटाई करनी है, और वे जानते हैं कि उनका अनाज तुम्हारे 'पांच गुना' से कहीं ज़्यादा क़ीमती है, समझे! और यह भी एक अच्छी बात है कि वे डरते नहीं–तुमसे और मुझसे। एक शब्द में, आज हम उन्हें हार्वेस्टर भेंट करने जा रहे हैं।"

सजी-बजी मेजों और मजदूरों और किसानों के मुआयने के सप्लाई-मैनेजर की रूह को उलटते-पलटते हुए लड़कों ने चेरनेन्को को धरती से ऊपर आसमान में उछाल दिया। अन्त में, अपने आपको झाड़ते और हंसते हुए, जब उसके पांव धरती पर टिके तो अन्तोन उसके पास यह कहते हुए जा पहुंचा:

"और 'मेरी' तथा 'वाज' का क्या होगा?"

"क्यों, उनका क्या?"

"क्या उन्हें वापस करना होगा?"

अन्तोन ने अपना सिर सप्लाई-मैनेजर की दिशा में झुकाया।

"बेशक, तुम्हें वापस करना होगा।"

"मैं नहीं करने जा रहा हूं," अन्तोन ने कहा।

"नहीं, तुम्हें करना होगा, तुम्हें हार्वेस्टर मिल गया," चेरनेन्को ने गरम होकर कहा।

लेकिन अन्तोन भी गरमाना जानता था।

"अपना हार्वेस्टर ले जाइए!" वह चीख़ उठा। "भाड़ में जाए आपका यह हार्वेस्टर! क्या हम करावानोव को इसके साथ जोत सकते है?"

अन्तोन ने अस्तबल की शरण ली।

"ओह, शैतान कहीं के!" चेरनेन्को ने विमूढ़ हो कहा। इर्द-गिर्द सन्नाटा छाया था। चेरनेन्को ने सप्लाई-मैनेजर की ओर देखा।

"यह तो अच्छे जंजाल में फंसाया हमने अपने आपको," चेरनेन्को ने कहा। "किश्तों की कोई योजना बनाकर तुम्हें इनके हाथ घोड़ों को बेचना होगा,–शैतान कहीं के! लेकिन लड़के हैं बढ़िया, लुटेरे हैं तो क्या! अच्छा तो चलो, जरा तुम्हारे उस अगिया बेताल का कुछ पता लगाएं।"

अन्तोन अस्तबल में घास के एक ढेर पर पड़ा था।

"अच्छी बात है, अन्तोन," चरनेन्को ने कहा। "मैंने घोड़े तुम्हारे हाथ बेच दिए!"

अन्तोन ने सिर उठाया।

"ख़ूब कसकर तो दाम नहीं वसूलोगे?"

"सो भी हो जाएगा, किसी-न-किसी तरह।"

"यह हुई एक बढ़िया बात!" अन्तोन ने कहा। "होशियार आदमी हैं आप!"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं," चेरनेन्को ने मुसकराते हुए कहा, "अपने सप्लाई-मैनेजर से कहीं ज़्यादा होशियार!"

२०. विकट वृद्ध-जन

कोलोनी में गर्मियों की शामें बहुत मधुर होती थीं। पृष्ठभूमि के रूप में था, मृदु, स्वच्छ और सुविस्तृत आकाश, सांझ के धुंधलके में डूबे हुए जंगल के वाह्य छोर, एक सम्बद्ध छाया-चित्र का रूप धारण किए सूरजमुखी के फूल, जो साग-भाजी के बग़ीचे के किनारों पर लगे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे दिन की गर्मी के बाद अब वे आराम कर रहे हों। सांझ की अस्पष्ट वाह्य रेखाओं में विलय होता हुआ गहरा, ठंडा ढलान झील का स्पर्श करता था। पोर्च पर बैठे हुए लोगों की बातों की दबी हुई आवाज़ बहुत ही धुंधली सुनाई पड़ती थी और यह पहचानना मुश्किल होता था कि वे कौन हैं, और कितनी संख्या में वहां मौजूद हैं।

और कभी-कभी थोड़े उजाले के रहते हुए भी ऐसी घड़ी आती जब चीज़ों को पहचानना या उन्हें एक-दूसरे से अलग करना कठिन हो जाता। उस घड़ी में हमेशा ऐसा मालूम होता जैसे कोलोनी ने बियाबान का रूप धारण कर लिया हो। लड़के सब के सब कहां लोप हो गए? मन में सवाल उठता। लेकिन कोलोनी का एक चक्कर लगाने पर सब के सब दिखाई दे जाते। अस्तबल में, दीवार पर लटके घोड़े के कालर के नीचे पांच लड़कों का एक दल किसी बहस में व्यस्त नजर आता। बेकरी में तो एक अच्छी-खासी भीड़ ही लगी होती। आधे घंटे में पाव-रोटियां तैयार हो जातीं और वे सब जो किसी रूप में इस घटना से सम्बन्ध रखते थे—वे जो ब्यालू की ड्यूटी पर थे, और वे जो आम ड्यूटी पर थे—झाड़ी-बुहारी और लक़दक़ इस बेकरी में, बेंचों पर बैठे, शान्तिपूर्ण वार्तालाप करते नज़र आते। कुएँ के इर्द-गिर्द जैसे संयोग से ही एक मंडली जमा हो गई थी—कोई एक बालटी पानी के लिए आया था, दूसरा योंही उधर से गुज़र रहा था, एक अन्य इसलिए वहां अटक गया था कि कोई सुबह से उसे खोज रहा था। सब के सब पानी की बात तो भूल गये, परन्तु अन्य कोई चीज़ उन्हें याद हो आई, ऐसी चीज़ जो शायद कोई ख़ास महत्व नहीं रखती थी,—लेकिन ग्रीष्म की आह्लादपूर्ण संध्या में भला महत्वहीन भी कोई चीज़ हो सकती है?

अहाते के आख़िरी छोर पर, ठीक उस जगह जहां से झील की दिशा

में ढलान शुरू होता है, छोटे बच्चों का एक बाक़ायदा झुंड वेद के एक गिरे हुए वृक्ष पर आसन जमाए है। वृक्ष का वक्कल एक मुद्दत हुई तभी उतर गया था। मित्यागिन अपनी बेजोड़ कहानियों में से किसी एक का ताना-बाना पूरा कर रहा है:

"और सो, सुबह जब लोग गिरजा में आए तो उन्होंने अपने चारों ओर देखा: एक भी पादरी कहीं दिखाई नहीं देता था! आख़िर मामला क्या है? कहां लोप हो गए सारे के सारे पादरी? चौकीदार ने कहा: 'जानते हो, क्या हुआ? हमारे पादरियों को शायद शैतान उठाकर दल-दल की ओर ले गया है। हमारे यहां चार पादरी हैं।' 'चार?' 'हां निश्चय यह उसी की करतूत है—रात में चार पादरी दलदल की ओर तिड़ी कर दिए गए!'"

लड़के एकाग्र ख़ामोशी के साथ सुन रहे थे। उनकी आंखें दमक रही थीं और निस्तब्धता को केवल तोस्का की आह्लादपूर्ण चिहुंक ही जब-तब भंग करती थी। शैतान में वे इतना आनन्द नहीं ले रहे थे जितना कि उस मूर्ख चौकीदार में जो रात-भर ड्यूटी पर रहा और यह तक नहीं जान सका कि शैतान किन पादरयों को दलदल की ओर उठा ले गया है,—ख़ुद अपने अथवा किन्हीं अजनबी पादिरयों को। मोटे गावदुम पादरी जो सब के सब एक-से थे और जिनके अपने कोई नाम नहीं थे। इस समूची आडम्बरपूर्ण तथा कठिन मुहिम का चित्र आंखों के सामने मूर्त हो उठा था। जरा कल्पना तो कीजिए—एक-एक करके उन्हें कंधों पर लादकर दलदल तक ले जाना!

झाड़ियों में से, जहां कभी एक बाग़ था, ओल्या वोरोनोवा की विस्फोटक हंसी की आवाज़ आती है, जिसके तुरन्त बाद ही बुरून के पुरुष कण्ठ से चिढ़ानेवाली आवाज़ निकलती और इसके तुरन्त बाद ही हंसी की आवाज़ गूंजने लगती है, लेकिन इस बार अकेले ओल्या ही नहीं, बल्कि लड़कियों का एक बाक़ायदा कोरस भी उसमें शामिल होता है। बुरून—अपनी चुरमुर टोपी को अपने सिर पर थामे हुए—उछलकर खुले में आ जाता है, और ख़ुशी से छलछलाता है। रंगबिरंगा झुंड उसके पीछे लपकता है। शेलापूतिन खुले में ही अटका रह जाता है, वह यह निश्चय नहीं कर पाता कि वह हंसे या भाग जाए। कारण, लड़कियों को भी तो उससे अपना हिसाब बराबर करना है।

लेकिन यह शान्तिपूर्ण, चिन्तनशील और काव्यमय शामें हमेशा हमारी मनोस्थिति का साथ नहीं देती थीं। हमारी कोलोनी के भण्डारघर, गांव-वालों के तहख़ाने, यहां तक कि हमारे शिक्षकों के कमरे भी, बदनाम क्रिया-कलापों का पात्र बनने से अभी मुक्त नहीं हुए थे। हालांकि अब वे उतने बड़े पैमाने पर इन क्रिया-कलापों का शिकार नहीं होते थे, जितने कि कोलोनी के पहले साल के दिनों में। चीज़ें अब विरले ही लोप होती थीं। अगर इस दिशा का कोई नया विशेषज्ञ हमारे बीच प्रगट भी होता था तो उसे यह समझते देर नहीं लगती थी कि उसे न केवल मुख्य संचा-लक से ही, बल्कि ख़ुद अधिकांश समुदाय से भी भुगतना पड़ेगा, और यह भी कि समुदाय जवाब में अत्यन्त क्रूरता से पेश आ सकता है। इससे पहले गर्मियों में एक नये लड़के को कोलोनी के अन्य सदस्यों के चंगुल में से छुड़ाने में मुझे काफ़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। वह खिड़की के रास्ते येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के कमरे में घुसने की कोशिश कर रहा था। तभी उन्होंने उसे पकड़ लिया और इतने अंधे गुस्से तथा बेरहमी से उसकी मरम्मत की जितनी कि केवल एक हंगामी भीड़ ही कर सकती है। उनके बीच जब मैं पहुंचा तो उन्होंने मुझे भी उसी वहशियाना ढंग से धकि-याकर अलग कर दिया, और किसी ने आवेग के साथ चिल्लाकर कहा:

"अन्तोन से कहो कि बस यहां से दूर ही रहे!"

इन्हीं गर्मियों में कुज़्मा लेशी ने कोलोनी में प्रवेश किया। उसे कमीशन ने भेजा था। उसके मां-बाप में से, निश्चय ही, कोई न कोई जिप्सी रहा होगा। उसकी विशाल काली आंखें उसके मटमैले चेहरे पर बहुत ही चौकस जड़ी थीं, और वह उन्हें घुमाने के बहुत ही बढ़िया यंत्र से लैस था। इसके अलावा, उसकी इन आंखों को, प्रकृति ने एक निश्चित काम सौंपा था, –किसी भी ऐसी चीज को ताड़ने से न चूको जो पहुंच के भीतर हो और चुराई जा सकती हो। लेशी के शरीर के अन्य अंग उसकी इन जिप्सी आँखों के आदेशों का अंधानुसरण करते थे। लेशी के पांव उसे उस जगह ले जाते थे जहां हथियाई जानेवाली वह चीज़ रखी होती थी, उसके हाथ फ़रमाँबरदारी के साथ उसकी ओर बढ़ते थे, उसकी कमर फ़रमाँबर-दारी के साथ बचाव के किसी भी प्रकृत साधन से लाभ उठाने के लिए दोहरी हो जाती थी, उसके कान सन्देहजनक सरसराहटों या ख़तरे की सूचक अन्य आवाजों को सुनने के लिए हमेशा चौकस रहते थे। लेकिन

इन सब कामों में लेशी का सिर क्या भूमिका निबाहता था, यह कहना कठिन है। आगे चलकर, कोलोनी के इतिहास में, लेशी के सिर के सही मूल्य का अन्दाज़ा लगाया गया, लेकिन शुरु-शरू में तो सभी को वह उसके शरीर का सब से ज़्यादा अनावश्यक अंग मालूम होता था।

यह लेशी हमारे लिए दुःख का विषय भी था और मनोरंजन का भी। कोई दिन ऐसा नहीं बीतता था जब वह कोई-न-कोई मुसीबत न खड़ी करता हो। कभी वह किसी गाड़ी से मांस का लोथड़ा गायब कर लेता जो अभी-अभी शहर से आई थी, कभी ठीक भण्डारी की नाक के नीचे भण्डारघर से अंजली-भर चीनी उड़ा लेता। साथियों की जेबों में अक्सर साफ़ कर देता, बेकरी से रसोईघर तक जाते-जाते आधी रोटी चट कर जाता या किसी एक शिक्षक के कमरे में काम की बात करते-करते मेज़ पर से चाकू उठा लेता। लेशी कभी कोई ऐसी योजना नहीं बनाता था जो ज़रा भी जटिल हो, न ही वह किसी औज़ार का इस्तेमाल करता था, चाहे वह कितना ही आदिम युग का क्यों न हो। वह कुछ ऐसा बना था कि अपने हाथों को ही अपना सब से अच्छा औज़ार समझता था। लड़कों ने उसकी मरम्मत करने की कोशिश की, लेकिन लेशी केवल दांत निपोर देता:

"मुझे मारने से क्या लाभ? मैं ख़ुद नहीं जानता कि यह कैसे हो गया। मैं देखना चाहूंगा कि अगर तुम होते तो क्या करते।"

कुज़्मा एक ख़ुशदिल लड़का था। अपनी उम्र के सोलह सालों में उसने काफ़ी अनुभव बटोर लिया था, काफ़ी घूमा-फिरा था, बहुत कुछ देखा था, समय-समय पर कितनी ही प्रान्तीय जेलों की सैर कर चुका था, पढ़ और लिख सकता था, मज़ाक़िया था, चाल-ढाल में बहुत ही फुर्तीला और निडर था, 'होपक' नृत्य बहुत ही बढ़िया करता था, और लाज-संकोच जैसी चीज़ से एकदम अपरिचित था।

इन गुणों के कारण लड़के उसे काफ़ी माफ़ कर देते थे, लेकिन उसकी चोरी की प्रवृत्तियां सभी की नाक में दम करने लगीं। आख़िर वह इतनी बुरी तरह फंसा कि उसके बाद बहुत दिनों तक चारपाई पर कमर सेंकता रहा। हुआ यह कि एक रात वह बेकरी में घुस गया, और ख़ूब कसकर कुन्दे से उसकी मरम्मत की गई। हमारा बेकर कोस्त्या वेत्कोव्स्की रोटियों की निरन्तर कमी से बहुत दिनों से परेशान था, जिसका पता केवल बांटने के समय चलता था, इसके अलावा सेंकने के बाद अतिरिक्त वज़न में

कभी एक पुराना रोग बन गई थी, जिसकी वजह से कालीना इवानोविच की झिड़कियों ने भी पुराने रोग का रूप धारण कर लिया था। कोस्त्या ने एक जाल बिछाया जो आशा से भी ज़्यादा सफल सिद्ध हुआ। एक रात लेशी सीधे उसके फंदे में फंस गया। अगली सुबह लेशी येकातेरिना ग्रिगो-रियेवना के पास मदद के लिए अनुरोध करता आ पहुंचा। शहतूतों के लिए वह एक पेड़ पर चढ़ रहा था—उसने कहा—तभी कुछ खरोंच लग गई। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं था,—केवल एक पेड़ से रपट पड़ने का इतना ख़ूनी नतीजा। लेकिन उसे इन सब से क्या ग़रज—उसने लेशी के चौखटे की मरहमपट्टी की और उसे शयनागार पहुंचने में सहारा दिया। लेशी अकेला इतनी दूर तक जा भी नहीं सकता था। और सही मौक़े के आने तक कोस्त्या ने किसी को भी उस रात बेकरी में क्या हुआ, यह राज़ नहीं बताया। अपने ख़ाली समय में, बस, कुज़्मा के बिस्तरे के पास बैठा उसे 'टाम स्वेयर की मुहिम' पढ़कर सुनाया करता।

जब लेशी अच्छा हो गया तो ख़ुद उसने सारी कहानी सुनाई, और अपने दुर्भाग्य पर वह ख़ुद ही सबसे पहले हंसा।

"सुनो, कुज़्मा," करावानोव ने कहा, "अगर मुझे हमेशा ऐसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता, तो मैं बहुत पहले ही चोरी करना छोड़ देता। तुम किसी भी दिन यों ही अपनी जान से हाथ धो बैठोगे!"

"मैं ख़ुद भी बराबर यही आश्चर्य करता हूँ," कुज़्मा गुनगुनाया, "यह क्या बात है कि मेरी तक़दीर हमेशा खोटी निकलती है। शायद इस-का कारण यह है कि मैं असली चोर नहीं हूं। मुझे दो-चार बार और को-शिश करके देखना चाहिए, और अगर इससे भी कुछ हाथ नहीं लगता तो फिर इसे छोड़ देना ही पड़ेगा, क्यों, यह ठीक है न, अन्तोन सेम्योनो-विच?"

"दो-चार बार और?" मैंने दोहराया। "ऐसा ही है तो फिर कल की बाट क्यों देखो, आज ही कोशिश कर डालो, कुछ भी तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ेगा, यह समझ लो। यह सब काम तुम्हारे बूते के नहीं हैं।"

"बूते के नहीं हैं?"

"बिलकुल नहीं। लेकिन सेम्योन पेत्रोविच ने मुझे बताया था कि तुम एक शानदार लोहार बन सकते हो।"

"उसने यह कहा?"

"हां, उसने कहा। लेकिन उसने यह भी कहा था कि तुमने लोहार-घर से दो नये टेंटू उड़ा लिए हैं—शायद इस क्षण भी वे तुम्हारी जेब में मौजूद हैं।"

लेशी शर्म से लाल हो आया, उतना ही जितना कि उसके चेहरे का काला रंग इसकी इजाज़त दे सकता था। करावानोव ने लेशी को उसकी जेब से दबोच लिया, इतने ज़ोरों से हंसते हुए जितने ज़ोरों से केवल करा-वानोव ही हंस सकता है।

"बेशक, यहां हैं! यह हुई तुम्हारी कोशिश नम्बर एक, सो इस में तुम नाकामयाब रहे!"

"ओह, क्या मुसीबत है," लेशी ने अपनी जेबों को ख़ाली करते हुए कहा।

कोलोनी के भीतर केवल इसी कोटि के मामले सिर उठा पाते थे। लेकिन आस-पास के तथाकथित माहौल का जहां तक सम्बन्ध है, वहां मा-मला काफ़ी गड़बड़ था। गांव के तहख़ानों से कोलोनी निवासियों का हा-र्दिक लगाव अभी तक जारी था, लेकिन यह मामला अब पूर्णतया नियमित हो गया था तथा अत्यन्त सुव्यवस्थित प्रणाली का रूप उसने धारण कर लिया था। केवल बड़े लड़के ही तहख़ाना-अभियानों में हिस्सा लेते थे, छौनों को बंद कर दिया जाता था, और भूमिगत होने का ज़रा-सा भी जब वे प्रयत्न करते थे तो बड़े लड़के निर्ममता से और सच्चे हृदय से उनके खिलाफ़ फ़ौजदारी के अभियोग लगाते थे। बड़े लड़कों ने इतनी असाधारण दक्षता प्राप्त कर ली थी कि कुलक अपनी ज़बानों की नोक तक, पर यह लाने का साहस नहीं कर सकते थे कि इस गंदे व्यापार में कोलोनी का हाथ है। इतना ही नहीं, यह विश्वास करने के पूरे कारण मेरे पास मौ-जूद थे कि इन तमाम तहख़ाना-अभियानों का अमली नेतृत्व किसी ऐरे-ग़ैरे के नहीं, बल्कि मित्यागिन जैसे विशेषज्ञ के हाथों में है।

मित्यागिन अपने छुटपन से ही चोर था। अगर वह कोलोनी में चोरी नहीं करता था तो इसका कारण यह था कि वह उसके निवासियों का सम्मान करता था और यह पूरी तरह से समझता था कि कोलोनी में चो-री करना अपने साथियों को आहत करना है। लेकिन शहर की मंडी या गांववालों के घरबार में मित्यागिन किसी चीज़ को नहीं बख़्शता था। रात

को वह बहुधा कोलोनी से ग़ैरहाज़िर रहता, और अगली सुबह उसे नाश्ते के लिए उठाना कठिन हो जाता। इतवार के दिन वह हमेशा छुट्टी ले लेता, गई रात लौटता, कभी-कभी नयी टोपी या मफ़लर लगाए, और हमेशा उपहारों के साथ जिन्हें वह छोटे लड़कों में बांट देता। छोटे लड़के मित्यागिन पर न्योछावर थे। वह इस या उस तरीक़े से, खुली लूट के अपने दर्शन को उनके सामने प्रकट नहीं होने देता था।

मित्यागिन के हृदय में मेरे प्रति प्रेम का भाव अभी तक बना हुआ था, लेकिन चोरी के विषय को हम कभी अपने बीच नहीं उठने देते थे। मैं जानता था कि उसे बातों से नहीं संभाला जा सकता था।

फिर भी मित्यागिन मेरे लिए भारी सिरदर्द का कारण था। वह अत्यन्त समझदार और प्रतिभाशाली लड़कों में से था। और इसलिए सार्वजनिक सम्मान का उपयोग करता था। वह जानता था कि अपनी चोर प्रकृति को किस प्रकार अत्यन्त आकर्षक रोशनी में प्रदर्शित किया जा सकता है। वह हमेशा बड़े लड़कों की एक चौकड़ी से घिरा रहता था और यह चौकड़ी भी व्यवहार में उतनी ही चतुर थी जितनी कि ख़ुद मित्यागिन। कोलोनी तथा शिक्षकों के प्रति वह वैसे ही सम्मान का भाव दिखाती जैसे कि ख़ुद मित्यागिन। यह पता लगाना कठिन था कि अंधेरे की रहस्यमय घड़ियों में यह मण्डली किस काम में अपने को व्यस्त रखती थी। ऐसा करने के लिए यह आवश्यक था कि या तो उन पर ख़ुफ़िया नज़र रखी जाए, या लड़कों में से कुछ एक से पूछ-ताछ की जाए, और मुझे ऐसा लगता था कि इन दोनों में से किसी भी प्रणाली का अनुसरण कोलोनी के उस वायुमण्डल को गड़बड़ा देगा जिसे इतनी मेहनत से तैयार किया गया था।

मित्यागिन की करतूतों में से जब कभी भी मुझे किसी एक का पता चलता तो मैं खुले, आम सभा में, उसकी ख़बर लेता, कभी-कभी उसे सज़ा भी देता, या उसे अपने दफ़्तर में बुलाकर एकान्त में उसे डांटता। मित्यागिन, आम-तौर से, ख़ामोशी क़ायम रखता। हाव-भाव में पूर्ण स्थिरता लिए, पूर्ण हार्दिकता और भले स्वभाव से मुसकराता हुआ जब विदा होता तो हमेशा, प्यार भरे और गम्भीर स्वरों में पुकारकर कहता:

"शुभ-रात्रि, अन्तोन सेम्योनोविच!"

कोलोनी की नेकनामी की वह खुलकर हिमायत करता था, और जब कोई पकड़ा जाता था तो बेहद झुंझला उठता था।

"समझ में नहीं आता कि ये गधे कहां से पैदा हो जाते हैं! हमेशा इतने बड़े निवाले पर मुंह मारते हैं कि वह गले में अटक जाता है।"

मैं देख रहा था कि मित्यागिन से हमें विदा लेनी पड़ेगी। अपनी सामर्थ्यहीनता पर मैं खीज उठता था, पर मित्यागिन के लिए मैं खेद का अनुभव करता था। शायद वह ख़ुद भी यह समझ गया कि कोलोनी में उसके रहने से कोई लाभ नहीं होगा। लेकिन वह उस जगह को छोड़ना नहीं चाहता जहां उसने इतने मित्र बना लिए थे। जहां छोटे लड़के उसकी ओर इस तरह खिंचते थे जैसे मक्खी मीठे की ओर खिंचती है।

और सब से बुरी बात तो यह थी कि वे लड़के भी जो समुदाय के मज़बूत सदस्य समझे जाते थे – कराबानोव, वेर्शनेव, वोलोख़ोव – मित्यागिन के दर्शन के रंग में रंगने लगे थे। केवल बेलूख़िन ही एक ऐसा था जो मित्यागिन के प्रति असली और खुला विरोध प्रकट करता था। यह ध्यान देने योग्य है कि मित्यागिन और बेलूख़िन के बीच इस वैमनस्य ने कभी भी चख-चख, या हाथापाई, या झगड़े तक का रूप धारण नहीं किया। बेलूख़िन ने शयनागार में खुले आम एलान किया कि जब तक मित्यागिन वहां मौजूद है, कोलोनी में हमेशा चोर रहेंगे। मित्यागिन ने, अपने चेहरे पर मुस्कान लिए, उसे सुना और बिना ज़रा-सी भी झुंझलाहट के जवाब दिया:

"हम सब के सब ईमानदार नहीं बन सकते, मात्वेई! अगर चोर न रहें तो फिर तुम्हारी इस ईमानदारी को लेकर क्या कोई चाटेगा? मैं हूं, इसी लिए तुम यह सब श्रेय प्राप्त करते हो!"

"तुम्हारी बदौलत मैं श्रेय प्राप्त करता हूं! क्यों इतनी बकवास करते हो!"

"वही तो! मैं चोरी करता हूं, और तुम नहीं करते और सो तुम अकड़कर चलते हो। अगर कोई चोरी न करे, तो सब एक हो जाएं। मैं समझता हूं कि अन्तोन सेम्योनोविच को जान-बूझकर मेरे जैसे लड़कों को लेना चाहिए। नहीं तो फिर तुम्हारे जैसे लड़कों के लिए भला दिखने का कोई रास्ता ही न रह जाएगा।"

"क्या बकवास है!" बेलूख़िन ने कहा। "ऐसे भी देश हैं जिन में कोई चोर नहीं है। जैसे डेन्मार्क है, स्वीडन और स्विट्ज़रलैंड है। मैंने पढ़ा है कि वहां कोई चोर नहीं है।"

"यह झूठ है!" वेर्शनेव ने हकलाते हुए कहा। "वे वहां भी चोरी करते हैं। और चोरों के न रहने से क्या लाभ? देखो न, वे कितने महत्वहीन हैं—डेन्मार्क और स्विट्ज़लैंड!"

"और हम?"

"हम? ज़रा हमारी ओर देखो, ज़रा देखो कि क्या जौहर प्रकट किया है हमने—क्रान्ति की ओर देखो, ज़रा देखो तो!"

"बस रहने दो, तुम्हारे जैसे लोग सबसे पहले क्रान्ति का विरोध करने आ खड़े होते हैं!" बेलूख़िन चिल्लाया।

इस तरह के उद्गारों से करावानोव का पारा ख़ास-तौर से गरमा जाता। वह अपने बिस्तरे से घूंसा तानते और अपनी काली आँखों से वहशियों की भांति बेलूख़िन के भले चेहरे पर चिनगारियां छोड़ते हुए कूदकर बाहर आ जाता।

"क्या आसमान सिर पर उठा रखा है?" वह चिल्लाकर कहता। "अगर मित्यागिन और मैंने एकाध फालतू पाव-रोटी उड़ा भी लिया तो इससे क्या—क्या इससे क्रान्ति की बधिया बैठ जायेगी? तुम हर चीज़ का मूल्य पाव-रोटियों में आंकते हो।"

"पाव-रोटियों का अपना यह चरख़ा बन्द करो! पाव-रोटियों की बात छोड़ो, असल में सूअर तुम ख़ुद हो, जहाँ-तहाँ अपनी थूथनी अड़ाते घूमते हो!"

गर्मियों का अन्त होने तक मित्यागिन और उसके साथियों की करतूतों ने, पास-पड़ोस के तरबूज़ों के खेतों में भयानक रूप धारण कर लिया। हमारे इधर के इलाक़ों में इस साल तरबूज़ और मतीरे प्रचुर मात्रा में बोये गये थे। सम्पन्न किसानों में से कुछ ने तो कई-कई देस्यतीनों में उन्हें बोया था।

तरबूज़ों के खेतों में जब-तब इक्के-दुक्के धावों से तरबूज़ों की चोरी का सूत्रपात हुआ। उक्राइन में तरबज़ों के खेतों में चोरी को कभी भी किसी ने दण्ड्य अपराध नहीं माना। गांव के लड़कों ने पास-पड़ोस के तरबूज़ों के खेतों में हमेशा छुटपुट धावे किए हैं और मालिकों ने कमोबेश रूप में, भले स्वभाव के कारण इन धावों को ग्रहण किया है। एक-एक देस्यतीना में कभी-कभी बीस-बीस हज़ार तरबूज़ों की फ़सल होती थी। इसमें से एक सौ तरबूज़ अगर गर्मियों में ग़ायब भी हो गए तो इसे कोई महत्व नहीं

देता था। यह सब होने पर भी तरबूज़ के खेत के बीच में हमेशा एक झोंपड़ी खड़ी कर दी जाती थी जिसमें कोई बूढ़ा पड़ा रहता था जो तरबूज़ों की रक्षा उतनी अधिक नहीं कर पाता था जितना अधिक कि वह इन बिनबुलाये मेहमानों का हिसाब रखता था।

जब-तब इन बूढ़ों में से कोई एक अपनी शिकायतें लिए हुए मेरे पास आता :

" आपके लड़के कल तरबूज के खेत में जा धमके। उनसे कहना कि ऐसा करना ठीक नहीं है। उन्हें आना हो तो सीधे झोंपड़ी में ही चले आएं। पेट-भर खाने के लिए वहां काफ़ी है। बस, मुझसे कहने-भर की देर है, मैं ख़ुद जाकर खेत में से सब से बढ़िया तरबूज़ उनके लिए लाऊंगा। "

मैंने वृद्ध का अनुरोध लड़कों तक पहुंचा दिया। उन्होंने उसी सांझ वृद्ध द्वारा प्रस्तावित प्रणाली में हल्का-सा संशोधन मात्र करके उसे संतुष्ट किया। और उस समय जब कि वृद्ध द्वारा चुनकर लाया गया एकदम श्रेष्ठ तरबूज़ खाया जा रहा था, साथ ही पिछले साल के तरबूज़ों के गुणों का जापानी युद्ध के सालवाली फ़सल के साथ तुलना को लेकर मित्रतापूर्ण बातों का सिलसिला चल रहा था, बिनबुलाये मेहमान तरबूज़ों के खेत का रौंद लगा रहे थे। वे किसी भी तरह की बातचीत में समय न गंवाते हुए अपनी क़मीज की झोलियों, तकियों के गिलाफ़ों तथा बोरियों में तरबूज़ो को भर रहे थे। उस पहली सांझ को वृद्ध के कृपापूर्ण निमंत्रण से लाभ उठाते हुए, वेर्शनेव ने सुझाव रखा कि वृद्ध के पास बेलूख़िन को जाना चाहिए। बेलूख़िन के साथ इस पक्षपात पर किसी ने आपत्ति नहीं की। मात्वेई तरबूज़ों के खेत से ख़ूब छककर लौटा।

"बहुत ही बढ़िया रहा, सच, बहुत ही बढ़िया! हमने वह बातें कीं कि बुड्ढ का जी ख़ुश हो गया... " .

वेर्शनेव एक बेंच पर बैठा चुपचाप मुसकरा रहा था। कराबानोव कमरे में आ धमका।

"हां तो मात्वेई, कहो, क्या रंग रहा?"

"ओह सेम्योन, हम अच्छे पड़ोसी भी हो सकते हैं।"

"क्यों नहीं, तुम्हारी तो चलती है। ख़ूब छककर तुमने तरबूज़ खाए, लेकिन हमारा भी कुछ ख़याल किया?"

" तुम भी निरे चूज़े हो! अरे, तुम ख़ुद भी तो उसके पास जा सकते हो!"

"वाह, क्या बात कही है! तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए। एक आदमी हमें न्योतता है, तो क्या हम सभी वहां पहुंच जाएं? यह तो भयानक सीनाज़ोरी होगी, – पूरे साठ हैं हम!"

अगले दिन वेर्शनेव ने फिर प्रस्ताव किया कि वृद्ध के यहां बेलूख़िन को जाना चाहिए। लेकिन बेलूख़िन ने उदारशीलता के साथ इस प्रस्ताव से इनकार कर दिया,– किसी और को जाने दो।

"किसी और को मैं कहां से लाऊंगा। ना-नुकर न करो। तुम्हें तरबूज़-वरबूज़ खाने की ज़रूरत नहीं। बस, वहां जाकर बैठना और बातें करते रहना।"

बेलूख़िन ने निश्चय किया कि वेर्शनेव ठीक कहता है। उसे यह बात भी पसंद आई कि वह वृद्ध से मिलने जाए और वृद्ध को जताए कि कोलोनी के निवासी केवल तरबूजों के लिए ही उसके पास नहीं जाते हैं।

लेकिन वृद्ध ने अत्यन्त बेरुख़ी से अपने मेहमान का स्वागत किया। और बेलूख़िन को अपनी निःस्वार्थता का प्रदर्शन करने का अवसर तक नहीं मिला। इसके प्रतिकूल वृद्ध ने उसे अपनी बन्दूक़ दिखाई और कहा:

"कल तुम तो यहां बैठे बातें करते रहे, और तुम्हारे वे उचक्के आधा खेत साफ़ कर गए। तुम्हारी यह हिम्मत? साफ़ है कि मुझे तुम्हारे साथ दूसरी तरह से पेश आना पड़ेगा। मैं तुम्हें गोली मार दूंगा, यह निश्चय जानो!"

बेलूख़िन, पूरी तरह से विमूढ़, कोलोनी लौटा और शयनागार में पांव रखते ही चिल्लाकर अपना क्षोभ उतारने लगा। लड़के सबके सब हंस पड़े, और मित्यागिन ने कहा:

"आख़िर मामला क्या है,– क्या बुढ़ऊ ने तुम्हें अपना वकील बनाकर भेजा है? कल सब से बढ़िया तरबूज़ तुम हड़प गए, क़ानून की मर्यादा का भी तुम्हें उल्लंघन नहीं करना पड़ा, और तुम क्या चाहते हो? हमने तो शायद तरबूज़ की शक्ल तक नहीं देखी? बुढ़ऊ के पास क्या सबूत है?"

वृद्ध फिर कभी मेरे पास नहीं आया। लेकिन अनेक चिन्हों और संकेतों से यह साफ़ था कि तरबूज़ों की चोरी ने बाक़ायदा निशाचरी रूप धारण कर लिया है।

एक सुबह शयनागार में झांकने पर मैंने देखा कि समूचा फ़र्श तरबूज़ के छिलकों से छितरा हुआ है। मैंने मानीटर को डांटा-डपटा, कुछ को सज़ा दी और मांग की कि ऐसी हरकत फिर नहीं होनी चाहिए। फिर अगले कुछ दिनों तक शयनागार फिर वैसे ही साफ़-सुथरे हो गए जैसे कि पहले रहते थे।

ग्रीष्म की मधुर, बहुत ही सुहानी शामें—बातों की मर्मरध्वनि से सराबोर, प्रेम के रस में पगीं और गूंजती हुई हंसी के अप्रत्याशित विस्फोटों से युक्त—गम्भीर, बिल्लौरी रातों में विलय हो चलीं।

सपने, देवदार और मिन्ट की सुगंधि, पक्षियों की सरसराहटें और कहीं दूर कुत्तों के भौंकने की गूंज, नींद में डूबी कोलोनी के ऊपर मंडरा रही थी। मैं अपनी पोर्च में बाहर निकल आया। कोने के उधर से मानीटर प्रगट हुआ। वह रात की ड्यूटी पर था। उसने मुझसे समय पूछा। धब्बेदार कुत्ता—जिसका नाम 'गुलदस्ता' था—सांझ की शीतलता में निःशब्द पंजों से उसका अनुसरण कर रहा था। सो मैं शान्ति से सो सकता था।

लेकिन यह शान्ति अपने दामन में अत्यन्त जटिल तथा परेशान करनेवाली घटनाओं को छिपाए थी।

एक बार इवान इवानोविच ने संयोगवश मुझसे पूछा:

"क्या घोड़े रात-भर आपके हुक्म से अहाते में छुट्टा घूमा करते हैं? उन्हें कोई चुरा ले तो..."

ब्रातचेन्को भड़क उठा।

"तो क्या घोड़ों को खुली हवा में सांस तक नहीं लेने दिया जाएगा?" उसने पूछा।

अगले दिन कालीना इवानोविच ने सवाल किया:

"ये घोड़े शयनागार की खिड़कियों में क्यों झांकते हैं?"

"मतलब? आख़िर क्या कहना चाहते हो तुम?"

"यह तो ख़ुद अपनी आंखों से जाकर देखिए। जैसे ही दिन निकलता है, वे खिड़कियों के नीचे आ खड़े होते हैं। क्या कारण हो सकता है उनके ऐसा करने का?"

मैंने इस बात की जाँच की। वह बिलकुल सच थी,—हमारे तमाम घोड़े और गावरियुश्का बैल जिसे आयु तथा निकम्मेपन के कारण सार्व-

जनिक शिक्षा के अर्थ-विभाग ने हमें भेंट कर दिया था, खिड़कियों के नीचे आ मौजूद होते और बकाइन तथा वर्डचैरी की झाड़ियों के बीच घंटों एक किसी सुखद चीज़ की आस में खड़े होते।

शयनागार में मैंने लड़कों से पूछ-ताछ की:

"घोड़े तुम्हारी खिड़कियों में क्यों झांकते हैं—क्या कारण हो सकता है इसका?"

ओप्रिश्को अपने बिस्तर में उठ बैठा, खिड़की की ओर उसने नज़र घुमाई, मुसकराया और किसी को पुकारते हुए बोला:

"सेरयोज्हा, जाकर ज़रा उन बेवक़ूफ़ों से पूछो तो कि वे किस लिए खिड़कियों के नीचे खड़े हैं?"

कम्बलों के भीतर से खिलखिलाने की आवाज़ आई। मित्यागिन ने अपने बदन को सतर करते हुए अपनी पुरुष आवाज़ में कहा:

"हमें कोलोनी में ऐसे जिज्ञासु जानवरों को नहीं रखना चाहिए, आपके लिए वह एक और सिरदर्द पैदा हो गया!"

मैंने अन्तोन पर हमला किया।

"यह क्या रहस्य है? हर सुबह किस लिए घोड़े यहां आ चिपकते है? क्या लालच देते हो तुम उन्हें?"

बेलूख़िन ने अन्तोन को धकेलकर एक बाज़ू कर दिया।

"आप चिन्ता न करें, अन्तोन सेम्योनोविच," उसने कहा। "घोड़ों का कोई बाल बांका न होगा। अन्तोन उन्हें विशेष उद्देश्य से यहां बुलाता है, सो वे निश्चय ही किसी बढ़िया चीज़ की उम्मीद करते हैं।"

"बस, बस, ज़्यादा बतंगड़ न करो!" करावानोव ने कहा।

"सुनो, मैं बताता हूं। तरबूज़ के छिलके फ़र्श पर छितराने की आपने हमें मनाही कर दी थी, और हम लोगों में हमेशा किसी न किसी के पास तरबूज़ निकल ही आता है..."

"निकल ही आता है— क्या मतलब है इसका?"

"वाह, यह भी कोई पूछने की बात है! कभी बुढ़ऊ हमारी ख़ातिर करता है, कभी वे गांव से ले आते हैं..."

"वृद्ध तुम्हारी ख़ातिर करता है?" मैंने झिड़की के स्वर में दोहराया।

"हां, वह या कोई अन्य। और छिलकों को भला हम कहां फेंकें? सो अन्तोन घोड़ों को छुट्टी दे देता है, और साथी उनकी दावत करते हैं।"

मैं शयनागार से चला आया।

भोजन के बाद एक बड़ा-सा तरबूज़ लिए मित्यागिन मेरे दफ़्तर में आया।

"यह आपके चखने के लिए, अन्तोन सेम्योनोविच।"

"कहां से लाए हो इसे? दफ़ा हो जाओ यहां से अपने इस तरबूज़ को लेकर! बिलकुल, तुम सब को मुझे सीधा करना है। इसे मज़ाक़ न समझना!"

"तरबूज़ एकदम खरा और ईमानदारी का है तथा खास-तौर से आपके लिए चुनकर लाया गया है। इस तरबूज़ के लिए वृद्ध को बाक़ायदा – असली – पैसा दिया गया है। और, इसमें शक नहीं, आपको सचमुच हमें अब सीधा करना चाहिए। हम इससे बुरा नहीं मानेंगे!"

"ज़्यादा बको नहीं और अपने तरबूज़ के साथ सीधे यहां से दफ़ा हो जाओ।"

दस मिनट बाद उसी तरबूज़ को लिए हुए, बाक़ायदा एक शिष्ट-मण्डल ने प्रवेश किया। और आश्चर्य की बात यह कि बेलूख़िन उनका प्रवक्ता था, जो हंसी के मारे बोल नहीं पा रहा था।

"ओह, अन्तोन सेम्योनोविच, काश कि आपको मालूम होता कि ये सूअर हर रात कितने तरबूज़ चट करते हैं। इसे छिपाने से क्या फ़ायदा? अकेले वोलोख़ोव ही... लेकिन, बेशक, तत्व की बात यह नहीं है... वे उन्हें कैसे लाते हैं – यह उनकी आत्मा जाने – लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि वे – हरामी कहीं के – मेरी भी दावत करते हैं। उन्हें मेरे युवा हृदय का कमज़ोर स्थल मालूम हो गया है – तरबूज़ों पर बस मैं जान देता हूं। लड़कियां तक अपने हिस्से से महरूम नहीं रहतीं और वे तोस्का की भी ख़ातिर करते हैं। यह मानना पड़ेगा कि उदार भावनाओं से वे एकदम शून्य नहीं हैं। सो तो हुआ, और हम जानते हैं कि आपको तरबूज़ नहीं मिलते, बल्कि – बुरा हो इन कमबख़्त तरबूज़ों का – मिलती है आपको निरी परेशानी। इसलिए हम आप से विनती करते हैं कि हमारी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करें। मैं एक ईमानदार आदमी हूं, तुम्हारे वेर्शनेवों की थैली का चट्टा-बट्टा नहीं हूँ, इसलिए आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं, वृद्ध को इस तरबूज़ का दाम चुकाया गया है, और शायद-

—जैसा कि आर्थिक राजनीति में कहा जाता—इसमें लगे मानवीय श्रम के मूल्य से ज़्यादा ही चुकाया गया है।"

इस प्रकार अपने सम्भाषण का अन्त करते हुए बेलूख़िन अचानक गम्भीर हो गया और तरबूज़ को मेरी मेज़ पर रखते हुए विनम्रता से हटकर एक ओर खड़ा हो गया।

वेर्शनेव ने सदा की भांति अस्त-व्यस्त, ख़स्ताहाल, मित्यागिन के पीछे से अपना सिर बाहर निकाला।

"राजनीतिक अर्थशास्त्र, न कि आर्थिक राजनीति," उसने संशोधन किया।

"एक ही बात है।"

"वृद्ध को तुमने क्या दिया?" मैंने पूछा।

करावानोव ने अपनी उंगलियों पर जांचना शुरू किया:

"वेर्शनेव ने उसके मग में हत्था लगाया, गुद ने उसके जूते में पैवन्द जोड़ा, और मैंने उसके लिए आधी रात तक पहरा दिया।"

"मैं केवल कल्पना ही कर सकता हूं कि इसके साथ-साथ अन्य कितने तरबूज़ तुम लोगों ने रात-भर में उड़ाए होंगे।"

"बिलकुल ठीक," बेलूख़िन ने कहा। "मैं इसका उत्तरदायित्व ले सकता हूं। उस वृद्ध से अब हम सम्पर्क रखते हैं। लेकिन ठीक जंगल के बाहर तरबूज़ों का एक खेत है। इसका पहरुआ बड़ा कुनैठिया है—हमेशा गोली मारने को तैयार रहता है!"

"तो क्या, तुमने भी तरबूज़ों के खेतों में जाना शुरू कर दिया है?"

"नहीं, मैं ख़ुद नहीं जाता, लेकिन गोलियों की आवाज़ मैंने सुनी है,—संयोग से कभी उधर से गुज़रना हो जाता है..."

मैंने लड़कों को शानदार तरबूज़ के लिए धन्यवाद दिया।

कुछ दिन बाद उस कुनैठिया जीव के भी मैंने दर्शन किए।

वह मेरे पास आया, एकदम हताश।

"यह क्या हश्र बरपा होने जा रहा है?" उसने चीख़ते हुए कहा। "पहले वे ज़्यादातर रात को ही चोरी के लिए बाहर निकलते थे, और अब तो दिन में भी उनसे छुटकारा नहीं,—कलेवा के समय वे दल-बल सहित आते हैं। ओह, अजीब मुसीबत है,—एक के पीछे भागो, तो उधर समूचे खेत को रौंद डालते हैं।"

मैंने लड़कों को चेतावनी दी कि मुझे ख़ुद वहां जाना और तरबूज़ के खेतों को ताकने में हाथ बटाना पड़ेगा, या फिर कोलोनी के ख़र्च से मुझे चौकीदार किराये पर रखना होगा।

"आप भी किस दहक़ान का विश्वास करते हैं," मित्यागिन ने कहा। "मामला तरबूज़ों का नहीं है,—तरबूज़ के खेतों के पास तो वह किसी को फटकने तक नहीं देता!"

"लेकिन तुम लोगों को इससे क्या? तुम वहां जाते ही क्यों हो?"

"उसे इससे भला क्या वास्ता? हम कहीं भी जाएं? वह गोली क्यों दाग़ता है?"

एक अन्य दिन बेलूख़िन ने मुझे चेतायाँ:

"देख लेना, इसका बुरा नतीजा होगा। लड़के एकदम खार खाए हैं। वृद्ध अब झोंपड़ी में बैठते डरता है। दो अन्य को साथ लेकर अब वह ताकता है। और उन सब के पास बन्दूक़ें हैं। लड़के यह सब बरदाश्त नहीं करेंगे।"

उसी रात लड़के लड़ने के लिए कोलोनी से रवाना हुए। मैं जो उनसे सैनिक क़वायद याद कराता था, वह इस समय काम आई। आधी रात तक समूची कोलोनी तरबूज़ के खेत की सीमा की बग़ल में दांव लगाए पड़ी थी। स्काउटों और पैट्रोलों को भेज दिया गया था। जैसे ही ताकनेवालों ने हांक लगाई, लड़कों ने चिल्लाकर हुर्रा किया और आक्रमण के लिए धावा बोल दिया। चौकीदार भागकर जंगल में जा छिपे। भगदड़ में वे अपनी बन्दूक़ें भी झोंपड़ी में छोड़ गए। कुछ लड़के विजय के फलों को तोड़ने में जुट गए—तरबूज़ों को ढलान पर से खेत की सीमा की ओर लुढ़काने लगे, अन्य बदला लेने पर उतरे और उन्होंने बड़ी झोंपड़ी में आग लगानी शुरू कर दी।

चौकीदारों में से एक कोलोनी की ओर लपका और वहां आकर उसने मुझे जगाया। हम तेजी से युद्ध क्षेत्र की ओर चले।

टीले पर स्थित झोंपड़ी लपटों से घिरी थी, और इतनी दमक फैला रही थी जैसे समूचे गांव में आग लगी हो। खेत के निकट भागकर पहुंचते न पहुंचते कई गोलियां दग़ने की आवाज़ गूंज उठी। मैंने देखा कि लड़के, बाक़ायदा जत्थों में, तरबूज़ों की क्यारियों में ज़मीन से चिपके हैं। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वे अपने पांवों पर खड़े होते और जलती हुई झोंपड़ी की

ओर लपकते। दाहिने बाज़ू पर किसी जगह से मित्यागिन आदेश दे रहा था:

"सीधे नहीं, घूमकर बढ़ो!"

"यह गोली कौन दाग़ रहा है?" मैंने वृद्ध से पूछा।

"मुझे क्या मालूम? यहां कोई नहीं है। हो सकता है किसी की बन्दूक़ यहां छूट गई हो और हो सकता है कि वह अपने आप दग़ रही हो!"

मामला, सच पूछो तो, ख़त्म हो चुका था–अब कुछ बाक़ी नहीं रहा था। मेरे प्रकट होने पर लड़के ग़ायब हो गए थे। वृद्ध ने लम्बी उसांस भरी और घर चला गया। मैं कोलोनी लौट आया। शयनागार में पूर्ण सन्नाटा छाया था। हर कोई केवल सो ही नहीं रहा था, बल्कि खर्राटे भर रहा था। ऐसे खर्राटे मैंने जीवन में पहले कभी नहीं सुने थे। मैंने धीमे-से कहा:

"यह ढोंग छोड़ो और उठो!"

खर्राटे बंद हो गए, लेकिन उठकर कोई नहीं आया,–वैसे ही अड़ियल की भांति सोते रहे।

"उठो, मैं कहता हूं।"

उलझे बालोंवाले सिर तकियों पर से उठे। अनदेखती-सी आंखों से मित्यागिन ने मेरी ओर देखा।

"क्या बात है?"

लेकिन करावानोव अपने आपको अधिक न रोक सका।

"बस करो, मित्यागिन, बेकार..."

उन सबों ने मुझे घेर लिया और उत्साह के साथ रात की शानदार मुहिम का विवरण मुझे सुनाने लगे। अचानक तारानेत्स उछलकर खड़ा हुआ, जैसे किसी ने डंक मार दिया हो!

"और झोंपड़ी में बन्दूक़ें थीं!" वह चहका।

"इससे क्या, वे भी जल-भुन गईं।"

"लकड़ी जली है, लेकिन बाक़ी तो काम आ सकती हैं।"

और वह शयनागार से बाहर लपक गया।

"हो सकता है कि यह सब बहुत मजेदार रहा हो," मैंने कहा। "लेकिन है यह फिर भी वस्तुत: डाकाज़नी ही। मैं इसे अब अधिक बरदाश्त नहीं कर सकता। अगर तुम यही सब करने पर उतारू हो तो हमें

एक-दूसरे से विदा होना होगा। यह लज्जास्पद है—दिन हो चाहे रात, किसी घड़ी चैन नहीं लेने देते, न कोलोनी को और न समूचे जिले को!"

करावानोव मेरी बांह से आ लिपटा ।

"फिर कभी ऐसा नहीं होगा। हम ख़ुद यह देखते हैं कि बात जरूरत से ज़्यादा बढ़ गई है क्यों, ठीक है न साथियो?"

साथियों ने इसकी पुष्टि से वायुमण्डल को गुंजा दिया।

"यह सब कोरे शब्द हैं, और कुछ नहीं," मैंने उनसे कहा। "मैं तुम्हें अच्छी-ख़ासी चेतावनी देता हूँ कि अगर यह डाकाजनी जारी रहती है तो किसी-न-किसी को मुझे कोलोनी से निकालना पड़ेगा। और ध्यान रखना, यह आख़िरी चेतावनी है जो मैं तुम्हें दे रहा हूं।"

अगले दिन तरबूज़ के खेत पर गाड़ियां पहुंचीं, जो कुछ बाक़ी बच रहा था उसे लादा, और विदा हो गईं।

मेरी मेज पर जली हुई बन्दूक़ों की नलियां तथा अन्य छोटे-मोटे हिस्से पड़े हुए रह गये।

२१. छुटकारा

लड़के अपने वचन पर क़ायम नहीं रहे। तरबूज़ों के खेतों पर धावे करना या गांव के मांसघरों तथा तहख़ानों पर हमला करना किसी ने भी बंद नहीं किया, न करावानोव ने, न मित्यागिन ने, न दल के अन्य किसी सदस्य ने। और अन्त में उन्होंने एक नयी अत्यन्त टेढ़ी कारगुज़ारी कर दिखाई जिसकी बदौलत दुःखद और सुखद घटनाओं का एक अच्छा-खासा बवंडर ही उठ खड़ा हुआ।

एक रात वे लूका सेम्योनोविच के बाग़ में घुस गए और दो छत्ते, शहद् और मक्खियों के समेत, वहाँ से तिड़ी कर लाये। रात में वे छत्तों को कोलोनी ले आए और उन्हें मोचीघर में—जो कि तब चालू नहीं था—रख दिया। ख़ुशी में उन्होंने एक दावत का आयोजन किया जिसमें कितने ही लड़कों ने हिस्सा लिया। सुबह मुहिम में हिस्सा लेनेवाले लड़कों की पूरी फेहरिस्त तैयार की जा सकती थी, कारण वे सब लाल, सूजे हुए चेहरे लिए घूम रहे थे। लेशी को तो येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तक से दवा-दारू की मदद लेनी पड़ी थी।

दफ़्तर में तलब किए जाने पर मित्यागिन ने फ़ौरन मंज़ूर कर लिया कि यह सारी कारगुज़ारी उसकी की हुई थी। उसने अपने साथियों के नाम बताने से इनकार कर दिया और वस्तुत: आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला:

"इस में कुछ नहीं है। हमने छत्ते ख़ुद अपने लिए नहीं लिए। हम उन्हें कोलोनी में ले आए हैं। अगर आप यह समझते हों कि मक्खियों को कोलोनी में नहीं रखना चाहिए, तो मैं उन्हें वापस ले जा सकता हूं।"

"तुम वापस क्या ले जाओगे? शहद खाया जा चुका है, और मक्खियां उड़ चुकी हैं।"

"तो जैसा आप कहें। मैंने तो अच्छा समझकर ही किया था।"

"नहीं, मित्यागिन, अच्छा तो तुम्हारे लिए यह होगा कि तुम हमें चैन से रहने दो। तुम अब वयस्क हो चुके हो, तुम और मैं कभी एकमत नहीं हो सकते, सो अच्छा यही है कि हम एक दूसरे से विदा लें।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं।"

जितना भी जल्दी हो, मित्यागिन से छुटकारा पाना आवश्यक था। मेरे लिए अब यह साफ़ था कि अक्षम्य होने की हद तक इस निर्णय की पूर्त्ति को मैं स्थगित किये रहा, और ह्रास की उस क्रमिक प्रक्रिया की ओर से अपनी आंखें मूंदे रहा जो कि हमारे बीच शुरू हो गई थी। हो सकता है कि तरबूज़ के खेतों की मुहिमों या छत्तों पर धावा बोलने में ऐसी कोई ख़ास कुत्सित बात न हो, लेकिन इन मामलों में लड़कों का निरन्तर दिलचस्पी लेने, दिन-रात इन्हीं अन्तहीन शग़लों तथा लालसाओं में डबे रहने का मतलब था कि हमने अपने नैतिक मान को विकसित करने से एकदम मुंह मोड़ लिया था, और इसके परिणामस्वरूप—सड़े हुए पोखर का रूप धारण करने की ओर हम बढ़ रहे थे। और देखनेवाली आंखें इस पोखर की सतह पर अत्यन्त अप्रिय चिन्हों को अभी भी लक्षित कर सकती थीं—ख़ुद लड़कों के लापरवाही भरे तौर-तरीक़े, कोलोनी और सभी प्रकार के काम के प्रति उनके रवैये में एक ख़ास प्रकार की गंदी मनोभावना, एक उबा देनेवाली खोखली दाम्भिकता जिसमें असंदिग्ध विश्वासहीनता के तत्व शामिल थे। मैं साफ़ देख सकता था कि बेलूख़िन और ज़दोरोव जैसे लड़कों में भी—बावजूद इसके कि वे ख़ुद किसी मुजरिमाना काम में हिस्सा नहीं लेते थे—व्यक्तित्व की वह पहलेवाली चमक अब नहीं थी, और वे जैसे एक तरह की सतही चिकनाई धारण करते जा रहे थे। हमारी योज-

नाएँ, राजनीतिक सवाल अब पीछे पड़ गए थे, और सस्ती, छुटपुट मुहिमें तथा उनके बारे में अंतहीन बहसें उनके ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बन गई थीं। इसका उल्टा असर दोनों पर ही पड़ता था... ख़ुद लड़कों के वाह्य आकार-प्रकार पर भी, और समग्र रूप में कोलोनी पर भी—शिथिल गति, ऊपरी और संदिग्ध छींटाकशी, कपड़ों के पहनने में लापरवाही और कोनों में जमा किए गए गंदगी के ढेर के रूप में।

मैंने मित्यागिन को विदा करने का परवाना तैयार किया, सफ़र-ख़र्च के लिए उसे पांच रूबल दिए—उसका कहना था कि वह ओदेस्सा जा रहा है—और उसके लिए शुभ भविष्य की कामना प्रकट की।

"क्या मैं साथियों से विदा ले सकता हूं?"

"बेशक।"

मैं नहीं जानता कि वे कैसे विदा हुए। सांझ होते मित्यागिन विदा हो गया। क़रीब-क़रीब समूची कोलोनी उसे विदा देने के लिए जमा हो गई।

उस रात हरेक के चेहरे पर उदासी छाई रही। छोटे लड़कों में जैसे जान नहीं थी। उनकी वह स्वभावगत, कभी न स्थिर रहनेवाली स्फूर्ति धीमी पड़ गई थी। कराबानोव भण्डारघर के ठीक बाहर पड़ी एक पेटी पर ढह गया और सोने के समय तक वहीं पड़ा रहा।

लेशी मेरे कमरे में आया।

"मित्या का अभाव कितना खल रहा है!" उसने कहा।

मेरे जवाब के इन्तज़ार में वह काफ़ी देर तक रुका रहा, लेकिन मैंने उसे जवाब नहीं दिया। जैसे वह आया था, वैसे ही चला गया।

उस रात मैं देर तक काम करता रहा। दो बजे के क़रीब दफ़्तर से निकलने पर अस्तबल की अटारी में मुझे रोशनी दिखाई दी। अन्तोन को जगाकर मैंने उससे पूछा:

"अटारी में कौन है?" अन्तोन ने उदास उपेक्षा से अपना एक कंधा बिचकाया और अनमनेपन से जवाब दिया:

"वहां मित्यागिन है।"

"क्यों, वह वहां क्या कर रहा है?"

"मैं क्या जानूं?"

मैं अटारी पर चढ़ा। अस्तबल के लैम्प के चारों ओर कई जने जमा थे—करावानोव, वोलोख़ोव, लेशी, प्रीख़ोद्‌को और ओसाद्‌ची। उन्होंने

चुपचाप मेरी ओर देखा। मित्यागिन अटारी के एक कोने में कुछ कर रहा था। अंधेरे में उसे पहचानना तक मुश्किल था।

"चलो, दफ़्तर में चलो तुम सब," मैंने कहा।

और जब मैं दफ़्तर का दरवाज़ा खोल रहा था तो कराबानोव ने आदेश दिया :

"हरेक के जाने में कोई तुक नहीं है। मैं और मित्यागिन चले जाएंगे।"

मैंने कोई आपत्ति नहीं की।

हम दफ़्तर में दाखिल हुए। कराबानोव एक कोच पर ढह गया, और मित्यागिन दरवाज़े के पास कोने में खड़ा रहा।

"तुम कोलोनी में किस लिए लौटकर आए?"

"मुझे कुछ मामला तय करना था।"

"मामला कैसा?"

"योंही एक काम था जो हमें करना था।"

कराबानोव दहकती हुई अडिग नजर से मेरी ओर देख रहा था। अचानक उसने अपने आपको बटोरा और सांप की भांति लहराता, मेरी मेज से आ लगा, उसके ऊपर झुका और अपनी दहकती हुई आंखों को मेरे चश्मे के निकट ले आया।

"क्या आप जानते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच," उसने कहा, "क्या आप जानते हैं, कि मैं भी मित्यागिन के साथ चला जाऊंगा।"

"अटारी में तुम लोग क्या कर रहे थे?"

"कोई ख़ास बात नहीं, विश्वास कीजिए। लेकिन फिर भी, कोलोनी के बारे में कुछ नहीं। और मैं मित्यागिन के साथ जाऊंगा। चूंकि हम आपको नहीं भाते—तो अच्छी बात है—हम यहां से चले जाएंगे और अपना भाग्य आज़माएंगे। हो सकता है कि आपको कोलोनी के लिए और अच्छे सदस्य मिल जाएं।"

वह हमेशा ही कोई अभिनय-सा करता प्रतीत होता था, और इस समय वह आहत पक्षी का अभिनय कर रहा था, निस्सन्देह, इस आशा से कि मुझे अपनी निजी क्रूरता पर शर्म आएगी, और मित्यागिन को मैं कोलोनी में ही रहने दूंगा।

मैंने सीधे करावानोव की आंखों में देखा और एक बार फिर पूछा:

"किस लिए तुम सब एक जगह जमा हुए थे!"

सब जवाबों के लिए करावानोव प्रश्नसूचक नज़र से मित्यागिन की ओर देखता था।

मैं मेज़ के पीछे से उठा और करावानोव से बोला:

"क्या तुम रिवाल्वर लिए हो?"

"नहीं," उसने दृढ़ता से जवाब दिया।

"अपनी जेबें ख़ाली करके दिखाओ!"

"निश्चय ही आप मेरी तलाशी लेने नहीं जा रहे हैं, अन्तोन सेम्योनोविच?"

"अपनी जेबें ख़ाली करके दिखाओ।"

"अच्छा, देखिए!" करावानोव विक्षिप्त-सा चिल्लाया और अपने पतलून और जैकट की जेबों को उलट दिया। उसकी जेबों से रई की रोटी के भुरके गिरकर फ़र्श पर बिखर गए।

मैं मित्यागिन के पास चला आया।

"अपनी जेबें दिखाओ।" मित्यागिन ने अटपटेपन के साथ अपनी जेबों को टटोला। एक बटुवा, चाबियों का एक गुच्छा और एक मास्टर–कुंजी उसने बाहर निकाली, कुछ झेंपते हुए मुसकराया, और बोला:

"बस, यही है।"

मैंने उसकी पतलून की पेटी में हाथ डाला और मझोले आकार का ब्राउनिंग पिस्तौल बाहर निकाला। उसके क्लिप में तीन कारतूस थे।

"यह किसका है?"

"यह मेरा रिवाल्वर है," करावानोव ने कहा।

"तुम मुझसे झूठ बोले कि तुम्हारे पास कोई रिवाल्वर नहीं है? अच्छी बात है! अब कोलोनी से दफ़ा हो जाओ, बिना किसी टाल-मटोल के। बस जाओ और फिर इधर का रुख़ न करना! समझे?"

मैं फिर मेज़ पर बैठ गया, और करावानोव को अलग करने का परवाना तैयार कर दिया। करावानोव ने चुपचाप काग़ज़ को अपने हाथ में थामा, हिक़ारत के साथ उन पांच रूबलों की ओर देखा जो कि मैं उसे देने जा रहा था, और कहा:

"इसके बिना भी हम अपना काम चला लेंगे। अच्छा तो विदा!

उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया, हाथ मिलाते समय मेरी उंगलि-

यों को इतना कसकर दबोचा कि वे दुखने लगीं, कुछ कहने को वह हुआ, लेकिन बजाय इसके अचानक खुले दरवाज़े की ओर वह लपका और बाहर छाए अंधेरे में लोप हो गया। मित्यागिन ने अपना हाथ आगे नहीं किया और न विदाई का कोई शब्द मुंह से निकाला। आवेग के साथ उसने अपनी जाकेट की सलवटों को ठीक किया और चोर की भांति निःशब्द डगों से कराबानोव के पीछे खिसक गया।

मैं बाहर पोर्च पर निकल आया। पोर्च के सामने लड़कों की एक भीड़ जमा थी। लेशी विदा होते हुए आकारों के पीछे दौड़कर लपका, लेकिन वह केवल जंगल के बाह्य छोरों तक ही पहुंचा, और वहां से वापस लौट आया। अन्तोन सब से ऊपरवाली पैड़ी पर खड़ा कुछ भनभना रहा था। अचानक बेलूख़िन ने निस्तब्धता को भंग किया।

"तो मामला ख़त्म! जो हो, मैं इसकी न्यायपूर्णता को मानता हूं।"

"हो सकता है कि यह ठी-ठी-ठीक हो," वेर्शनेव ने हकलाते हुए कहा। "ले-ले-लेकिन मैं खेद प्रकट किए बिना न-न-नहीं रह सकता।"

"किस के लिए?"

"सेम्योन और मित्यागिन के लिए। क्या तुम खेद का अनुभव नहीं करते?"

"करता हूं, लेकिन तुम्हारे लिए, कोल्का।"

मैं अपने दफ़्तर की ओर मुड़ा, और वेर्शनेव को झिड़कते हुए बेलूख़िन की आवाज़ मुझे सुनाई दी:

"तुम बेवक़ूफ़ हो। तुम्हारे भेजे में कोई चीज नहीं धंस सकती, किताबों में इतना सिर मारा, लेकिन पल्ले कुछ नहीं पड़ा।"

दो दिन तक उनके बारे में कुछ सुनने को नहीं मिला। कराबानोव की मुझे ज़्यादा चिन्ता नहीं थी—उसका बाप स्तोरोजेवोय में रहता था। सप्ताह-भर तक वह शहर में इधर से उधर चक्कर लगाएगा और इसके बाद अपने बाप के पास चला जाएगा। मित्यागिन के भविष्य के बारे में भी मुझे कोई शक नहीं था। एक साल तक वह सड़कों पर आवारगी करेगा, जेलों की थोड़ी-बहुत हवा खाएगा, कोई गहरी मुसीबत मोल लेगा, किसी दूसरे नगर में उसे भेज दिया जाएगा और पांच या छः साल के भीतर अपने ही दल द्वारा छुरे से मार दिया जाएगा, या गोली से उड़ा दिए जाने की सज़ा प्राप्त करेगा। इसके सिवा और कोई रास्ता उसके

लिए नहीं खुला था। शायद वह अपने साथ करावानोव को भी घसीट ले जाए। एक बार ऐसा हो भी चुका था,—आख़िर करावानोव भी रिवाल्वर से लैस होकर लूटने के लिए चला गया था।

दो दिन बाद कोलोनी में फुसफुसाहटों का दौर शुरू हो गया।

"कहते हैं कि सेम्योन और मित्यागिन राजमार्ग पर लोगों को लूट रहे हैं। पिछली रात उन्होंने रेशेतिलोव्का के कुछ कसाइयों को लूट लिया।"

"कौन कहता है?"

"ओसिपोवों के यहाँ ग्वालिन आई थी। उसका कहना है कि वे सेम्योन और मित्यागिन थे।"

लड़के ओने-कोने में फुसफुस करते, जब कोई निकट आता, चुप हो जाते थे। बड़े लड़के झल्लाए-से घूमते थे। न वे पढ़ते, न बातें करते, दो या तीन की टुकड़ियों में सांझ को जमा होते, और सुनाई न पड़नेवाले दो-चार शब्दों का आदान-प्रदान करते।

शिक्षक मेरी मौजूदगी में उन लड़कों का ज़िक्र न करने का प्रयत्न करते थे जो चले गए थे। लेकिन फिर भी एक बार लिदोच्का ने कहा:

"कुछ भी हो, लड़कों के लिए खेद किए बिना नहीं रहा जा सकता।"

"अच्छा हो, लिदोच्का, अगर हम एक समझौता कर लें," मैंने कहा। "तुम ख़ूब जी-भर कर उन पर तरस खाओ, लेकिन मुझे उससे मुक्त ही रखो।"

"ओह, बहुत अच्छा।" लीदिया पेत्रोवना ने खिसियाकर कहा।

क़रीब पांच दिन बाद मैं टमटमिया में शहर से लौट रहा था। 'लाल', जो ग्रीष्मकालीन प्रचुरता की बदौलत अब मोटा हो गया था, मज़े से दुलकियाता घर की ओर चल रहा था। मेरे बराबर में अन्तोन बैठा था। उसका सिर लटककर उसके सीने को छू रहा था, और अपने विचारों में वह डूबा था! अपनी वीरान सड़क के हम काफ़ी आदी हो गए थे, और हमें उम्मीद नहीं थी कि रास्ते में कोई मनोरंजक घटना पेश आएगी।

अचानक अन्तोन ने कहा:

"अरे देखो, क्या ये हमारे ही लड़के नहीं हैं? हो न हो, मुझे तो सेम्योन और मित्यागिन मालूम होते हैं!"

सामने की ओर, सूनी सड़क पर दो आकृतियां ऊपर उभर आईं।

केवल अन्तोन की पैनी दृष्टि ही इतने निश्चय के साथ यह भांप सकती थी कि ये मित्यागिन और उसका साथी हैं।

'लाल' तेजी से हमें उनकी ओर ले जा रहा था। अन्तोन ने घबराहट के चिन्ह प्रकट करने शुरू किए और मेरे रिवाल्वर की ओर देखा।

"अच्छा हो कि आप अपने रिवाल्वर को अपनी जेब में रख लें। इसमें सहूलियत रहेगी।"

"क्यों फ़िज़ूल की बात करते हो!"

"तो फिर अपना ही ढंग रखो!"

अन्तोन ने रासों को खींचा।

"यह बड़ा अच्छा हुआ जो आप मिल गए!" सेम्योन ने कहा। "तब हम कुछ ज़्यादा मित्रता के साथ विदा नहीं हुए थे।"

मित्यागिन सदा की भांति हार्दिकता के साथ मुसकराया।

"यहां तुम क्या कर रहे हो?"

"हमें उम्मीद थी कि शायद आप से भेंट हो जाए। आपने कहा था कि हम कोलोनी में आकर फिर मुंह न दिखाएं, सो हम वहां नहीं गए।"

"तुम ओदेस्सा क्यों नहीं गए?"

"अभी तो यहीं सब ठीक है। जाड़ों में ओदेस्सा जाऊंगा।"

"तो क्या तुम कोई काम-धाम नहीं करोगे?"

"देखो, कैसे क्या होता है," मित्यागिन ने कहा। "हम आपसे नाराज़ नहीं हैं, अन्तोन सेम्योनोविच, नहीं, ऐसा नहीं समझना। हरेक के लिए उसका अपना एक रास्ता नियत होता है।"

सेम्योन के चेहरे पर उन्मुक्त ख़ुशी थिरक रही थी।

"क्या तुम मित्यागिन के साथ ही रहोगे?" मैंने उससे पूछा।

"पता नहीं। मैं कोशिश कर रहा हूं कि वह मेरे साथ बुढ़ऊ के पास—मेरे पिता के पास—चलकर रहे, लेकिन वह बराबर मुसीबतें पैदा करता रहता है।"

"इसका बाप दहक़ान है," मित्यागिन ने कहा. "मैं उनसे काफ़ी भर चुका हूँ।"

वे मेरे साथ कोलोनीवाले मोड़ तक गए।

"हमारे लिए दया का भाव रखना," विदा का समय आने पर सेम्योन ने कहा। "हां तो आइए, चुम्बन के साथ हम विदा हों।"

मित्यागिन हंसा।

"तुम भी भावुक जीव हो, सेम्योन," उसने कहा। "तुम कभी कुछ नहीं बन सकोगे।"

"और तुम... तुम खुद क्या मुझसे कुछ ज़्यादा अच्छे हो ? – सेम्योन ने जवाब दिया।

उनकी सम्मिलित हंसी से सारा जंगल गूँज उठा। उन्होंने अपनी टोपियां हवा में फहराईं, और हमने एक-दूसरे से विदा ली।

२२. चुने हुए बीज

शरद् का अन्त होते न होते कोलोनी में एक अत्यन्त उदास काल की – हमारे समूचे इतिहास में सबसे ज़्यादा उदास काल की – शुरुआत हो गई थी। कराबानोव और मित्यागिन का निष्कासन बड़ा ही कष्टदायक कार्य सिद्ध हुआ। इस तथ्य ने कि सबसे पहले उन लड़कों को ही निष्कासन का शिकार होना पड़ा – जो उस समय तक कोलोनी में सर्वाधिक प्रभाव का उपभोग करते थे – दूसरों को आस्थाहीन बना दिया था।

करावानोव और मित्यागिन दोनों बहुत ही बढ़िया काम करनेवाले थे। करावानोव अपने आपको समूचे हृदय तथा उछाह के साथ काम में लगाना जानता था। उसे अपने काम में आनन्द आता था और दूसरों में भी इस भावना का संचार कर देता था। उसके हाथों से जैसे स्फूर्ति और प्रेरणा के कण प्रवाहित होते मालूम होते थे। काहिलों और आलसियों पर वह बहुधा भनभन नहीं करता था, लेकिन जब करता था तो अत्यन्त पक्का कामचोर भी शर्म से गड़कर रह जाता था। काम में मित्यागिन करावानोव का बहुत ही बढ़िया परिपूरक था। उसकी चाल-ढाल और हरकतों में – जैसा कि एक सच्चे चोर के लिए उपयुक्त होना चाहिए, एक अजीब कोमलता और नम्रता का पुट था। लेकिन भाग्य और तबीयत का वह धनी था, – जिस चीज़ को भी वह हाथ लगाता था वह अच्छी ही निकलती थी। और दोनों ही कोलोनी के जीवन के प्रति, बहुत ही भाव-प्रवण और संवेदनशील थे। हल्के-से-हल्के उकसावे तथा कोलोनी के दिन की तमाम घटनाओं के प्रति उनके हृदयों में उत्साहपूर्ण दिलचस्पी उमगती रहती थी।

उनके विदा होने के साथ कोलोनी में हर चीज़ अचानक नीरस और भयावह-सी मालूम होने लगी। वेर्शनेव ने अपने आपको किताबों में और भी ज़्यादा गहरे दफ़ना दिया, बेलूख़िन की फ़बतियां ज़रूरत से ज़्यादा गम्भीर और तानों से भरी हो चलीं, वोलोख़ोव, प्रोख़ोद्को और ओसा-द्ची जैसे लड़के बहुत ही गम्भीर और विनम्र नज़र आने लगे, उनके लड़के ऊबे-ऊबे और अपने आपमें सिमटे-से हो गए। समूची कोलोनी ने अचानक वयस्क समाज के बाह्य चिन्हों को धारण कर लिया। सांझ की वे आमोद-प्रमोद से भरी बैठकें दूर की चीज़ बन गईं—ऐसा मालूम होता था जैसे प्रत्येक अपने किसी निजी काम में फंसा हो। केवल ज़दोरोव ही एक ऐसा था जो अपनी प्रफुल्लता को क़ायम रखे था और उसकी उस उन्मुक्त मुस-कान ने उसका साथ नहीं छोड़ा था, लेकिन अन्य कोई ऐसा नहीं था जिसके साथ मिलकर वह अपनी इस प्रफुल्लता को व्यक्त करता। सो वह अकेले में मुसकराता था,—अपनी पुस्तक पर झुका हुआ—या फिर उस समय जबकि वह भाप के इंजन के अपने नमूने के साथ होता था जिसे वह बहुत पहले से—बसन्त के दिनों से—बनाने में जुटा था।

खेती के काम में हमारी कई विफलताओं ने इस आम उदासी को बढ़ाने में योग दिया। कालीना इवानोविच का खेती सम्बन्ध ज्ञान बहुत ही कम-ज़ोर था और फ़सलों की हेरा-फेरी तथा बोवाई की तकनीक के बारे में उसकी धारणाएं अत्यन्त भ्रांत थीं। इसके अलावा सरकंडों से अटे तथा निःसत्व खेत हमारे पल्ले पड़े थे। सो, बावजूद उस इतरमानवीय श्रम के जो लड़कों ने गर्मियों में किया, हमारी पैदावार के आंकड़े दयनीय स्थि-ति से आगे नही बढ़े। शीतकालीन खेतों में गेहूं से अधिक सरकंडों और घास-फूस की उपज हुई, वसन्तकालीन अनाज अकाल का मारा मालूम होता था, और चुकन्दर तथा आलुओं की हालत तो और भी ख़राब थी।

शिक्षकों के कमरों को भी उदासी ने अछूता नहीं छोड़ा था।

शायद इसका कारण निरी थकान हो—कोलोनी के खुलने से लेकर अब तक हम में से किसी को भी छुट्टी नसीब नहीं हुई थी। लेकिन शिक्षकों की ज़बान पर थकान की कभी कोई शिकायत नहीं आई। हमारा काम एकदम चट्टान से सिर टकराना है, ऐसे 'लड़कों' को सामाजिक शिक्षा देना असम्भव है,—इन सबके बारे में पुरानी चर्चा ने फिर सिर उभारा,

इस पुराने सिद्धान्त को पेश किया गया कि आत्मा और शक्ति को इस प्रकार बेकार बरबाद किया जा रहा है।

"यह सब छोड़ना पड़ेगा," इवान इवानोविच कहता। "करावानोव को ही लो—जिस पर हम सब इतना गर्व करते थे—उसे निष्कासित करना पड़ा। वोलोखोव, वेर्शनेव, ओसाद्‌ची, तारानेत्स तथा और भी जितने हैं, उनसे कोई ख़ास उम्मीद करना बेकार होगा। तो क्या अकेले बेलूख़िन को लेकर ही कोलोनी चलाई जाएगी?"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तक आशावादिता की हमारी भावना का साथ नहीं दे सकी जो पहले मेरी अग्रतम सहायक और मित्र थी। गहरे चिन्तन में वह अपनी भौंहें सिकोड़े रहती थी, और उसके इस चिन्तन के नतीजे अजीब तथा अप्रत्याशित होते थे।

"इस पर भी कभी सोचा है आपने?" उसने कहा।

"मान लीजिये कि हम भयानक ग़लती कर रहे हैं! मान लीजिये कि समुदाय जैसी कोई चीज़ नहीं है, क़तई कोई चीज नहीं है, और हम बराबर समुदाय की चर्चा किए जाते हैं, समुदाय के बारे में अपने निजी सपनों से अपने आपको एकदम हिप्नोटाइज़ कर लेते हैं।"

"ओह, जरा रुको तो!" उसके भाषण के प्रवाह को रोकते हुए मैंने कहा। "क्या मतलब है तुम्हारा इससे, यह कि समुदाय जैसी कोई चीज़ नहीं है? कोलोनी के साठ सदस्य, उनका काम, उनका जीवन, उनकी मित्रता—यह सब क्या कुछ नहीं है?"

"क्या आप जानते हैं कि यह सब क्या है? यह एक खेल है, मनोरंजक और शायद चतुराई से भरा एक नया खेल। हम इसके साथ बह चले। लेकिन यह सब अस्थायी था। और अब तो लगता है जैसे इस खेल से थक गए हों, सभी इससे ऊबे हैं, जल्दी ही वे इसे एकदम धता बताएंगे, और हर चीज़ एक घिसे-पिटे, प्रेरणाहीन अनाथालय का रूप धारण करके रह जाएगी।"

"लेकिन एक खेल से जब जी ऊब जाए तो दूसरा खेल शुरू किया जा सकता है," हम में उछाह का संचार करने का प्रयत्न करते हुए लीदिया पेत्रोवना ने कहा।

उदास हंसी के साथ हम हंसे। लेकिन घुटने टेकने का मेरा ज़रा भी इरादा नहीं था।

"यह तो, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, तुम फिर उसी बेजान बौद्धिकता में जा उलझी हो," मैंने उससे कहा। "वही रोना झींकना। मन के उतार-चढ़ावों—मूडों—के आधार पर नतीजे निकालना बेकार है। वे आज हैं, और कल नहीं। तुम में गहरी लगन थी कि मित्यागिन और कराबानोव, दोनों को हम जीत कर रहेंगे। निरी पूर्णवादिता, मन की तरंगों के पीछे लपकना, अति-उत्सुकता दिखाना—इनकी परिणति निश्चय ही खीझ और निराशा में होती है।"

इस तरह मैं उसी बेजान बौद्धिकता को शायद ख़ुद अपने भीतर दबाते हुए बात करता। कभी-कभी चोर की भांति सरसरा जानेवाले ये विचार मेरे हृदय में भी प्रवेश कर जाते। गोली मारो इन सबको। कोलोनी जो निरन्तर आत्मत्याग को मांग करती है, उसे पूरा करने की सामर्थ्य तो न ज़दोरोव में थी और न वेलूख़िन में। मुझे लगा जैसे हम सब निःसत्व हो चुके हैं, इसलिए सफल होना असम्भव है। लेकिन धीरज के साथ मौन प्रयास करने की पुरानी आदत ने मेरा साथ नहीं छोड़ा था। कोलोनी के सदस्यों तथा शिक्षकों के सामने में स्फूर्तिशील और विश्वासपूर्ण बने रहने की कोशिश करता। कमज़ोर हृदय शिक्षकों को झिड़कता, उन्हें यक़ीन दिलाने की कोशिश करता कि हमारी ये मुसीबतें स्थायी नहीं हैं और ये सब विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाएंगी। और यह कि इस कठिन दौर में शिक्षकों ने जिस असाधारण सहनशीलता तथा अनुशासन का परिचय दिया है, उसकी मैं क़द्र करता हूं।

सदा की भांति व समय की पाबंदी का ध्यान रखते थे—कभी एक क्षण भी इधर से उधर नहीं होने देते थे, वे सदा की भांति, कोलोनी में ज़रा-सी भी गड़बड़ के प्रति क्रियाशीलता और सजगता दिखाते थे। व हमारी शानदार परम्परा के अनुसार बढ़िया से बढ़िया कपड़ों से लैस, चुस्त-दुरुस्त और एकदम साफ़-सुथरे, ड्यूटी पर जाते थे।

कोलोनी में अब मुसकान या प्रफुल्लता नहीं थी। लेकिन वह आगे बढ़ रही थी एक अटूट और अच्छे ताललय के साथ, उस मशीन की भांति जिसके कल-पुर्ज़े पूर्णतया चालू अवस्था में होते हैं। मैंने देखा कि दो सदस्यों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करने का नतीजा भी अच्छा हुआ है—गांव पर धावे बिलकुल बंद थे, तहख़ानों और तरबूज़ के खेतों पर आक्रमण अतीत की चीज़ हो गए थे। मैं ऐसा दिखाता जैसे अपने छात्रों के बुझे हुए

मनों की मुझे कोई ख़बर नहीं है, और ऐसा व्यवहार करता जैसे अनुशासन तथा फ़रमांबरदारी की यह नयी भावना एक सर्वथा स्वाभाविक चीज़ है, जैसे हर चीज़ पहले की ही भांति चल रही है और पहले की ही भांति आगे बढ़ रही है।

कई एक नये तथा महत्त्वपूर्ण कामों में हमने हाथ लगाया। नयी कोलोनी में हमने एक पौध-घर का निर्माण शुरू किया, आने-जाने के रास्ते बनाए, त्रेपके-खण्डहरों को साफ़ कर अहाते को समतल किया, बाड़ों और मेहराबों को खड़ा किया। कोलोमाक नदी पर—जहां उसका पाट सबसे कम चौड़ा था—पुल बनाने का काम प्रगति कर रहा था। कोलोनी में इस्तेमाल करने के लिए लोहे के पलंग लोहारघर में बनाए जा रहे थे और पूरी तेज़ गति के साथ नयी कोलोनी में घरों की अन्तिम मरम्मतों को निबटाया जा रहा था। मैं निर्ममता के साथ अधिकाधिक नया काम कोलोनी के कंधों पर डाल रहा था जिसे पूरा करने के लिए हमारे समूचे सामाजिक ढांचे को पहले की भांति चौकस तथा अचूक रहने की आवश्यकता थी।

मैं ख़ुद नहीं जानता कि वह क्या चीज़ थी जिसने सैनिक प्रशिक्षण को इतने उत्साह के साथ उठाने के लिए मुझे प्रेरित किया। निश्चय ही इसके पीछे कोई अवचेतन शिक्षात्मक प्रवृत्ति थी जो मुझसे यह करा रही थी।

कुछ समय पहले मैंने कोलोनी में व्यायाम और सैनिक क़वायद चालू की थी। व्यायाम का मैं कभी-भी माहिर नहीं रहा, और हमारे साधन ऐसे नहीं थे कि बाहर से किसी व्यायाम निर्देशक को बुला पाते। ले-देकर केवल मैं ही सैनिक क़वायद, सैनिक व्यायाम और सेना को युद्ध के लिए सन्नद्ध रखने से सम्बन्धित कुछ चीज़ें जानता था। बिना किसी पूर्व-विचार के, और बिना यह सोचे कि शिक्षा की दृष्टि से यह अनुचित होगा या उचित, मैंने लड़कों को इन सभी शाखाओं में ट्रेन्ड करना शुरू कर दिया।

ख़ुद लड़कों ने भी बड़े चाव से इन विषयों को ग्रहण किया। काम के बाद समूची कोलोनी अभ्यास के लिए व्यायाम के हमारे मैदान में—हर रोज़ एक या दो घंटे के लिए जमा हो जाती। हमारे अनुभव के साथ-साथ हमारी गतिविधि का क्षेत्र भी बढ़ता गया। जाड़ों के आने तक हमारी भिड़नेवाली टुकड़ियां हमारे खेत-खलिहानों के समूचे इलाक़े में अत्यन्त दिलचस्प तथा जटिल गति का परिचय देने लगीं। नफ़ासत और बाक़ायदा शुद्धता के साथ हम नियत स्थलों—झोंपड़ियों और भण्डारों पर—धावे करते,

संगीनों के आक्रमणों से लैस होते। उपर्युक्त झोंपड़ियों तथा भण्डार-घरों के प्रभावशील मालिकों तथा मालिकिनों को आतंक धर दबोचता। युद्ध के रंग में रंगी हमारे लड़कों की ललकारों की आवाज सुनते ही बर्फ़-सी सफ़ेद दीवारों के पीछे से स्थानीय निवासी भागकर बाहर अहातों में निकल आते, उतावली के साथ भण्डारघरों तथा बाड़ों के दरवाज़ों में ताले लगाते, और इसके बाद अपने दरवाज़ों के साथ चिपके हुए, भयभीत नज़रों से हमारे लड़कों की क़ायदा-बंद पांतों को ताकते रहते।

लड़कों को यह सब अत्यन्त रुचिकर मालूम होता। शीघ्र ही हमारे पास असली राइफ़लें भी हो गईं। कारण यह कि सामान्य सैनिक प्रशिक्षण विभाग ने, अपने व्यवहार-कौशल से हमारे अपराधी अतीत को नज़र-अन्दाज़ करते हुए, हमें सहर्ष स्वीकार कर लिया था।

प्रशिक्षण के दौरान मैं बाक़ायदा कमाण्डर की भांति, बिना किसी रू-रियायत के कठोर रूप में पेश आता। लड़के पूर्णतया इसका समर्थन करते। इस प्रकार एक नये खेल की—एक ऐसे खेल की जो आगे चलकर हमारे जीवन की मुख्य विषय-वस्तु बन गया नींव पड़ी।

पहली चीज़ जो मैंने लक्षित की, वह सम्यक् सैनिक अन्दाज़ का अच्छा असर थी। कोलोनीवासियों की समूची रूपरेखा में परिवर्तन हो चला,—देखने में वे अब अधिक कोमल और कमनीय मालूम होते थे, मेज़ या दीवार के सहारे ढीले-ढाले रूप में उनका खड़ा होना बन्द हो गया था, अब वे सहज भाव से तथा निर्बन्ध सीधे खड़े हो सकते थे और किसी प्रकार की टेक की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते थे। नये लड़कों को पुरानों से अब आसानी के साथ पहचाना जा सकता था। उनकी चाल-ढाल में अब अधिक विश्वास तथा लचक पैदा हो गई थी, अपने सिर को ऊंचा रखना उन्होंने शुरू कर दिया था, और जेबों में अपने हाथ ठूंसे रहने की उनकी आदत जाती रही थी।

सैनिक व्यवस्था के लिए अपने जोश में लड़कों ने कितने ही निजी आविष्कारों का योगदान दिया। समुद्री और सैनिक जीवन के प्रति उनके बाल-सुलभ लगाव ने इसमें उनकी सहायता की। ठीक यही वे दिन थे जबकि कोलोनी में इस नियम का समावेश किया गया था: हर आदेश के जवाब में उसकी पुष्टि तथा स्वीकृति के चिन्ह-स्वरूप, "बहुत अच्छा" कहा जाए, और इस शानदार जवाब का उच्चारण करते समय पायोनियर

सलामी से उसकी शोभा बढ़ाई जाए। इन्हीं दिनों कोलोनी में बिगुलों का समावेश किया गया।

सिगनल देने का काम इससे पहले तक हम एक घंटी से चलाते थे जो भूतपूर्व कोलोनी के अवशेषों में हमें मिल गई थी। अब हमने दो बिगुल ख़रीद लिए, और कुछ लड़के स्वर-लिपि से बिगुल बजाना सीखने के लिए बैंड-मास्टर के पास नित्य शहर जाने लगे। कोलोनी के जीवन में आनेवाले सभी अवसरों के लिए सिगनल हमने काग़ज़ पर उतार लिए, और जाड़ों के आने तक हम घंटी को विदा करने की स्थिति में हो गए। सुबह होती, बिगुल-वाहक अब मेरी पोर्च में आ खड़ा होता और सिगनल की सुरीली मधुर आवाज़ों से कोलोनी को गुंजा देता।

सांझ की निस्तब्धता में कोलोनी, झील और खलिहान की छतों के ऊपर तैरती बिगुल की आवाज़ ख़ास तौर से रोमांचक मालूम होती। शयनागार की खिड़की पर खड़ा कोई लड़का अपनी गूंजती हुई युवा आवाज़ में सिगनल को उठाता और कोई अन्य एकदम अचानक प्यानो के पर्दों पर उसकी आवृत्ति करता।

सार्वजनिक शिक्षा-विभाग को जब हमारी इस सैनिक 'धुन' का पता चला तो, एक लम्बे अर्से तक, हमारी कोलोनी को "बैरकों" का उपनाम दे दिया गया। लेकिन मैं पहले ही उससे इतना दु:खी था क इस तरह की मामूली चुभन की ओर भला मैं क्या ध्यान देता। इस सब के लिए मेरे पास समय ही नहीं था।

अगस्त में ब्रीडिंग-स्टेशन (पालन-घर) से दो नन्हे सूअर मैंने कोलोनी में लाकर रखे। वे शुद्ध विलायती नस्ल के थे, और इसलिए जबरन कोलोनी का जीव बनाए जाने के ख़िलाफ़ सारे रास्ते-भर विरोध प्रकट करते और गाड़ी के एक छेद में से रह-रहकर नीचे गिरते रहे। यहाँ तक कि उनके विक्षोभ ने अन्त में उन्माद का रूप धारण कर लिया। अन्तोन झल्लाया:

"जैसे हम पहले ही कुछ कम परेशान थे जो इन सूअरों को और ले आये!"

इन विलायती सूअरों को नयी कोलोनी में भेज दिया गया। वहां, छोटे लड़कों में से, काफ़ी से ज़्यादा संख्या में ख़ुशी से इनका पालन करनेवाले निकल आए। नयी कोलोनी में बीस से ज़्यादा लड़के उस समय रहते थे।

उनके साथ रोदिमचिक नाम का एक शिक्षक भी रहता था जो कुछ बेग्रसर-सा ग्रादमी था। बड़ा घर जिसे हमने सैक्शन 'ग्रा' की संज्ञा दी थी, बनकर तैयार हो चुका था ग्रौर उसे वर्कशापों तथा कक्षाग्रों के लिए नियत किया गया था। लेकिन फ़िलहाल उसमें लड़के रह रहे थे। कुछ ग्रन्य घर तथा पाइप भी तैयार हो चुके थे। शाही ढंग के एक भीमाकार दो-मंज़िला प्रासाद में ग्रभी भी बहुत काम करना बाक़ी था। यह शयनागारों के लिए था। सायबानों, ग्रस्तबलों ग्रौर बाड़ों में रोज़ नए तख़्ते जड़े जा रहे थे, दीवारों पर पलस्तर ग्रौर किवाड़ चढ़ाए जा रहे थे।

हमारी खेतीवारी भी सशक्त कुमक से पुष्ट हो गई थी। हमने एक कृषिविद को बुलाया ग्रौर शीघ्र ही—हमारी कोलोनी के निवासियों की ग्रभ्यस्त ग्रांखों के लिए एक पूर्णतया ग्रनबूझ जीव—एडुग्रर्ड निकोलायेविच शेरे कोलोनी के खेतों में विचरण करता दिखाई देने लगा।

कालीना इवानोविच से भिन्न शेरे कभी विक्षोभ या उछाह से ग्रभिभूत नहीं होता था, हमेशा सन्तुलन रखता था, ग्रौर थोड़ा तरंगी जीव था। कोलोनी के सभी सदस्यों को, यहां तक कि गलातेन्को को भी, ग्रौपचारिक 'ग्राप' (बजाय 'तुम' के) कहकर सम्बोधित करता था, कभी ज़ोर से नहीं बोलता था, ग्रौर इसी के साथ-साथ किसी से घनिष्टता भी नहीं करता था। लड़के स्तब्ध रह गए जब प्रीखोद्को ने ग्रक्खड़पन से इनकार करते हुए कहा: "ऊंह, करण्टों की झाड़ियां! मैं करण्टों की झाड़ियों में जान नहीं खपा सकता!" ग्रौर इसके जवाब में शेरे ने, बिना किसी बनावट या क्लिष्टता के केवल ग्राल्हादपूर्ण, सहृदय ग्राश्चर्य व्यक्त किया।

"ग्रोह, तो ग्राप काम नहीं करना चाहते? तब, ज़रा मुझे ग्रपना नाम बता दीजिए! कहीं ऐसा न हो कि भूल से कोई काम दे बैठूं!"

"जहां भी ग्राप चाहें, मैं चला जाऊंगा। केवल करण्टों की झाड़ियों में नहीं।"

"कोई बात नहीं। ग्रापके बिना भी मैं चला लूंगा, यह ग्राप जानते ही हैं। ग्राप ग्रपने लिए ग्रन्य कहीं काम खोज सकते हैं।"

"सो क्यों?"

"बस, अपना नाम बताने की कृपा कीजिये। फालतू बातों के लिए मेरे पास समय नहीं है।"

प्रीखोद्को का डाकुई सौन्दर्य क्षण-भर में मन्द पड़ गया। उपेक्षा से उसने अपने कंधों को बिचकाया और करण्टों की झाड़ियों की ओर चल दिया जो अभी एक क्षण पहले तक उसे अपने धंधे के इस हद तक एकदम विरुद्ध मालूम होती थीं।

तुलना करके देखा जाए तो शेरे यों युवा ही था, लेकिन फिर भी अपने अटूट विश्वास तथा काम करने की इतरमानवीय क्षमता से लड़कों को हक्का-बक्का किए था। कोलोनीवासियों को ऐसा मालूम होता जैसे वह सोने के लिए कभी नहीं जाता हो। सवेरे कोलोनी अभी उठने का ही उपक्रम करती होती कि वह अपनी लम्बी अटपटी टांगों से खेतों में लम्बे डग भरता नज़र आता। रात को सोने का बिगुल बज चुका होता, लेकिन वह सूअरघर में बढ़ई से किसी बारे में बातचीत करता नज़र आता। दिन में क़रीब-क़रीब एक साथ उसे अस्तबल में, पौधाघर के स्थल पर, शहर जानेवाली सड़क पर, खेतों में खाद डालने की निगरानी करते हुए देखा जा सकता था। कम-से-कम हरेक को लगता ऐसा ही था कि यह सब एक ही समय हो रहा है, शेरे की अद्भुत टांगें इतनी द्रुतगति से उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती थीं।

अपने आगमन के दूसरे ही दिन शेरे का अस्तबल में अन्तोत से झगड़ा हो गया। यह समझना या सराहना अन्तोन के बूते से बाहर की बात थी कि घोड़े जैसे सचेत तथा आह्लादपूर्ण जीव के प्रति कोई किस प्रकार उतना हिसाबी रवैया अख्तियार कर सकता है, जिसकी कि एडुअर्ड निकोलायेविच ज़ोरों के साथ सिफ़ारिश करता है।

"जाने इसके दिमाग़ में क्या फितूर समाया है? तौल? भला, घास को तौलते भी किसी ने सुना है? यह रहा तुम्हारा राशन, वह कहता है, तुम्हें इसी में काम चलाना चाहिए। राशन भी कितना मूर्खतापूर्ण—थोड़ी-थोड़ी हर चीज़ की खिचड़ी। अगर घोड़े मर गए तो जवाब मुझसे तलब किया जाएगा। वह कहता है कि हमें घंटों के हिसाब से काम करना चाहिए। एक नोटबुक जैसी कोई चीज़ रखने की बात जाने कहां अपने दिमाग़ से उसने निकाली है—उसमें लिखो कि कितने घंटे तुमने काम किया है।"

शेरे उस समय भी नहीं दवा जब अन्तोन ने, अपनी परिपाटी के अनुसार चिल्लाना शुरू किया कि वह उसे 'वाज' के हाथ नहीं लगाने देगा जिसे, अन्तोन के हिसाव से, परसों किसी ख़ास काम को पूरा करना है। एडुअर्ड निकोलायेविच ने ख़ुद अस्तबल में प्रवेश किया। इस तरह की बेजा हरकत से भयभीत ब्रातचेन्को की ओर उसने नजर तक उठाकर नहीं देखा। अन्तोन ने मुंह फुला लिया, चाबुक को अस्तबल के एक कोने में फेंक बाहर निकल गया। लेकिन, उस समय जब सांझ होने को आई, उसने अस्तबल में झांककर देखा, और ओरलोव तथा वुवलिक पर उसकी नजर पड़ी जो रोबीले अन्दाज में वहां दख़ल जमाए थे। अन्तोन ने गहरी लांछना का अनुभव किया और मुझे अपना त्यागपत्र देने के लिए वहां से चल पड़ा। लेकिन वह अहाते के बीच में ही था कि शेरे उसके पास लपककर पहुंचा, और उस प्रमुख साईस के अपमान से आहत चेहरे पर ऐसे झुक गया जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"अरे सुनिये तो, आपका ही नाम ब्रातचेन्को है, क्यों, है न? यह लीजिये, सारे सप्ताह के लिए यह आपका कार्यक्रम है। देखिये, हर चीज इस में ठीक-ठाक लिखी है–प्रत्येक घोड़े को किस दिन क्या काम करना है, कब उसे बाहर ले जाना है, आदि-आदि। सब यहां लिखा है–कौन घोड़ा सवारी के लिए जाएगा और कौन आराम करेगा। बस, अपने साथयों के साथ इसे पूरा देख जाइये, और कल मुझे बता देना कि आपकी राय में इसमें क्या रद्दोबदल करने की आवश्यकता है।"

अचकचाए-से ब्रातचेन्को ने काग़ज़ का वह टुकड़ा अपने हाथ में थामा और अस्तबल वापस लौट आया।

अगली सांझ अन्तोन का घुंघराले बालों से लैस सिर और शेरे का छंटे हुए बालोंवाला चोटीनुमा सिर–दोनों मेरी मेज पर झुके हुए देखे जा सकते थे। वे किसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम में व्यस्त नजर आते थे। मैं नक़्शा बनानेवाली मेज पर काम कर रहा था, लेकिन बीच-बीच में उनकी बातों को सुनने के लिए सजग हो जाता था।

"बिलकुल ठीक कहते हैं आप। अच्छी बात है, 'लाल' और 'डाकू' प्रत्येक बुद्धवार को हल के साथ काम करेंगे।"

"'लंडूरा' चुकन्दर नहीं खा सकता, उसके दांत..."

"ओह, सो कुछ नहीं। उसका महीन मलीदा बनाया जा सकता है। कोशिश तो कीजिये।"

"और मान लीजिये अगर कोई और शहर जाना चाहता है तो?"

"तो वे पैदल जा सकते हैं। या वे गांव में जाकर किराये पर घोड़े ले आएं। हमारा इससे भला क्या वास्ता?"

"ओहो!" अन्तोन ने कहा। "काम ऐसे ही किया जाता है।"

यह मानना पड़ेगा कि प्रतिदिन एक घोड़ा परिवहन सम्बन्धी हमारी आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने में कुछ ज़्यादा योग नहीं दे सकता था। लेकिन शेरे के सामने कालीना इवानोविच की एक नहीं चलती थी और अपने अविचलित ठंडे जवाब से वह कालीना इवानोविच के अनुप्राणित आर्थिक तर्क को वहीं ठंडा कर देता था।

"परिवहन की तुम्हारी ज़रूरत से मेरा क्या वास्ता। रसद का अपना सामान चाहे जिस चीज़ पर तुम ले जाओ या अपने लिए कोई घोड़ा ख़रीद लो। मेरे पास साठ देस्यतीना हैं। सो यह सवाल फिर न उठाना। इसके लिए धन्यवाद!"

कालीना इवानोविच ज़ोरों से मेज़ पर अपना घूंसा पटकते और चि-ल्लाते हुए बोला:

"अगर मुझे घोड़े की दरकार होगी तो उसे मैं ख़ुद जोत लूंगा।"

शेरे ने अपनी नोटबुक में कुछ लिखा और गुस्से से तमतमाए कालीना इवानोविच की ओर नज़र तक उठाकर नहीं देखा। एक घंटे बाद मेरे दफ़्तर से चलते समय उसने मुझे चेताया:

"अगर बिना मेरी स्वीकृति के घोड़ों के कार्यक्रम का उल्लंघन किया गया तो मैं तुरन्त कोलोनी छोड़कर चला जाऊंगा।"

मैंने तुरन्त कालीना इवानोविच को बुलाने के लिए आदमी भेज दिया और उससे कहा:

"उसे तंग न करो। तुम उससे पार नहीं पा सकते!"

"लेकिन एक घोड़े से मैं कैसे क्या करूंगा? हमें शहर जाना होता है, पानी लाना होता है, और नयी कोलोनी में लकड़ी तथा रसद का सामान पहुंचाना होता है।"

"इसके लिए भी कुछ किया जाएगा।"

और हमने किया!

•

नये चेहरों, नयी चिन्ताओं, नयी कोलोनी और नयी कोलोनी में बेअसर रोदिमचिक ने, सुस्थित कोलोनीवासियों की नयी आकृतियों, हमारी पहले की ग़रीबी और बढ़ती हुई सम्पन्नता ने—एक शक्तिशाली सागर की भांति हमारी निराशा तथा वेरंग उदासी के अन्तिम अवशेषों—आख़िरी चिन्हों—को आत्मसात कर लिया। उन दिनों पहले की अपेक्षा मैं केवल कुछ कम हंसने लगा, यहां तक कि मेरा आन्तरिक जीवित उल्लास इतना सशक्त नहीं होता था कि उस वाह्य कठोरता को तोड़ पाता जिसे, नक़ाब की भांति, १६२२ के अन्त की घटनाओं तथा आवेग-उद्वेगों ने जबरन मुझ पर लाद दिया था। यह नक़ाब मुझे कुछ खलता नहीं था, उसका आभास तक मुझे मुश्किल से होता था। लेकिन कोलोनीवासी उसे हमेशा देख लेते थे। शायद वे इसे निरा नक़ाब ही समझते हों, लेकिन यह सब होने पर भी मेरे प्रति उनके रवैये में अतिशय सम्मान का एक पुट, कड़ेपन की एक छाया, और एक हद तक शायद भीरुता का आभास-सा मिलता था, जिसकी व्याख्या कर सकना मेरे लिए कठिन है। इसी के साथ-साथ दूसरी ओर, जब कभी भी हम सब को एक साथ आनन्द मनाने, खेल खेलने, मूर्ख बनने-बनाने या केवल बांह में बांह डालकर बनामदों में घूमने का संयोग होता तो मुझे हमेशा ऐसा मालूम होता जैसे वे उल्लास से खिलते और ख़ास तौर से घनिष्ठ आत्मिक सम्पर्क में मेरे निकट आते जा रहे हैं।

ख़ुद कोलोनी में वह सारी रुक्षता और सारी अनावश्यक गम्भीरता लुप्त हो गई थी। कोई नहीं बता सकता था कि कब यह सब परिवर्तन हुआ और स्थिरता आई। पहले की भांति हंसी और मज़ाक़ों का फिर उदय हो गया, पहले की भांति फिर सब उल्लास तथा स्फूर्ति से छलछलाने लगे। केषल इतना ही अन्तर था कि यह अनुशासन का ज़रा-सा भी उल्लंघन या अविचारपूर्ण तथा गन्दी हरकतें अब रस भंग नहीं करती थीं।

और आख़िर कालीना इवानोविच ने परिवहन की कठिनाईयों से उबरने का रास्ता भी खोज निकाला। 'गावरियुश्का' बैल के लिए—जिस पर शेरे का कोई दावा नहीं था, क्योंकि एक बैल काम भी क्या देता?'—अकेली जोत का प्रबंध किया गया,—और 'गावरियुश्का' पानी तथा लकड़ियां लाने और कोलोनी के लिए सारा सामान लादकर ले जाने लगा। और अप्रैल में एक दिन—बहुत ही मधुर दिन था वह—समूची कोलोनी क़हक़हों से दोहरी हो गई, ऐसे क़हक़हों से जिन्हें एक मुद्दत से हमने नहीं

सुना था। शहर से कोई चीज़ लाने के लिए अन्तोन ने टमटमिया को हांकना शुरू किया, और 'गावरियुश्का' इस टमटमिया में जुता था।

"तुम्हें गिरफ़्तार कर लिया जाएगा," मैंने अन्तोन से कहा।

"ज़रा करके तो देखें," उसने जवाब दिया। "हम सब अब समान हैं। 'गावरियुश्का' भी उतना ही अच्छा है जितना कि घोड़ा, क्यों, है न? आख़िर, वह भी श्रम करता है।"

'गावरियुश्का' बिना किसी लज्जा का अनुभव किए टमटमिया को शहर की ओर खींच ले चला।

२३. सेम्योन की दुःखगाथा

शेरे ने जोश के साथ चीज़ों को संभालना शुरू किया। उसने छः-खेत-प्रणाली से वसन्त की बोवाई की और कोलोनी के जीवन की इसे एक आनन्दप्रद घटना बना दिया। हर जगह, जहां भी वह होता, कृषि-क्षेत्र के नये-तरीक़ों का संयोजन करता—खेतों में, अस्तबल में, सूअरघर में, शयनागारों में—या फिर निरी सड़क पर, घाट पर, मेरे दफ़्तर या भोजन के कमरे में। लड़के उसके आदेशों को हमेशा बिना बहस के स्वीकार कर लेते हों, यह बात नहीं थी। शेरे भी उनकी कामकाजी आपत्तियों को सुनने से कभी इनकार नहीं करता था। नीरस उदारशीलता के साथ और यथासम्भव संक्षिप्ततम शब्दों में अपने विचारों का भी प्रतिपादन करते हुए वह उनकी बात सुनता था लेकिन अन्त में अटल अन्दाज़ में हमेशा यह कह देता: "बस, मैं जो कहता हूँ, करो!"

सदा की भांति नाममात्र को भी कोई बावेला मचाए बिना वह सारे दिन काम में जुटा रहता था। सदा की भांति उसका साथ देना कठिन था। फिर भी लगातार दो या तीन घंटे तक धीरज के साथ वह मैनेजर के पास खड़ा रह सकता था, या बीज-ड्रिल के पीछे पांच-पांच घंटे तक चल सकता था। हर दस मिनट बाद वह दौड़कर सूअरघर का चक्कर लगा आता, और सूअर पालकों पर शिष्ट तथा अडिग सवालों की बौछार लगाए रहता:

"सूअरों को चोकर कब डाली? समय दर्ज करना तो नहीं भूले?

ठीक वैसे ही दर्ज किया है न जैसे कि मैंने तुम्हें बताया था? क्या उन्हें नहलाने के लिए हर चीज़ तैयार है?"

कोलोनी के सदस्यों में शेरे के प्रति दबे-ढंके उत्साह का भी उदय होना शुरू हो गया, हालांकि—इसमें शक नहीं—उन्हें इस बात का पक्का यक़ीन था कि, 'हमारा शेरे,' केवल इसी लिए इतना अद्भुत है कि यह 'हमारा' है, यह कि अगर वह अन्य कहीं होता तो वह इतना अधिक अद्भुत न रहता। यह उत्साह उसके अधिकार को मानने और उसके शब्दों, तौर-तरीक़ों, उसके भावुकता से अछूता होने तथा उसके ज्ञान को लेकर चलनेवाली अन्तहीन बहसों के रूप में अपने आपको व्यक्त करता था।

और इस उद्भावना से मुझे कोई अचरज नहीं हुआ। मैं पहले ही जानता था कि लड़के इस सिद्धान्त की पुष्टि नहीं होने देंगे कि बच्चे केवल उन्हीं लोगों से प्रेम करने की सामर्थ्य रखते हैं जो उनके साथ स्नेह का व्यवहार करते तथा उन्हें ख़ूब बढ़ाते-चढ़ाते हैं। मुझे बहुत पहले से इस बात का यक़ीन था कि किशोर—कम-से-कम हमारी कोलोनी के लड़के तो निश्चय ही—सर्वथा भिन्न ठप्पे के लोगों के प्रति सर्वाधिक सम्मान तथा सर्वाधिक प्रेम का अनुभव करते हैं।

वे चीज़ें जिन्हें हम ऊंचे गुणवाली कहते हैं, विश्वास से पूर्ण तथा सही ज्ञान, योग्यता, दक्षता, हस्त-कौशल, लाघव, शान बघारनेवाली शब्दावली से परहेज़, काम करने की अडिग हिम्मत—अधिकतम मात्रा में किशोरों को आकर्षित करती हैं।

चाहे कितना ही तुम उन पर झुंझलाओ, सख़्ती की हद तक उन्हें कसो, उनकी उपेक्षा करो, उस हालत में भी जबकि वे तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडरा रहे हों, उनके स्नेह के प्रति उदासीनता दिखाओ लेकिन अगर तुम अपने काम, अपने ज्ञान और अपनी सफलताओं से चमकते हो तो तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं,—वे सब तुम्हारे पक्ष में होंगे और कभी तुम्हें नीचे नहीं गिरने देंगे। इस बात से फिर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कैसे तुम अपनी योग्यता को प्रदर्शित करते हो यह कि तुम क्या हो—बढ़ई, कृषिविद, लोहार, शिक्षक या इंजन-ड्राइवर।

दूसरी और, चाहे कितने ही मेहरबान तुम क्यों न हो, चाहे कितनी मनोरंजक बातचीत तुम क्यों न करो, चाहे कितनी ही भलमनसाहत और हार्दिकता से तुम क्यों न उनके पास जाओ, दैनिक जीवन और अवकाश

के समय चाहे कितना ही मोहक तुम्हारा व्यक्तित्व क्यों न हो, अगर तुम अपने काम में चूकते या विफलता प्राप्त करते हो, अगर हर क़दम यह प्रकट करता है कि तुम अपना धंधा नहीं जानते, अगर तुम्हारा हर काम अन्त में क्षति तथा गड़बड़ की रचना करता है, तो सिवा अपमान के तुम्हारे पल्ले और कुछ नहीं पड़ेगा। कभी अनुग्रह तथा व्यंग्य का पुट लिए हुए, कभी प्रचण्ड तथा कुचल डालनेवाली दुश्मनी के साथ, कभी कानफोड़ गालियों की बाढ़ के साथ!

संयोगवश लड़कियों के शयनागार में भट्ठी बनाने के लिए एक भट्ठीसाज़ को बुलाया गया। गोल कैलोरीय भट्ठी बनाने के लिए आर्डर दिया गया। भट्ठीसाज़ कोलोनी में ऐसे ही संयोगवश आ टपका और सारे दिन वहीं खटर-पटर करता रहा। किसी के कमरे में उसने भट्ठी ठीक की। अस्तबल की दीवार की मरम्मत भी की। शक्ल-सूरत से वह एक विचित्र जीव था — गोल-मटोल, गंजा सिर, चाशनी में पगे तौर-तरीक़े। मज़ाकिया कहावतों तथा वाक्यों को एक ख़ास अन्दाज़ में बोलता था। उसके अनुसार, दुनिया में उस जैसा भट्ठीसाज़ और कोई नहीं था।

जिधर भी वह जाता, लड़के टोली में उसका अनुसरण करते, अविश्वास के साथ उसकी कहानियों को सुनते और उसकी ख़बरों को एक ऐसी भावना से ग्रहण करते जो किसी भी अर्थ में उस भावना से मेल नहीं खाती थी जिसे वह उनमें अनुप्राणित करना चाहता था।

"हाँ तो बच्चो, वहां भट्ठीसाज़—कहने की ज़रूरत नहीं—उम्र में मुझसे कहीं ज़्यादा बड़े थे। लेकिन काउण्ट किसी और के लिए राज़ी नहीं हुआ। 'मित्रो, आरतेमी को बुलाओ,' वह कहता। 'अगर वह भट्ठी बनाता है, तो बस वह ही भट्ठी होगी!" बेशक, मैं युवा भट्ठीसाज़ था, और 'काउण्ट के घर में भट्ठी' तुम ख़ुद समझ सकते हो... कभी कभी काउण्ट भट्ठी को परखते हुए मुझे देखता और कहता: 'कोई कसर नहीं छोड़ना, आरतेमी, कोई कसर नहीं छोड़ना।'"

"हां तो कैसी बनी वह?"

"बिलकुल ठीक, कहने की ज़रूरत नहीं। काउण्ट हर घड़ी देखता..." प्रमान के साथ उसने अपनी जंजीर आगे की ओर निकाली और काउण्ट की नक़ल करके बताया कि आरतेमी की बनाई हुई भट्ठी की ओर वह कैसे देखता था। लड़के अपने आपको नहीं रोक सके और क़हक़हों की

वाढ़ में वह चले—काउण्ट तो क्या, आरतेमी उसकी परछाईं भी नहीं मालूम होता था!

आरतेमी ने भट्ठी बनाने का श्रीगणेश किया—भारी भरकम तथा ऊंचे पेशेवरी शब्दों का अम्बार लगाते हुए तथा उन तमाम कैलोरीय भट्ठियों की याद करते हुए जिन्हें उसने कभी देखा था—बढ़ियावाली जो ख़ुद उसने बनाई थी, और रद्दी जो दूसरों की बनाई हुई थी। इसी के साथ-साथ कहने-भर के लिए भी झिझक का अनुभव न करते हुए, अपनी कला के सारे भेदों को वह उगल गया और उन तमाम कठिनाइयों का उसने वर्णन किया जो कैलोरीय भट्ठी बनाने के मार्ग में आती हैं:

"एक बहुत भारी काम," उसने कहा, "क़ायदे से व्यासार्द्ध खींचना है। कुछ लोग तो बस व्यासार्द्ध खींचने में ही टें बोल जाते हैं।"

लड़कों ने लड़कियों के शयनागार की तीर्थयात्रा की, और सांस रोके आरतेमी को अपना व्यासार्द्ध खींचते देखते रहे।

नींव बिछाते समय आरतेमी निरन्तर बातें बनाता रहा। लेकिन जब ख़ुद भट्ठी को बनाने का नम्बर आया, तब उसकी गति में अविश्वास का पुट आ गया और उसकी ज़बान ने चटखारे लेना बन्द कर दिया।

मैं आरतेमी के काम का निरीक्षण करने पहुंचा। लड़कों ने उत्सुकता से मेरी ओर देखते हुए रास्ता छोड़ दिया। मैंने अपना सिर हिलाया।

"तुमने इसे इतना पेटू क्यों बना दिया है?"

"पेटू?" आरतेमी ने कहा। "यह पेटू नहीं है। अभी बनी नहीं है, इसलिए ऐसी मालूम होती है। बाद में सब ठीक हो जाएगा।"

ज़दोरोव ने अपनी आंखों को सिकोड़ा और भट्ठी की ओर देखा।

"क्या काउण्ट के यहां भी यह इसी तरह पेटू दिखती थी?" उसने पूछा।

लेकिन आरतेमी इस व्यंग्य को पकड़ नहीं सका।

"बेशक! बनकर तैयार होने से पहले तक भट्ठी ऐसी ही दिखती है।

तीसरे दिन आरतेमी ने मुझे भट्ठी को देखने के लिए बुलाया। आरतेमी हवा में अपना सिर ऊंचा उठाए भट्ठी के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। वह कमरे के बीचों-बीच खड़ी थी। उसका एक बाज़ू बुरी तरह फूला हुआ था, तभी अचानक गूंज और गरज के साथ वह ढह गयी। ईंटें कुदकती हुई कमरे में फैल गईं और धूल के अम्बार ने हमें एक-दूसरे की आंखों से

ओझल कर दिया। लेकिन यह सारी गड़गड़ाहट भी क़हक़हों की उस बाढ़, उन आहों और चिचियाहट को डुबोने में समर्थ नहीं हो सकी जो उस समय फूट पड़ी थीं। वहाँ उपस्थित लोगों में से कई व्यक्तियों को ईंटों से चोट लग गई, लेकिन उस स्थिति में चोट-वोट का भला किसे ध्यान हो सकता था? शयनागार के क़हक़हों में वे बह रहे थे और भागकर बाहर निकलते हुए गलियारों में, अहाते में, हंसी के दौर के मारे वे लगभग दोहरे हुए जा रहे थे। मलबे के भीतर से मैंने अपने आपको निकाला। अगले कमरे में वुल्न मुझे दिखाई पड़ा। वह आरतेमी का कालर दबोचे हुए था और उसकी कपालक्रिया करने के लिए अपने घूंसे का निशाना साध रहा था। धूल और ईंटों के कणों से आरतेमी का सिर भरा था।

आरतेमी को खदेड़कर बाहर कर दिया गया। लेकिन उसका नाम एक लम्बे अर्से तक कुछ न जाननेवाले बातख़ोर तथा गोल-मोल करनेवाले आदमी के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा।

"किस क़िस्म का आदमी है?" कोई पूछता।

"अरे, वह दूसरा आरतेमी है,—क्या तुम इतना भी नहीं देख सकते?"

लड़कों की नजर में शेरे आरतेमी से जितना अधिक कम मिलता था, उतना अन्य कोई नहीं, और इसलिए वह कोलोनी में सार्वजनिक सम्मान का उपभोग करता था। परिणामस्वरूप खेतों में काम तेजी से और सफलतापूर्वक चल रहा था। शेरे में एक और गुण था—वह लावारिस माल का पता लगाने, बिलों को निबटाने, और कर्ज़ लेने की कला जानता था। फलस्वरूप कोलोनी में जड़ें काटने की मशीनें, ड्रिल, बकर्स, यहाँ तक कि सूअर और गाएं भी दिखाई देने लगीं। जरा कल्पना तो कीजिये,—तीन-तीन गाएं! ऐसा मालूम होता था जैसे शीघ्र ही कोलोनी में दूध की नदियां बहने लगेंगी।

खेतीबारी के प्रति वस्तुत: एक अच्छे-ख़ासे उत्साह ने कोलोनी में हिलोरें लेना शुरू कर दिया था। केवल वही लड़के जिन्होंने वर्कशापों में कुछ दक्षता प्राप्त कर ली थी, खेतों में जाने के लिए नहीं ललकते थे। शेरे ने लोहारघर के पीछे पौधों के लिए क्यारियां खोदनी शुरू कीं; बढ़ईघर ने उनकी चौखटें बनाने में हाथ लगाया। नयी कोलोनी में भीमाकार पैमाने पर पौधों की क्यारियां तैयार की जा रही थीं।

फ़रवरी के प्रारम्भ में, ठीक उस समय जबकि खेतीबारी का जोश अपने उच्चतम शिखर पर पहुंचा हुआ था, करावानोव कोलोनी में आ धमका। लड़कों ने उत्साह से आलिंगनों तथा चुम्बनों से उसका स्वागत किया। जैसे-तैसे उनसे पीछा छुड़ाकर वह मेरे कमरे में आ पहुँचा।

"मैं देखने आया हूँ कि आप लोगों का कैसे क्या चल रहा है।"

मुसकराते, ख़ुशी से छलछलाते लड़कों के, शिक्षकों और धोबीघर में काम करनेवालों के चेहरे दफ़्तर के भीतर झाँक रहे थे।

"अरे, यह तो सेम्योन है! ज़रा देखो तो! भई ख़ूब आया यह।"

सेम्योन शाम को उदास और मुंह बंद किए मेरे पास आया।

"कहो, सेम्योन, तुम्हारे साथ कैसे चल रहा है?"

"सब ठीक है। मैं अपने पिता के साथ रह रहा हूं।"

"और मित्यागिन कहां है ?"

"जहन्नुम में जाये वह! मैंने उसका साथ छोड़ दिया है। वह मास्को चला गया, शायद।"

"और तुम्हारे पिता के यहां कैसे चल रहा है?"

"ओह, वे दहक़ान ठहरे। जैसे पहले, वैसे अब। मेरे बुज़ुर्ग अभी भी ज़ोर बांधे हैं। मेरा भाई मारा गया है।"

"सो कैसे?"

"वह छापामार सैनिक था–पेतल्यूरा* के आदमियों ने उसे शहर में बीच सड़क पर मार डाला।"

"और तुम्हारा अब क्या इरादा है, क्या अपने पिता के साथ ही रहोगे?"

"नहीं, मैं अपने पिता के साथ नहीं रहना चाहता। मैं नहीं जानता ..."

बेचैनी से वह अपनी जगह पर कसमसाया और अपनी कुर्सी को उसने मेरे और निकट खिसका लिया।

"क्या आप जानते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच?" एकाएक उसने कहा। "मान लीजिये, अगर मैं कोलोनी में ही रह जाऊँ तो? क्या ख़याल है आपका ?"

---

* पेतल्यूरा–उक्राइन में क्रांतिविरोधी मोर्चे का नेता। सं०

सेम्योन ने तीखी नज़रों से मेरी ओर देखा और फिर अपना सिर ठीक घुटनों तक नीचे झुका लिया।

"क्यों नहीं?" सरल और प्रसन्न भाव से मैंने कहा। "बेशक, यहीं रहो। हम सभी ख़ुश होंगे।"

सेम्योन अपनी कुर्सी से उछल खड़ा हुआ। भीतर दबे हुए भावावेग से उसका सारा बदन थरथरा रहा था।

"बहुत हुआ!" उसने चीख़ते हुए कहा। "बस, बहुत हुआ! शुरू के दिनों में तो इतना बुरा नहीं था, लेकिन बाद में, बस, मैं तंग आ गया। मैं घूमता-फिरता, काम करता, भोजन के लिए बैठता, और यह सब इतना भार मालूम होता कि मैं रोने को हो आता। मैं आपको बताता हूं कि हुआ क्या, कोलोनी ने मेरे हृदय में घर कर लिया था, और यह ख़ुद मैं भी नहीं जानता था। मैंने सोचा कि यह सब गुज़र जाएगा। इसके बाद मैंने सोचा—चलकर ज़रा एक बार देख लिया जाए। और जब मैं यहाँ आया, मैंने देखा कि कैसे आप लोग रह रहे हैं, ओह, बस, एकदम अद्भुत है यहां। और आपका यह शेरे तो..."

"इतना विचलित क्यों होते हो?" मैंने कहा। "तुम्हें सीधे यहां चले आना चाहिए था। इस तरह क्यों अपने को यंत्रणा देते हो?"

"मैंने भी ठीक ऐसा ही सोचा था, लेकिन फिर मुझे वे सारी हरकतें याद हो आईं, किस तरह हमने आपके साथ व्यवहार किया, और मैं..." उसने हवा में अपने हाथ फेंके और निर्वाक् हो गया।

"ठीक है," मैंने कहा। "इतना ही काफ़ी है।"

सेम्योन ने सहमकर अपना सिर उठाया।

"हो सकता है कि आप सोचें, आप ख़याल करें, कि शायद... मैं बन रहा हूं, जैसा आपने कहा। नहीं, नहीं! ओह, काश कि आप जानते कि कैसा सबक़ मुझे मिला है! साफ़-साफ़ मुझे बताइए—क्या आप मेरा विश्वास करते हैं?"

"मैं तुम्हारा विश्वास करता हूं," मैंने गम्भीरता से कहा।

"नहीं, मुझे सच-सच बताइए—क्या आप मेरा विश्वास करते हैं?"

"ओह, शैतान ले जाए तुम्हें!" मैंने हंसते हुए कहा। "क्या तुम फिर अपने पुराने ढर्रे को अपनाने का इरादा रखते हो?"

"तो देखा आपने, आप मेरा एकदम विश्वास नहीं करते!"

"अपने आपको इस तरह विचलित न करो, सेम्योन! मैं हरेक का विश्वास करता हूं। केवल इतना ही है कि किसी का ज्यादा, किसी का कम। कुछ लोगों का मैं एक या दो इंच विश्वास करता हूं और कुछ का एक या दो फुट!"

"और मेरा?"

"तुम्हारा, मैं मील-भर विश्वास करता हूँ।"

"और मैं आपका रत्ती-भर भी विश्वास नहीं करता!" सेम्योन ने पलटकर कहा।

"भई ख़ूब!"

"ख़ैर, इसकी चिन्ता न करें जो हो, आप देखेंगे कि..."

सेम्योन शयनागार में चला गया।

पहले दिन से ही शेरे का दाहिना हाथ बन गया। खेतीबारी के प्रति उसमें उल्लेखनीय झुकाव था, काफ़ी जानकारी उसने हासिल की थी और काफ़ी सहज ज्ञान उसके रक्त में शामिल था। अपने दादा-परदादाओं से—स्तेपीय जीवन का अनुभव विरासत में उसे मिला था। साथ ही कृषि-सम्बन्धी नये विचारों और तकनीक के सौन्दर्य तथा कमनीयता को, बड़ी तत्परता के साथ, वह आत्मसात करता जा रहा था।

सेम्योन की आंखें, ईर्ष्या के साथ, शेरे की हर हरकत का अनुसरण करती थी। वह उसे यह जताने का प्रयास करता कि सहनशीलता और निरन्तर काम करने की वह भी क्षमता रखता है। लेकिन एडुअर्ड निकोलायेविच के शान्त स्वभाव से होड़ करना उसके बस की बात नहीं थी। विह्वलता और उत्साह की स्थिति एक क्षण के लिए भी उसका पीछा नहीं छोड़ती थी। वह निरन्तर उफनता रहता था—कभी क्षोभ से, कभी उत्साह से और कभी निरी पाशविक भावनाओं से।

दो सप्ताह बाद मैंने सेम्योन को बुलाया और दो टूक शब्दों में उससे कहा:

"यह अधिकार-पत्र है। जाओ और अर्थ-विभाग से पांच सौ रूबल ले आओ।"

सेम्योन का मुंह और आंख खुली की खुली रह गइ, उसका चेहरा पीला ज़र्द पड़ गया, और अन्त में अटपटाकर बोला:

"पांच सौ रूबल! और इसके बाद?"

"कुछ नहीं!" अपनी मेज़ की दराज़ में देखते हुए मैंने कहा। "बस, मेरे पास ले आना।"

"तो क्या घोड़े पर जाना होगा?"

"बेशक! और यह रिवाल्वर है, शायद ज़रूरत पड़ जाए।"

मैंने सेम्योन को रिवाल्वर दे दिया। यह वही रिवाल्वर था जो शरद में मित्यागिन की पेटी से मैंने बरामद किया था। इसमें अभी तक वही तीन कारतूस पड़े थे। करावानोव ने यंत्रवत् रिवाल्वर अपने हाथ में लिया, वहशियाना नज़र से उसे देखा, द्रुत गति से उसे अपनी जेब में खोंसा और बिना कुछ कहे कमरे से विदा हो गया। दस मिनट बाद मुझे पत्थरों पर घोड़े की पदचाप सुनाई दी और एक घुड़सवार मेरी खिड़की के पास से तेज़ी से गुज़र गया। शाम होते-होते सेम्योन ने मेरे दफ़्तर में प्रवेश किया। पेटी कसे हुए, लोहारों जैसी छोटी चमड़े की जाकेट पहने, दुबला-पतला, क्षीण, लेकिन गम्भीर। नोटों का एक बण्डल और रिवाल्वर उसने चुप-चाप मेरी मेज़ पर रख दिया।

मैंने नोटों को उठाया और भरसक उपेक्षा के साथ तथा भावशून्य स्वरों में पूछा:

"उन्हें गिना था न?"

"हां।"

लापरवाही के साथ सारे बण्डल को मैंने दराज में डाल दिया।

"धन्यवाद। जाओ और अब भोजन कर लो।"

करावानोव ने अपनी जाकेट पर बंधी पेटी को बायें से दायें खिसकाया और कमरे में तेज़ी से चहलक़दमी करने लगा। किन्तु शांत स्वर में उसने सिर्फ़ इतना ही कहा:

"बहुत अच्छा," और वह बाहर चला गया।

दो सप्ताह गुज़र गए। संयोग से जब भी भेंट होती, मलिन-सी मुद्रा में सेम्योन मेरा अभिवादन करता, इस तरह जैसे वह मेरे साथ कुछ अटपटा अनुभव करता हो।

मेरे नये आदेश को भी उसने वैसी ही उदास मुद्रा में ग्रहण किया।

"जाओ और मेरे लिए दो हज़ार रूबल ले आओ।"

ब्राउनिंग रिवाल्वर को अपनी जेब में खोंसते हुए उसने देर तक, वि-मूढ़ मुद्रा में, मुझे परखा और प्रत्येक अक्षर को तौलते हुए बोला:

"दो हज़ार? और मान लीजिये कि अगर मैं उन्हें लेकर वापस न लौटूं तो?"

मैं अपनी कुर्सी से उछला और चिल्लाकर उससे कहा:

"मेहरबानी करके ये बेवक़ूफ़ी की बातें न करो! तुमने आदेश सुन लिया। अब जाओ और जो कहा गया है वह करो। अपनी इस मनोवैज्ञानिक ख़ुराफ़ात को दूर ही रखो!"

करावानोव ने अपने कंधों को बिचकाया और अस्पष्ट-सी आवाज़ में फुसफुसाया:

"अच्छा तो... ठीक..."

रुपया लाकर मुझे देने के बाद वह मेरे पीछे पड़ गया।

"इसे गिन लीजिये।"

"किस लिए?"

"मेहरबानी करके गिन लीजिये।"

"लेकिन तुम तो गिन चुके हो, क्यों, गिन चुके हो न?"

"गिन लीजिये, मैं कहता हूं।"

"रहने दो, मेरी जान छोड़ो।"

उसने अपना गला पकड़ा, जैसे कोई चीज़ उसका दम घोंट रही हो। इसके बाद उसने अपने कालर को नोचा और उसका बदन पांवों पर झूल गया।

"आप मुझे बेवक़ूफ़ बना रहे हैं! आप मेरा इतना विश्वास नहीं कर सकते। क्या आपको नहीं लगता कि यह असम्भव है? आप जान-बूझकर यह ख़तरा उठा रहे हैं। जान-बूझकर, मैं जानता हूं!"

वह कुर्सी पर बेदम होकर ढह गया।

"तुम्हारी सेवाओं के लिए मुझे भारी भुगतान करना पड़ता है।"

"भुगतान? सो कैसे?" अचानक आगे की ओर झुकते हुए सेम्योन ने कहा।

"तुम्हारे इन उन्मादों को सहन करके, और कैसे?"

सेम्योन ने खिड़की के दासे को दबोचा।

"अन्तोन सेम्योनोविच!" वह गुर्रा उठा।

"क्यों, क्या हुआ है तुम्हें?" मैंने चिल्लाकर कहा। सच पूछो तो मैं अब कुछ सहम गया था।

"काश कि आप जानते! रास्ते-भर सड़क पर घोड़ों को दौड़ाते हुए मैं बार-बार सोचता रहा! अगर ख़ुदा किसी को जंगल में से मुझ पर आक्रमण करने के लिए भेज देता! चाहे वे कितनी भी संख्या में होते... मैं गोली दाग़ता, दांतों से काटता, कुत्तों की भांति उनकी जान आफ़त में कर देता, जब तक कि मुझमें जान बाक़ी रहती... मैं...—वह क़रीब-क़रीब चीख़ उठा। "मैं अच्छी तरह जानता था कि आप यहां बैठे सोच रहे ोंगे: 'क्या वह लेकर आएगा या नहीं आएगा?' आप ख़तरा मोल रहे थे न?"

"तुम भी अजीब जीव हो, सेम्योन! धन के साथ ख़तरा तो हमेशा ही लगा रहता है। बिना ख़तरा उठाए तुम कोलोनी में नोटों का बण्डल नहीं ला सकते। लेकिन मैंने मन-ही-मन सोचा कि अगर धन तुम लाते हो तो इसमें ख़तरा कम रहेगा। तुम युवा हो, मज़बूत हो, किसी भी डाकू को धूल चटा सकते हो, जबकि वे मुझे आसानी से दबोच सकते हैं'।

सेम्योन ने प्रसन्नता से आंखें विचकाईं:

"आप भी क्या कमाल करते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच!"

"कमाल करने की ऐसी कोई बात नहीं है,—मैंने कहा। "धन कैसे लाया जाता है, यह अब तुम जानते हो, और भविष्य में तुम और भी धन मेरे लिए लेने जाओगे। इसके लिए किसी ख़ास कमाल दिखाने की ज़रूरत नहीं। मैं ज़रा भी नहीं डरता। मैं ख़ब अच्छी तरह जानता हूं कि तुम भी उतने ही ईमानदार हो जितना कि मैं। क्या तुम इतना भी नहीं देख सकते?"

"नहीं, मेरा ख़याल था कि आप यह नहीं जानते," सेम्योन ने कहा और दफ़्तर से चल दिया—अपनी भरपूर आवाज़ में कोई उक्राइनी गीत गाता हुआ!

२४. रंगरूटी शिक्षा-प्रणाली

१९२३ का जाड़ा अपनी झोली में संगठन-सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण आविष्कार लिए हुए आया। इन आविष्कारों ने भविष्य में एक लम्बे अर्से के लिए हमारी सामूहिकता के रूपों को निर्धारित कर दिया। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे—दस्ते और कमाण्डर।

गोर्की कोलोनी में द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून तथा उक्राइन में इधर-उधर छितरी अन्य कोलोनियां में आजकल भी दस्ते तथा कमाण्डर मौजूद हैं।

निस्संदेह १९२७ और १९२८ में गोर्की कोलोनी या द्ज़ेरजिन्स्की कोलोनी के दस्तों और जदोरोव तथा बुरुन के पहले दस्तों के बीच बहुत ही कम समानता थी। लेकिन बुनियादी तत्व का जहां तक सम्बन्ध है, उसकी नींव बहुत पहले–१९२३ के जाड़ों में ही–पड़ गई थी। हमारे दस्तों का सैद्धान्तिक महत्त्व केवल बहुत बाद में ही अपने आपको उभार सका–उस समय जब अपने पंक्तिबद्ध धावे के व्यापक वेग से सारे शिक्षा-जगत को हिला दिया, और उस समय जब शिक्षा-क्षेत्र के लिक्खाड़ों के एक अंश ने उन्हें अपनी चातुरी का निशाना बनाना शुरू किया। उन दिनों हमारे समूचे काम का 'रंगरूटी शिक्षा-प्रणाली' कहकर उल्लेख किया जाता था, और यह जैसे स्वयं सिद्ध माना जाता था कि शब्द के इस मिश्रण से अधिक कठोर निन्दा की बात और कोई नहीं हो सकती।

१९२३ में किसी को यह गुमान तक नहीं था कि एक महत्त्वपूर्ण संस्था का–एक ऐसी संस्था का जिसके इर्द-गिर्द आवेगों-उद्वेगों का एक बवण्डर उठ खड़ा होगा–हमारे जंगल में उदय हो रहा था।

और एक मामूली-सी बात को लेकर वह सब शुरू हुआ।

सदा की भांति, यह सोचकर कि हम कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेंगे, उस साल के लिए हमें किसी ने लकड़ी नहीं दी। पहले की भांति हमने पुराने सूखे पेड़ों से और जंगल साफ़ करने के काम से जो हाथ लगा, उसी से हमने अपना काम चलाया। इस गिरे-पड़े ईंधन का हमारा सारा ग्रीष्मकालीन संचय नवम्बर तक चुक गया, और एक बार फिर हमें ईंधन के संकट ने आ घेरा। बल्कि सच तो यह है कि सूखी लकड़ी को बटोरते-बटोरते हम तंग आ चुके थे। पेड़ों को गिराना कोई मुसीबत नहीं थी, लेकिन सैकड़ों पूड उस क़ूड़े को बटोरने के लिए जिसे भले से शब्दों में लकड़ी की संज्ञा दी जाती थी, विशाल जंगल, और दुर्गम घनी झाड़ियों में घुसने की आवश्यकता थी। शक्ति के इस भारी तथा बेकार अपव्यय के बाद टहनियों तथा झाड़ियों के संदेहास्पद कचरे को लिए हुए हम कोलोनी में लौटते थे। यह काम कपड़ों का नाश कर देता था जिनकी कि पहले ही हमारे पास काफ़ी तंगी थी। जाड़ों के दिनों में ईंधन की इस खोज का

अर्थ था पावों में पाला मारना और अस्तबल में बुरी तरह झींकना-झड़पना। अन्तोन घोड़े भेजने की बात तक सुनने के लिए तैयार नहीं होता था।

"ख़ुद ढोकर लाओ, घोड़ों को इस काम में नहीं जोता जा सकता। वे ईंधन के लिए नहीं जाएँगे, – वाह! तुम इसे ईंधन कहते हो?"

"लेकिन ब्रातचेन्को, हमें गरमाने के लिए तो कुछ चाहिए न?" कालीना इवानोविच ने यह सोचकर पूछा कि इस तर्क का शायद उसके पास कोई जवाब नहीं होगा

अन्तोन ने हाथ हिलाकर इस सवाल को ही रद्द कर दिया।

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। अस्तबल को कोई नहीं गरमाता, और हम सब भले-चंगे हैं।"

परेशानी की इस स्थिति में हमने, जैसे-तैसे, एक आम सभा में शेरे को इस बात के लिए समझा लिया कि खाद की लदाई को अस्थायी रूप में रोक दिया जाए और सबसे मज़बूत लड़कों तथा नालबंद घोड़ों को जंगल में काम करने के लिए जुटाया जाए। बीस लड़कों का एक दल बना लिया गया जिसमें हमारे सामाजिक काम में अत्यन्त क्रियाशील लड़के शामिल थे – बुरून बेलूख़िन, वेर्शनेव, वोलोख़ोव, ओसाद्ची, चोबोत तथा अन्य। सुबह वे अपनी जेबों को रोटियों से भर लेते और सारा दिन जंगल में गुज़ारते। शाम तक हमारे रास्ते की सड़क झाड़ी की लकड़ियों के ढेरों से सज जाती। उन्हें लाने के लिए अन्तोन दो घोड़ोंवाली अपनी वर्फ़गाड़ी लेकर, – अपने चेहरे पर इस उद्देश्य के प्रति घृणा का नक़ाब चढ़ाए हुए निकलता।

लड़के भूख से पीड़ित लेकिन मगन भाव से लौटते। अधिकतर, अपनी वापसी यात्रा को हल्का करने के लिए वे एक विचित्र खेल खेलते जिसमें उनके लुटेरे जीवन की याद दिलानेवाले तत्व देखे जा सकते थे। उस समय जबकि अन्तोन दो-चार लड़कों की मदद से बर्फ़-गाड़ी में लकड़ी लादता होता, बाक़ी जंगल में एक-दूसरे का पीछा करते, और पूरी मनमानी करने की छूट मिल जाती तथा लुटेरों को पकड़ने में इस खेल का अन्त होता। वन्दी बने जंगलवासी, कुल्हाड़ियों तथा आरियों से लैस पहरेदारों की निगरानी में कोलोनी में लाए जाते, मज़ाक़ ही मज़ाक़ में उन्हें मेरे दफ़्तर में धकेल दिया जाता। ओसाद्ची या कोरितो – इनमें से कोरितो किसी समय

माख़नो* की सेना में रह चुका था और उस दौरान उसकी एक उंगली भी शहीद हो चुकी थी—शोर मचाते हुए मुझसे मांग करते:

"इसका सिर उतार लो, या इसे गोली से उड़ा दो! यह हथियारों के साथ जंगल में पाया गया है शायद और भी कुछ लोग वहां मौजूद हैं।"

पूछ-ताछ शुरू होती। वोलोख़ोव अपनी भौंहों को ऐंठता और बेलूख़िन की ओर नज़र घुमाकर बोलता

"जल्दी बोलो—कितनी मशीनगनें थीं?"

हंसी के मारे बेलूख़िन का जैसे दम ही घुट जाता। वह पूछता:

"मशीनगन क्या? क्या यह कोई खाने की चीज़ है?"

"क्या कहा? मशीनगन समझा नहीं, बन्दूक़ची की हरामी औलाद!"

"तो यह खाने की चीज़ नहीं है? तब तो मशीनगनों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है।"

फ़ेदोरेन्को से, जो पक्का देहाती था, अचानक सवाल किया जाता:

"जल्दी मंज़ूर करो,—क्या तुमने माख़नो के कमान में काम नहीं किया?"

खेल को ख़राब किए बिना यह निश्चय करने में कि क्या जवाब देना चाहिए, फ़ेदोरेन्को को देर नहीं लगती:

"हां, किया है।"

"क्या काम करते थे तुम वहां?"

फ़ेदोरेन्को अभी सोच ही रहा था कि वह क्या जवाब दे किसी ने उसके पीछे से फ़ेदोरेन्को की आवाज़ में उनींदे और मूर्खतापूर्ण अन्दाज़ में कहा:

"गायों को चराने ले जाता था"

फ़ेदोरेन्को ने चारों ओर देखा, लेकिन उसे सब चेहरे भोले ही नज़र आए। हंसी का फ़ौव्वारा फूट पड़ा।

कोरितो ने वहशियाना नज़र से फ़ेदोरेन्को की ओर देखा, फिर मेरी ओर मुड़ा और गहरी फुसफुसाहट में बोला:

"इसे फांसी पर लटका दीजिये। भयानक आदमी है यह,—ज़रा इा-की आंखों को तो देखिये!"

मैंने भी उसी स्वर में जवाब दिया:

---

*माख़नो—पेतल्यूरा जाति का क्रांतिविरोधी। सं०

"हां, यह दया के योग्य नहीं। इसे भोजन के कमरे में ले जाओ और ठिकाने लगा दो!"

"अरे बाप रे, इतनी भयानक सज़ा!" कोरितो ने दुःखपूर्ण स्वर में कहा।"

वेलूख़िन बलबलाया:

"इस तरह तो मैं ख़ुद भी भयानक डाकू हूं। अतामान के लिए मैं भी गायें चराया करता था!"

अपना खुला हुआ मुंह बंद किए तब फ़ेदोरेन्को मुसकराता। लड़के अपने काम के संस्मरणों का आदान-प्रदान करते। बुरून कहता:

"हमारा दस्ता आज बारह गाड़ियां-भर लदान लाया, इससे कम नहीं। हमने आप से कहा था, बड़े दिन तक एक हज़ार पूड ले आएंगे, और ऐसा ही होगा।"

उन दिनों जबकि क्रान्ति की लहरों को निर्देशित कर अभी रेजीमेण्टों तथा डिवीजनों को व्यवस्थित पांतो का रूप नहीं दिया जा सका था, 'दस्ता' शब्द का प्रयोग किया जाता था। छापामार युद्ध, ख़ास तौर से उक्राइन में जहां उसने इतना सुदीर्घ रूप धारण कर लिया था, मात्र दस्तों द्वारा चलाया जा रहा था। एक दस्ते में कई हज़ार या सौ से भी कम सदस्य हो सकते थे,—दोनों ही सूरतों में वीरतापूर्ण सैनिक मुहिमें सर की जाती थीं और जंगल की गहराइयां उनके लिए शरणस्थली का काम देती थीं।

क्रान्तिकारी संघर्ष की सैनिक छापामार रोमांचकता हमारी कोलोनी के निवासियों को ख़ास तौर से मोहती थी। और उन व्यक्तियों को भी जिन्हें भाग्य की विडम्बना ने दुश्मन वर्ग के तत्वों के ख़ेमे में डाल दिया था, सर्वप्रथम इसी रोमांचकता के आकर्षण का अनुभव होता था। उनमें कितने ही ऐसे थे जो संघर्ष या वर्गगत विरोधों के वास्तविक अर्थ को न तो जानते थे और न समझते ही थे। इसी लिए सोवियत अधिकारी उनसे बहुत ही कम पूछ-ताछ करते थे और उन्हें कोलोनी में भेज देते थे।

जंगल में काम करनेवाले हमारे दस्ते ने, बावजूद इसके कि वह कुल्हाड़ियों और आरियों के सिवा अन्य किसी चीज़ से लैस नहीं था, उस अन्य दस्ते की प्यारी और परिचित छवि को मूर्त्त कर दिया था जिसे भले ही उन्होंने वस्तुतः देखा-जाना नहीं था, लेकिन जिसके बारे में अनगिनत कहानियां और किंवदन्तियां प्रचलित थीं।

कोलोनी के अपने निवासियों की क्रान्तिकारी मनोभावनाओं के अर्द्ध-चेतन खेल में दख़ल देने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। हमारे दस्तों और हमारे सैनिक खेलों की कड़ी आलोचना करनेवाले शिक्षा-क्षेत्र के लेखक समझ ही नहीं सकते थे कि यह सब है क्या। 'दस्ता' शब्द के साथ उनकी कोई ख़ास सुखद स्मृतियां सम्बद्ध नहीं थीं,–जिन्हें दस्तों ने कभी आड़े हाथों लिया था: और उनकी रिहाइशों पर कब्ज़ा किया था। उनकी भावनाओं तक की परवाह नहीं की थी, अपनी तीन-इंची बन्दूक़ों से दाएं-बाएं गोलियाँ दाग़ी थीं और 'विज्ञान' या 'चिन्तन' की रेखाओं से शोभित उनकी भौंहों के प्रति कोई मान नहीं दिखाया था।

लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। अपने आलोचकों की अभिरुचि को ताक पर रख कोलोनी ने दस्ते से शुरुआत की।

लकड़ी काटनेवाले दस्ते में बुरून हमेशा मीर की भूमिका अदा करता था, और उसे यह सम्मान देने में कोई आनाकानी नहीं करता था। खेल के ही नियमों का अनुसरण करते हुए लड़कों ने उसे अतामान कहना शुरू कर दिया।

"हम किसी को अतामान की संज्ञा नहीं दे सकते," मैंने कहा। "केवल डाकू ही अतामान रखते थे।"

"क्यों, केवल डाकू ही क्यों?" लड़कों ने रट लगाई। "छापामार भी अतामान रखते थे। लाल सैनिकों के पास भी बहुत से थे।"

"लाल सेना में वे 'अतामान' नहीं कहते थे।"

"लाल सेना में उनके कमाण्डर हैं। लेकिन हम लाल सेना तो नहीं है"

"तो इससे क्या अगर नहीं हैं। कमाण्डर कहीं ज़्यादा अच्छा है।"

लकड़ियां काटने का काम पूरा हो गया। पहली जनवरी तक एक हज़ार पूड से ज़्यादा लकड़ी हमारे पास जमा हो गई।

लेकिन हमने बुरून के दस्ते का विघटन नहीं किया। उसे, समग्र रूप में, नयी कोलोनी में पौधाघर बनाने के काम में लगा दिया। यह दस्ता हर सुबह काम करने जाता, घर से बाहर ही दोपहर का भोजन करता और सांझ को वापस लौटकर आता।

एक दिन ज़दोरोव ने मुझे संबोधित करते हुए कहा:

"जरा हम लोगों का ढंग तो देखिये। वुरून का दस्ता तो है, लेकिन अन्य लड़कों के बारे में क्या कहते हैं?"

इस बारे में सोचने में हम ने ज़्यादा समय नष्ट नहीं किया। उन दिनों कोलोनी में प्रत्येक दिन के लिए आदेश जारी किए जाते थे। इनमें एक आदेश की और वृद्धि कर दी गई,—यह कि ज़दोरोव के कमान में एक अन्य दस्ता संगठित किया जाए।

यह दूसरा दस्ता पूरा का पूरा वर्कशापों में काम करता था। बेलूखिन तथा वेर्शनेव जैसे दक्ष कारीगर वुरून का दस्ता छोड़कर ज़दोरोव के दस्ते में शामिल हो गये।

दस्तों के विकास ने आगे और भी क़दम बढ़ाया। नयी कोलोनी में तीसरे और चौथे दस्तों का संगठन किया गया। इन सब के अपने निजी कमाण्डर थे। लड़कियों ने नास्त्या नोचेवनाया के कमान में एक पांचवें दस्ते का निर्माण कर लिया।

दस्तों की इस प्रणाली ने अपना अन्तिम व्यवस्थित रूप वसन्त में प्राप्त किया। उनका आकार अब छोटा हो गया, और उनके सदस्यों के वर्कशापों में वितरण के आधार पर उनका संगठन किया गया। चमड़े का काम करनेवाले हमेशा नम्बर एक होते थे, लोहार का काम करनेवाले नम्बर छः, साईस नम्बर दो, सूँअर पालक नम्बर दस। शुरू में हमारे पास चार्टर जैसी कोई चीज नहीं थी। कमाण्डरों को मैं ख़ुद ही नियुक्त करता था, लेकिन बसन्त तक मैंने कमाण्डरों की बैठकों का आयोजन शुरू कर दिया जिसे लड़कों ने एक नया और अधिक सुहावना नाम 'कमाण्डरों की परिषद' दे दिया था। इन परिषदों की बैठकें अधिकाधिक संख्यों में होने लगीं और शीघ्र ही वह स्थिति आ गई जब मैं, बिना कमाण्डरों की परिषद बुलाए, कोई महत्वपूर्ण निश्चय न करने का अभ्यस्त हो गया। धीरे-धीरे कमाण्डरों की नियुक्ति का काम भी परिषद पर छोड़ दिया गया जिसका आकार संवाचन के द्वारा, अब बढ़ चला था। यह उस समय से बहुत पहले की बात है जबकि कमाण्डरों की नियुक्ति आम चुनाव के जरिये होती थी और वे मतदाताओं के प्रति जवाबदेह होते थे। जहां तक मेरा सम्बंन्ध है इस तरह के स्वतंत्र चुनावों को मैंने कभी उपलब्धि नहीं माना और अभी भी नहीं मानता। कमाण्डरों की परिषद में नये कमाण्डर का चुनाव, निश्चय अत्यन्त घनिष्ठ—गहरी—बहसों के साथ होता था। और

भला हो संचालन प्रणाली का, हमें हमेशा ही शानदार कमाण्डर प्राप्त होते थे। साथ ही यह एक ऐसी परिषद हमारे पास थी जिसकी गतिविधि, एक संगठन के रूप में, कभी बंद नहीं होती थी, और वह कभी त्याग-पत्र नहीं देती थी।

एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण नियम, जो आज भी क़ायम है, वह यह था कि कमाण्डरों के लिए किसी भी प्रकार के विशेषाधिकारों की एकदम मना-ही थी। उन्हें किसी भी रूप में कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं मिलती थी और उन्हें कभी काम से छूट नहीं दी जाती थी।

१९२३ के वसन्त तक दस्तों की अपनी प्रणाली में हमने एक भारी सुधार किया। एक ऐसा सुधार जो हमारी सामूहिक प्रणाली तेरह वर्षीय जीवन में उसका सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण आविष्कार सिद्ध हुआ। अकेले इस सुधार की बदौलत हमारे दस्तों ने मिलकर एक वास्तविक, सुदृढ़ और एकबद्ध सामूहिकता का रूप धारण कर लिया—यह प्रणाली कार्यगत तथा संगठनगत दोनों ही विशिष्टताओं, आम सभा की जनतंत्रीय पद्धति, व्यव-स्था और साथी की साथी के प्रति नमनशीलता की भावना से युक्त थी।

यह आविष्कार था: समन्वित या 'मिश्रित' दस्ता।

'रंगरूटी शिक्षा-प्रणाली' कहकर इतने ज़ोरों से हमारी प्रणाली पर आक्र-मण करनेवाले विरोधियों ने हमारे किसी भी कमाण्डर को कभी काम करते नहीं देखा था। लेकिन यह कोई ज़्यादा बड़ी बात नहीं थी। इससे भी कहीं अधिक बड़ी बात तो यह थी कि उन्होंने कभी मिश्रित दस्ते का नाम तक नहीं सुना था, और इसलिए हमारी प्रणाली के मुख्य सिद्धान्त के बारे में उन्हें कुछ पता नहीं था।

मिश्रित दस्ते के अस्तित्व में आने का कारण हमारा मुख्य काम कृषि था। हमारे पास सत्तर देस्यतीना भूमि थी और गर्मियों में काम के लिए शेरे किसी को नहीं बख़्शता था। साथ ही कोलोनी का हरेक सदस्य इस या उस वर्कशाप के साथ सम्बद्ध था और अपने इस सम्पर्क को छोड़ने के लिए कोई भी राज़ी नहीं होता था। कारण कि सभी कृषि को गुज़र-बसर का तथा जीवन को बेहतर बनाने और वर्कशापों को दक्षता प्राप्त करने का साधन समझते थे। जाड़ों में जबकि खेतों में काम क़रीब-क़रीब बंद हो जाता था, सभी वर्कशापें भरी रहती थीं। लेकिन जनवरी के आने तक पौधाघरों में काम करने तथा खाद लादकर गाड़ी में लाने के लिए शेरे

कोलोनी के सदस्यों की मांग करने लगता, और, उसकी ये मांगें दिनों-दिन ज़ोर पकड़ती जातीं।

खेतों में काम की जगह और प्रकृति निरन्तर बदलती रहती थी। परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के कामों के लिए समुदाय को भांति-भांति के विभाजनों में बांटना पड़ता था। काम के दौरान हमारे कमाण्डरों का पूर्ण अधिकार, और एकदम शुरू से ही उनकी ज़िम्मेदारी, हमारी समझ में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शर्त थी। शेरे ने ही सबसे पहले इस बात पर जोर दिया कि कोलोनी के सदस्यों को अनुशासन, औज़ारों, ख़ुद काम करने और उसकी श्रेष्ठता के लिए ज़िम्मेदार बनाया जाए। आज कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जो इन मांगों पर आपत्ति करेगा। उस समय भी—मेरी समझ में—केवल पोंगे-पण्डितों ने ही ले-देकर कुछ आपत्तियां उठाई थीं।

संगठन सम्बन्धी एकदम सहज-स्वाभाविक आवश्यकताओं को तुष्ट करने के लिए मिश्रित दस्तों का ख़याल हमारे दिमाग़ में आया था।

मिश्रित दस्ते को एक अस्थायी दस्ता समझिए जिसे एक बार में एक सप्ताह से ज़्यादा के लिए संगठित नहीं किया जाता था। छोटे और सुनिश्चित काम उसे दिए जाते थे—जैसे किसी एक ख़ास खेत में आलुओं की निराई करना, किसी एक ख़ास हिस्से में हल चलाना, बीजों को छांटना, नियत परिमाण में खाद की लदाई करना, एक निश्चित क्षेत्र में बोवाई करना, आदि-आदि।

प्रत्येक काम के लिए अलग-अलग संख्या में काम करनेवालों की दरकार होती थी। कुछ मिश्रित दस्तों में केवल दो जनों की ही ज़रूरत होती थी, कुछ अन्य में पांच, आठ, या बीस तक की भी। समय की दृष्टि से भी मिश्रित दस्तों में भिन्नता होती थी। जाड़ों में जबकि स्कूल में पढ़ाई चलती थी, लड़के दो पालियों में—कलेवा से पहले या बाद में—काम करते थे। जब स्कूल नहीं लगते थे, तब छः घंटे का काम का दिन कर दिया जाता था, और सब साथ-साथ एक ही समय में—काम करते थे। लेकिन मवेशियों तथा औज़ारों आदि से पूर्णतया लाभ उठाने की आवश्यकता के कारण कुछ लड़के सुबह के छः बजे से दोपहर तक काम करते थे, और अन्य दोपहर से शाम के छः बजे तक। कभी-कभी इतना अधिक काम निबटाना होता था कि काम के घंटे बढ़ा देने पड़ते थे।

काम के प्रकार और समय की लम्बाई की यह सारी विविधता खुद मिश्रित दस्तों में भी भारी विविधता ला देती थी। मिश्रित दस्तों की हमारी प्रणाली बहुत-कुछ रेलों के कार्यक्रमों का सादृश्य प्रस्तुत करने लगी थी।

सारी कोलोनी में यह सभी खूब जानते थे कि ३–२ मिश्रित दस्ते सुबह के आठ बजे से शाम के चार बजे तक काम करते हैं। बीच में, भोजन के लिए एक घंटे का अवकाश मिलता है और यह इसलिए कि वह, नियमित रूप से सागभाजी के खेत में काम करते है। इसी प्रकार यह भी सब जानते थे कि ३–० दस्ते बाग में, ३–आर मरम्मत में, ३–एच पौधाघर में काम करते हैं इनमें से पहली का समय सुबह के छः बजे से दोपहर तक और दूसरी का दोपहर से शाम के छः बजे तक होता है। मिश्रित दस्तों की संख्या देखते ही देखते तेरह तक पहुंच गई।

मिश्रित दस्ता हमेशा काम करनेवाला होता था। जैसे ही वह अपने काम को पूरा करने के बाद कोलोनी में लौटता, उस का अस्तित्व ख़त्म हो जाता।

कोलोनी का प्रत्येक सदस्य किसी एक स्थायी दस्ते से सम्बद्ध होता था, जिसका एक अपना स्थायी कमाण्डर तथा वर्कशापों की प्रणाली में शयनागार में, और भोजन के कमरे में उसकी अपनी एक जगह होती थी। स्थायी दस्ता जैसे कोलोनी का केन्द्रबिन्दु था, उसका कमाण्डर, ज़ाब्ते से कमाण्डरों की परिषद का सदस्य होता था। लेकिन वसन्त के बाद, जैसे-जैसे गर्मियां निकट आती जातीं, कोलोनी के सदस्य–प्रस्तुत काम को करने के लिए–मिश्रित दस्तों के साथ अधिकाधिक बार एक सप्ताह के लिए सम्बद्ध होने लगते।

उस हालत में भी जबकि मिश्रित दस्ते में केवल दो सदस्य होते थे, एक को कमाण्डर नियुक्त किया जाता था। लेकिन जैसे ही काम के घंटे समाप्त होते, मिश्रित दस्ते को छुट्टी दे दी जाती।

प्रत्यक मिश्रित दस्ता एक सप्ताह के लिए बनाया जाता था। फलत: कोलोनी के प्रत्येक सदस्य को, आम तौर से, अगले सप्ताह के लिए, नये कमाण्डर के अधीन नया काम दे दिया जाता था। मिश्रित दस्ते के कमाण्डर को भी कमाण्डरों की परिषद एक सप्ताह के लिए नियुक्त करती थी। इसके बाद नियमानुसार अगले मिश्रित दस्ते में वे अब कमाण्डर

नहीं रहते थे, बल्कि केवल आम सदस्यों की भांति उसमें शामिल होते थे।

कमाण्डरों की परिषद, बारी-बारी से, सभी सदस्यों को मिश्रित दस्ते का कमाण्डर बनाने का प्रयत्न करती थी,—केवल उन्हें छोड़कर जो अत्यन्त उल्लेखनीय रूप में अनुपयुक्त होते थे। और यह बिलकुल न्यायसंगत था, क्योंकि मिश्रित दस्ते का कमान भारी जिम्मेदारी तथा काफ़ी मुसीबत की चीज़ था। भला हो इस प्रणाली का, इसकी बदौलत कोलोनी के अधिकांश सदस्य न केवल उन कामों में ही जो कि उन्हें दिए जाते थे, बल्कि संगठनात्मक कार्यों में भी हिस्सा लेते थे। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, और कम्युनिस्ट शिक्षा में ठीक इसी की दरकार भी थी। इसी प्रणाली की बदौलत हमारी कोलोनी ने १९२६ में, किसी भी काम के अनुकूल अपने आपको बनाने की अपनी उल्लेखनीय क्षमता का शान के साथ परिचय दिया। विविध प्रकार के कामों को करने के लिए योग्य और स्वतंत्र संयोजकों तथा सुप्रबंधकों की—ऐसे लोगों की जिन पर भरोसा किया जा सकता है—हमारे यहां सदा बहुतायत रहती थी।

स्थायी दस्ते के कमाण्डर का पद अब कुछ उतना अधिक महत्त्व और रोब-दाब का नहीं रहा था। स्थायी कमाण्डर मुश्किल से ही कभी मिश्रित दस्तों के कमाण्डर बनते थे, कारण, वे समझते थे कि उन्हें वैसे ही काफ़ी काम करना होता है। स्थायी दस्ते का कमाण्डर मिश्रित दस्ते के अन्य आम सदस्यों की भांति काम करने जाता था, और काम के दौरान मिश्रित दस्ते के कमाण्डर के आदेशों का पालन करता था। ऐसा कभी भी हो सकता था कि स्थायी कमाण्डर भी ख़ुद अपने दस्ते का सदस्य हो।

इसके कारण कोलोनी में मातहती की एक अत्यन्त जटिल शृंखला का उदय हो गया था जिसमें व्यक्तिगत सदस्यों के लिए ज़रूरत से ज़्यादा विशिष्ट बनना या समूह पर हावी होना असम्भव था

वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्यों में मिश्रित दस्तों की इस प्रणाली ने, जो बारी-बारी से व्यवहारिक तथा संगठनात्मक काम दोनों का ही अवसर प्रदान करती थी, कमान और मातहती दोनों का अभ्यास जिसमें शामिल था, कोलोनी के जीवन को दिलचस्पी से पूर्ण तथा गतिशील बना दिया।

२५. नयी कोलोनी के दानव

त्रेपके की मरम्मत का काम दो साल से भी अधिक से चल रहा था। और १९२३ के वसन्त के आते-आते यह देखकर ख़ुद हम भी क़रीब-क़रीब चकित रह गये कि इतना अधिक काम किया जा चुका है, और यह कि नयी कोलोनी ने हमारे जीवन में उल्लेखनीय हिस्सा लेना शुरू कर दिया है। नयी कोलोनी शेरे के कार्यकलाप का मुख्य क्षेत्र थी। कारण, गौशाला, अस्तबल और सूअर-घर सब वहां थे। गर्मियों के आ जाने पर भी, जैसा कि पहले होता था, जीवन गति-शून्य नहीं हुआ, बल्कि वस्तुतः क्रियाशीलता से उमगता रहा।

कुछ समय तक पुरानी कोलोनी के मिश्रित दस्ते ही इस जीवन की प्रेरक-शक्ति बने रहे। दिन के सारे समय इन मिश्रित दस्तों को अनवरत हरकत करते देखा जा सकता था – घूम-घुमावदार पथों पर भी, और दोनों कोलोनियों की सीमा-रेखाओं पर भी। कुछ दस्ते काम करने के लिए जल्दी-जल्दी नयी कोलोनी की ओर लपकते नज़र आते थे, और कुछ कलेवा या ब्यालू के लिए पुरानी कोलोनी की ओर लौटते हुए।

एक के बाद एक पंक्तिबद्ध मिश्रित दस्ता तेज़ डगों से फ़ासला तय करता था बाल-सुलभ सूझ-बूझ और उद्धतता के लिए साम्पत्तिक अधिकारों को चकमा देने तथा सीमाओं को लांघने में कोई ख़ास कठिनाई नहीं होती थी। शुरू-शुरू में खलिहानों के मालिकों ने इस सूझ-बूझ को मात देने के कमज़ोर प्रयास किए, लेकिन उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि यह एक असम्भव कार्य है। लड़के डिगने का नाम न लेते और अत्यन्त स्थिरता के साथ खेतों के बीच सम्पर्क क़ायम करनेवाले विविध पथों में संशोधन कर अपने लक्ष्य की पूर्त्ति के लिए दृढ़ता के साथ तीर की भांति सीधा रास्ता पकड़ते। उन जगहों में जहां यह सीधी रेखा खेतों के अहातों के बीच से होकर गुज़रती थी, इस काम को पूरा करने के लिए ज्यामिति के अलावा अन्य साधनों का सहारा लेना आवश्यक हो उठता था, – उन्हें कुत्तों, टट्टरों, बाड़ों और दरवाज़ों जैसी बाधाओं को भी क़ाबू में करना पड़ता था।

इन में सबसे आसान कुत्ते थे। रोटियों की हमारे पास प्रचुरता थी, और रोटियों के कारण ही खलिहानों के कुत्तों के हृदयों में कोलोनी के

सदस्यों के लिए कोमल स्थान था। कुत्तों का घटनाविहीन और जीतेजागते सस्मरणों तथा स्वस्थ हंसी से शून्य जीवन अचानक नये तथा चहल-पहल भरे अनुभवों की भरमार से खिल उठता। ढेर सारी संगत, दिलचस्प बातचीत, भूसे के निकटतम ढेर में कुश्ती प्रतियोगिता होने की सम्भावना और सबसे अन्त में–उल्लास की वह चरम स्थिति प्राप्त हो गई थी जिसमें तेजी के साथ मार्च करते हुए दस्ते के साथ उछल-कूद, किसी नन्हे से लड़के के हाथ में मौजूद पेड़ की टहनी को झटकना और कभी-कभी उसके हाथों अपनी गरदन के इर्द-गिर्द लाल फ़ीते का पुरस्कार प्राप्त करना भी शामिल था। यहाँ तक कि खलिहानों की कुत्ता-रूपी पुलिस के ज़ंजीरों से बंधे हुए प्रतिनिधि तक ग़द्दारी कर जाते,–और भी अधिक इसलिए कि हमलावारी कृत्य का मुख्य निशाना ही ग़ायब होता। बसन्त के प्रारम्भ से ही लड़के पतलून नहीं पहनते थे–घुटन्ने स्वास्थ्य के अधिक अनुकूल, देखने में अधिक सुन्दर और कमख़र्च होते थे।

गाँवों में रहनेवाले समाज की विश्रृंखलता कुत्तों के विश्वासघात से शुरू होकर अधिकाधिक बढ़ती गई, जब तक कि 'कोलोनी-कोलोमाक' रेखा को सीधा करने के मार्ग की अन्य तमाम बाधाएं बेअसर न हो गईं। पहले आन्द्रेई, निकिता, नेचिपोर और मिकोला समुदाय –दस से सोलह वर्ष तक जिनकी आयु का विस्तार था–हमारी ओर आ मिले। जीवन के रोमांटिक पक्ष तथा कोलोनी के काम से आकर्षित होकर वे खिंच आए थे। एक मुद्दत से वे हमारे बिगुलों के आह्वानों को सुन रहे थे और एक बड़ी तथा उल्लासपूर्ण सामूहिकता के अवर्णनीय जादू का अनुभव कर रहे थे और ऊंचे स्तर की मानवीय गतिविधि के इन तमाम चिन्हों को जब उन्होंने देखा तो उनके मुंह मुग्ध भाव से खुले रह गए,–मिश्रित दस्ता, 'कमाण्डर' और–सबसे शानदार–'रिपोर्ट'। जो आयु में बड़े थे, उनकी दिलचस्पी का केन्द्र खेती के काम के नये तरीक़े थे। फ़सलों की हेरा-फेरी की खेरसोन प्रणाली ने न केवल लड़कों को ही, बल्कि हमारे खेतों और हमारे बीज-ड्रिल को भी उनके लिए अधिक आकर्षक बना दिया था। प्रत्येक मिश्रित दस्ते में गांव के किसी एक साथी का आ मिलना उसके लिए एक आम बात हो गई थी। वे फटकन-घर से चोरी-छिपे एकाध कुदाली या फावड़ा खिसकाते और दस्ते में आ मिलते। शाम को भी ये लड़के हमारी कोलोनी में जमा हो जाते थे और, क़रीब-क़रीब अनजाने, उसका

एक अनिवार्य अंग बन गए थे। उनकी आंखें बोलती सी प्रतीत होती थीं कि कोलोनी की सदस्यता ने उनके जीवन के सपने का रूप धारण कर लिया है। उनमें से कई ने आगे चलकर इसे पूरा भी कर लिया,—उस समय जबकि पारिवारिक, दैनिक जीवन तथा धार्मिक बखेड़ा ने उन्हें अपने माता-पिता की गोद से धकेलकर अलग कर दिया था।

और अन्त में गांव की विशृंखलता को सम्पूर्ण करने में दुनिया की सबसे सबल शक्ति ने धोखा दिया: गांव की लड़कियां कोलोनी के नंगे पांववाले बने-ठने, मगन और गुणसम्पन्न लड़कों के आकर्षण के आगे नहीं टिक सकीं। पुरुष-वर्ग के स्थानीय प्रतिनिधियों के पास ऐसा कुछ नहीं था जो इन आकर्षणों की ताब ला सकते,—ख़ास तौर से इसलिए भी कि कोलोनी के लड़के, ख़ुद अपनी ओर से, कुमारियों की इस सुलभता से लाभ उठाने की उतावली में नहीं थे, उनके कंधों पर धौल-धप्पा नहीं जमाते थे, उनके शरीर के किसी अंग पर नहीं झपटते थे, या उनकी नाक में दम नहीं करते थे। हमारी वयस्क पीढ़ी अब रबफ़ाक तथा कोमसोमोल के छोरों को छू रही थी, और परिष्कृत सौजन्य तथा दिलचस्प वार्तालाप के आकर्षण का अनुभव करने लगी थी।

गांव की लड़कियों की सहानुभूति ने अभी प्रेम के बुख़ार का रूप धारण नहीं किया था। वे हमारी लड़कियों को भी पसंद करती थीं जो अधिक समझदार तथा शहर की पली होने के बावजूद कभी बढ़-बढ़कर पेश नहीं आती थीं। प्रेम के मामलों का नम्बर कुछ बाद में आया। मिलन-तिथियों तथा रात्रि-अभिसारों के लिए इतना नहीं, जितना कि सामाजिक मूल्यों की टोह में वे हमारे यहां आती थीं। वे जब भी संभव होता कोलोनी में आ जुटतीं। अकेले आते अभी वे डरती थीं बेंचों पर पंक्तिवार बैठ जातीं और चुपचाप भांति-भांति के नये प्रभावों को ग्रहण करतीं। वे सूरजमुखी के बीजों तक को कुतरती नज़र नहीं आतीं। घर के भीतर या बाहर उन्हें कुतरने के निषेध ने सचमुच उन्हें क्या इतना अभिभूत कर लिया था?

भला हो उस सहानुभूति का जो कि नयी पौध हमारे मामले के प्रति अनुभव करती थी। टट्टर बाड़े और दरवाज़े पहले की भांति अब मालिकों के लिए कारगर सिद्ध नहीं होते थे।—मतलब यह कि व्यक्तिगत सम्पत्ति की अनुल्लंघनीयता के चिन्हों के रूप में कुछ काम नहीं देते थे। नती-

जा इसका यह हुआ कि हमारे लड़के देखते न देखते इतने साहसी हो गए कि अत्यन्त कठिन जगहों में भी वे सचमुच अपने लिए एक प्रकार का सो-पान बना लेते थे जो बाड़ों को पार करने का एक ऐसा साधन था जो रूस के अन्य किसी भाग में नहीं मिलता था। यह एक संकरा तख़्ता होता था जिसे वे टट्टर के बाड़े में धकेल देते थे। इसके दोनों सिरों पर ज़मीन पर टेक के लिए दो खूंटे लगे रहते थे।

कोलोनी-कोलोमाक रेखा को सीधा-सुगम बनाने की क्रिया खेतिहरों की फ़सलों को चौपट कर देती थी—इस गुनाह को स्वीकार करना पड़ेगा। १९२३ के वसन्त तक, इस या उस रूप में, यह रेखा अक्तूबर रेलवे* के जोड़ की बन चली और हमारे दस्तों के काम में भारी सहूलियत पहुं-चाने लगी।

भोजन के लिए सबसे पहले मिश्रित दस्ते की पंगत बैठती थी। बारह-बीस तक पहला दस्ता अपना भोजन करके रवाना हो जाता। कोलोनी में ड्यूटी पर तैनात शिक्षक दस्ते के कमाण्डर को एक काग़ज़ देता जिस पर सारा आवश्यक विवरण अंकित होता था—दस्ते का नम्बर, उसके सदस्यों की सूची, कमाण्डर का नाम, वह काम जो उन्हें दिया गया था और अवधि जिसमें कि वह काम पूरा किया जाना था। शेरे इस सब में ऊंचे गणित का समावेश कर दिया था,—काम का रत्ती-रत्ती, बूंद-बूंद हिसाब लगाया जाता था।

मिश्रित दस्ता तेज़ डगों से चल देता और पांच या छः मिनट में ही उसकी पांत दूर खेत में पहुंच जाता। इसके शीघ्र बाद ही टट्टर को लांघ-कर झोंपड़ियों के बीच खो जाती। इसके बाद कोलोनी में ड्यूटी पर तैनात शिक्षक के साथ बातचीत की लम्बाई के अनुपात से दूसरा दस्ता पहुंचता ३-सी, या शायद ३-०। और थोड़ी ही देर में सारा खेत हमारे दस्तों की पांतों से भर जाता। तोस्का एक हिमगृह की छत से चिपका हुआ आ-वाज़ देता नज़र आता:

"ए-पी काम से लौट रही है।"

और सचमुच 'ए-पी' दस्ता खलिहान के टट्टरों के बीच से उभरता

---

*अक्तूबर रेलवे—एक बार भी कहीं मुड़े-तुड़े बिना मास्को और लेनिन-ग्राद के बीच दौड़ती है। सं०

नज़र आता। 'ए-पी' हमेशा हल चलाने और बोवाई का काम करती है, और आम तौर से घोड़ों से काम लेती है। सवेरे साढ़े पांच बजे ही वह घर से चल दी थी। उसका कमाण्डर बेलूख़िन उसके साथ था। हिम-गृह की छत के ऊपर सुविधाजनक स्थल से तोस्का की नज़र बेलूख़िन को टोह रही थी। कुछेक मिनट और बीते कि 'ए–पी'–कुल मिलाकर छः सदस्य–कोलोनी के अहाते में आ जाते हैं। उधर दस्ता पेड़ों के बीच स्थित मेज़ पर बैठना शुरू करता है और इधर बेलूख़िन कोलोनी में ड्यूटी पर लगे शिक्षक को अपनी रिपोर्ट देता है जिसे रोदिमचिक–आने के समय और काम को पूरा करने की अवधि के हिसाब से–चैक कर चुका था।

बेलूख़िन सदा की भांति उत्साह से उमगा है।

"क्या कहें, पांच मिनट की देर हो गई। यह माझियों का कसूर है। हम काम पर जाना चाहते थे, और मित्का कुछ सट्टाबाज़ों को पार उतार रहा था।"

"सट्टाबाज़ों–क्या?" कोलोनी में ड्यूटी पर लगे शिक्षक ने पूछा। उसकी उत्सुकता जाग गई थी।

"अरे तो क्या आपको नहीं मालूम? वे बगीचे को ठेके पर लेने आए हैं।"

"क्या सचमुच?"

"हां, तो मैंने उन्हें तट से आगे डग नहीं रखने दिया। वाह, क्या बात है, आप तो सेब उड़ाते रहें और हम बस मुंह ताका करें? नाव को वापस करो, नागरिको, और अपना रास्ता नापो! हलो, अन्तोन सेम्योनोविच, क्या रंग-ढंग है?"

"हलो, मात्वेई!"

"ख़ुदा के लिए, यह तो मुझे बताइय–कि आप उस रोदिमचिक को कभी दफ़ा करेंगे या नहीं! सच जानो, अन्तोन सेम्योनोविच, यह एकदम लज्जास्पद है। उस जैसा आदमी कोलोनी में इधर-उधर मंडराता और हरेक को पस्त करता है। वह काम करने की इच्छा तक नहीं रहने देता, तिस पर तुर्रा यह कि मुझे उससे रिपोर्ट पर दस्तख़त कराने होते हैं। आख़िर क्यों?"

यह रोदिमचिक कोलोनी के सभी सदस्यों के लिए आंख का कांटा में बना हुआ था। नयी कोलोनी में सदस्यों की संख्या अब बीस

से भी ऊपर हो गई थी, और काम इतना था कि निबट नहीं पाता था। शेरे पहले कोलोनीवाले मिश्रित दस्तों की मदद से केवल खेतों में ही काम करता था। अस्तबल गौशाला, निरन्तर बढ़ता हुआ सूअरघर—इनकी देख-संभाल स्थल पर मौजूद लड़के करते थे। शक्ति का एक काफ़ी बड़ा हिस्सा नयी कोलोनी में बग़ीचे को ठीक-ठाक करने पर ख़र्च होता था। बग़ीचा चार देस्यतीना में फैला था और बहुत ही बढ़िया किशोर पेड़ों से भरा था। शेरे ने वहां विशाल पैमाने पर काम करने का बीड़ा उठाया था। बग़ीचे की ज़मीन में हल चलाया गया, पेड़ों को छांटा और ग्रंथियों से मुक्त किया गया। कृष्ण बदरी की बड़ी क्यारी को झाड़-झंखाड़ से साफ़ किया गया रास्ता निकाला गया, और फुलवारियाँ तैयार की गईं। हमारे नव-निर्मित पौधाघर ने वसंत में अपनी पहली पैदावार दी। नदी के तट पर भी भारी परिमाण में काम चल रहा था—खाइयां खोदी जा रही थीं, सरकंडों-सरपतों को साफ़ किया जा रहा था।

जागीर में मरम्मत का काम अब पूरा होने के निकट पहुंच गया था। टूटी छतवाला खोखली कंकरीट का अस्तबल तक अब हमें परेशान नहीं करता था। उसे छत के कागज़ से पाट दिया गया था और भीतर बढ़ई, सूअरघर का निर्माण-कार्य पूरा कर रहे थे। शेरे के हिसाब के अनुसार इसमें डेढ़ सो सूअरों के रहने की गुंजाइश थी।

नयी कोलोनी का जीवन कोलोनी के सदस्यों को कुछ ज़्यादा मोहित नहीं करता था, ख़ास तौर से जाड़ों में। पुरानी कोलोनी में कमोबेश हम स्थिरता से बस गए थे, और हर चीज़ हमें इतने अच्छे क़ायदे में मालूम होती थी कि आनन्दविहीन ईंटों की इमारतों या आए दिन के जीवन की कलात्मक त्रुटियों की ओर मुश्किल से ही कभी हमारा ध्यान जाता था। गणित-जैसी चौकस व्यवस्था, सफ़ाई और अत्यन्त मामूली चीज़ों में भी बेदाग़ साफ़-सुथरापन सौन्दर्य के अभाव की पूर्त्ति करते थे। लेकिन नयी कोलोनी कोलोमाक के उदर में स्थित थी। नदी के ऊंचे तट, बाग़-बग़ीचे, बड़ी-बड़ी ख़ूबसूरत इमारतों के बावजूद अभी तक वह खण्डहरों की अराजकता से नहीं उबर सकी थी। इमारती मलबा अभी तक छितरा पड़ा था। चूने के गड्ढों से वह कटी-फटी थी और ऊंचे सरकंडे हर जगह इस बुरी तरह उगे थे कि उन्हें देखकर मैं अक्सर अचरज करता—कौन जाने, हम कभी उन्हें साफ़ भी कर पाएंगे कि नहीं।

यहां कोई भी ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे जीवन के लिए एकदम तैयार कहा जा सके—शयनागार अच्छे थे, लेकिन ढंग की रसोई या भोजन करने के कमरे जैसी कोई चीज़ नहीं थी। और जब, कमोबेश रूप में, रसोई ढंग की हो गई तो उसमें कोई तहख़ाना नहीं था। और सबसे बदतर तो यह कि कार्यकर्त्ता कुछ ढंग के नहीं थे—ऐसा कोई नहीं था जो नयी कोलोनी में चीज़ों को एक बार ढर्रे पर डाल सके।

इस सब की वजह से पुरानी कोलोनी के सदस्य जिन्होंने इतनी तत्परता और जोश से नयी कोलोनी के पुनर्स्थापन का विशाल काम सम्पन्न किया था, उसमें रहने के लिए उत्सुक नहीं थे। ब्रातचेन्को जो एक कोलोनी से दूसरी कोलोनी तक आने-जाने में प्रति दिन बीस-बीस किलोमीटर चलने के लिए तैयार रहता था और अपर्याप्त भोजन तथा अधूरी नींद—किसी चीज़ पर उफ़ नहीं करता था। नयी कोलोनी में स्थानान्तरण को अपमान से कम नहीं समझता था। यहां तक कि ओसाद्ची भी एलान करता था: "मुझे कोलोनी छोड़ना मंजूर है, लेकिन त्रेपके में जाकर रहना नहीं!"

पुरानी कोलोनी के सभी अधिक उज्जवल व्यक्तित्व अब तक इतनी घनिष्ठ मण्डली में गुंथ गए थे कि उनमें से किसी को भी बिना दुःखद आघात पहुंचाए उससे अलग नहीं किया जा सकता था। उन्हें नयी कोलोनी में स्थानान्तरित करने का अर्थ नयी कोलोनी और सम्बन्धित व्यक्तियों को दांव पर लगाना था। ख़ुद लड़के भी इसे पूर्णतया समझते थे।

"हमारे लड़के बढ़िया घोड़ों की भांति हैं," कराबानोव कहता, "बुरून को ही लो। उस जेसे जीव को बस क़ायदे से जोतने और ठीक ढंग से चटकारने भर की देर है, वह ऐसे जाएगा कि देखते रह जाओ, एकदम आन-बान के साथ चलेगा। लेकिन अगर उस पर जब्र करोगे तो वह सीधे खड्ड की ओर लपकेगा, अपनी गरदन और गाड़ी को तोड़कर चकनाचूर कर डालेगा।"

इस कारण नयी कोलोनी में एक सर्वथा नये स्तर तथा मूल्य की सामूहिकता का निर्माण होना शुरू हुआ। इसमें ऐसे लड़के थे जो न तो इतने उज्जवल थे, न इतने क्रियाशील, न इतने टेढ़े। सामूहिकता का जहां तक सम्बन्ध है इसमें कच्चापन था।

उनमें अगर कोई दिलचस्प व्यक्तित्व था भी तो वह संयोग से ही था—छुटके लड़कों के बीच से अभी हाल ही में जो उभरा था, या नवाग-

न्तुकों के दल में अप्रत्याशित रूप में आ गया था। लेकिन इस तरह के व्यक्तित्वों में से अभी तक कोई अपने अस्तित्व का भान नहीं करा सका था और त्रेपके निवासियों के आम जमघट में खोया हुआ था।

त्रेपके समुदाय अपने समग्र रूप में ऐसा था कि मुझे, शिक्षकों और कोलोनी के अन्य सदस्यों को अधिकाधिक हतोत्साहित करता था। काहिल, गंदे, यहां तक कि भीख मांगने जैसी आत्मघाती प्रवृत्ति से भी लिप्त रहता था। पुरानी कोलोनी को वे ईर्ष्या की नज़र से देखते थे। उनमें रहस्यमय फुसफुसाहटें फैली थीं कि कलेवे और व्यालू में वहां क्या-क्या दिया गया, पुरानी कोलोनी के मांसघर में क्या-क्या लाया गया, और इस कोलोनी में वह क्यों नहीं लाया गया। उनमें इतनी ताव नहीं थी कि ज़ोरों से और खुलकर विक्षोभ प्रकट कर सकें। वे केवल कोनों-कोनों में ही झुंझलाकर फुसफुसा सकते थे तथा हमारे अधिकृत प्रतिनिधियों के सामने धृष्टता दिखा सकते थे।

पुरानी कोलोनी के लड़कों ने त्रेपके निवासियों के प्रति किसी क़दर घृणापूर्ण रवैया धारण करना शुरू भी कर दिया था। ज़दोरोव या वोलोख़ोव नयी कोलोनी के किसी झींकू को पकड़ और उसे पुरानी कोलोनी की रसोई में धकियाते हुए कहते:

"इस मरभुखे के आगे भी कुछ चारा डाल दो!"

मरभुखा, कहने की आवश्यकता नहीं, झूठे गर्व के कारण चारा लेने से इनकार कर देता। सच कहा जाये तो नयी कोलोनी के लड़के अच्छा खाते-पीते थे। साग-भाजी का बगीचा नज़दीक ही था, फिर मिल से भी चीज़ें ख़रीदी जाती थीं और सबसे अन्त में हमारी अपनी निजी गायें भी थीं। पुरानी कोलोनी में दूध भेजना दुष्कर था। रास्ते की दूरी इसमें बाधक होती थी, और घोड़ा कभी ख़ाली नहीं मिलता था।

नयी कोलोनी में कामचोरों और झींकनेवालों की जमात बन गई थी। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अनेक परिस्थितियां इसके लिए दोषी थीं। ढंग के लोगों का अभाव जो धुरी का काम देते, और शिक्षकों का कमज़ोर कृतित्व इनमें मुख्य थे।

शिक्षक हमारी कोलोनी में आने और काम करने को राज़ी नहीं होते थे। वेतन नगण्य मिलता था और काम कठिन था। इसके अलावा सार्वजनिक शिक्षा का विभाग, जो भी पहले उसके हाथ लग जाता, उसी

को—रोदिमचिक और उसके बाद देरियुचेन्को जैसे जीवों को—हमारे यहां भेज देता था। अपने बीवी-बच्चों के साथ वे आए और कोलोनी के सबसे अच्छे कमरों में आ जमे। मैंने भी कोई विरोध नहीं किया। सोचा, यही क्या वह ग़नीमत है कि जैसे भी ये हों, मिल तो गए।

नज़र डालने मात्र से यह देखा जा सकता था कि देरियुचेन्को ठेठ पेतल्यूरा के अनुयाइयों की टकसाल से निकला है। वह 'रूसी नहीं जानता' था, शेवचेन्को के चित्रों की सस्ती अनुकृतियों से कोलोनी के सभी कमरों को उसने सजा दिया, और आते ही फ़ौरन अपने उस एकमात्र काम में जिसे करना उसके लिए सम्भव था जुट गया। वह काम था उक्राइनी गीत गाना।

देरियुचेन्को अभी युवा था। सारा बदन घुंघराले बालों से भरा हुआ—ऐसा मालूम होता था जैसे उक्राइन की जातीय पोशाक में चिड़ी का बादशाह चला आ रहा हो। उसकी मूँछें घुंघराले थीं, सिर के बाल घुंघराले थे और उसके कामदार उक्राइनी ब्लाउज़ के सीधे कालर के इर्द-गिर्द बंधी उसकी नेकटाई भी घुंघराली थी। और ऐसे आदमी को—ख़ुदा ख़ैर करे—भेजा गया था। ऐसे काम करने के लिए जिनका महान उक्राइन के लक्ष्य से कोई सम्बंध नहीं था: कोलोनी में ड्यूटी पर जाना, सूअरघर का निरीक्षण करने के लिए चक्कर लगाना, काम के लिए आनेवाले मिश्रित दस्तों के आगमन-समय को चैक करना, और काम की ड्यूटी के दिन अन्य लड़कों के साथ काम करना। यह सब उसकी नज़रों में बेतुका और अनावश्यक काम था। सारी कोलोनी उसके लिए जैसे एक बेकार की उपज थी,—दीन-दुनिया की समस्याओं से जिसका क़तई वास्ता नहीं था।

रोदिमचिक भी कोलोनी के लिए उतना ही उपयोगी था जितना कि देरियुचेन्को, बल्कि उससे भी गया-बीता...

रोदिमचिक को इस दुनिया में रहते तीस साल हो चुके थे, और इससे पहले दुनिया-भर के विभागों में वह काम कर चुका था—ख़ुफ़िया पुलिस के विभाग में, सहकारी समितियों में, रेलवे में, और अन्त में अनाथालय के किशोरों को शिक्षित करने के धंधे की ओर उसने रुख़ किया था। उसका चेहरा-मोहरा अजीब था, बरबस किसी प्राचीन, जर्जर, चुरमुर हुए चमड़े के थैले की याद दिलाता था। सिलवट और झुर्रियोंवाला उसका लाल चेहरा, कुछ चपटी और एक ओर को झुकी हुई उसकी नाक, निर्जीव लिज-

बिज झोल की भांति खोपड़ी से ही लगे हुए उस के चपटे कान, वक्रता का ग्राभास लिए उसका जर्जर, ऊबड़-खाबड़ मुँह कितनी ही जगहों पर कटा-फटा मालूम होता था। लगता था जैसे एक लम्बे ग्रर्से तक ग्रौर बुरी तरह उसे रंगता रहा हो।

कोलोनी में ग्राने ग्रौर ग्रपने ग्रापको तथा ग्रपने परिवार को नवीनीकरण किए गए एक घर में जमाने के बाद एक सप्ताह तक तो रोदिमचिक इधर से उधर मंडराता रहा, ग्रौर फिर ग्रचानक ग़ायब हो गया। मेरे लिए वह एक पुर्ज़ा छोड़ गया था कि वह ग्रत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम से जा रहा है। तीन दिन बाद वह एक खेत-गाड़ी में लौटा जिसकी दुम से एक गाय बंधी थी। रोदिमचिक ने लड़कों से कहा कि गाय को हमारी ग्रपनी गायों के साथ रखा जाए। इस ग्रप्रत्याशित घटना ने शेरे तक को ग्राश्चर्य में डाल दिया।

दो दिन ग्रौर बीतने के बाद रोदिमचिक शिकायत लिए हुए मेरे पास ग्राया :

"मुझे ख़याल तक नहीं था कि कर्मचारियों के साथ यहां ऐसा व्यवहार होगा। वे जैसे भूल गए हैं कि पुराने दिन ग्रब नहीं रहे। मुझे ग्रौर मेरे बच्चों को भी दूध पाने का उतना ही ग्रधिकार है जितना कि ग्रन्य किसी को। यह तथ्य कि मैंने इसमें पहलक़दमी दिखाई ग्रौर सरकारी दूध की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा रहा, बल्कि—जैसा कि ग्राप जानते हैं—मैंने भरसक कोशिश की, ग्रपने ग्रल्प साधनों से एक गाय मैंने ख़रीदी ग्रोर ख़ुद उसे कोलोनी में ले ग्राया। यह तथ्य, ग्रगर सोचो तो सराहना करने योग्य है, निन्दा करने योग्य नहीं। लेकिन मेरी गाय के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है? कोलोनी में घास के कितने ही ग्रम्बार लगे हैं। इसके ग्रलावा कोलोनी को घटाए हुए दामों पर मिल से चोकर, भूसी ग्रादि भी मिलती है। फिर भी, ज़रा देखिए न, सभी गायों को चारा मिलता है, लेकिन मेरी गाय फ़ाक़ा करती है, ग्रौर लड़के इतनी बेग्रदबी से जवाब देते हैं। 'मानो ग्रगर हरेक ही ग्रपने पास निजी गाय रखने लगे तो!' वे कहते हैं। ग्रन्य गायों की सफ़ाई होती है, ग्रौर मेरी गाय पांच दिन से बिना सफ़ाई के पड़ी है, एकदम गंद से ग्रटी हुई। शायद इस बात की उम्मीद की जा रही है कि ख़ुद मेरी पत्नी जाकर गाय की सफ़ाई करेगी। वह यह भी कर सकती है, लेकिन लड़के फावड़ा या

पंजा उसे नहीं देते, और न ही बिस्तरा लगाने के लिए उसे पुआल देते हैं। अगर पुआल जैसी मामूली चीज़ के लिए भी इतनी गड़बड़ की जाती है तो मैं कहे देता हूं कि मुझे कोई निश्चयात्मक कार्रवाई करनी पड़ेगी। माना कि अब मैं पार्टी में नहीं हूं, लेकिन इससे क्या! मैं भी कभी पार्टी में था, और अपनी गाय के लिए इससे ज़्यादा अच्छे व्यवहार का मैं हक़ रखता हूं।"

मैं खोया-सा इस आदमी की ओर ताक रहा था, इस बात पर अचरज करते हुए कि ऐसे आदमी से व्यवहार करने का भी क्या कोई तरीक़ा हो सकता है।

"माफ़ करना, साथी रोदिमचिक, मैं कुछ ठीक से समझा नहीं," मैंने कहना शुरू किया। "तुम्हारी वह गाय व्यक्तिगत सम्पत्ति मात्र है, अन्य सब के साथ उसे कैसे रखा जा सकता है? और फिर, तुम अध्यापक हो, ठीक है न? अब तुम्हीं देखो कि अपने शिष्यों की नज़रों में तुम अपने-आपको कैसी स्थिति में डाल रहे हो?"

"सो क्यों? मैं मुफ़्त तो किसी चीज़ के लिए कह नहीं रहा हूं," रोदिमचिक बलबलाया। "चारे तथा लड़कों के श्रम के लिए पैसा देने को मैं पूर्णतया तैयार हूं, अगर यह सब ज़रूरत से ज़्यादा महंगा न हो तो। और मैंने अपने मुंह से कभी एक शब्द तक नहीं निकाला जब मेरे बच्चे का गड़ुलना चुरा लिया गया। निश्चय ही लड़कों में से ही किसी–ने उस पर हाथ साफ़ किया था?"

मैंने उसे शेरे के पास भेज दिया।

शेरे अब संभल गया था। रोदिमचिक की गाय को उसने गोशाले से बाहर निकाल दिया। कुछ ही दिनों में वह एकदम ग़ायब हो गई उसके मालिक ने उसे बेच दिया था।

दो सप्ताह गुज़र गए। एक आम सभा में वोलोख़ोव ने सवाल उठाया:

"इसका मतलब क्या है? कोलोनी के साग भाजी के बग़ीचे में रोदिमचिक आलू क्यों खोदता है? हमारी रसोई को तो आलू नसीब नहीं होते, और रोदिमचिक उन्हें अपने लिए खोद रहा है? क्या अधिकार है उसे इसका?"

अन्य लड़कों ने वोलोख़ोव का समर्थन किया। ज़दोरोव ने कहा:

"आलुओं की ऐसी कोई बड़ी बात नहीं है। उसके पास परिवार है,–

अगर वह उपयुक्त जगह पूछ लेता तो ऐसा कोई नहीं था जो आलुओं के लिए उसे मनाकर देता। लेकिन सवाल यह है कि इस रोदिमचिक का, उसके सम्पूर्ण रूप में, फ़ायदा क्या है? दिन-भर वह अपने कमरे में बैठा रहता है या गांव को भाग जाता है। बच्चों में गंदगी फैलती है। यह बात कभी उन्हें नज़र नहीं आती कि वे जंगलियों की भांति रहते हैं। उसके पास रिपोर्ट पर दस्तख़त कराने जाओ तो वह मिलता नहीं। पता चलता है कि वह सो रहा है, या भोजन कर रहा है, या व्यस्त है। सो बैठकर इन्तज़ार करो। आख़िर क्या फ़ायदा है उसका?"

"हम जानते हैं कि शिक्षक को कैसे काम करना चाहिए," तारानेत्स ने बीच में कहा। "लेकिन वह रोदिमचिक! काम के दिन मिश्रित दस्ते के साथ वह जाता है, हाथ में कुदाली लिए आध घंटे तक ऐसे ही खड़ा रहता है, और इसके बाद कहता है: 'ओह कुछ देर के लिए मुझे जाना पड़ेगा!' और बस, उसका काम ख़त्म! दो घंटे बाद वह गांव की ओर से आता दिखाई देता है, एक थैले में अपने परिवार के लिए कोई चीज़ लिए हुए।"

मैंने लड़कों से वायदा किया कि इस बारे में कुछ किया जाएगा। अगले दिन मैंने रोदिमचिक को अपने दफ़्तर में बुलाया। सांझ हो चली थी। जब हम दोनों अकेले रह गए तो मैंने उसे झाड़ना शुरू किया। लेकिन उसने बीच में ही तुरन्त मुझे रोक दिया और विक्षोभ के मारे क़रीब-क़रीब झाग उगलता हुआ बोला:

"मैं जानता हूं कि यह किसकी कारस्तानी है, मैं ख़ूब अच्छी तरह जानता हूं कि कौन टंगड़ी मारने की कोशिश कर रहा है यह सब उस जर्मन की करतूत है। अच्छा हो कि आप, अन्तोन सेम्योनोविच, यह मालूम करें कि वह किस कैंडे का जीव है। मैं तो... मैं पैसा तक देने को तैयार था, फिर भी अपनी गाय के लिए मुझे भूसा नहीं मिला। मैंने अपनी गाय बेच डाली, मेरे बच्चे बिना दूध के रहते हैं। इसके लिए गांव की धूल तक मुझे छाननी पड़ती है। और अब ज़रा आप पूछकर देखिए कि शेरे अपने "माई-लार्ड' को क्या खिलाता है! क्या खिलाता है वह उसे, कुछ जानते हैं आप? नहीं, आप नहीं जानते। वह मुर्ग़ियों के लिए मंगाई गई जुआर लेता है और 'माई-लार्ड' के लिए उसका दलिया तैयार करता है। जुआर का दलिया! वह ख़ुद दलिया बनाता है और अपने

कुत्ते को खाने के लिए देता है और तुर्रा यह कि एक पाई तक अदा नहीं करता। उसका कुत्ता कोलोनी की जुआर खाता है, चोरी से, मुफ़्त में, केवल इसलिए कि वह आदमी अपने कृषिविद होने और आपके विश्वास का फ़ायदा उठाता है।"

"यह सब तुम कैसे कहते हो!" मैंने पूछा।

"ओह, बिना आधार के मैं कभी ऐसी बात मुंह से नहीं निकालता। मैं उस तरह का आदमी नहीं हूं। आप ज़रा यह देखिए..."

भीतर की जेब से निकालकर एक छोटा-सा पैकेट उसने खोला। पैकेट में मटमैली सफ़ेद-सी कोई चीज़ थी, एक अजीब-सा मलीदा।

"यह क्या है?" मैंने अचरज से पूछा।

"मैंने जो कहा उसे यह सब सिद्ध कर देगी। यह 'माई-लार्ड' की विष्ठा है। उसकी विष्ठा समझे आप? मैं भी पीछे लगा ही रहा, जब तक कि यह मुझे मिल न गई। क्या आप देखते हैं कि क्या चीज़ उसकी विष्ठा में निकलती है? असली जुआर! और क्या आप समझते हैं कि वह इसे ख़रीदता है? निश्चय ही नहीं, वह तो बस भण्डारे में से उठा लेता है।"

"इधर देखो, रोदिमचिक," मैंने कहा। "अच्छा हो कि तुम कोलोनी छोड़ दो!"

"छोड़ दो—क्या मतलब है आपका?"

"जितनी भी जल्दी हो सके, छोड़ दो। आज के आर्डर में मैं तुम्हें बर्ख़ास्त कर दूंगा। सो स्वेच्छा से त्यागपत्र के लिए एक अर्ज़ी दे दो। यही सबसे अच्छा होगा।"

"लेकिन मैं मामलों को इस भांति नहीं छोड़ सकता।"

"अच्छी बात है। न छोड़ो। लेकिन मैं तुम्हें बर्ख़ास्त करने जा रहा हूं"

रोदिमचिक चला गया। और उसने 'मामलों को इसी भांति छोड़ा'। तीन दिन के भीतर वह चला गया।

नयी कोलोनी के बारे में क्या किया जाए? त्रेपके निवासी कोलोनी के उपयुक्त कुछ अच्छे जीव सिद्ध नहीं हो रहे थे, और यह एक ऐसी चीज़ थी जिसे और अधिक सहन नहीं किया जा सकता था। रह-रहकर, जब तब, उनमें लड़ाइयां फूट पड़तीं, और वे हमेशा एक दूसरे की चोरी करते रहते—जो कोलोनी में गड़बड़ी के प्रत्यक्ष चिह्न थे।

इस मनहूस काम के लिए लोगों को कहां से लाया जाए? ऐसे जो सचमुच मानवीय जीव हों। यह कोई आसान काम तो है नहीं।

२६. कोमसोमोल पर तूफ़ानी धावा

१९२३ में गोर्की कोलोनी के नियमित दस्तों ने एक नये सुदृढ़ दुर्ग को सर किया जिसे पाने के लिए–भले ही यह अजीब सा मालूम हो–तूफ़ानी धावे करने पड़े। यह दुर्ग था–कोमसोमोल।

गोर्की कोलोनी कभी भी एक बंद संस्था नहीं रही। १९२१ से इर्द-गिर्द की तथाकथित आबादी के साथ हमारे अत्यन्त विविधतापूर्ण तथा व्यापक सम्बन्ध चलते आ रहे थे। हमारे निकटतम पड़ोसी –सामाजिक तथा ऐतिहासिक दोनों ही कारणों से–हमारे दुश्मन थे जिनके ख़िलाफ़ हम अपनी भरसक सामर्थ्य से संघर्ष करते थे, लेकिन जिनके साथ–भला हो वर्कशापों का–हमारे आर्थिक सम्बन्ध भी चलते थे। लेकिन कोलोनी के ये आर्थिक सम्बन्ध शत्रु-पक्ष की हदों से कहीं ज़्यादा व्यापक क्षेत्रों में फैले थे। कारण कि हम काफ़ी व्यापक वृत्त में गांवों के लिए काम करते थे, और अपनी औद्योगिक सेवाओं के द्वारा स्तोरोजेवोय, माचुखी, ब्रिगादिरोव्का जैसे सुदूर गांवों तक में हम पहुंच गए थे। २९२३ तक अपने निकटतम बड़े गांवों–गोंचारोव्का, पिरोगोव्का, आंद्रुशेव्का, जबीरालोव्का–से भी हमने सम्बन्ध क़ायम कर लिये, और हमारे सम्बन्ध केवल आर्थिक सम्बन्ध नहीं थे। हमारे सिंदबाद जहाज़ियों के धावे, शुरू-शुरू में, सौन्दर्यानुभूति कोटि के लक्ष्यों से अनुप्रेरित होते थे–जैसे स्थानीय नारी-सौन्दर्य का अवलोकन करना, या बाल संवारने की कला, बदन, ठाठ-बाट और मुसकानों के क्षेत्र में अपनी निजी उपलब्धियों का प्रदर्शन करना। गांव-रूपी जीवन के सागर में उनके इन पहले अभियानों के फलस्वरूप भी सामाजिक सम्बन्धों का विस्तार काफ़ी बढ़ गया था। और कोलोनी के सदस्यों का कोमसोमोल सदस्यों से पहला परिचय भी ठीक यहीं हुआ था।

इन गांवों में कोमसोमोल की शक्तियां, गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त कमज़ोर थीं। ख़ुद गांव के कोमसोमोल भी मुख्यत: लड़कियों और घरेलू दारू में दिलचस्पी रखते थे। उनका घातक असर हमारे लड़कों पर भी जाने-अनजाने हावी हो रहा था। जब नयी कोलोनी

के सामने कोलोमाक नदी के दाहिने तट पर लेनिन कृषि ग्रार्टेल का संयोजन शुरू हुग्रा ग्रनायास ही हमारी ग्राम-सोवियत तथा गांव के समूचे दल की शत्रुता उसके सिर पर मंडराने लगी। कोमसोमोल की पांतों में लड़ाकू भावना का हमें पता चला ग्रौर ग्रार्टेल के युवा सदस्यों से मित्रता की शुरुग्रात हो गई।

हमारे लड़के, नये ग्रार्टेल के तमाम मामलों से—उनकी छोटी-से-छोटी बातों तक से—पूर्णतया परिचित थे। वे उन तमाम कठिनाइयों से भी परिचित थे जिनका कि संयोजकों को उसे खड़ा करने में सामना करना पड़ रहा था। सर्वप्रथम तो यह कि ग्रार्टेल ने कुलकों के प्रदेशों पर जबर्दस्त ग्राघात किया था, ग्रौर इस प्रकार गांव के सदस्यों के संयुक्त तथा वहशियाना प्रतिरोध को उकसा दिया था। ग्रार्टेल ने सहज ही ग्रपनी विजय नहीं प्राप्त की थी।

उस समय गांव के मालिक एक भारी शक्ति बने हुए थे ग्रोर शहर में भी ग्रपनी कुछ ज़ोर रखते थे। तत्वतः उनकी कुत्सक प्रकृति, कारण चाहे जो हो, शहर के ग्रनेक ग्रधिकारियों के लिए एक रहस्य थी। इस संघर्ष मे शहर के कार्यालय युद्ध का मुख्य क्षेत्र थे, ग्रौर क़लम युद्ध का मुख्य ग्रस्त्र। सो कोलोनी के सदस्य युद्ध में कोई सीधा हिस्सा नहीं ले सकते थे। चकों का मामला तय हो जाने के बाद जब जांच-पड़ताल का ग्रत्यन्त पेचीदा सिलसिला शुरू हुग्रा तब हमारे ग्रपने ग्रौर ग्रार्टेल दोनों जगहों के लड़कों को दिलचस्पी के लिए काफ़ी काम निकल ग्राया। एक काम के दौरान सम्पर्क ग्रौर भी घनिष्ठ हो गए।

हमारे वयस्क लड़कों की ग्रपेक्षा निम्न बौद्धिक स्तर के होने के कारण कोमसोमोल ग्रार्टेल में ग्रग्रणी भूमिका नहीं निभा पाते थे। स्कूली शिक्षा हमारे लड़कों के लिए एक भारी देन सिद्ध हुई ग्रौर उसने उनकी राजनीतिक चेतना को ख़ूब गहरा बना दिया था। कोलोनी के सदस्य ग्रब ग्रपने ग्रापको गर्व के साथ सर्वहारा ग्रनुभव करने लगे थे, ग्रोर ग्रपने तथा गांव के किशोरों की स्थिति के भेद को पूर्णतया समझते थे। खेतों में गहरी ग्रौर बहुधा कठिन मेहनत उनके इस गहरे विश्वास को नहीं डिगा सकी थी कि भविष्य में उन्हें सर्वथा भिन्न कार्यक्षेत्र में प्रवेश करना है।

उनमें जो सबसे वयस्क थे वे थोड़े-बहुत विस्तार के साथ इस बात का वर्णन तक करने लगे थे कि ग्रपने भविष्य से किस चीज़ की वे ग्राशा करते

हैं, और यह कि वे क्या बनना चाहते हैं। और उनके इन सपनों को टालने में गांव की नहीं, बल्कि शहर की युवा शक्तियां अग्रणी भूमिका अदा करती थीं।

रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर भारी इंजन वर्कशाप स्थित थी। हमारे लड़कों को वे मूल्यवान व्यक्तियों तथा पदार्थों का अत्यन्त प्रिय संग्रह मालूम होती थीं। इंजन वर्कशाप शानदार क्रान्तिकारी अतीत की धनी थी और सशक्त पार्टी सामूहिकता वहां मौजूद थी। लड़के इन वर्कशापों का ऐसे सपना देखते थे जैसे वे अद्भुत चीज़ हों—परियों के महल की भांति। इस महल के भीतर 'नीले पक्षी' के जगमग करते दस्तों से भी ज़्यादा शानदार चीज़ थी—क्रेनों का बलशाली संचरण, केन्द्रित शक्ति से युक्त भापचालित हथौड़े, पेचपेंचीले टरेट लेथ जो पेचीदा दिमाग़ी यंत्र से लैस मालूम होते थे। महल में लोग—मालिक—इधर से उधर आ-जा रहे थे, कुलीन राजकुमारों की भांति, बहुमूल्य कपड़े पहने, चिकनाई से लक़दक़ करते, और लोहे और इस्पात की सुगंध से महकते। वे पवित्र सतहों को, सिलण्डरों और कोनों को, महल की सारी सम्पदा को छू सकते थे। उन्हें इसका अधिकार था। और वे ख़ुद भी ख़ास तरह के लोग थे। कंघी से संवारी हुई लाल दाढ़ियां और गांव के निवासियों के मोटे, चिकने-चुपड़े चेहरे उनमें नहीं दिखाई देते थे। उनके चेहरों पर बुद्धिमानी और विलक्षणता की झलक थी। ज्ञान और शक्ति से वे चमकते थे—मशीनों और इंजनों पर अपने प्रभुत्व, और स्विचों, टेकों, लीवरों तथा स्टीयरिंग चक्कों को इस्तेमाल करने के तमाम पेचीदा नियमों के ज्ञान की सम्पन्नता से। इन लोगों में कितने ही कोमसोमोल थे जिनका नया और अद्भुत अन्दाज़ बरबस हृदय को मुग्ध कर लेता था। विश्वासजन्य प्रफुल्लता के यहां हमें दर्शन होते थे, मज़दूर की सबल, स्वस्थ वाणी हमें यहां सुनाई देती थी।

इंजन वर्कशाप! १६२२ में हमारे कितने ही लड़कों की आकांक्षाओं का चरम रूप! और उनसे भी अधिक शानदार मानवीय कृतियों की भनक उनके कानों में पड़ी—ख़ारकोव और लेनिनग्राद प्लांटों की, और पुतिलोव तथा सोरमोवो वर्क्स जैसे उन सभी कारख़ानों की जिनके बारे में अनेक कथाएं प्रचलित थीं। ओह, यह दुनिया अद्भुत चीज़ों से भरी है, और देहात की कोलोनी के एक तुच्छ सदस्य के सपने भला उतनी

ऊंची उड़ान कैसे भर सकते हैं। लेकिन, क्रमशः, इंजन वर्कशाप के मजदूरों के साथ हमारी घनिष्ठता बढ़ चली। उन्हें ख़ुद अपनी आंखों से देखने के अवसर हमें प्राप्त थे, अपनी इन्द्रियों के द्वारा उनके आकर्षणों को हम अनुभव कर सकते थे, बल्कि स्पर्श तक कर सकते थे।

पहले वे ही हमारे पास आये, और उनमें भी उनके कोमसोमोल हमारे पास आये। रविवार का वह दिन था। करावानोव भागा हुआ मेरे दफ़्तर में आया। वह चिल्लाकर कह रहा था:

"इंजन वर्कशाप के कोमसोमोल आय हैं! कितनी शानदार बात है यह! .."

कोमसोमोल कोलोनी की तारीफ़ में बहुत कुछ सुन चुके थे और हमसे परिचित होने के लिए आये थे। कुल मिलाकर वे सात थे। लड़कों की एक घनी भीड़, चाव के साथ, उनके इर्द-गिर्द जमा हो गई, और उसने घनिष्ठतम अपनेपन के साथ सारा दिन उनके साथ गुज़ार दिया—उन्हें नयी कोलोनी दिखाई, उन्हें अपने घोड़े, औज़ार, सूअर, शेरे और पौधाघर दिखाया—अपने अस्तित्व के अन्तर्तम में इंजन वर्कशाप की तुलना में अपनी सम्पदा के नगण्य होने का अनुभव करते हुए। और यह देखकर उन्हें भारी अचरज हुआ कि शेखी दिखाने या अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने के स्थान पर कोमसोमोल सचमुच प्रभावित होते मालूम हुए, जो कुछ उन्होंने देखा उससे किसी क़दर वे अभिभूत भी हो उठे।

शहर लौटने से पहले कोमसोमोल बातचीत करने के लिए मेरे पास आए। वे यह जानना चाहते थे कि कोलोनी में कोई कोमसोमोल संगठन क्यों नहीं है। मैंने उन्हें संक्षेप में इस मामले के दुःखद इतिहास की रूप-रेखा बता दी। हम १९२२ से ही कोलोनी में कोमसोमोल की एक धुरी स्थापित करने की कोशिश करते आ रहे थे, लेकिन कोमसोमोल की स्थानीय शक्तियों ने इसका कड़ा विरोध किया—हमारी कोलोनी बाल-अपराधियों के लिए है, उसमें कोमसोमोल की स्थापना कैसे हो सकती है? हमारे तमाम अनुरोधों, तर्कों और मनुहारों का एक यही जवाब मिलता था—हमारे सदस्य बाल-अपराधी हैं। उन्हें कोलोनी से मुक्त कीजिये, इस बात की पुष्टि कीजिये कि वे सुधर गये हैं, केवल तभी कोमसोमोल में व्यक्तिगत लड़कों की स्वीकृति के बारे में बात की जा सकती है।

इंजन वर्कशाप के मजदूरों ने हमारी स्थिति के प्रति सहानुभूति प्रकट

की और वायदा किया कि शहर कोमसोमोल संगठन में हमारे उद्देश्य का वे समर्थन करेंगे। और ठीक अगले रविवार को ही उनमें से एक फिर कोलोनी में आया, लेकिन केवल निरुत्साहपूर्ण ख़बर देने के लिए। प्रांत और शहर की दोनों समितियों का कहना था: "बिलकुल ठीक–कोलोनी में कोमसोमोल की स्थापना तब तक कैसे हो सकती है जब तक कि इतनी संख्या में माख़नो के भूतपूर्व अनुयायी, भूतपूर्व अपराधी तथा अन्य संदिग्ध चरित्र के जीव उनके बीच मौजूद हैं?"

मैंने उन्हें समझाया कि माख़नो के अनुयायी हमारे यहां बहुत ही कम हैं, और यह कि उन्हें भी गम्भीरता के साथ इस रूप में मुश्किल से ही पेश किया जा सकता है। अन्त में, मैंने उन्हें बताया कि 'सुधरे हुए' शब्द का प्रयोग उतने औपचारिक अर्थ में नहीं किया जा सकता जैसा कि शहर में किया जाता है। हमारे लिए किसी का 'सुधार करना' ही काफ़ी नहीं है, बल्कि हमें उसे नयी लाइनों पर पुनर्शिक्षित भी करना होता है,–अर्थात इस तरह से कि वह केवल समाज का एक आपत्तिहीन सदस्य ही नहीं, बल्कि नये युग की एक सक्रिय कर्मी भी बन सके। और इस रूप में किसी को कैसे शिक्षित किया जा सकता है अगर–उस हालत में जबकि वह कोमसोमोल बनने की आकांक्षा रखता है, लेकिन उसे इसकी मंज़ूरी नहीं दी जाती और हर कोई पुराने–और अन्ततः लड़कपन के–अपराधों को उसके ख़िलाफ़ उछालना शुरू कर देता है। इंजन वर्कशाप के मज़दूर ने मुझसे सहमति भी प्रकट की और असहमति भी। सीमा-रेखा खींचने का सवाल उसे अत्यन्त कठिन मालूम हुआ। कोलोनी के किसी एक सदस्य को कब कोमसोमोल में लिया जा सकता है, और कब नहीं? और इस सवाल का निर्णय कौन करेगा?

"कौन क्या? इसका निर्णय, निस्सन्देह, कोलोनी का कोमसोमोल संगठन ही करेगा!"

इंजन वर्कशाप के कोमसोमोल अक्सर हम लोगों से मिलने आते, लेकिन अन्त में मैंने अनुभव किया कि हममें उनकी दिलचस्पी एकदम स्वस्थ हो, ऐसा नहीं है। सर्वप्रथम वे हमें अपराधी समझते थे। अत्यन्त कौतुक के साथ वे लड़कों के अतीत में डुबकी लगाने की कोशिश करते थे और तत्परता के साथ हमारी सफलताओं को स्वीकार करते थे, लेकिन अपनी इस एकमात्र टेक को कभी न छोड़ते थे। कहते थे–जो हो, आपके लड़के

फिर भी साधारण नहीं कहे जा सकते। व्यक्तिगत कोमसोमोलों को अपने मत के पक्ष में लाने में मुझे बेहद कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

इस मामले में कोलोनी की स्थापना के ठीक पहले ही दिन से अपनी स्थिति से हम जौ-भर भी नहीं डिगे थे। मैं मानता था कि बाल-अपराधियों को पुन: शिक्षित करने का मुख्य तरीक़ा अतीत की, ख़ास-तौर से अतीत के अपराधों की पूर्ण उपेक्षा पर आधारित होना चाहिए। इस तरीक़े को उसके सम्पूर्ण रूप में अमल में लाना किसी मानी में भी आसान नहीं था। कारण अन्य चीज़ों के साथ-साथ मुझे ख़ुद अपनी प्रवृत्तियों से भी लड़ना पड़ता था। यह जानने की इच्छा कि लड़के को क्यों कोलोनी में भेजा गया है, वास्तव में उसने क्या किया है, अनजाने ही मेरे हृदय में सरसराने लगती थी। शिक्षकों की बुद्धि, आम तौर से, उन दिनों चिकित्सा-जगत की नक़ल करती थी। उसका आदर्श पुरातन था: रोग का इलाज करने के लिए पहले उसे जानना ज़रूरी है। यह तर्क कभी-कभी मुझे भी अपने मोहक जाल में पकड़ लेता था, मेरे सहयोगियों तथा शिक्षा विभाग की बात तो छोड़ ही दीजिये।

बाल-अपराधियों के लिए निर्मित आयोग हमारे छात्रों के व्यक्तिगत रिकार्ड हमारे पास भेजा करता था। जिनमें विभिन्न पूछ-ताछों, स्तब्धकारी आमने-सामने के मुक़ाबिलों और रोग का अध्ययन करने में तथाकथित मदद देनेवाली ऐसी ही अन्य सारी ख़ुराफ़ात बारीकी के साथ दर्ज रहती थी।

कोलोनी में अपने सभी सहयोगियों को अपना पक्षधर बनाने में मैं सफल हो गया था और बहुत पहले, १९२३ में ही मैंने आयोग से अनुरोध किया था कि भविष्य में मेरे पास और कोई व्यक्तिगत रिकार्ड न भेजे। हमने पूरी सच्चाई से अपने छात्रों के बीते हुए अपराधों में दिलचस्पी लेना बंद कर दिया था। देखते-देखते ख़ुद छात्रों ने भी उन्हें भलना शुरू कर दिया। यह देखकर मुझे बेहद ख़ुशी होती कि अतीतोन्मुखी दिलचस्पी अपने सम्पूर्ण रूप में किस प्रकार कोलोनी से क्रमश: ग़ायब हो रही है। उन दिनों की याद मात्र भी जो कुत्सित, रोगग्रस्त और हमारे लिए ग़ैर थे, विलीन हो गई है! इस दिशा में जैसे हम अपने आदर्श के छोरों को छूने लगे थे—नवागन्तुक तक अपनी करामातों की चर्चा करने में लज्जा का अनुभव करते थे।

ग्रौर तभी ग्रचानक, कोलोनी में एक कोमसोमोल धुरी का संगठन करने जैसे ग्रद्भूत काम के सिलसिले में हमें ग्रपने ग्रतीत को याद करने के लिए बाध्य किया गया ग्रौर वे शब्द जो हमारे लिए इतने घिनौने थे, फिर से उछाले जाने लगे–"पुनः सुधार", "बाल-ग्रपराध", "व्यक्तिगत रिकार्ड"!

कोमसोमोल में शामिल होने की लड़कों की ग्राकांक्षा उस विरोध की बदौलत ग्रौर भी कड़ी पड़ गई, ग्रडिग निश्चय का रूप उसने धारण कर लिया, इसके लिए लड़ने तक को वे तैयार हो गए। तारानेत्स की भांति जिनकी प्रवृत्ति समझौते की थी, उन्होंने एक पेंच सुझाया–जो कोमसोमोल में भर्ती होना चाहते हैं उन्हें एक सर्टीफिकेट दे दिया जाए कि वे सुधर गए हैं, लेकिन उन्हें, निस्सन्देह, कोलोनी में रहने दिया जाए। लेकिन बहुमत इस तरह की चाल चलने के विरुद्ध था। ज़दोरोव विक्षोभ से तमतमा उठा। उसने कहा:

"सो कुछ नहीं। उन्हें भी शायद तुमने देहाती समझ लिया है। हमें किसी को बेवक़ूफ़ बनाने की जरूरत नहीं। कोलोनी में कोमसोमोल धुरी बनाने के लिए हमें काम करना होगा, ग्रौर यह जानना ख़ुद कोमसोमोल का काम है कि कौन उसके योग्य है ग्रौर कौन नहीं।"

ग्रपने उद्देश्य की उपलब्धि की ख़ातिर प्रयास करने के लिए लड़के ग्रक्सर शहर के कोमसोमोल संगठनों में जाते थे, लेकिन कुल मिलाकर उन्हें कोई सफलता नहीं मिलती थी।

१९२३ के जाड़ों में एक ग्रन्य कोमसोमोल संगठन से हमारे मित्रतापूर्ण सम्बन्ध हो गए। बिलकुल संयोग से ही यह हो गया।

एक दिन सांझ के समय मैं ग्रौर ग्रन्तोन लौट रहे थे। 'मेरी' गाड़ी में जुती थी–हृष्ट-पुष्ट ग्रौर लक़दक़! ठीक उस समय जबकि हम पहाड़ी पर से उतर रहे थे, एक ऐसी चीज़ से हमारी मुठभेड़ हुई जो इधर के हमारे इलाक़ों में दिखाई नहीं देती,–एक ऊंट से। ग्रपनी सहज-स्वाभाविक भन्नाहट पर क़ाबू पाने में ग्रसमर्थ 'मेरी' थरथराई पीछे को खिंची, बमों के बीच दुलत्ती झाड़ी ग्रौर ग्रंधाधंध भाग चली। ग्रन्तोन ने गाड़ी के ग्रगले हिस्से में ग्रपनी टांग गड़ाई, लेकिन घोड़ी को रोकने में सफल नहीं हो सका। हमारी गाड़ी में बमों के छोटे होने के दोष ने–यह सच है कि ग्रन्तोन उसकी ग्रोर बहुधा इशारा कर चुका था–ग्रागे

की घटनाओं का क्रम निर्धारित कर दिया और हम उपर्युक्त कोमसोमोल संगठन से जा टकराए। अंधाधुंध गति से दौड़ते हुए 'मेरी' की पिछली टांगें गाड़ी के लोहे के अग्रभाग से टकरा गईं और अब, पूर्णतया आतंकित, भयानक गति से हमें अनिवार्य दुर्घटना की ओर ले चली। अन्तोन और मैं दोनों लगाम पर ज़ोर लगाए थे, लेकिन इससे स्थिति और भी बिगड़ गयी—'मेरी' ने अपना सिर उछाला और अधिकाधिक भयानक रूप धारण करती गई। वह स्थल अब आंखों के सामने था, जबकि कमोबेश रूप में इसका नतीजा अवश्य घातक ही हो सकता था। सड़क के मोड़ पर अपनी गाड़ियों के साथ कुछ किसान अपने घोड़ों को पानी देने के लिए एक सबील के इर्द-गिर्द जमा थे। ऐसा मालूम होता था कि बचाव का अब कोई रास्ता नहीं है। कारण, सड़क रुकी थी। लेकिन, चमत्कार ही इसे कहिए, 'मेरी' पानी पीने की नांद तथा शहर से आए लोगों की गाड़ियों के समूह के बीच से निकल चली। लकड़ी के चरचराने तथा चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ आई, लेकिन तब तक हम काफ़ी दूर निकल चुके थे। पहाड़ी ख़त्म हुई, और चिकनी सीधी सड़क पर हमारी अंधाधुंध गति में कुछ कमी आई। अन्तोन ने पीछे मुड़कर देखा और सिर हिलाते हुए कहा:

"लगता है हमने किसी की गाड़ी को चकनाचूर कर दिया। सो हमें भाग निकलना चाहिए।"

उसने 'मेरी' के ऊपर कोड़ा फहराना शुरू किया जो पूरी तेज़ी से आगे की ओर लपक रही थी, लेकिन मैंने उसकी अति-तत्पर बांह खींची।

"तुम भाग नहीं सकते। देखो न, कैसा फ़ितना उनके पास है!"

और सचमुच, एक शानदार दुलकी घोड़ा, शान्त सबल डगों से धरती को गुंजाता हमारे निकट लपका आ रहा था। उसके पुट्ठों के पीछे गुलाबी फ़ीतों से लैस एक आदमी अडिग नजर से असफल भगोड़ों का पीछा कर रहा था। हम रुक गए। गुलाबी फ़ीतों से युक्त वह आदमी कोचवान के कंधों को थामे अपनी गाड़ी में सीधा खड़ा था। यह इसलिए कि बैठने की वहां गुंजाइश भी नहीं थी। पिछली सीट और गाड़ी की पीठ ख़ुद अपने आप में कांपती हुई आल-जाल बनी हुई थी। धूल कीचड़ में सने तथा चिथड़ा हुए गाड़ी की साज-सज्जा के विविध हिस्से उसके पीछे सड़क पर लिथड़ रहे थे।

"चलो हमारे साथ!" उस सैनिक आदमी ने चिल्लाकर कहा।

हमने उसके आदेश का पालन किया। अन्तोन प्रसन्न था कि मुसीबतों से भरी हमारी यात्रा ने यह भला-चंगा मोड़ लिया। दस मिनट के भीतर हमने अपने आपको ग. प. ऊ. के कमाण्डेण्ट के दफ़्तर में खड़े देखा। केवल तभी अन्तोन के चेहरे पर घबराहट भरे आश्चर्य के चिन्ह प्रकट हुए।

"ज़रा देखिये तो, उसने अचरज से कहा। हम यहां ग. प. ऊ. में आ पहुंचे हैं।

लाल फ़ीतेवाले लोगों से हम घिरे थे। उनमें से एक ने मुझपर चिल्लाना शुरू किया:

"सो तो स्वाभाविक है—गाड़ीवान की जगह एक निरे छोकरे को बैठा रखा है—उससे भला घोड़े को रोके रखने की कैसे आशा की जा सकती है? इसके लिए ख़ुद तुम्हें जवाबदेही करनी होगी।"

अन्तोन लांछना से बल खा रहा था। उसकी आंखों में आंसू उमड़ रहे थे। अपने अपमानकर्त्ता की ओर सिर हिलाते हुए उसने कहा:

"निरा छोकरा, ख़ूब! जैसे आपने ऊंटों को सड़क पर छुट्टा घूमने नहीं दिया? कोई ठिकाना है, हर जगह वहशी ही वहशी नज़र आते हैं। भला घोड़ी यह सब कैसे बरदाश्त कर सकती थी?"

"वहशी कौन?"

"वही ऊंट?"

लाल फ़ीते हंसी से खिल गए।

"तुम कहां रहते हो?"

"गोर्की कोलोनी में," मैंने जवाब में कहा।

"ओह, तो ये गोर्की कोलोनी के जीव हैं। और तुम कौन हो—संचालक? भई आज ख़ूब बढ़िया मछली हमारे हाथ लगी है!" एक युवा आदमी ने हंसते और अपने इर्द-गिर्द के लोगों को पुकारते हुए कहा। वह हमारी ओर इस तरह इशारा कर रहा था जैसे हम मन-चहेते मेहमान हों।

हमारे चारों ओर एक भीड़ जमा हो गई। वे ख़ुद अपने कोचवान को चिढ़ा रहे थे और अन्तोन पर कोलोनी के बारे में सवालों की बौछार कर रहे थे।

"बहुत दिनों से हम कोलोनी में आने की सोच रहे थे। कहते हैं कि

तुम लोग पूरे लड़ाकू वहां जमा हो। हम आएंगे और रविवार को तुम लोगों से मिलेंगे।"

तभी सप्लाई-मैनेजर वहां आ पहुँचा और ग़ुस्से से भनभनाता एक तरह का बयान-सा तैयार करने लगा। लेकिन सभी ने चिल्लाकर उसे ठंडा कर दिया :

"अपने इस लाल फ़ीते को संभालकर रखो! किस लिए यह सब लिख रहे हो?"

"किस लिए क्या? कुछ मालूम भी है कि इन्होंने गाड़ी का क्या हाल कर डाला है? इन्हें ही अब उसकी मरम्मत करनी पड़ेगी।"

"मरम्मत तो ये तुम्हारे बयान लिखने के बिना भी कर देंगे। क्यों, कर दोगे न? हां तो हमें अपनी कोलोनी के बारे में बताओ। कहते हैं कि तुम्हारे यहां कोई हवालात तक नहीं है?"

"हवालात, —सो किस लिए? क्या तुम्हारे यहां है?" अन्तोन ने पूछा।

एक बार फिर सब हंसी में बह चले।

"निश्चय ही हम रविवार को तुम्हारे यहां आएंगे। मरम्मत के लिए गाड़ी भी अपने साथ लेते आएंगे।"

"और रविवार तक सवारी के लिए क्या होगा?" सप्लाई-मैनेजर ने चमककर कहा।

लेकिन मैंने उसे शान्त कर दिया।

"हमारे पास एक और गाड़ी है," मैंने उसे आश्वस्त किया।

"किसी को भेज दो। ले आएगा।"

और इस प्रकार हमारी कोलोनी को कुछ और अच्छे मित्रों का लाभ हो गया। रविवार के दिन विशेष सुरक्षा-आयोग कोमसोमोल हमारी कोलोनी में आए, और उस बेकार सवाल पर एक बार फिर बहस छिड़ गई—यह कि हमारी कोलोनी के सदस्य कोमसोमोल क्यों नहीं बन जाते? विशेष सुरक्षा-आयोग के लोगों ने इस सवाल पर एक मत से हमारा पक्ष लिया।

"आख़िर क्या मतलब है उनका?" उन्होंने मुझसे कहा। "अपराधी—ख़ूब! एकदम अपराध, उन्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए! और वे अपने आप को गम्भीर लोग कहते हैं। हम इस मामले को उठाएंगे;—ख़ारकोव में, अगर यहां कुछ पल्ले नहीं पडा तो!"

उन दिनों हमारी कोलोनी को, बाल-अपराधियों की एक आदर्श संस्था के रूप में, सीधे शिक्षा की उक्राइनी जन कमिसरियट के अधीन कर दिया गया था। शिक्षा की जन-कमिसरियट के इन्स्पेक्टरों ने हमारे यहां आना शुरू किया। ये उन छिछले, चरबी-चढ़े कूपमण्डूकों में से नहीं थे जो सामाजिक शिक्षा को एक तरह का भावना-मूलक समारोह समझते हैं।

ख़ारकोव के लोग सामाजिक शिक्षा को किशोर आत्माओं के प्रस्फुटन, व्यक्ति के अधिकार और इसी तरह के अन्य काव्यमय शब्दों की नुमाइश नहीं मानते थे। वे संगठन के नय रूपों तथा नये रवैयों की खोज में थे। उनमें सबसे अच्छी बात यह थी कि वे फास्ट की भांति अभिनय नहीं करते थे—जैसे परमानन्द के एक क्षण की खोज में वे जुटे हों। बल्कि वे हमारे साथ मित्रतापूर्ण समानता का व्यवहार करते थे, नये की खोज में रहते थे और नवीनता का एक कण भी मिल जाने पर ख़ुशी प्रकट करते थे।

कोमसोमोल सम्बन्धी हमारी गड़बड़ियों के बारे में सुनकर ख़ारकोव के लोगों ने भारी आश्चर्य प्रकट किया।

"तो क्या सचमुच तुम लोग बिना कोमसोमोल-धुरी के ही काम कर रहे हो? तुम्हें उसका संयोजन करने की इजाज़त नहीं? कौन है वह जो ऐसा कहता है?"

शाम को वे वयस्क लड़कों के साथ हो जाते, और दस्तों में खड़े हुए सहानुभूतिपूर्ण हुंकारों का आदान-प्रदान करते।

शिक्षा के जन-कमिसरियट तथा शहर में हमारे मित्रों के आवेदनों की बदौलत उक्राइनी कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति में बिजली की गति से यह सवाल हल हो गया, और १९२३ की गर्मियों में तिख़ोन नेस्तोरोविच कोवाल को राजनीतिक निर्देशक नियुक्त कर दिया गया।

तिख़ोन नेस्तोरोविच किसान-वंश से आया था। उसके जीवन के चौबीस साल अनेक दिलचस्प घटनाओं से भरे थे। मुख्यतः गांवों में संघर्ष से सम्बन्ध रखती थीं। साथ ही राजनीतिक गतिविधि का काफ़ी सबल भण्डार उसने संचय कर लिया था। इस सबके अलावा वह एक बुद्धिमान आदमी था और उसका भला स्वभाव कभी विचलित नहीं होता था। पहले ही क्षण से हमारी कोलोनी के सदस्यों के साथ उसने ऐसे बातें कीं जैसे वह उनका साथी हो, बिलकुल समानता के स्तर पर। फिर खेत और खलिहान दोनों ही जगह वह काम का माहिर सिद्ध हुआ।

कोलोनी में कोमसोमोल की एक इकाई का संयोजन हो गया। इसमें नौ सदस्य शामिल थे।

२७. उत्सवी अभियान का श्रीगणेश

देरियुचेन्को ने अचानक रूसी बोलना शुरू कर दिया। यह अस्वाभाविक घटना देरियुचेन्को के दरबे में अप्रिय घटनाओं की शृंखला की ही एक कड़ी थी। इस सबकी शुरुआत इस तरह हुई कि देरियुचेन्को की पत्नी को जो, प्रसंगवश, उक्राइनी लक्ष्य के प्रति पूर्णतया उदासीन थी, यह निश्चय हो गया कि उसके बच्चा होने की घड़ी आ पहुंची है। कोस्साक जाति की अपनी शानदार वंश-परम्परा को आगे बढ़ाने की सम्भावना से लाख अभिभूत होने पर भी उसने अभी तक अपना सन्तुलन नहीं डिगने दिया था। विशुद्ध उक्राइनी भाषा में उसने ब्रातचेन्को से घोड़ों की मांग की ताकि दाई लाई जा सके कुछ स्वतः सिद्ध बातों को व्यक्त करने का मोह भला ब्रातचेन्को कैसे छोड़ सकता था– किशोर देरियुचेन्को के जन्म के सिलसिले में उसके लिए, शहर से दाई को बुलाने के लिए और यातायात के नियत कार्यक्रम में कोई व्यवस्था नहीं है, क्योंकि अन्तोन की राय में "दाई हो तब भी वही बात है, न हो तब भी वही बात है।" फिर भी उसने देरियुचेन्को को घोड़े ले जाने दिये। अगले दिन मालम हुआ कि गर्भवती मां को शहर ले जाना ज़रूरी है। अन्तोन इतना बिगड़ा कि उसे वास्तविकता का कुछ भान न रहा, और उसने एलान किया: "मैं तुम्हें घोड़े नहीं ले जाने दूंगा!"

लेकिन शेरे और मैंने कोलोनी में जनमत से पुष्ट होकर, ब्रातचेन्को के व्यवहार की इतनी कड़ी आलोचना की कि उसे झुकना पड़ा। देरियुचेन्को ने अन्तोन की बात को बड़े धीरज के साथ सुना और सदा की भांति अपनी अलंकारिक तथा प्रगल्भ शैली में उसे समझाने की कोशिश की।

"जहां तक मामले के फ़ौरी होने का सम्बन्ध है, साथी ब्रातचेन्को, इसे एक घंटे के लिए भी नहीं टाला जा सकता!" उसने कहा।

अन्तोन ने हिसाबी तथ्यों के अस्त्र से अपने आपको लैस किया, जिनकी विरोध शान्त करने की शक्ति में उसका दृढ़ विश्वास था।

"दाई को लाने के लिए क्या एक जोड़ी घोड़े नहीं भेजे गए? भेजे

गए। दाई को शहर लौटाया गया; एक जोड़ी घोड़े तब दिए... मानो घोड़ों को इस बात की चिन्ता हो कि कोई बच्चा जनने जा रहा है।"

"लेकिन, साथी..."

"बस, रहने दीजिये अपनी यह लेकिन-वेकिन! अगर हर कोई यही करना शुरू कर दे तो!"

अन्तोन ने, जैसे अपना विरोध प्रकट करने के लिए, जच्चा-बच्चा सम्बन्धी इस पचड़े के लिए उन घोड़ों को जो सबसे कम प्रिय और सबसे ज़्यादा सुस्त थे, कहा कि फ़िटन ख़राब हो गई है, और सोरोका कोचवान की गद्दी पर बैठाकर टमटमिया को रवाना कर दिया जो, इस बात का प्रत्यक्ष सूचक था कि यह सवारी मामूली है। लेकिन उस समय जब देरियुचेन्को ने प्रसूता को लाने के लिए घोड़े ले जाने की मांग की, तब... तब तो अन्तोन का जैसे बांध ही टूट गया!

देरियुचेन्को के भाग्य में पिता बनने का सुख देखना नहीं बदा था। उसका पहला नवजात बच्चा, योंही जल्दी में जिसे तारास नाम दे दिया गया था, केवल एक सप्ताह तक जिया, और देरियुचेन्को की शानदार कोस्साक जाति में कोई महत्त्वपूर्ण वृद्धि किए बिना ही प्रसूतिगृह में मर गया। देरियुचेन्को के चेहरे पर, जैसा कि होना चाहिए, शोक का आवरण चढ़ गया, और बोल भी वह कुछ दबे हुए स्वरों में रहा था, लेकिन उसके इस शोक में ऐसी कोई ख़ास वेदना नज़र नहीं आती थी। वह हठपूर्वक उक्राइनी भाषा में ही अपने आपको व्यक्त करता रहा। रहा ब्रातचेन्को, सो किसी भाषा के शब्द उसे नहीं मिल पा रहे थे, इतना गहरा था उसका विक्षोभ और पंगु ग़ुस्सा। उसके होंठों से केवल थोड़ी पकड़ में आनेवाले टूटे-फूटे वाक्यांश निकल रहे थे:

"बेकार घोड़ों को भेजा! ढेरों गाड़ियां मिलती हैं ... कोई जल्दी नहीं थी... आसानी से एक घंटा इन्तज़ार कर सकता था... बच्चे तो लोगों के हमेशा ही होते रहेंगे... और सब बेकार..."

देरियुचेन्को अभागी मां को उसके दरबे में लौटा लाया, और ब्रातचेन्को का सन्ताप कुछ समय के लिए शान्त हो गया। इस जगह—हालांकि इस दुःखद कहानी का अभी क़तई अन्त नहीं होता—लेकिन ब्रातचेन्को उससे अलग हो जाता है। तारास देरियुचेन्को का अभी जन्म भी न पाया था कि कहानी में एक ऐसी विषय-वस्तु का प्रवेश हो गया जो

देखने में अप्रासंगिक मालूम होती थी, लेकिन जो बाद में–अन्ततः–कुछ इतनी अप्रासंगिक नहीं निकली। यह विषय-वस्तु भी देरियुचेन्को के लिए शोकपूर्ण थी।

कोलोनी के तमाम शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को उसी एक स्रोत से पका-पकाया खाना मिलता था जिससे कि छात्रों को। लेकिन इधर कुछ दिनों से, पारिवारिक जीवन की ख़ास आवश्यकताओं का ख़याल करके तथा इस इच्छा से कि रसोई का काम भी थोड़ा हल्का हो जाएगा, मैंने कालीना इवानोविच को इस बात की इजाज़त दे दी थी कि कुछ लोगों को उनका राशन दे दिया जाए। देरियुचेंन्को इन लोगों में से एक था। अब हुआ यह कि एक बार शहर से मैं थोड़ा मक्खन ले आया। मक्खन का परिमाण इतना कम था कि सामूहिक रसोई में वह इने-गिने दिन ही चल सकता था। और यह बात स्वभावतः ज़रा भी किसी के दिमाग़ में नहीं आई कि मक्खन को कच्चे राशन में शामिल किया जा सकता था। देरियुचेन्को को जब यह मालूम हुआ कि यह बहुमूल्य पदार्थ पिछले तीन दिनों से आम भोजन का अंग बना हुआ है तो वह अत्यधिक विचलित हो उठा। कुछ जोड़-तोड़ लगाने के लिए वह उतावला हो उठा, और उसने अपना यह संदेश भेजा कि अनपके राशन पर अपने दावे को वह तिलांजलि देता है, उसे भी आम रसोई में स्थानान्तरित कर दिया जाए। अब दुर्भाग्य यह कि इस रद्दोबदल के अमल में आने से पहले कालीना इवानोविच के भण्डारघर में मक्खन की सारी सप्लाई चुक गई। इस परिस्थिति ने देरियुचेन्को को विक्षोभ से पागल बना दिया, और वह भागा हुआ मेरे पास आया:

"लोगों को बेवक़ूफ़ बनाने का आपको कोई अधिकार नहीं है। मक्खन कहां है?"

"मक्खन?" मैंने दोहराते हुए कहा। "अब वह कहां रखा है, सब खा लिया गया।"

देरियुचेन्को ने लिखकर अपना मन्तव्य दिया कि वह और उसका परिवार कच्चे रूप में अपना राशन लेंगे। बहुत ठीक। लेकिन दो दिन के भीतर ही कालीना इवानोविच फिर कुछ मक्खन ले आया, और इस बार भी उसका परिमाण उतना ही कम था। देरियुचेन्को ने, बत्तीसी कसकर, इस हार को भी सहा, और आम रसोई की ओर पलटकर देखा तक

नहीं। लेकिन जन-शिक्षा विभाग ऐसा मालूम होता था जैसे कोई करवट ले रहा हो—लगता था जैसे जन-शिक्षा-क्षेत्र के कर्मचारी समुदायों तथा उनके छात्रों के लिए मक्खन का क्रमशः समावेश करने की एक लम्बी प्रक्रिया शुरू हो गई हो—कालीना इवानोविच इधर जब शहर से लौटता तो बहुधा गाड़ी के नीचे से एक छोटा-सा भगौना निकालता जिसके ऊपर मखनिया मसलिन का एक साफ़ टुकड़ा ढका होता। बात यहां तक बढ़ी कि कालीना इवानोविच अपने भगौने लेके बिना शहर जाने की सोच तक नहीं सकता था। लेकिन, बहुत बार ऐसा भी होता कि भगौना बिना किसी आवरण के ही लौट आता और तब कालीना इवानोविच, लापरवाही के साथ, टमटमिया के निचले हिस्से में भूसे पर पटकते हुए कहता:

"कितने जाहिल लोग हैं। खाने के लिए ऐसी कोई चीज़ नहीं दे सकते जिसे देखकर जी ख़ुश हो! आख़िर यह है किस लिए—खाने के लिए या सूंघने के लिए हरामख़ोर कहीं के!"

लेकिन देरियुचेन्को से अब और अधिक नहीं रहा गया, और वह फिर आम रसोई में शामिल हो गया। लेकिन वह उन लोगों में से था जो दैनिक जीवन की गतिशीलता का कभी अनुसरण नहीं कर पाते। कोलोनी में पौष्टिक पदार्थों—मक्खन आदि की अडिग वृद्धि-रेखा के महत्त्व को समझना उसके बूते से बाहर था। राजनीतिक चेतना के नाम पर वह क़रीब-क़रीब एकदम कोरा था। वह नहीं जानता था कि एक ऐसी अवस्था भी आती है जबकि परिमाण, अनिवार्यतः गुण में परिणत हो जाता है। और इस परिणति ने उसके परिवार को अचानक आ दबोचा। अचानक इतने प्रचुर परिमाण में हमें मक्खन मिलने लगा कि कच्चे राशन के साथ पन्द्रह दिन के लिए मक्खन जारी करना मेरे लिए सम्भव हो गया। गृहिणियां, दादी-नानियां, बेटियां, सास और गौण महत्त्व के अन्य सम्बन्धी, अपने धीरज के फलस्वरूप, कालीना इवानोविच के भण्डारघर से स्वर्णिम टिकिया अपने घरों को ले जाते, जबकि देरियुचेन्को जो रसोई से मिला मक्खन-चिकनाई का अपना राशन न जाने कब और किस भद्दे ढंग से चट कर चुका था, अब नहीं पा सका। दुःख और दुर्भाग्य के मारे जो उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था, वह पीला पड़ गया। पूर्णतया विचलित, कच्चा राशन लेने की अपनी आकांक्षा का उसने एलान किया। उसकी वेदना गहरी थी, लेकिन फिर भी एक इनसान और कोम्सोमोल की भांति

उसने इसे सहन किया और अपनी मातृभाषा उक्राइनी का दामन उसने नहीं छोड़ा।

मक्खन-पुराण और देरियुचेन्को के तनाव को सुदीर्घ बनाने का विफल प्रयास-घटनाओं का क्रम कुछ ऐसा चला कि साथ आ मिले।

देरियुचेन्को और उसकी पत्नी धीरज के साठ तारास की अपनी शोक-पूर्ण स्मृतियों की जुगाली कर रहे थे कि तभी भाग्य ने तराज़ू के पलड़े को बराबर करने का निश्चय किया और चिर-अपेक्षित ख़ुशी उसके सामने आ मौजूद हुई: कोलोनी की दिन की विज्ञप्ति–आदेश-पत्रक–में 'पिछले पखवाड़े के लिए' अनपका राशन जारी करने के निर्देश प्रकट हुए, और राशन की इस सूची में मक्खन भी शामिल था। सामान लाने का थैला हाथ में लिए, प्रसन्न मुद्रा में देरियुचेन्को कालीना इवानोविच के पास पहुंचा। सूरज चमचमा रहा था। और हर जीवित चीज़ ख़ुशी से परिपूर्ण थी। लेकिन यह स्थिति कुछ ज्यादा देर तक नहीं। आधा घंटे बाद देरि-यूचेन्को भागा हुआ मेरे पास आया। वह काफ़ी विचलित था, और उस-का रोम-रोम आहत मालूम होता था। उसकी कड़ी खोपड़ी पर भाग्य की मार असह्य हो उठी थी, इंजन पूर्णतया पटरी से उतर गया था और उस-की गाड़ी के पहिये, विशुद्ध रूसी में स्लीपरों पर खटपटा रहे थे।

"मेरे लड़के के लिए मक्खन क्यों नहीं दिया गया?"

"किस लड़के के लिए?" चकित हो मैंने पूछा।

"किस लड़के के लिए?–तारास के लिए! यह निरंकुश व्यवहार है, साथी संचालक! ऐसी आशा की जाती है कि परिवार के हर सदस्य को राशन मिलना चाहिए। सो कृपया ऐसी ही व्यवस्था कीजिये।"

"लेकिन तुम्हारा लड़का तारास है कहां?"

"इससे आपको क्या मतलब कि वह है या नहीं। मैं यह सर्टीफ़िकेट दे चुका हूं कि दो जून को तारास का जन्म हुआ था और दस जून को वह मर गया... सो आप उसके लिए आठ दिन का राशन देने के लिए बाध्य हैं..."

यह देखने के लिए कि क्या होता, कालीना इवानोविच वहां चला आया था। सावधानी के साथ उसने देरियुचेन्को की बांह थामी।

"साथी देरियुचेन्को, भला कोई इतना मूर्ख भी होगा जो इतने छोटे

बच्चे को मक्खन खिलाना चाहे? ख़ुद अपने से ही पूछो कि क्या वह ऐसी ख़ुराक हज़म कर सकता है?"

अचरज से भरा मैं एक दूसरे की ओर देख रहा था।

"कालीना इवानोविच!" मैंने विस्मय से कहा। "तुम्हें आज हो क्या गया है? इस बच्चे को मरे तो तीन सप्ताह हो गए!"

"ओह—सो वह मर गया? तो तुम्हें क्या चाहिए? मक्खन अब कुछ कारगर न होगा, गूगल की धूनी अलबत्ता मुर्दे के कुछ काम आ सकती है। ओह, लेकिन वह मृत है, अगर ऐसा कहा जा सके तो!"

देरियुचेन्को गुस्से से छाज बना कमरे में घूमते हुए अपनी हथेलियों से हवा को फटफटा रहा था।

"आठ दिनों की अवधि तक पूर्णतया अधिकृत सदस्य की भांति वह मेरे परिवार में सम्मिलित था, सो यह आवश्यक है कि आप उसके लिए राशन जारी करें।"

लेकिन देरियुचेन्को पटरी से उतर गया था और इसके बाद की उसकी हरकतें वहशियाना तथा तारतम्यविहीन होती थीं। तौर-तर्ज़ का अब उसे क़तई चेत नहीं रहा था, उसके अस्तित्व के विशिष्ट चिन्ह तक अपना घुंघरालापन छोड़ नीचे लटक आए थे: उसकी मूँछें, उसके बाल, उसकी नेकटाई। इसी दशा में अन्ततः वह जन-शिक्षा के प्रान्तीय विभाग के प्रमुख अध्यक्ष के दफ़्तर में पहुँचा और अत्यन्त औंधा अवसर उसने वहां डाला। जन-शिक्षा के प्रान्तीय विभाग के प्रमुख अध्यक्ष ने मुझे तलब किया।

"तुम्हारे कर्मचारियों में से एक शिकायती-पत्र लिए मेरे पास आया था," उसने कहा। कुछ पता है तुम्हें,—ऐसे लोगों को धता बतानी चाहिए। ऐसे असह्य भिखारी को तुम अपनी कोलोनी में कैसे रख सकते हो? तारास, मक्खन, और भगवान जाने किस-किस चीज़ के बारे में ऐसी बकवास करता रहा कि कहा नहीं जा सकता।"

"लेकिन उसे नियुक्त तो आपने ही किया था!"

"असम्भव! इसी क्षण उसका पत्ता काट दो।"

इस प्रकार तारास और मक्खन के इन दो प्रसंगों का, जो क्रमशः एक-दूसरे के साथ नत्थी हो गए थे, सुखान्त परिणाम प्रकट हुआ। देरियुचेन्को और उसकी पत्नी उसी पथ से विदा हो गए जिससे कि उनसे पहले रोदिमचिक विदा हुआ था। मैं प्रसन्न था, कोलोनी के सदस्य प्रसन्न थे

और उक्राइनी दृश्यपट का वह छोटा-सा खण्ड भी जहां यह नाटक घटा था, सुखद प्रतीत होता था। लेकिन मेरी प्रसन्नता चिन्ता से मुक्त नहीं थी। वह पुरानी समस्या, वास्तव में मानवीय जीव की कहां खोज की जाए, अब उतनी विकट नहीं थी जितनी कि पहले। कारण, नयी कोलोनी में एक भी शिक्षक नहीं था। लेकिन गोर्की कोलोनी, निस्सन्देह, भाग्य की अच्छी थी, एकदम अप्रत्याशित रूप में एक ऐसे मानव से मेरी भेंट हो गई जिसकी कि हम तलाश में थे। ऐसे संयोग भी हो जाते हैं। एकदम राह चलते बाज़ार में उससे मेरी भेंट हुई। वह पटरी पर खड़ा था। जन-शिक्षा विभाग के सप्लाई खाते की खिड़की की ओर उसकी पीठ थी, और धूल, गोबर तथा काग़ज़ छितरी सड़क की साधारण चीज़ों को वह अलस भाव से देख रहा था। अन्तोन और मैं डिपो में से अनाज की बोरियां बाहर निकाल रहे थे। अन्तोन का पांव धरती पर एक गढ़े में उलझा और वह गिर पड़ा। वह व्यक्ति तुरन्त ही दुर्घटना स्थल की ओर लपका, और उसने तथा मैंने एक साथ मिलकर उक्त बोरे को अपनी गाड़ी में लादने का काम सम्पन्न किया। उस समय जबकि मैं अजनबी को धन्यवाद दे रहा था, उसके सुगठित आकार-प्रकार पर, उसके बुद्धिमान यौवन से उमगते चेहरे और उसकी उस गरिमा पर जिससे कि मेरे धन्यवाद के जवाब में वह मुसकराया, मेरी नज़र गई। सिर पर वह सफ़द रंग की कोस्साक टोपी लगाए था—कुछ ऐसे सहज अन्दाज़ और विश्वास के साथ जो कि सैनिकों की एक अपनी विशेषता होती है।

"तो तुम सैनिक आदमी हो, क्यों, ठीक है न?" मैंने पूछा।

"हां, आपका कहना ठीक है," अजनबी मुसकराया।

"घुड़सवार सेना का?"

"हां।"

"तो फिर यहां जन-शिक्षा विभाग में तुम्हारी दिलचस्पी की भला क्या चीज़ हो सकती है?"

"प्रमुख अध्यक्ष। उन्होंने बताया कि वह अभी आते ही होंगे। सो मैं इन्तज़ार कर रहा हूं।"

"क्या तुम काम की खोज में हो?"

"हां। मुझे व्यायाम निर्देशक का काम देने का वायदा किया गया है।"

"तो पहले मुझसे बातें कर लो।"

"अच्छी बात है।"

हमने बातें कीं। वह हमारी गाड़ी में चढ़ आया और हम घर की ओर चल दिए। मैंने प्योत्र इवानोविच को कोलोनी दिखाई, और रात होते-होते उसकी नियुक्ति का निर्णय ले लिया गया।

प्योत्र इवानोविच के रूप में कोलोनी को अत्यन्त सौभाग्यपूर्ण विशेषताओं से युक्त व्यक्ति की प्राप्ति हो गई। वह ठीक उन्हीं चीज़ों का धनी था जिनकी कि हमें जरूरत थी। उसमें यौवन था, जोश था, सहन करने की क़रीब-क़रीब इतरमानवीय शक्ति थी, और थी शालीनता तथा ज़िन्दादिली। साथ ही उसमें ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसकी हमें ज़रूरत नहीं थी—शिक्षा-सम्बन्धी दुराग्रहों का उसमें लेश मात्र भी नहीं था। लड़कों के सामने वह ज़रा भी नहीं बनता था, तुच्छ स्वार्थपरता उसे छू तक नहीं गई थी। इसके अलावा प्योत्र इवानोविच में और भी गुण थे—सैनिक प्रशिक्षण से उसे प्रेम था, पियानो बजाना जानता था, कविता करने की प्रतिभा भी उसमें थोड़ी-बहुत मौजूद थी, वह अत्यन्त मज़बूत था। उसके शासन में, अगले दिन से ही, नयी कोलोनी में जैसे एक नयी जान पड़ गई। मज़ाक़ से, झिड़कियों से, दृष्टान्त से प्योत्र इवानोविच ने लड़कों को एक समूह के रूप में ढालना शरू कर दिया। सहज विश्वास के साथ वह मेरे तमाम शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों को ग्रहण करता था और एकदम अन्त तक कभी भी किसी चीज़ पर भी उसने सन्देह प्रकट नहीं किया। नतीजा इसका यह कि बेकार के शिक्षा-सम्बन्धी तर्कों तथा चखचख से उसने मुझे मुक्त रखा।

सुव्यवस्थित गाड़ी की भांति हमारी दोनों कोलोनियों का जीवन आगे बढ़ चला। अपने स्टाफ़ के साफ़ विश्वास और दृढ़ता की चेतना का मैंने उपभोग करना शुरू किया जो कि मेरे लिए एक नया अनुभव था। तिख़ोन नेस्तोरोविच, शेरे और प्योत्र इवानोविच अनुभव प्राप्त पुराने साथियों की भांति, जी-जान से लक्ष्य की सेवा में जुट गए।

उन दिनों कोलोनी के सदस्यों की संख्या अस्सी तक पहुंच गई थी। १९२० और १९२२ के पुराने सदस्य एक अत्यन्त घनिष्ठ दल में गुंथे और बिना किसी छिपाव के कोलोनी का संचालन करते थे। हर क़दम पर हर नवागन्तुक के लिए उनकी इस्पाती इच्छा-शक्ति काम का एक ऐसा ढांचा तैयार कर देती थी जो कभी नहीं लचकता था जिसका प्रतिरोध करना

व्यवहारिक रूप से असम्भव होता था। यों प्रतिरोध के प्रयास वैसे भी विरले ही दिखाई देते थे। कोलोनी के बाह्य आकार-प्रकार में सौन्दर्य आ गया, उसके दैनिक जीवन में सादगी और शुद्धता आ गई। उसने कतिपय विविधतापूर्ण प्रथाएं तथा रीति-रिवाज अपना लिए जिनके रहस्य सबसे पुराने सदस्यों के लिए भी कभी-कभी समझ से बाहर हो जाते थे। सख़्त और स्पष्ट शब्दों में उनके कर्त्तव्य निर्धारित थे। लेकिन ये कर्त्तव्य ऐसे थे जिनकी एकदम सुस्पष्ट व्याख्या हमारे विधान में मौजूद थी, और कोलोनी में ज़रा-सी भी मनमानी या निरंकुशता के प्रदर्शन को क़रीब-क़रीब असम्भव बना दिया गया था। इसी के साथ-साथ समूची कोलोनी एक ऐसे काम में निरन्तर जुटी थी जिसकी आवश्यकता के बारे में सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं थी। यह काम था नयी कोलोनी की मरम्मत को पूरा करना, एक ही जगह में सबको केन्द्रित करना तथा अपने आर्थिक उद्योगों का विस्तार करना। यह काम सभी के लिए अनिवार्य है, और उन्हें निश्चित रूप से पूरा किया जायेगा, इसे तथ्य की ओर कोई उंगली नहीं उठाता था। और यही वह चीज़ है जिसके लिए अनगिनत अभावों को हमने अपना लिया था। निजी आमोद-प्रमोद, बढ़िया कपड़ों, और खाने-पीने के क्षेत्र में भांति-भांति की की हमने क़ुरबानियां की थीं। सूअर-पालन, बीजों तथा नये हार्वेस्टर के लिए प्रत्यक फालतू रक़म बचा कर रखते थे। इन बलिदानों के प्रति हमारा रवैया इतना शान्त और भला था, और इतनी प्रसन्नता और विश्वास के साथ हम उसे लेते थे कि उस समय जब ननकऊ छौने सदस्यों में से एक ने आम सभा में नये पायजामे बनाने का सवाल उठाया तो हास्य का सहारा लेने में किसी बाधा का मैंने अनुभव नहीं किया।

"नयी कोलोनी को हम बनाएंगे," मैंने कहा, "धन पैदा करेंगे, और तब हम हरेक के लिए नये कपड़े बनवाएंगे—लड़कों के लिए रुपहले पटकों से युक्त मखमली कुर्ते लड़कियों के लिए रेशमी कपड़े और बढ़िया चमड़े के जूते। हर दस्ते के पास उसकी अपनी एक मोटर होगी और इसके साथ-साथ हर सदस्य के पास—उसकी अपनी एक साइकिल होगी। हम कोलोनी को गुलाब की हज़ारों झाड़ियों से सजा देंगे। समझ गए न? और तब तक, इन तीन सौ रूबल से, एक बढ़िया सिएमेन्थल गाय ख़रीद ली जाए!"

लड़के जी-भरकर हंसे, और इसके बाद सूती पैबन्द लगे उनके पाय-जामे और चिकनाई के दाग़ लगे उनके मटमैले कुर्ते कुछ उतने अधिक भद्दे नहीं मालूम् हुए।

कोलोनी के प्रधान नैतिक पथ से अब न भटकते हों, यह बात नहीं थी। इस सम्बन्ध में उन्हें ताड़नाओं से मुक्त नहीं किया जा सकता था। पर हमारे कठिन काम में ये 'प्रधान' बहुत ही सुगम तथा बहुत ही सही मशीनरी सिद्ध हुए। यह बात मुझे उनमें ख़ास तौर से अच्छी लगती थी कि उनके काम की मुख्य प्रवृत्ति—कारण चाहे जो भी हो—अनजान में ही प्रधान के रूप में उनके विलय होने में प्रकट हो रही थी। सारी कोलोनी को वे काम में खींच लेते थे।

इन प्रधानों' में हमारे क़रीब क़रीब सभी पुराने साथी शामिल थे—कराबानोव, ज़दोरोव, वेर्शनेव, ब्रातचेन्को, वोलोख़ोव, वेत्कोव्स्की, ता-रानेत्स, बुरून, गुद ओसाद्ची, नास्त्या नोचेवनाया आदि। लेकिन इनके अलावा और भी अधिक नये कुछ नामों ने भी इस सूची में प्रवेश कर लि-या था: ओप्रिश्को, गओर्गीयेव्स्की, जोर्का वोल्कोव, अल्योशा वोल्कोव स्तूपित्सीन और कुदलाती।

ओप्रिश्को ने अन्तोन ब्रातचेन्को के कितने ही गुणों को आत्मसात कर लिया था। उसका जोश, घोड़ों के प्रति उसका प्रेम और काम करने की उसकी वह इतरमानवीय क्षमता सभी को अपना लिया था, सृजनात्मक दि-शा में वह कुछ इतना प्रतिभावान नहीं था, न ही उसमें उतनी सुस्पष्टता थी, लेकिन उसमें कुछ गुण थे जो केवल उसकी अपनी विशिष्टता थे। उसमें ऐन्द्रिक वृत्तियों का सुन्दर प्रवाह था, एक तरह की कमनीयता थी। उसके सभी कार्यकलापों में एक उद्देश्य बना रहता था।

कोलोनी के समाज की नजरों में गेओर्गीयेव्स्की का व्यक्तित्व दुहरापन लिये हुए था। एक ओर उसका बाह्य आकार-प्रकार ऐसा था कि उसे जिप्सी कहने को जी चाहता था। उसके चेहरे का सांवलापन, बरबट्टा-सी उसकी काली आंखें, उसका रूखा अलस स्वभाव, व्यक्तिगत सम्पत्ति के प्रति शैतानी से भरी उसकी शिथिलता,—इन सब में कुछ था जो जिप्सि-यों जैसा था। दूसरी ओर, प्रत्यक्षत: गेओर्गीयेव्स्की शिक्षित जन-समुदाय की सन्तान मालूम होता था: वह ख़ूब पढ़ा-लिखा था, ख़ूब बना-संवरा और शहरी सौन्दर्य से सज्जित रहता था। बिलकुल रईसों की भांति बो-

लता तथा 'र' ध्वनि का उच्चारण करता था। लड़कों ने एलान किया कि गेओर्गीयेव्स्की ईरकूत्स्क के किसी भूतपूर्व गवर्नर की सन्तान है। खुद गेओर्गीयव्स्की का जहां तक सम्बन्ध था, वह ऐसे लज्जास्पद उद्गम की सम्भावना तक से इनकार करता था, और उसके काग़ज़ात भी इस तरह के अभिशप्त अतीत का कोई चिन्ह नहीं प्रकट करते थे। लेकिन इस तरह के मामलों में मेरी प्रवृत्ति हमेशा लड़कों की बात मानने की ओर होती थी। नयी कोलोनी में कमाण्डर के रूप में उसने प्रवेश किया और तुरन्त अपना सिक्का जमा लिया—उसकी टुकड़ी में कोई भी इतना अधिक काम नहीं करता था जितना कि छठवीं का कमाण्डर। गेओर्गीयेव्स्की अपने साथी-सदस्यों को पुस्तकें आदि पढ़कर सुनाता था, कपड़े पहनने में उनका हाथ बंटाता था, पीछे पड़कर उन्हें नहलाता-धुलाता था और उन्हें क़ायल करने, समझाने तथा झिड़कने में कभी नहीं थकता था। कमाण्डरों की परिषद में वह हमेशा छोटों की देखभाल तथा उनसे प्यार करने के विचार का पक्षपाती था। अनेकों उपलब्धियों का सेहरा उसके माथे पर बंधा था। सबसे अधिक गंदे लड़के उसके ज़िम्मे किए जाते, लेकिन एक सप्ताह के बीतते-बीतते वे चौकस, बालों को चिकनाए और कोलोनी के श्रममय जीवन के पथों का अत्यन्त शुद्धता के साथ अनुसरण करते हुए नज़र आते।

कोलोनी में दो वोल्कोव थे—जोर्का और आल्योश्का। हालांकि वे भाई थे, लेकिन उनमें एक भी चीज़ समान नहीं थी। जोर्का ने कोलोनी में बुरी तरह शुरुआत की थी—उसमें क़ाबू से बाहर काहिली, त्रस्त करनेवाली हद तक रुग्णता थी। झगड़ालू तथा कुत्सित स्वभाव का वह अक्सर प्रदर्शन करता रहता था। वह कभी नहीं मुसकराता था और कभी-कभार ही बोलता था। मुझे आशंका थी कि वह कभी हम लोगों के साथ एक नहीं हो सकेगा, बल्कि भाग खड़ा होगा। बिना किसी हल्ले-गुल्ले तथा शिक्षणात्मक प्रयासों के उसकी कायापलट हो गई। कमाण्डरों की परिषद में अचानक यह प्रकट हुआ कि हिमगर्त की खुदाई के लिए केवल एक गठजोड़ा बच रहा है—गलातेन्को और जोर्का का। सब हंस पड़े।

ऐसे कामचोरों को एक साथ काम पर लगाना कोई भी नहीं चाह सकता था।

उस समय और भी मजा आया जब किसी ने एक मनोरंजक प्रयोग करने का सुझाव रखा। वह यह कि उनका एक मिश्रित दस्ता बनाकर

देखा जाए कि उससे क्या बनता है, और यह कि कितनी अधिक खुदाई वे करते हैं। कुछ सलाह-मशविरे के बाद जोर्का को कमाण्डर चुन लिया गया। गलातेन्को अभी भी पिछड़ा रहा। जोर्का को कमाण्डरों की परिषद के सम्मुख बुलाया गया और मैंने उसे सम्बोधित करते हुए कहा:

"इधर देखो, वोल्कोव। हिमगृह बनाने के लिए तुम्हें एक मिश्रित दस्ते का कमाण्डर चुना गया है, और गलातेन्को तुम्हारा सहायक होगा। केवल हमें इतना ही डर है कि तुम उसे संभाल नहीं सकोगे।"

एक क्षण सोचने के बाद जोर्का बुदबुदाया:

"मैं उसे संभाल लूंगा।"

अगले दिन, विह्वल मुद्रा में, एक मानीटर मेरे पास दौड़ा हुआ आया।

"ओह, आप बस चले चलिये। जोर्का किस प्रकार गलातेन्को को नाथ रहा है, यह देखने की चीज़ है। बस, एक बात का ध्यान रखना—अगर उन्हें हमारी आहट मिल गई तो सारा गुड़ गोबर हो जाएगा!"

कार्यस्थल झाड़ियों की ओट में था। रेंगते हुए हम वहां पहुंचे। किसी समय के एक बाग़ के अवशेषों के बीच साफ़ की हुई जगह में भावी हिम-गृह के लिए एक आयताकार आधार बना था। इसका एक सिरा गलाते-न्को के ज़िम्मे था और दूसरा जोर्का के। कौनसा किस के लिए है, इसका पता शक्तियों को तैनात करने के ढंग तथा काम करनेवालों की उत्पादन-शीलता में प्रत्यक्ष अन्तर पर नज़र डालने से चल जाता था। जोर्का कई वर्गमीटर में अभी भी खुदाई कर चुका था, जबकि गलातेन्को केवल एक संकरी पट्टी ही खोद सका था। लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि गला-तेन्को सो रहा था। नहीं, औघड़पन के साथ अपने बंबनुमा पांव को ज़मीन में गड़ाए वह बस में न आनेवाले फावड़े से ज़ोर आज़माई कर रहा था, और जोर्का की दिशा में प्रत्यक्ष प्रयास से अपने भारी सिर को निरन्तर मोड़ रहा था। जब जोर्का उसकी ओर नहीं देखता था तो वह काम करना बंद कर देता था, अपने पांव को पूर्ववत् फावड़े पर जमाए और प्रथम खटके पर ही उसे धरती में गड़ाने के लिए तैयार-भर रहता था। यह साफ़ मालूम होता था कि वोल्कोव इन सब चालों से पूरी तरह तंग आ चुका था।

"क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारी हाज़िरी बजाने और तुमसे काम

करने की प्रार्थना करने के लिए तुम्हारे सामने खड़ा रहूंगा? नहीं, तुम्हारे साथ सटे रहने के लिए मेरे पास समय नहीं है!"

"लेकिन तुम क्यों इस तरह अपनी जान खपाते हो?" गलातेन्को भन-भनाया।

कोई जवाब दिए बिना ही जोर्का गलातेन्को के पास पहुंचा।

"मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूंगा, समझे?" उसने कहा। "लेकिन अगर तुमने यहां से यहां तक नहीं खोदा तो मैं तुम्हारा खाना उधर कूड़े के ढेर के हवाले कर दूंगा।"

"तुम्हें कोई ऐसा नहीं करने देगा। कुछ पता है, अन्तोन क्या कहे-गा?"

वह कुछ भी कहे, लेकिन मैं उसे फेंके बिना न रहूंगा, सो तुम अब समझ रखो!"

गलातेन्को ने स्थिर नज़र से जोर्का की आंखों में देखा और उसने जा-ना कि जोर्का बेकार की बात नहीं कह रहा है। गलातेन्को बुदबुदाया:

"मैं काम कर तो रहा हूं—कर रहा हूं न? सो मेरी जान न खाओ, बस!"

उसका फावड़ा और अधिक तेज़ी से धरती पर हरकत करने लगा, और मानीटर ने मेरी कोहनी का स्पर्श किया।

"इसे तुम अपनी रिपोर्ट में दर्ज कर लेना," मैंने फुसफुसाकर कहा।

उसी सांझ मानीटर ने निम्न शब्दों के साथ अपनी रिपोर्ट का अन्त किया:

"मैं वोल्कोव अग्रज के कमान में मिश्रित दस्ते '३–२' के अच्छे काम की ओर सबका ध्यान खींचना चाहता हूं।"

करावानोव वोल्कोव के गले में अपनी सशक्त बाहें डालते हुए चहक उठा:

"ओहो! बिरले कमाण्डरों के भाग्य में ही ऐसा सम्मान पाना बदा होता है!"

जोर्का गर्व से मुसकरा उठा। गलातेन्को ने भी दफ़्तर के दरवाजे के पास से हम पर अपनी मुसकान न्योछावर की और रूखी आवाज़ में बोला:

"अरे हां, काम भी हमने आज खूब किया—भूतों की तरह जुटे रहे!"

इस क्षण से जोर्का का जैसे चोला ही बदल गया। पूरे जोश के साथ

वह पूर्णता की ओर बढ़ चला और दो महीने के भीतर कमाण्डरों की परिषद ने उसे नयी कोलोनी में तैनात कर दिया,—सातवें काहिल दस्ते को चेतन करने के ख़ास उद्देश्य से।

पहले दिन से ही आल्योशा वोल्कोव सबका प्रिय बन गया। ख़ूबसूरती से वह कोसों दूर था। हर सम्भव ढंग के दाग़ों से उसका चेहरा घिरा था, और उसका माथा इतना नीचा था कि वह ऊपर की बजाय आगे की ओर बढ़ता मालूम होता था। लेकिन आल्योशा काफ़ी चतुर था, सच तो यह है कि बेहद चतुर था, और जल्दी ही यह सब की समझ में आ गया। मिश्रित दस्ते का आल्योशा से अच्छा कमाण्डर और कोई नहीं हो सकता था—होशियारी के साथ वह काम का संयोजन कर सकता था, छोटे लड़कों में से प्रत्येक के लिए उपयुक्त जगह निकाल सकता था, और हमेशा काम के नये तौर-तरीक़ों का आविष्कार करता रहता था।

मंगोलों जैसे चौड़े चेहरे तथा मज़बूत काठीवाला कुदलाती भी एक चतुर लड़का था। हमारे यहां आने से पहले वह निरा खेतिहर था, लेकिन कोलोनी में उसे हमेशा कुलक नाम से पुकारा जाता था। इसमें शक नहीं कि अगर कोलोनी न होती, जिसकी बदौलत वह पार्टी की सदस्यता तक पहुंचा, तो वह कुलक बन गया होता। कारण कि एक तरह की पाशविक वृत्ति और इसके साथ-साथ दबोचने की एक गहरी साम्पत्तिक भावना—जायदाद की, गाड़ियों की, हेंगी और घोड़ों की, खाद और जोते हुए खेतों तथा खेत-खलिहान और बाड़ों में खेती सम्बन्धी सभी प्रकारों के कामों की चाह उसके रोम-रोम में समाई थी। बहस में कुदलाती को कोई मात नहीं कर सकता था, बिना किसी उतावली के वह बोलता था और सम्पत्ति के संचय की गम्भीर तथा कंजूस भावना ने गहरी जड़ें उसमें जमा ली थीं। लेकिन भूतपूर्व खेतिहर होते हुए भी, युक्तियुक्त दृढ़ता के साथ कुलकों से वह धृणा करता था, समूचे हृदय से हमारे कम्यून की उपयोगिता में विश्वास करता था,—जैसे कि वह, सिद्धान्ततः, अन्य सभी कम्यूनों की करता था। कुदलाती एक अर्से से कोलोनी में कालीना इवानोविच का दाहिना हाथ रहा था, और १९२३ का अन्त होते न होते आर्थिक प्रशासन का काफ़ी हिस्सा उसके ज़िम्मे कर दिया गया।

स्तुपीत्सीन भी व्यावहारिक सूझ-बूझ का धनी था, लेकिन वह बिलकुल भिन्न कोटि का था। वह सचमुच में सर्वहारा था। उसकी वंशपरम्परा

ख़ारकोव के कारख़ाने से सम्बद्ध थी। वह जानता था कि उसके पिता, दादा और परदादा उसमें काम करते थे। उसके वंश के सदस्य लम्बे अर्से से ख़ारकोव कारख़ाने की सर्वहारा पांतों को सुशोभित किए थे और उसके बड़े भाई को १६०५ की क्रान्ति में भाग लेने के कारण देशनिष्कासित कर दिया गया था। इसके अलावा स्तुपीत्सीन ख़ूबसूरत आदमी भी था। उसकी भौंहें महीन रेखा की भांति खिंची थीं और उसकी छोटी-सी काली आंखें ख़ूब तीक्ष्ण थीं। उसके मुंह के दोनों ओर मांसपेशियों की एक बढ़िया, सूक्ष्म और गतिशील गांठ पड़ी थी। उसका चेहरा अत्यन्त भावपूर्ण था और उसके चेहरे के भावों में आकस्मिक तथा रोचक परिवर्त्तन होते रहते थे। स्तुपीत्सीन हमारे कृषिकर्म की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शाखा का प्रतिनिधि था। नयी कोलोनी के सूअर-घर का प्रतनिधि जिसके निवासियों ने कल्पनातीत गति से बढ़ना शुरू कर दिया था। एक विशेष दस्ता—दसवीं—सूअर-घर में कार्य करता था। स्तुपीत्सीन इसका कमाण्डर था। उसने अपने दस्ते को एक स्फूर्तिवान इकाई के रूप में ढाल लिया था। इसके सदस्यों में तथा परम्परागत सूअर हांकनेवालों में कोई साम्य नहीं था। उनमें से विरले ही बिना किताब के नज़र आते थे। उनके मस्तिष्क राशन से तथा हाथ पेन्सिल तथा लिखने के पैडों से व्यस्त रहते थे। बाड़ों के दरवाज़ों पर लिखावट मौजूद थी। सूअर-घर में सब जगह आकृति चित्र तथा नियम अंकित थे, और प्रत्येक सूअर के लिए उसकी निजी विवरण बही थी। कौन चीज़ ऐसी थी जो उनके पास सूअर-घर में नहीं थी?

अगुआ दल के साथ-साथ दो बड़े दल और थे जो बहुत कुछ उसके समान थे और रिज़र्व का काम देते थे। इनमें, एक ओर, सक्रिय पुराने सदस्य, शानदार कायकर्त्ता तथा साथी, मज़बूत और शान्त व्यक्ति—ऐसे जो उल्लेखनीय संगठनात्मक प्रतिभा से युक्त नहीं थे—सम्मिलित थे। ये थे प्रीख़ोद्को, चोबोत, सोरोका, लेशी, ग्लेइसर, श्नाइदेर, ओवचारेन्को, कोरीतो, फ़ेदोरेन्को तथा अन्य कितने ही। दूसरी ओर इनमें कम-उम्र लड़के भी थे जिन्होंने पनपना शुरू किया था। ये असली रिज़र्व थे जो अभी भी भावी संगठनकर्त्ता होने की सूचना देने लगे थे। उनकी किशोरावस्था प्रशासन की बागडोर अपने हाथों में लेने में अभी बाधक थी। इसके अलावा प्रशासन की जगहों पर उनसे बड़े मौजूद थे, और अपने अग्रजों का वे सम्मान करते थे। लेकिन वे कई बातों में अपने अग्रजों से

अधिक अच्छी स्थिति में थे। शुरू की अवस्था से ही उन्होंने कोलोनी के जीवन का स्वाद चखा था और अधिक पूर्णत्व के साथ वे उसकी परम्परा-ओं में पगे थे। फलतः कोलोनी की अकाट्य उपयोगिता में वे और भी दृढ़ता से विश्वास करते थे, और सबसे बढ़कर यह कि उन्हें बेहतर शिक्षा मिली थी। जो भी ज्ञान उनके पास था, वह उनकी अधिक सक्रिय सम्पदा थी। इनमें हमारे पुराने मित्र तोस्का, शेलापूतिन, जेवेली, बोगोया-वलेन्स्की तो थे ही, लेकिन कुछ नये नाम भी थे—लापोत, शरोवस्की, रोमांचेन्को, नज़ारेन्को, वेक्सलर। ये सब भावी कमाण्डर तथा कुरियाज विजय के युग के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने भी मिश्रित दस्तों के कमा-ण्डरों के रूप में नामज़द होना शुरू कर दिया था।

कोलोनीवासियों के इन दलों में हमारी सामुहिक का अधिकांश सम्मि-लित था। वे आशावाद की भावना, स्फूर्ति, ज्ञान और अनुभव में तगड़े थे, और शेष सब दुर्निवार रूप में उनके साथ खिंचे चले आते थे। इन बादवालों को खुद कोलोनीवासियों ने ही तीन शीर्षकों के अन्तर्गत विभा-जित कर रखा था—'दलदल,' 'छोटी मछली' और 'मलबा'।

'दलदल' के अन्तर्गत वे लड़के थे जो किसी रूप में भी अपने-आपको विशिष्ट नहीं सिद्ध कर सके थे, जो अनगढ़ थे जैसे उन्हें खुद यह विश्वास न हो कि कोलोनी उनकी अपनी चीज़ है। लेकिन यहां यह कहना होगा, कि कभी-कभी इनके बीच से उल्लेखनीय व्यक्तित्व प्रकट हो जाते थे, और यह कि मौजूदा स्थिति अपने-आप में केवल एक दौर को व्यक्त करती थी। एक समय इसमें, अधिकांशतः नयी कोलोनी के लड़के थे। छौनों में एक दरजन से ऊपर लड़के हमारे यहां थे जिन्हें सब कच्चा माल समझते थे, और जिनका मुख्य काम अपनी नाकों को किस प्रकार साफ़ किया जाए, यह सीखना होता था, इसके अलावा छौने, अपने आपमें किन्हीं उल्लेखनीय क्रिया-कलापों की आकांक्षा नहीं रखते थे। वे खेल-कूद, बर्फ़ पर दौड़ने (स्केटिंग), नाव में घूमने, मछली पकड़ने, बर्फ़-गाड़ी चलाने तथा छिटपुट चीज़ों से सन्तुष्ट थे। और मैं इसे पूर्णतया ठीक समझता था।

'मलबा' शीर्षक के अन्तर्गत केवल पांच लड़के थे: गलातेन्को, पेरेपे-लियातचेन्को, येवगेनियेव, गुस्तोइवान, तथा कुछ और। जैसे ही उनमें से किसी एक में कोई उल्लेखनीय कमज़ोरी नज़र आती, उन्हें 'मलबे'

में शामिल कर लिया जाता। मिसाल के लिए गलातेन्को को लीजिए। वह पेटू और कामचोर था। येवगेनियेव के भीतर जैसे झूठ बोलने और ज़बान चलाने की मशीन फ़िट थी। पेरेपेलियातचेन्को एक रुग्ण, भनभन करने वाला भिखारी था, और गुस्तोइवान पूरा इलहामी—एक तरह का दैवी मूर्ख था। वह हमेशा मां मरियम की प्रार्थना करता और मठ में दाख़िल होने के सपने देखता था। समय बीतने पर 'मलबे' ने इन दुःखद 'गुणों' में से कुछ को उतार भी फेंका, लेकिन एक लम्बी और जानमार प्रक्रिया के बाद ही ऐसा हुआ।

१६२३ के अन्त में हमारी कोलोनी में सामुहिकता की ऐसी स्थिति थी। शक्ल सूरत में इसके सभी सदस्य, इक्के-दुक्के अपवादों को छोड़कर, समान रूप में चुस्त-दुरुस्त थे और शेखी के साथ अपने सैनिक ठाठ का प्रदर्शन करते थे। हमारे पास अब शानदार मार्चिंग दस्ते थे जिनके अग्रभाग को चार बिगुलवादक तथा आठ ढोलची शोभित करते थे। हमारे पास फरहरा भी था, सुन्दर रेशमी, रेशम का काम किया हुआ। यह फरहरा हमारी तीसरी वर्षगांठ के अवसर पर उक्राइनी जन-कमिसरिएट से हमें भेंट में मिला था।

सर्वहारा की छुट्टियों के दिन हमारी कोलोनी बाजे-गाजे के साथ नगर में प्रवेश करती और अपने कठोर संगीत, लौह अनुशासन तथा विशिष्ट अन्दाज़ से नगर निवासियों तथा प्रभावशील शिक्षाविदों को चकित कर देती। चौराहे में हम हमेशा बाद में पहुंचते, जिससे किसी की प्रतीक्षा न करनी पड़े। हम अटैन्शन खड़े रहते, और जब नगर के मज़दूरों की सलामी में बिगुल बजाते तो कोलोनीवासी अपने हाथ ऊंचे कर लेते। इसके बाद हमारे दस्ते छुट्टी का आनन्द बटोरने के लिए भंग हो जाते, फरहरा-वाहक और एक छोटे गार्ड दल को आगे की ओर अटेन्शन छोड़ जाते, और पीछे की ओर—पांतों के पिछले हिस्से को सूचित करने के लिए एक छोटी-सी पताका लगा देते। इस सब का इतना असर पड़ता कि कोई उस जगह को घेरने का साहस न करता जो कि हम अपने लिए चिन्हित कर लेते। पोशाक सम्बन्धी अपनी सीमाओं को क़ाबू में करने के लिए हम सूझ-बूझ और उद्धतता से काम लेते। सूती कपड़ों से—उस भयानक लवाज़मे से जो अनाथालयों के भाग्य में बदा था—हमारी सख़्त दुश्मनी थी। लेकिन हमारे पास उससे अच्छी कोटि के कपड़े भी नहीं थे। न ही पांवों

में पहनने के लिए हमारे पास नये तथा सुन्दर जूते थे। इसलिए हम परेड में नंगे पांव जाते थे और दिखाते यह थे कि इरादतन हमने ऐसा किया है। लड़के इतनी सफ़ेद-चिट्टी क़मीज़ पहनते थे कि आंखें चौंधिया जाएं। उनकी काली पतलूनें भी अच्छी क़िस्म की होती थीं, जिन्हें घुटनों तक उलट लिया जाता था, उस तरह बर्फ़-सा सफ़ेद नीचे का पायजामा उनके ऊपर आ जाता था। उनकी क़मीज़ों की बांहें भी कोहनी तक उलटी हुई होती थीं। नतीजा यह कि वे ख़ूब चुस्त-दुरुस्त तथा मगन दिखाई देते थे, थोड़ा देहातीपन का पुट लिए हुए।

तीन अक्तूबर १९२३ के दिन ऐसे ही एक दस्ते ने कोलोनी के क़वायद-मैदान में प्रवेश किया। यह उस समय की बात है जबकि तीन सप्ताह लगा कर एक अत्यन्त जटिल क्रिया को सम्पन्न कर लिया गया था। शैक्षणिक परिषद तथा कमाण्डरों की परिषद के संयुक्त अधिवेशन द्वारा पारित प्रस्ताव के अनसार गोर्की कोलोनी एक ही जगह पर केन्द्रित कर दी गई – त्रेपके बन्धुओं की भूतपूर्व जागीर पर – और राकितनोय झीलवाली उसकी पुरानी जागीर जन-शिक्षा के प्रान्तीय विभाग को सौंप दी गई। तीन अक्तूबर तक हर चीज़ नयी कोलोनी में स्थानान्तरित हो चुकी थी। वर्कशाप, बाड़े, अस्तबल, भण्डारघर, भोजनघर, रसोई स्कूल सभी वहां पहुंच गए थे, और स्टाफ़ की निजी चीज़ें भी स्थानान्तरित हो चुकी थीं। तीन अक्तूबर की सुबह केवल पचास लड़के, हमारा फरहरा (ध्वज) और मैं ख़ुद कोलोनी में रह गये थे।

दोपहर के बारह बजे जन-शिक्षा के प्रान्तीय विभाग के एक प्रतिनिधि ने गोर्की कोलोनी की सुपुर्दगी के काग़ज़ पर दस्तख़त किए और एक ओर हटकर खड़ा हो गया। मैंने आदेश दिया:

"झंडे की सलामी के लिए – सावधान!"

सलामी के लिए लड़के चौकस हो गए, ढोल गड़गड़ाए और फरहरे के सामने मार्चपास्ट के लिए बिगुलों की ध्वनि गूंज उठी। झंडा ब्रिगेड फरहरे को दफ़्तर में से ले आई। उसे हमने अपने दाहिने बाज़ू पर उठाया और पुरानी जगह से अलविदा तक नहीं कहा, हालांकि उसके प्रति हमारे हृदयों में रत्ती-भर वैमनस्य का भाव नहीं था। बस, यही समझो कि हम पीछे फिरकर देखना नहीं चाहते थे। न ही हमने उस समय पीछे फिरकर देखा जब हमारी कोलोनी के दस्तों ने, अपने ढोलों की आवाज़ से खेतों

की निस्तब्धता को भंग करते हुए राकितनोय झील, तथा गांव की सड़क पर स्थित आन्द्रेई कार्पोविच के गढ़ को पार करते हुए कोलोमाक की हरी-भरी घाटी में उतरना और कोलोनी के सदस्यों द्वारा निर्मित नये पुल की दिशा में बढ़ना शुरू किया।

समूचा स्टाफ़ और गोंचारोव्का गांव के कितने ही निवासी त्रेपके के अहाते में जमा थे, और नयी कोलोनी के सदस्यों के दस्ते, अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ, गोर्की कोलोनी के फरहरे को सलामी देने के लिए अटैन्शन खड़े थे। एक नये युग में हमने अब प्रवेश किया था।

अपने प्रिय पाठकों से

आपने यह पुस्तक पढ़ी, कैसी लगी? पुस्तक की रोचकता को बनाये रखने में हम कहां तक सफल रह पाये हैं, लिखने की कृपा करें। पुस्तक के अनुवाद, डिज़ाइन व छपाई के सम्बन्ध में आपके बहुमूल्य सुझाव व विचार प्राप्त कर हमें निश्चय ही प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

'रादुगा' प्रकाशन
मकान नम्बर ३३, सी–१४
ताशक़न्द – ७०००११
सोवियत संघ

RADUGA PUBLISHERS
House No 33,C—14
Tashkent, 700011
USSR

था। बेघर अनाथों को पुनर्स्थापित कर-
ना अन्तोन मकारेन्को के जीवन का
मुख्य ध्येय बन गया। अपने इस कार्य
के दौरान उन्होंने अपनी एक नवीन शि-
क्षण पद्धति की स्थापना की जिससे
उसकी गणना विश्व के महानतम शिक्षा-
शास्त्रियों में की जाने लगी।

अ. स. मकारेन्को की विलक्षण लेखक-
सुलभ प्रतिभा से उन्हें अपने शिक्षा-
शास्त्रीय सिद्धान्त तथा अनुभव को साहि-
त्यिक भाषा में व्यक्त करने और उसे
समस्त विश्व की धरोहर बनाने में बहुत
सहायता मिली। उन्होंने अनेक उपन्या-
सों, कहानियों, नाटकों की रचना
की, फ़िल्मों की पट-कथाएँ लिखीं जिन
का संग्रह सात खण्डों में प्रकाशित हो
चुका है।

"जीवन की ओर" की रचना में
मकारेन्को दस वर्ष रत रहे। "यह
मेरा सबसे प्रिय कार्य है," उन्होंने
अपने मित्र तथा गुरु म. गोर्की को लि-
खा था।

"आपका आश्चर्यजनक रूप से सफल
शिक्षाशास्त्रीय प्रयोग अत्यन्त सार्थक
और उसका महत्त्व विश्वव्यापी है।"

म. गोर्की (अ. स. मकारेन्को
के नाम लिखे पत्र से)